इस मतबे में जितने प्रकारकी पुराणों की पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

लिङ्गपुराणभाषा क़ीमत ॥ ≋)

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसाद जीने भाषा में किया है जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास, सूर्यवंश चन्द्रवंशका र्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष रा-स और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

शिवपुराण भाषा क़ीमत १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दूसे हिन्दीभाषा में अनुवाद कियाहै इस में शिवजीके निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्यपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्म-माहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छहोंशास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

शिवपुराण दोहा चौपाई में क़ीमत ॥)पु०

जिसमें अत्यन्त मनोरम कथायें श्रीशिव पार्वतीजी की दोहा चौपाई आदि छन्दों में रामायण तुलसीदासकृत की भाँति से वर्णितहै जिसके पढ़ने व सुनने से सम्पूर्ण दुःख दूर होजाताहै और चित्तमें अतीव प्रसन्नता प्राप्त होतीहै अन्तमें मोक्ष लाभ होताहै ॥

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ीमत ७)पु०

इसके भाषाटीकाको श्रीअंगदशास्त्रीजीने अक्षर२ के अर्थको ललित व्रज ... चना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहायता ... ाननेवाला भागवत को अच्छीतरह से समझसक्ताहै यह पुस्तक ... रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराणहै बि... श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ताहै इसका

पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डकी भूमिका ॥

प्रकटहो कि इसपुस्तकमें नारायणजीकी कथाकी प्रशंसा, वैष्णवोंके लक्षण, गंगाजी और प्रयागजीका माहात्म्य, वीरवरका सुपेण राजाकी सभामें जाना, गंगासागरसंगम, गंगाजी के जलकी बूंदों और गंगाजीका माहात्म्य, चम्पाके फूलकी महिमा, भगवान्के पूजाकी विधि, पीपलके वृक्षका माहात्म्य, ज्येष्ठसे कार्त्तिकतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य,भगवान्की पूजा,रामजीके नाम और भगवान्का माहात्म्य, पुरुषोत्तमक्षेत्र में भद्रतनुजी को वरप्राप्ति, पुरुषोत्तमतीर्थ, भगवान्, सबदान, अन्न, जल, एकादशी और तुलसीजीका माहात्म्य इतिहास-समेत तुलसी और अतिथिका माहात्म्य तथा युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य ललित देवनागरीभाषा में वर्णन कियागयाहै–जिसको बाबूप्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नावप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलने संस्कृतसे प्रत्यक्षरका भाषानुवादकिया और ईश्वरेच्छासे उत्तम अक्षरोंमें सफ़ेद काग़ज़पर छपकर प्रकाशित हुआहै यह पुराण सब पुराणोंमें शिरोमणि है इससे हरिभक्त लोग इसको देखकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहणकर यंत्रालयाध्यक्षको धन्यवाद देंगे ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डका सूचीपत्र ॥

इति ॥

पद्मपुराण भाषा ॥

सप्तम क्रियायोगसारखण्ड ॥

पहला अध्याय ॥

नारायणजी की कथाकी प्रशंसा वर्णन ॥

मैं लक्ष्मीके स्वामी के कमलरूपी दोनों चरणोंकी निरन्तर वंदना करताहूं जोकि ब्रह्मा और महादेव आदिक देवताओंकी पंक्तियोंके नख शिररूपी भ्रमरके मालारूप, निर्मल, भक्तिसे योगियों के मनरूपी तालाब के सुषमासमूह के पुष्टकरनेवाले, गङ्गारूपी जलके मकरन्दरूपी बिन्दुओं के समूह और संसाररूपी दुःखके नाश करनेवाले हैं १ सुन्दर सूकरकी देह धारण करनेवाले हरि देवजी के नमस्कार हैं जो भगवान् अनेक प्रकारकी मूर्तियों को धारणकर सम्पूर्ण संसारकी रक्षा करते हैं जिनके चरणोंकी पूजन में तत्पर मनुष्य फिर संसाररूपी समुद्र में नहीं स्नान करते हैं और जिन प्रभुजी का निरन्तर सब प्राणियोंके हृदयरूप कमल में रहनेका स्थान है २ जो देव वेदोंसे सब धर्मोंको लेकर व्यासजीके स्वरूपसे संसारके कल्याणके लिये पुराणों में कहते भये ऐसे लक्ष्मीसंयुक्त भगवान्की वन्दना करताहूं ३ एक समय में सब लोकोंके कल्याण की इच्छा करनेवाले सम्पूर्ण मुनि सुन्दर नैमि-

षारण्य में मनोरम गोष्ठी करते भये ४ तिसी अन्तर में महाते-
जस्वी, व्यासजीके शिष्य, महायशस्वी, शिष्यसमूहोंसे युक्त सूत-
जी भी भगवान्का स्मरण करते हुए आते भये ५ तिन शास्त्रके
अर्थके पार जानेवाले सूतजीको आते देखकर तपस्वी शौनकादि-
क सब मुनि उठकर नमस्कार करते भये ६ और सब धर्मोंके जान-
नेवालोंमें श्रेष्ठ सूतजीभी सहसा भक्तिसे तिन परमवैष्णव मुनियों
के पृथ्वी में दण्डवत् नमस्कार करते भये ७ फिर सब शिष्यस-
मूहोंसे युक्त महाबुद्धिमान् सूतजी श्रेष्ठ मुनियोंके दियेहुए श्रेष्ठ
आसनपर मुनियों के बीचमें बैठतेभये ८ तहांपर बैठेहुए सूतजीसे
मुनियों में श्रेष्ठ शौनक नम्रतायुक्त हाथजोड़कर यह बोले ९ कि हे
महर्षे! सब जाननेवाले, भगवन्, सूतजी! कलियुगके प्राप्त होने में
मनुष्योंके किस उपायसे बहुत भक्ति होती है १० क्योंकि कलियुग
में तो सब मनुष्य पापकर्म में रत और वेदकी विद्यासे हीन होंगे
तिनका कल्याण कैसेहोगा ११ और इस युगमें अन्नहीमें प्राप्तप्राण,
मनुष्योंकी थोड़ी उमर,धनहीन और अनेक प्रकार के दुःखोंसे पी-
ड़ित होंगे १२ हे द्विज! शास्त्रोंमें परिश्रमसे साध्य सुकृत क्रियागया
है तिससे कलियुगमें कोई भी मनुष्य सुकृत नहींकरेंगे १३ फिर सु-
कृतके नाशहोने और पापकर्ममें प्रवृत्त होनेसे सब दुष्ट आशयवाले
वंशसमेत नाशको प्राप्तहोजावेंगे १४ तिससे हे अत्यन्त श्रेष्ठ सूत
जी! थोड़े परिश्रम और थोड़ेही द्रव्यसे जिस प्रकार महापुण्य होवे
तिसको कहिये १५ जिसके उपदेश से मनुष्य पुण्य वा पाप करते
हैं तो वह भी तिसका भागी होजाता है यह शास्त्रों में निश्चित
है १६ पुण्यका उपदेश, दयासंयुक्त, कपटरहित, पापमार्ग का
विरोधी है ये चारों केशवजीके सदृश हैं १७ संसारमें जो ज्ञान पा-
कर दूसरों को नहीं देताहै उसको ज्ञानरूपी भगवान् प्रसन्न की
नाईं नहीं देखते हैं १८ बुद्धिमान्, ज्ञानरूपी रत्नसे दूसरों को सं-
तोष करनेवाला मनुष्य निश्चय मनुष्य रूप धारण करने हारा
भगवानही है १९ हे मुनियों में शार्दूल! वेद और वेदाङ्गके पार-
गामी आपही हैं आपको छोड़कर दूसरा कहनेवाला कोई नहीं है

क्योंकि आप व्यासजीसे शिक्षा पायेहुए हैं २० तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! तुम धन्य और वैष्णवों में आगे होनेवाले हो जिससे सब लोकोंके कल्याणकी सदैव वाञ्छा करते हो २१ अब जो तुम्हारे सुनने की इच्छा है तिसको सब मनुष्यों और विशेषकर वैष्णवों के कल्याण के लिये कहताहूं सुनिये २२ जिस सबको जैमिनि के पूंछनेपर व्यासजीने कहा था तिसको सुनिये महर्षि, सदैव योगाभ्यास में रत जैमिनि २३ मुनिश्रेष्ठ शिरसे व्यासजीके प्रणाम कर पूंछते भये कि हे भगवन्! सब धर्म के जाननेवाले, सत्यवती के पुत्र व्यासजी २४ कलियुगमें किससे मोक्ष होता है तिसको मूल से मुझसे कहिये सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जैमिनि के वचन सुनकर सन्तुष्टमन व्यासजी मंगलसंयुक्त कथाको प्रारम्भ करते भये बोले कि हे मुनियोंमें शार्दूल महाबुद्धिमान् जैमिनि तुम धन्यहो २५। २६ जिससे सदैव नारायणकी कथा सुननेकी वाञ्छा करते हो जिस जिसकी अच्छी कथाके सुनने में बुद्धि प्रवृत्त होती है २७ तिस तिस के मोक्षका देनेवाला ज्ञान होता है यह मुनिलोग कहते हैं और पृथ्वीमें जिस पापीको वैष्णव कथा नहीं रुचती है २८ उसको ब्रह्माने वृथाही उत्पन्न कर पृथ्वी को भारयुक्त किया है पृथ्वी कथाके कहने के लिये वैष्णव मनुष्यों से श्लाघित है २९ और तिसको झूंठ की नाईं जो कहता है वह पापियों में श्रेष्ठ जानने योग्य है हे मुनियों में श्रेष्ठ! जिस दिनमें भगवान्की कथा नहीं सुनी जाती है ३० वही दिन दुर्दिन मानताहूं मेघोंसे आच्छादित दुर्दिन नहींहै जहां जहां पृथ्वी के भागमें वैष्णवीकथा वर्तमान होती है तिसके पासको भगवान् कभी नहीं छोड़ते हैं और जो मनुष्य वैष्णवकथाके आरम्भमें विघ्न करताहै ३१।३२ तिसको शापदेकर देवताओंसमेत भगवान् चलेजातेहैं और वासुदेवजी का प्रभाव सुनकर जे मनुष्य प्रसन्न होते हैं ३३ वेही देवताओंके अंश, पूज्य, देखनेके योग्य और अत्यन्त श्रेष्ठ जानने योग्यहैं और नारायणजी का प्रभाव सुनकर जे हँसते हैं ३४ वे दानवोंके अंश नरकभागी मनुष्य जानने यो-

ग्य हैं तहां पर सब गङ्गादिक तीर्थ, ३५ देवर्षि, देवता, तपस्वी मुनि रहते हैं जहांपर मनुष्यसमूहों के सुनते हुए पापरूपी व्याधि के नाश करनेवाली नारायणजी की कथा प्रतिदिन वर्तमान रहती है हे मुनि! क्रियायोगसार बहुत द्रव्य देनेवाला, पाप नाशनेहारा ३६। ३७ नारायणजी की कथा से युक्त और इतिहास सहित है तिसको सुनिये ३८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेक्रियायोगसारेजैमिनिव्याससंवादेप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

वैष्णवों के लक्षण वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! सृष्टिके आदि में सब जगत्के रचना करने की इच्छाकर महाविष्णुजी उत्पन्न करने, पालन करने और संहार करनेवाली तीनमूर्ति आपही होतेभये १ श्रेष्ठ पुरुष महाविष्णुजी आत्मासे दहिने आत्मा को प्राप्त होकर इस संसारकी सृष्टिके लिये ब्रह्मारूप रचते भये २ तिस पीछे पृथ्वी के स्वामी महाविष्णुजी संसारके पालन के लिये बायें अंश से अपना अंश केशवविष्णुजी को रचते भये ३ तदनन्तर संसारके संहारके लिये लक्ष्मी के स्थान प्रभुजी मध्य अंगसे नाशरहित महादेवजी को रचते भये ४ रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण इन तीन गुणके आत्मा पुरुषको कोई ब्रह्मा कोई विष्णु और कोई शङ्कर कहते हैं ५ एकही विष्णु तीन प्रकारके होकर संसारको रचते, पालते और संहार करतेहैं तिससे श्रेष्ठमनुष्य तीनों लोकोंमें भेदनहीं करें ६ इस महाविष्णु परात्माकी आद्या प्रकृति, भूत संसार का आदिकारण विद्या और अविद्या गाईजाती है ७ भाव अभाव का स्वरूप, संसार का हेतु, सनातनी, ब्राह्मी, लक्ष्मी और अम्बिका ये तीनमूर्ति सहसा से होती भई ८ आदिपुरुष भगवान् आद्या प्रकृति को संसारके उत्पन्न, पालन और संहारमें युक्तकर तहांहीं अन्तर्द्धान हो जाते भये ९ फिर जिनकी आज्ञा से ब्रह्माजी महाभूत पृथ्वी, आकाश, पवन, जल और तेजको पंचसमाधिसे रचकर १० भू, भुव,

स्व, मह, जन, तप और सत्य इत्यादिक लोकोंको रचते भये ११ फिर अतल तिसके नीचे वितल, सुतल, तलातल, १२ महातल, रसातल और क्रमही से सबसे नीचे पातालको रचते भये १३ फिर देवताओंके निवास के लिये पृथिवीके मध्यमें रत्नसानु, सुवर्ण के समान उज्ज्वल महापर्वत को रचकर १४ मन्दर, चरम, त्रिकूट, उदयाचल और अनेक प्रकारके पर्वतों को रचते भये १५ तदनन्तर लोकालोक पर्वत और तिसके बीचमें सातों समुद्र सातों द्वीप १६ जम्बुद्वीप, प्लक्ष, तिससे दूना और प्लक्षसे दूना शाल्मली जानना योग्य है इन सबको ब्रह्माजीने रचा १७ ते प्लक्षादिक द्वीप सब भागयुक्त, सम्पूर्ण गुणों संयुक्त देव और देवर्षिकी मूर्ति हुए १८ ये सातों द्वीप सातों समुद्रसे घिरेहुए हैं तिन समुद्रों के नाम कहता हूं सुनिये १९ लवण, इक्षु, सुरा, सर्पि, दधि, दुग्ध और जल नामवाले हुए इनमें पहले से क्रमसे पीछे के श्रेष्ठ हैं २० लोकालोक पर्वत तक सब पर्वत भी क्रमसे द्विगुण हैं द्वीप द्वीपमें ब्रह्माजी वृक्ष, गुल्म, लता आदिक, तिर्यक् योनिमें प्राप्त जन्तुओंको रचकर तिस पीछे देवता, मनुष्य, नाग, विद्याधर, २१। २२ दक्षादिक पुत्र, मुनि, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालोंको भी रचते भये २३ फिर तिनके वर्तन आदिकोंको भी रचते भये हेमपर्वतके दक्षिण और विन्ध्याचलके उत्तरको २४ मुनिलोग शुभ और अशुभ फल का देनेवाला भारतवर्ष कहते हैं जे उत्तम मनुष्य भारतवर्षमें जन्म पाकर २५ धर्म कर्म करतेहैं ते सब केशवजीके समान हैं कर्मभूमिमें किये हुए शुभ वा अशुभकर्म को २६ मनुष्य भोगभूमियोंमें तिस फलको भोगताहै जो कर्मभूमिमें प्राप्त होकर धर्म कर्मोंमें उद्यत होताहै २७ उसके समान तीनों लोकों में कोई विद्यमान नहीं होताहै तिसका जन्म सफलहै और जीवन सुन्दर जीवन है २८ श्री नारायणजी की सेवामें जिसकी बुद्धि नहीं वर्तमान होतीहै वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा कीहुई पुण्यसे भी मानसी व्यथा से युक्त संसारहीमें रहताहै २९ नारायण देवदेवमें मनुष्यों की दृढ भक्ति होवे. सब सुखका देनेवाला, श्लाघ्य, निर्भय ३०

देश भी त्यागने योग्य है जहांपर वैष्णव नहीं स्थित है और ज-
न्म के इकट्ठा किये हुए थोड़े वा बहुत पाप ३१ भगवान् के भक्त
के दर्शन से तिसीक्षण में नाश होजाते हैं और जो सब पापों के
नाश करनेवाले वैष्णव के चरणजलको ३२ भक्ति से अपने शिर
में लगावे तो उसको गंगा के स्नानका कुछ प्रयोजन नहीं है जो
भगवान्‌के भक्तों का मुहूर्तमात्र भी संग करता है ३३ वह ब्रह्म-
हत्याआदिक सब पापोंसे छूट जाता है जितने धर्म कर्म भगवान्
के भक्तके आगे किये जाते हैं वे सब नाशरहित होते हैं जहांपर
वैष्णव मनुष्य मुहूर्त्त वा आधा मुहूर्त्त स्थित होते हैं ३४। ३५
वह सत्यही तीर्थ वा तपोवन है अन्न वा जल वा फल वैष्णवको
३६ जो कुछ दियाजाता है वह दान नाशरहित होता है क्योंकि
सब देवताओं का रूप वैष्णव कहा है ३७ जिसने वैष्णवको सं-
तोषयुक्त किया उसने सब देवताओं को प्रसन्न किया इस महा-
घोर, अनेक प्रकार के दुःखयुक्त संसार में ३८ भगवान् का भक्त
पुरुष कभी नहीं कष्ट पाता है तिससे हे विप्रेन्द्र जैमिनि! तुमभी
क्रियायोग से केशवजीको ३९ सदैव भक्तिसे आराधनकर विष्णु-
जीके परमपदको जावो सूतजी बोले कि हे शौनक! तिन महात्मा
व्यासजीके वचन सुनकर ४० जैमिनि शिरसे हाथ जोड़कर पूछते
भये कि हे गुरो हे मुनियोंमें श्रेष्ठ व्यासजी! आपने भगवद्भक्तका
माहात्म्य वारंवार कहा अब तिनके सब लक्षणों को इस समय
में कहिये वैष्णव मनुष्य कैसे जानने योग्य हैं ४१। ४२ जो ह-
मारे ऊपर आपकी कृपाहै तो सब आदिसे कहिये तब व्यासजी
बोले कि हे जैमिनि! मधु कैटभ राक्षसों के मारने के पहिले ब्रह्मा
ने आपही ४३ भगवान् से पूछा तब उन्होंने जो कुछ कहा तिस
को मैं जानताहूं सुनिये कल्पके अन्त में रुद्ररूपसे सब संसारको
संहारकर ४४ आपही एक भगवान् योगमायासे सोते भये तिन
योगनिद्रा से मोहित भगवान् के सोते हुए सब पृथ्वी जल के स-
मूहसे डूब गई ४५ तब भगवान्‌की नाभिकमलके ऊपर संसारके
रचनेवाले ब्रह्माजी भगवान्‌ही में मनलगाकर आदिपुरुषजी का

ध्यानकर स्थित होजाते भये ४६ तिस महाघोर समय में विष्णु जीके कानके मलसे घोर मधु और कैटभ नाम दो बड़े असुर उत्पन्न होते भये ४७ और अत्यन्त घोर दोनों दानव आकाश में घूमते हुए श्रीविष्णुजी की नाभिकमल में विष्णुजी को देखते भये ४८ तब महाबल और पराक्रमयुक्त दोनों दैत्य क्रोधसे लाल नेत्रकर ब्रह्माके मारने के लिये उद्यम करते भये ४९ तब तो संसार के रचनेवाले ब्रह्माजी हृदय से तिनका वध चिन्तनाकर मनोहर वाणी से भगवती योगनिद्राकी स्तुति करते भये ५० परमेष्ठी ब्रह्माजीका स्तोत्र सुनकर प्रीति से योगनिद्रा बोली कि तुम्हारा क्या अभिमत है तिसको कहिये ५१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे योगनिद्रे ! ये दोनों अत्यन्त घोर राक्षस मेरे मारने के लिये निश्चय किये हुए हैं इस से माया से शीघ्रही मोहितकर रक्षा करनेवाले भगवान् को छोड़िये ५२ तब तो भगवान्की निद्रा महाविष्णु जी को छोड़ देतीभई तो दोनों दानवों और भगवान् का आकाश में ५३ भुजाओं से युद्ध होताभया तब शरणागतवत्सल भगवान् पांच हज़ार वर्ष घोर युद्ध करतेभये ५४ परन्तु किसीकी न तो विजयहुई और न किसीकी हारहुई तदनन्तर महामायासे विमोहित दोनों राक्षस ५५ भगवान्से बोले कि हमसे वर मांगो तब तो हँसकर भगवान् उनसे ये वचन बोले५६ कि जो हमारे ऊपर तुम दोनों प्रसन्नहौ तौ शीघ्रही हमसे मृत्यु को प्राप्तहोजावो तब तो घोर महामायायुक्त दोनों दानव जनार्दन भगवान्से ५७ महामायासे मोहित होकर बोले कि आपको निस्सन्देह यही वर देतेहैं ५८ हे जनार्दनजी ! हम दोनोंको जहांपर पृथ्वी विना जलके है वहांपर मारिये तब तो भगवान् दोनों महासुरोंको जंघाओं पर लाकर ५९ सहसासे चित्रविचित्र चक्र की धारा से नाश करडालतेभये तब खेदरहित ब्रह्माजी भगवान् से मारेहुये मधु कैटभ राक्षसोंको देखकर देवदेवेश भगवान्की स्तुति करतेभये ६० कि परमेश्वर, शरणागतकी सब पीड़ा नाश करनेवाले, त्रिगुणात्मक, अमित विक्रमवाले नारायणजी के नमस्कार

हैं ६१ हे अपार कीर्तिवाले! आप के दोनों चरणकमलों में प्राप्त हुए मनुष्य कभी विपत्तिको नहीं प्राप्तहोते हैं यह मैंने जाना है और आपने शीघ्रही मेरी बड़ी विपत्तिको नाश करदिया है ६२ हे तीनोंलोकके स्वामी! हे देवदेव! हे शरणागतपालक! हे ईश! आप योगेश्वर और दयासंयुक्त हैं और शत्रुओंके समूहों के नाश करने में निर्दय हैं जिससे कि इन दोनों राक्षसों को मारकर मेरी रक्षाकी है ६३ यद्यपि मधु कैटभ राक्षस अत्यन्त कठिन थे तिसपर भी अपने जीवनके नाशके वरदानोंसे प्रसन्नकर उनको मारते भये हो सब शुभके देनेवाले ईश्वर आपही हो ६४ तिसी पुरुषके ये तीनों सुन्दर लोक हैं अपने कुलसमेत सब वैरी नाश होजाते हैं हे देवताओंके स्वामी! जिसको आप यहांपर दयाओंसे देखते हैं उसके मित्र और सब बान्धव वृद्धिको प्राप्तहोते हैं ६५ हे लक्ष्मी-जी के मुखरूपी कमलके भौंर! हे देवोंके देव! हे संसारके मनुष्यों के भय और शोकके नाश करनेवाले! हे नाथ! आपके पवित्र दोनों चरणकमलोंके आश्रय मेरी निरन्तर रक्षा कीजिये आपके नमस्कार है ६६ हे कमलनयन! हे लक्ष्मीके स्वामी! हे सब प्राणियोंके स्वामी! हे संसार के पालन करनेवाले! आपके नमस्कार है ६७ हे पापरहित! भक्तों के ऊपर प्रसन्न, भक्तिके देनेवाले, ज्ञानरूप आपके नमस्कार है मुझको शरण लीजिये ६८ हे जगन्मय! आपके नमस्कार है आप रक्षाकीजिये ६९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इन वा और स्तोत्रों से संसारके रचनेवाले ब्रह्माजी से स्तुति कियेगये देवभगवान् परमप्रीति को प्राप्त होकर ७० ब्रह्मा जी से बोले कि हे कमलासन! तुम्हारी भक्तिसे इस स्तोत्रसे प्रसन्न हूं आपका पृथ्वीमें क्या अभिमत है तिसको कहिये मैं उसे आपको दूंगा ७१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवोंके स्वामी! हे दया के समुद्र! हे जगन्मय! जो आप प्रसन्नहों तो मुझे यह वर दीजिये कि आपके भक्तों को आपदा नहीं होवें ७२ तब श्रीभगवान् बोले कि हे देवताओंमें श्रेष्ठ! ऐसाही होवे यह वर मैंने तुम्हें दिया मेरे भक्तको पृथ्वी में कभी विपत्ति नहीं होगी ७३ वैष्णवों के श-

रीरों में निरन्तर मैं बसताहूं तिससे वैष्णव मनुष्य कभी आपदाको नहीं प्राप्त होवें ७४ तब ब्रह्माजी बोले कि हे संसारके स्वामी! आपने निस्सन्देह सब कुछदिया जो इन महादैत्यों को लड़ाई में नाशकर दिया ७५ हे प्रभो! कुछ काल प्राप्त होकर जो इस स्तोत्रसे श्रेष्ठ भक्तिसे आपकी स्तुति करता है तो उसके आप रक्षा करनेवाले होजाते हैं ७६ आश्चर्य की बात है कि देवताओं के ध्यान करनेमें भी आप नहीं आसक्ते हैं सोई आप वैष्णवोंकी देहों में भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७७ हे स्वामिन् क्षणमात्र भी आपके प्रसन्न होनेसे क्या होताहै सोई आप वैष्णव के संगसे भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७८ हे कैटभ के वैरी! हे केशवजी! वैष्णव कौनहैं और तिनके कौन लक्षण हैं वे सब कैसे जाने जाते हैं यह हमसे कहिये ७९ तब श्रीभगवान् बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ ब्रह्मा! वैष्णवों के लक्षण सौ करोड़ कल्पों में भी अच्छेप्रकार कहने को मैं समर्थ नहींहूं संक्षेप से सुनिये ८० संसार वैष्णवों के अधीन है देवता वैष्णवों से पालितहैं और मैंभी वैष्णवोंके अधीन हूं तिससे वैष्णवश्रेष्ठहैं ८१ हे ब्रह्मन्! वैष्णव मनुष्य को छोड़कर क्षणमात्र भी मैं और जगह नहीं स्थित होताहूं क्योंकि वैष्णव मेरे बान्धवहैं ८२ कामक्रोध से हीन, हिंसा और दम्भ से वर्जित और लोभ मोह से जे हीनहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८३ मत्सरहीन, दयायुक्त, सबप्राणियों के कल्याण की इच्छा करने वाले और सत्य बोलनेवाले वैष्णव जानने चाहिये ८४ धर्मके उपदेश करने वाले, धर्मके आचारके धारण करनेवाले और गुरुजी की सेवा करनेवाले वैष्णव जानने योग्यहैं ८५ तुमको मुझको और महादेवजीको जे बराबर देखतेहैं और अतिथि की पूजाकरतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८६ वेदविद्यामें निरुक्त, ब्राह्मणकी भक्तिमें सदैव रत और पराई स्त्रियों में जे नपुंसक हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८७ जे भक्तिभावसे एकादशीका व्रत करते हैं और मेरे नामों को गातेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८८ देवता का मन्दिर करनेवाले, तुलसीकी माला धारण करनेहारे और जे पद्माक्ष धारण करनेवाले

हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८९ शंख, चक्र, गदा और पद्म इन मेरे आयुधों से चिह्नित जिनके शरीर हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९० जिनके गलेमें आंवलेके फलके माला हैं और तिनके पत्रों से मेरी पूजा करतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९१ तुलसी की जड़की मिट्टियोंसे जे तिलक देते हैं और तुलसी के काष्ठकी पङ्कसे जे तिलक देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९२ गंगाजी के स्नानमें रत, गंगाके नाम में परायण और गंगाके माहात्म्य कहनेवाले वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९३ जिनके घरमें शालग्रामकी मूर्ति सदैव बसती है और भागवत शास्त्र बसता है वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९४ जे नित्यही मेरे स्थानों को शुद्ध करते हैं और वहांही दीप देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९५ जे हमारे पुराने मन्दिरको फिर नया कर देते हैं और तहांपर मन्दिर की शोभा को करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९६ जे डरपोंकों को अभय देते और ब्राह्मणों को विद्यादान देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९७ हमारे चरणके जलों से जिनके मस्तक सींचे जाते हैं और मेरी नैवेद्यको खाते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९८ जे भूख और प्यास से पीड़ितों को अन्न और जल देते हैं और जे योगकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९९ बगीचाके लगवानेवाले, पीपलके लगवाने हारे, और जे गऊकी सेवाकरते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०० जे अत्यन्त भक्त पितृयज्ञ करते और दीनोंकी सेवाकरते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं १०१ तालाब और गांवके करनेवाले और जे कन्यादानमें रतहैं और जे सास और श्वशुरकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०२ ज्येठी बहन और ज्येठे भाई की जे सेवा करते हैं और पराई निंदा नहीं करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं१०३ हेब्रह्मन्! वैष्णवों में सबगुण हैं दोषका लेशनहीं उनके विद्यमानहै तिससे तुमभी इससमय में वैष्णवहोवो१०४ और हे-प्रजापते! क्रियायोगोंसे मेरी नित्यही आराधनाकरो तो निस्सन्देह

सब तुम्हारेकल्याण शीघ्रहीहोंगे १०५ हेचतुर्मुख! जे देवता, ब्राह्मण और पराई द्रव्यको विषकेसमान देखतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०६ पाखण्ड भक्तिसे रहित शिवजीकी भक्तिमें परायण और चतुर्दशीके व्रतमें रतोंको वैष्णव मनुष्य जानिये १०७ यहांपर बहुत कहने और वारंवार भाषण करनेसे क्याहै जे मेरीपूजा करते हैं वे वैष्णव जानिये १०८ फिरपहलेके स्थितकी नाईं सब संसारको रचिये ऐसाब्रह्माजीसे कहकर परमेश्वर जी तहांहीं अंतर्द्धान होगये १०९ तदनन्तर ब्रह्माजी पहले की नाईं सब संसार को रचकर क्रियायोगोंसे भगवान् को पूजनकर परमपदको जाते भये ११० जे इसअध्यायको भक्तिसे नारायणजीके आगे पढ़ते हैं वे सब पापों से छूटकर अन्त समयमें हरिजीके मन्दिरको जाते-हैं १११॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेक्रियायोगसारेद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय॥

गंगाजीकामाहात्म्यवर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् व्यासजी! क्रियायोग का तत्त्व मुझसे कहिये आपके आगे मैं क्रियायोगके जाननेकी इच्छा करता हूं १ तब व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि! इस पृथ्वी में मनुष्यका शरीर दुर्लभहै और मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मोक्ष के लिये योगका अभ्यास करै २ क्रियायोग और ध्यानयोग ये दो योग कहेगये हैं तिनदोनोंमें पहला क्रियायोग करनेवालोंको सबकामना देनेवाला है ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! गङ्गा, लक्ष्मी और विष्णुजीकी पूजा दान, ब्राह्मणों की भक्ति तथा एकादशी व्रत में भक्ति, ४ आँवला और तुलसी की भक्ति, अतिथिपूजन ये क्रियायोग के उत्पन्न हुये अंग संक्षेप से कहेगये हैं ५ हे विप्र! क्रियायोग को छोड़ कर ध्यान योग में सिद्धि को नहीं प्राप्त होसक्ता है क्रियायोगमें रतहुआ विष्णु-जी के परमपद को प्राप्त होता है ६ तब जैमिनिजी बोले कि हे प्रभो क्रियायोग के जितने उत्पन्न हुए अंग आपने कहे हैं तिनके माहा-

हम्य भी कहिये जो मेरे ऊपर आपकी दयाहुई हो ७ हे ब्रह्मन्! गङ्गाजीके कौन गुण हैं विष्णुजी की पूजाका फल क्याहै कौन दान श्रेष्ठ हैं ब्राह्मणों की क्या भक्ति है ८ एकादशीका फल क्याहै आंवले की भक्ति और तुलसीकी भक्ति कैसी है अतिथिपूजन क्याहै ९ हे मुने! ये सब कहिये इन के सुनने को मेरा आदर है तीनों लोकमें आप को छोड़कर दूसरा कोई नहीं कहसक्ताहै १० तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिन! बहुत अच्छा प्रश्न तुमने किया है निश्चय तुम्हारा मन निर्मल है जिससे इस छिपीहुई कथाके सुननेको तुम्हारे श्रद्धा और कौतुकहै ११ गङ्गाजीके गुण अच्छे प्रकार कहनेको नहीं समर्थ हूं तिससे संक्षेपसे कहताहूं एकचित्त होकर सुनो १२ गंगाके अत्यन्त कोमल दो अक्षर जपकरने से मैं महाभूत रसायन मानताहूं और पापचलाजाता है १३ सबजगह गंगाजी सुलभ हैं गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर का संगम इन तीनों स्थानोंमें दुर्लभ हैं १४ हे मुने! मनोरम गंगाद्वार में इन्द्रसमेत सब देवता आकर स्नानऔर दान आदिक करते हैं १५ दैवयोगसे वहांपर मनुष्य, पशु और कीटआदिक भी जे देहछोड़ देतेहैं तो परमपदको प्राप्तहोजाते हैं १६ हे विप्रर्षे! यहांपर मेरेकहेहुए इतिहासको सुनिये जिसके अच्छेप्रकार सुनतेही सबपापोंसे छूटजावोगे १७ पहले इसपृथ्वीमें सोमवंश में उत्पन्न, बलवान्, सबधर्मका जाननेवाला मनोभद्रनाम राजाहुआहै १८ तिसकी प्रियवचन बोलने वाली, पतिव्रता, महाभाग्यवती, सब लक्षणसंयुक्त हेमप्रभा नामस्त्री हुईहै १९ यहमहाबलवान् राजालड़ाईमें सबशत्रुओंको मारकर समुद्र और द्वीपोंसमेत सबपृथ्वीकी पालनाकरताभया है २० एकसमयमें यहराजा महायशस्वी सभामें अपनेमंत्रियों को बुलाकर प्रीतिसे यहवचनबोला २१ कि हे मंत्रियो! यहसबपृथ्वी मेरी रक्षाकीहुई है पुत्र, बलऔर वाहनों समेत सबशत्रु मैंने नाश किये हैं २२ अपने गोत्रों की रक्षाकी है दानों से ब्राह्मणों को प्रसन्न किया है सज्जन और पुत्र, बल और वाहनों समेत सबदेवता भी प्रसन्न किये हैं २३ दक्षिणाओं समेत सबयज्ञोंसे अपनेगोत्रों

की रक्षाकी है परन्तु इसबड़ी भारी वृद्धावस्थासे मेराबल हर लियागया है २४ इससे दुर्बल होकर मैं कुलकर्म करनेको नहींस-मर्थहूं सामर्थ्यहीन पुरुषमें राजलक्ष्मी नहींशोभित होतीहै २५ जैसे सबगहनोंसे युक्त वृद्धअंगवाली स्त्री नहीं शोभित होती है पृथ्वी में तबतक सब शत्रु डरते हैं २६ जबतक पवित्र नेत्र से सामर्थ्यहीनको नहीं देखतेहैं सबगुणोंसे युक्त और तिसीमें प्राप्त मनवाले २७ वृद्धराजाको इस प्रकार पृथ्वी छोड़ देतीहै जैसे रक्षा की हुई भी व्यभिचारिणी स्त्री अपने पतिको छोड़ देतीहै सब गुण भक्तिसे लाभ होसक्ते हैं बड़ा यश गुणोंसे लाभ होता है २८ क-ल्याण दानसे मिलता है पृथ्वी बलसे मिलती है सामर्थ्यहीन, कृ-पण,शत्रुके शासनमें निश्चित, २९ मूर्खमात्र वचनका ग्रहण करने वाला, शत्रुओं को आनन्द देनेवाला सो राजा है तिससे हे श्रेष्ठ मंत्रियो ! मैं सब राज्य बांटकर ३० पुत्रोंको देनेकी इच्छा करताहूं जो आप लोगोंकी सम्मतिहोवे तब मंत्री बोलेकि हे राजन् ! नीति के जाननेवाले आपने जो ये वचन कहे हैं ३१ सोई हम लोगोंके भी मत हैं इस में सन्देह नहीं है तदनन्तर राजा की आज्ञा से उनके दोनों श्रेष्ठ पुत्र सभामें आये ३२ वीरभद्र और यशोभद्र जिनके नाम हैं ये सब गुणोंसे युक्त, कुमार, प्रिय बोलनेवाले, ३३ पिताके भक्त, सदैव शान्त, बलवान् और धर्ममें तत्परहैं तब राज-नीति जाननेवालों में श्रेष्ठ राजा सहसासे ३४ कुतूहलपूर्वक सब राज्य बांटकर दोनों पुत्रोंको देता भया इसी अन्तर में एक गृध्र अपनी स्त्रीसंयुक्त ३५ आकर तिस सभाके बीचमें बैठता भया सूतजी कहते हैं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो तिन गृध्र और उसकी स्त्रीको अत्यन्त प्रसन्न आतेहुए देखकर ३६ राजा दोनोंसे बोला कि किस हेतुसे आपका शुभ आगमन हुआहै तिसको कहिये तब गृध्र बोला कि हे शत्रुओं के ताप देनेवाले राजन् ! मैं गृध्रहूं और यह मेरी स्त्री है ३७ आनन्दसे आपके दोनों पुत्रोंकी सभा देखने के लिये आया हूं पूर्वजन्ममें इन दोनोंने बड़ी विपत्ति देखी थी ३८ इस जन्ममें इनकी सम्पत्ति देखने के लिये हम दोनों आये हैं तब तो विस्मय

युक्तहोकर राजा फिर बोला ३९ कि हेगृध्र! अत्यन्त अद्भुत वचन आप से यह मैंने सुने इनके पूर्वजन्म का वृत्तान्त आप ने कैसे जाना ४० श्रेष्ठ पक्षी! जो तत्त्व से इनके पूर्वजन्मका वृत्तान्त जानते हो तो सम्पूर्ण हमसे कहो ४१ तब गृध्र बोला कि हे राजन्! द्वापरयुग में ये दोनों शूद्र, गर और संगर नामी सत्यघोष के पुत्र थे ४२ एकही समय में ये दोनों अपने घरमें मरगये तब इनके लेनेके लिये बड़ी डाढ़वाले यमराजके दूत ४३ फँसरी हाथ में लेकर सैकड़ों करोड़ आकर इन दोनों मदोद्धतों को चमड़े की फँसरी से बांधकर ४४ अति दुर्गम मार्गसे यमराज के स्थान को लेगये इनको देखकर धर्मराज चित्रगुप्त से बोले ४५ कि हे चित्रगुप्त! इन दोनों के सब वृत्तान्त विचारिये तब यमराज जी की आज्ञासे चित्रगुप्त सब शुभ अशुभ कर्म ४६ मूलसे विचारकर यमराजजी से बोले कि हे महाबाहो! ये दोनों सत्यही पुण्यकारी व्रत में बड़े अन्तःकरण वाले हैं ४७ कुछ इन्होंने बुरेकर्म कियेहैं जो कि सब कर्मके नाश करनेवाले होगयेहैं दान करके ब्राह्मण को इन्हों ने नहीं दियाहै ४८ हे राजन् तिसी कर्मसे ये दोनों नरक में प्राप्तहोंगे क्योंकि दाता दानकरके जो ब्राह्मण को नहीं देताहै ४९ तो वह सब प्राणियों के भय देने वाले घोरनरक में प्राप्तहोता है दाता दान को न स्मरण करै और दानका ग्रहण करनेवाला न मांगै ५० तो दोनोंका जबतक चन्द्रमा और सूर्यरहेंगे तबतक नरक में बास होताहै तिससे हे प्रभो! ये दोनों महापापी ब्राह्मणकी द्रव्य के हरनेवालेहैं दूत इनको शीघ्रही घोरनरक में लेजावें ५१।५२ हेराजन् तब तो यमराजजी की आज्ञासे क्रोध से ओष्ठोंको चबाते हुए उनके दूत इनदोनोंको घोरनरक में डालतेभये ५३ और तिसी दिन इस स्त्रीसमेत मुझको भी यमराज के दूत आकर यमराजके स्थान में प्राप्तकरते भये ५४ मैं सुननेवालों को विस्मय देनेवाले अपने कियेहुये कर्मको सब मूलही से कहताहूं तिनको सुनिये ५५ पूर्व समय में मैं महाकुलवान्, सौराष्ट्र देशका रहनेवाला, वेद और वेदाङ्गका पारगामी, सर्वग नाम ब्राह्मणहूं ५६ और यहयशस्विनी,

पतिव्रता, महाभागा, पवित्र कुलमें उत्पन्न, मंजूकषानाम हमारीस्त्री है ५७ हे महाभाग ! विद्या, अवस्था और धन से मतवाला मैं युवावस्था में एकसमय मनसे माता पिता का अनादर करताभया ५८ बड़ी सभामें श्लाघ्य, वनमें स्थित, सबकर्म करनेवाला, धनवान् सुन्दर, ज्ञानी और जातिके पालन में तत्पर मैं था ५९ और मेरे माता पिता पापमें परायण, मुखर, दयाहीन, और पाखण्डियों के संगमें लोलुपथे ६० पौरुष, जीवन, धन, कुल, विद्या और सब यशको उन्हों ने निष्फल करदिया था ६१ हे राजन् ! यहमन से बिचार कर मैंने वारंवार अनादर से माता पिताकी शुभकी देने वाली सेवाको छोड़दियाथा ६२ इसी कर्म से स्त्रीसमेत मैं यमराज की आज्ञा से दूतों के द्वारा जहांपर पापियों में श्रेष्ठ ये दोनों थे वहीं पर छोड़ा गया ६३ इन दोनों पापियों के साथ स्त्री समेत मैं घोरनरक में जितने कालस्थित रहा तिसको सुनिये ६४ हे श्रेष्ठ राजन् ! हजार करोड़ युग और सौ करोड़ युग नरकके महादुःख हमलोगोंने सहे ६५ फिरनरक के अन्तमें स्त्री समेत मैं मरेहुओं के मांसकाखानेवाला गृध्रपक्षी के कुलमें उत्पन्न हुआ ६६ और ये दोनों नरक के अन्तमें अपने कर्मोंका फलभोगने के लिये टीड़ियों के वंश में उत्पन्न हुए ६७ हे राजन्! जो इन्हों ने टीड़ियोंके जन्म में कर्मकिये तिन श्रोताओं के विस्मय देने वालोंको कहताहूं सुनिये ६८ एकसमय में बड़ी आंधी आई कि जिससे उड़कर ये दोनों निर्मल गंगाजीके बीचमें गिरपड़े ६९ निर्मल अंग होनेके कारण से गिरतेही शीघ्रही मरगये और सबपाप इनके जाते रहे ७० तदनन्तर इनके लेने के लिये सुन्दर नेत्रवाले दूत सबभोगोंसे युक्त विमानों को लेकर आये ७१ तब सब पापों सेछूटकर तुलसी की मालासे शोभित होकर सुन्दर विमान पर चढ़कर विष्णुजी के पुरको जातेभये ७२ तितनेही समय अव्यक्त जन्मवाले ब्रह्माजीके यहां भी रहे फिरब्रह्माजीकी आज्ञासे इन्द्र के पुरको आये ७३ वहांपर देवताओं के दुर्लभ सुखको भोगकर तितनेही समय तक पृथ्वी भोगकरनेके लिये ७४ ये दोनों महायश-

न्धी आपके पवित्रवंश में उत्पन्न हुये हैं गङ्गाजीमें देहछोड़नेवाले का फिर जन्म नहीं होता है ७५ तिसपर भी ये अत्यन्त पुण्यात्मा पृथ्वी भोगकरने के लिये उत्पन्न हुये हैं बहुत कालतक पुत्र पौत्र संयुक्तहोकर सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगकर ७६ गंगाजीमें मरणपाकर योगियों के दुर्लभ नारायणजीके सायुज्यको प्राप्तहोंगे ७७ हेराजा-ओंमें शिरोमणि! जातिस्मरके प्रभावसे इनदोनों के पूर्वजन्म का यह सब वृत्तान्त मैंने कहा ७८ ये दोनों गंगाजीमें मरण पाकर इ-स दशाको प्राप्तहुये हैं दुरात्मा हम दोनोंकी रक्षाकौन करेगा ७९ पिताका अपमानकरना मनुष्यों को क्लेश देता है हे राजन् मैंने अच्छी तरहसे देखाहै ८० पिता की अभक्ति इस लोक और पर-लोक में दुःख देनेवाली है इसलोक में सम्पत्ति के नाशके लिये है और परलोक में नरक के लिये है ८१ हे राजन्! मैं ब्रह्महत्या-दिक पाप को श्रेष्ठ मानताहूं कभी तो उस से छुटकारा मिलता है और यह सदैव होती है ८२ दुःख से इकट्ठे किये हुये पुण्य-कारी वृक्ष सब क्लेशों के नाश करनेवाले को पिताके अनादर रूप कुल्हाड़े से मनुष्य पृथ्वी में काटडालते हैं ८३ और हे शत्रुओं के तापदेने वाले! जोकुछ पिताके मुख में दिया जाता है तिसको आपही विष्णु जी भोजन करते हैं क्योंकि पितृरूप हरि जी हैं ८४ ये प्रत्यक्ष देवमाता पिता की दिनरात सेवा करते हैं तिनको भगवान् के प्रसाद से सब सिद्धि होती है ८५ और पिता की भक्ति से मनुष्य हीन होकर जितने दिन स्थित रहते हैं तितने-ही हज़ार कल्प वे नरक में स्थित रहते हैं ८६ तिसी से इससमय में हमको महादुःख मिला है यह मैं नहीं जानताहूं कि स्त्रीसमेत मेरा कब मोक्ष होगा ८७ व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमि-नि! ये गृध्र के वचन सुनकर राजा प्रसन्न और वारंवार विस्मित होकर बोला ८८ कि हे गृध्र! तुम्हारे मुखसे ये आश्चर्ययुक्त वचन सुनकर मेरे और इनके हृदयमें प्रतीति नहीं होती है ८९ तदन-न्तर हे श्रेष्ठ राजन्! यह आकाशवाणीहुई कि यह सत्यही है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९० तब तो हे जैमिनिजी! वह पक्षी स्त्रीसमेत

गङ्गाजी के माहात्म्यके कहनेसे पहलेकी नाईं स्थित होगया ९१ आकाशमें नगारे बजनेलगे श्रेष्ठ गन्धर्व गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगीं फूलोंकी वर्षा होनेलगी ९२ सब भोगोंसे युक्त सुन्दर विमान आया और भगवान् के भेजेहुए दूतोंके समूह भी आये ९३ तदनन्तर हे विप्र ! प्यारी स्त्रीसमेत गृध्र शीघ्रही विमानपर चढ़कर भगवान्के स्थानको जाताभया ९४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह अद्भुत कर्म सुनकर पुत्र और स्त्रीसमेत राजा गंगाजीकी सेवा में तत्पर होजाता भया ९५ गंगाजी के समान तीर्थ तीनों लोकमें नहीं है जिनके नामके उच्चारण करनेहीसे गृध्र मोक्षको प्राप्तहोजाता भया ९६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! सब पापोंका नाश करनेवाला गंगाद्वारका माहात्म्य तुमसे कहा अब और क्या सुनने की इच्छाहै९७ जे मनुष्य इस अध्यायको देवताके मन्दिर में पढ़ते हैं और जे ब्राह्मणोंके समूहोंके भक्त सुनतेहैं उनकेपाप शीघ्रही नाशहोजातेहैं९८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी ! आपके प्रसादसे मैंने गंगाद्वारका माहात्म्य तो सुना अब इससमयमें प्रयागजी के माहात्म्य सुनने की इच्छाहै१ हे मुने! गङ्गासागरके संगमका माहात्म्य कहिये पृथ्वी में आप को छोड़ कर और कोई दूसरा अच्छे प्रकार कहने को समर्थ नहीं है २ तब व्यासजी बोले कि हे वत्स ! हे ब्राह्मण जैमिनि! प्रयाग और गङ्गासागर के संगम का फल अच्छे प्रकार कहने को मैं समर्थ नहींहूं संक्षेप से सुनिये ३ हे मुने ! कोटि ब्रह्माण्डके मध्य में जितने तीर्थहैं वे सब प्रयागकी बराबरी को नहीं हैं ४ गङ्गा, यमुना और सरस्वती के संगम में ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सब देवता प्रशंसा करते हैं ५ जे मकर के सूर्य में माघ में तहांपर स्नान करते हैं तिनका आगमन विष्णुलोक से कभी नहीं होता है ६ हजार करोड़ गौवों का दान, अश्वमेध इत्यादिक यज्ञ,

मेरुपर्वत के समान सोने का दान तथा और भी दान ७ कुरुक्षेत्र, पुष्कर, प्रभास और गयाजी में हवनकर ब्राह्मणों को देने से जो फल पण्डितों को मिलता है ८ तिससे करोड़गुणा फल माघ में प्रयागमें स्नान करनेसे मिलताहै तिससे सब तीर्थोंमें प्रयाग श्रेष्ठ है ९ हे उत्तम ब्राह्मण! सिंहराशि के सूर्य में गोदावरी नदी में स्नान, दान और व्रतादिकों से बहुत काल उग्र तपस्या कर १० वेद, शास्त्र और पुराणों का कहाहुआ जो नाशरहित पुण्य होताहै वही माघ में प्रयागमें स्नान करनेसे निस्सन्देह पुण्य होता है ११ काशीजीमें फाल्गुन के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में व्रतकरने से जो फल मिलता है तिसको मैं कहता हूं सुनिये १२ सब रूपका धारण करने वाला मनुष्य करोड़ जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूट कर करोड़ पुरुषों को उद्धारकर शिवजीके साथ आनन्द करता है १३ ब्राह्मण माघमासमें प्रयागमें एकबार भी स्नानकर सौकरोड़ कल्प और जगह विष्णुजीको पूजकर जो फल मिलताहै १४ वह मकर के सूर्य्यमें एकदिनभी पूजनेसे सबनाशरहित होताहै यह मैं सत्यही कहताहूं १५ मनुष्य माघमासमें जितने दिन स्थितहोता है तितने सौकल्प विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै १६ गंगा और यमुनाजीके जलमें जिसने एकबारभी स्नानकिया तो उसके दर्शनकरने से शीघ्रही सबपापों से मनुष्य छूटजाता है १७ मनुष्य जो दुस्तर संसाररूपी समुद्र के तरनेकी इच्छा करतेहैं वे भक्ति से गंगा और यमुनाजी में स्नानकर माधवजी के दर्शन करें १८ तहांपर मनुष्य जिस जिस देहकी पूजाकर पूजनकरते हैं तिसातिस को शीघ्रही निस्सदेह प्राप्तहोते हैं १९ यहांपर एकइतिहासको मैं कहताहूं सुनिये जिसके सुनन्नेसे मनुष्य सबपापोंसे छूटजाता है २० तहांपर एक महाधनवान्, देवता और अतिथियों की पूजा और ब्राह्मण की भक्ति में तत्पर प्रणिधि नाम ब्राह्मणथा २१ तिसकीधर्मपत्नी, पतिव्रता, पवित्रअंगोंवाली, शीलयुक्त, कुलमें उत्पन्न औरप्रिय बोलने वाली पद्मावती नामथी २२ हे उत्तम ब्राह्मण! श्रीब्रह्माजीने स्त्रियों के योग्य जेजेगुण रचे हैं वे सबउसस्त्री में बसतेथे २३ तदन-

न्तर प्रणिधिनाम ब्राह्मण शुभलग्न और शुभही तिथिमें बहुतधन लेकर वाणिज्यके लिये जाताभया २४ क्योंकि धनसे धर्म्म, बहुत यश और कुल मिलताहै धनके विना कुछनहीं मिलता है २५ धनहीन मनुष्य को देखकर मित्र भाग जाताहै जैसे शरद् ऋतुमें मेघ जलहीन होकर खण्ड खण्ड हो भागजाता है २६ जबतकखानेको पातेहैं तभी तक बांधव रहते हैं जिसके धन होताहै उसी के कुल और बुद्धि होती है और वही पण्डित होताहै २७ द्रव्यों से हीन मनुष्य जीवताहुआभी मरेके समान है धर्म, द्रव्य और विद्याके इकट्ठा करने से जिसकी बुद्धि लौट जातीहै २८ वह अत्यन्त मूर्ख जानना चाहिये अधिक का अधिकही फल होताहै इससे निरन्तर धर्म करना चाहिये और सदैव धन इकट्ठा करना योग्य है २९ निपुण पुरुषों को सदैव विद्या सीखनी चाहिये दानसे धन और विद्या प्रतिदिन बढ़ती है ३० विना मनुष्यों की रक्षाकरनेके धर्म नहीं बढ़ता है काष्ठ, तृण और भूसीको भी पाकर न त्यागकरे ३१ क्योंकि इकट्ठा करनेवाला मनुष्य कभी कष्ट नहीं पाता है तदनंतर प्रणिधि बनियां स्थानमें स्त्री को छोड़कर ३२ घरके व्यापार में चतुरहोकर वाणिज्यके लिये जाताभया तिसपीछे एक समय में प्रणिधि बनियें की स्त्री उद्वर्तन आदिक लेकर ३३ सखियों के साथ स्नानकरने के लिये जाती भई तब धनुर्ध्वज नाम पापी चाण्डाल ३४ अपनी इच्छासे स्नानकर्म अच्छेप्रकार करतीहुई तिसको देखताभया जो कि फूलेहुए सोनेकेफूलसे युक्त, फूलेहुए कमलही के समान मुखवाली, ३५ हरिणकेबच्चे के तुल्य नेत्रों से युक्त, पवित्र, मोटे और ऊंचे स्तनवाली थी तिस बनियें की स्त्री को देखकर यह चाण्डाल काम से व्याकुलहोकर ३६ अपनी मूर्त्ति की चिन्तना कर हँसकर बोला कि हे कल्याणि ! हे सुन्दर करिहाँव और पवित्र हासवाली ! हे सुन्दरि ! हे प्रिये ! हे सुन्दर जंघावाली ! हे पतले अंगवाली ! तू कौन है सुन्दर यौवन के रसों से मेरे मनको क्यों हरती है मुझ गुणवान् के साथ ३७। ३८ तुझ गुणवती को सब सुख करना चाहिये हे द्विज ! धनुर्ध्वज के वचन सुनकर

क्रोधयुक्त, ओठों को चबाती हुई तिसकी सखियां बोलीं कि अरे मूर्ख, दुराचार, दुराचार कुल में उत्पन्न ३९। ४० इस का पादविक्षेपण भी तुझको नहीं दियाजावेगा यह पतिव्रता स्त्री धर्म कर्म में परायण है ४१ आत्मा के सुख की इच्छा करनेवालों करके पापदृष्टि से नहीं देखीजाती है सदैव पराई स्त्री के मुखकी सुंदरता और पराया द्रव्य ४२ देखकर काम की अग्निसे खेदयुक्त मूर्ख मनवाले जलजाते हैं इससे हे पापबुद्धिवाले! दूरजावो दुःसह वचन मतकहो ४३ हम लोग तुमको चरणोंसे भी नहीं छूसक्ती हैं तब धनुर्ध्वज बोला कि इस जातिशब्द को धिक्कार है जो कि सब गुण जानतेहुए भी ४४ आप लोगोंसे संभावित न हुआ जिससे कि इस समय में चाण्डालहूं—देखो मदिरा भरेहुये कलशके भीतर स्थित सोनेको ४५ पाकर तिसके गुणसमूहोंका जाननेवाला कौन पुरुष न ग्रहणकरेगा इससे मैं इस स्त्रीको इससमय में जैसे प्राप्त हूं ४६ तैसे हे सखियो करो आप लोगोंकी शरणमें मैं प्राप्तहूं हे उत्तम ब्राह्मण! वारंवार इसप्रकार कहतेहुए तिस मूर्खसे ४७ अत्यन्त कुतूहलको प्राप्तहोकर वे सखियां यह बोलीं कि हे दुर्बुद्धे! निश्चय जो इस स्त्री की इच्छा करतेहो ४८ तो शीघ्रही गंगा और यमुनाके संगममें देहको छोड़िये फिर परस्पर वे सब सखियां मुख देखकर हँसती हुई ४९ तिस पतिव्रता स्त्री को लेकर अपने घरमें जातीभई तदनन्तर हज़ार ब्रह्महत्या करनेवाला वह चाण्डाल मोहसे ५० गंगा और यमुनाके जलमें तिसको पूजनकर मरजाता भया तो उसी स्त्री के पतिके समान आकारवाला, सब गुणयुक्त और बलवान् ५१ अपने वृत्तान्तको स्मरणकर होताभया तदनन्तर वह प्रणिधि बनियांभी तिसी शुभ दिनमें ५२ वाणिज्यकरके अपने स्थानको आताभया और चाण्डाल ब्राह्मणभी तिसी के घर में प्रवेश करता भया ५३ जो कि प्रणिधि बनियां के समान रूप, अवस्था और गुणोंमें था एकही आकारके, आगे स्थित, गुणों की खानि दोनों को देखकर ५४ वह पतिव्रता स्त्री यह चिन्तना करतीभई कि मैं किसकी स्त्री हूं और कौन मेरा स्वामी है ५५ तब

तो पद्मावती स्त्री कोमल अक्षरवाले वचनोंसे माधवदेवकी स्तुति करनेलगी ५६ कि गोविन्द, अनन्तमूर्ति, इन्द्रादि देवताओं से पूजित चरणकमलवाले, योगेश्वर, योग जाननेवालोंमें चेष्टारहित, योगके देनेवाले और योगियोंसे पूजनके योग्य आपके नमस्कार हैं ५७ कैटभ, मधु, कंस और चाणूर राक्षसके नाश करनेवाले आप के नमस्कार हैं ५८ वेद और पृथ्वी के उद्धार करनेवाले, पृथ्वी के उठाने के योग्य और दैत्यों के नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ५९ गङ्गाजी के जलमें धोयेहुए दोनों चरणवाले, राजाओंके समूहों के नाश करनेहारे, रावणके वंशके नाश करनेवाले और दैत्योंके नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ६० यज्ञकी निन्दा करनेवाले, म्ले- च्छोंके समूहोंके नाश करनेहारे, हृदयरूपी कमल में आसन करने वाले और सब वैरियों के ध्वजारूप आपके नमस्कारहैं ६१ हे गोपी- जनोंके प्यारे, प्रभु, एक हाथमें पर्वत धारण करनेवाले, देवोंके देव, लक्ष्मीमुखकमलके भँवर, विष्णु, कमलनयन, चक्रपाणि, कौमोद- की गदा हाथमें धारण करनेवाले, विष्णु, पांचजन्य शंख और पद्मके धारण करनेवाले आप प्रसन्न हूजिये आपके नमस्कार वा- रंवार है ६२ । ६३ हे केशवजी आपके संसारकौतूहलमन्दिर, मोहान्धकार, विवेकदीपमें आपकी मायासे मोहित मैं नित्यही भ्र- मतीहूं ६४ हे असुरों के वैरी ! ब्रह्मा, इन्द्र और सूर्य आदिक श्रेष्ठ देवता आपकी मायाको नहीं जानते हैं तब मानुषी मैं कैसे जान सकूंगी अब दयासमेत मेरे भ्रमको नाशकीजिये ६५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तिसके स्तोत्रको सुन और देखकर भगवान् माधव, प्रभु, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलके देनेवाले ६६ क- रोड़ सूर्यके समान दीप्तिवाले सहसासे प्रकट होजाते भये तब प- द्मावती स्त्री भूमिको देखकर तिनके दोनों चरणोंकी वन्दना कर- तीभई ६७ कि हे लक्ष्मी के पति ! हे भुक्ति मुक्ति फलके देनेवाले! आपके नमस्कार हैं मुझ ज्ञानहीन के अपनी मतिके भ्रमको नाश कीजिये ६८ तब श्री भगवान् बोले कि हे पवित्र अंगवाली! और हे सुन्दर करिहांववाली स्त्री ! भ्रमको छोड़िये ये दोनों तेरे पतिहैं इन

दोनोंकी सदैव एकभावसे सेवाकीजिये ६९ हे साध्वि! जो तुम्हारा स्वामी प्रणिधि, मेराभक्त, जवान और बुद्धिमान् था वही अपने आप सुखके फल भोगकरने के लिये दोप्रकार का हुआ है ७० हे सुन्दर कटिवाली! जैसे अनन्त रूपवाली लक्ष्मी मेरे साथ क्रीड़ा करती है तैसेही तुमभी इन दोनों के संग सदैव सुख भोगिये ७१ तब पद्मावती बोली कि हे देव! हे दयामय! मनुष्य एक स्त्री के दोपतिहोने में उसकी प्रशंसा नहीं करते हैं इससे लज्जारूपी समुद्रके कल्लोल में डूबतीहुई मेरा उद्धार कीजिये ७२ तब श्रीभगवान् बोले कि हे साध्वि! हे श्रेष्ठ मुखवाली! पृथ्वीमें जो निश्चय तुम अयश से डरती हौ तौ इन दोनों समेत मेरे पुरको प्राप्त होवो ७३ तदनन्तर भगवान्की आज्ञासे शीघ्रही विमान आताभया तब पद्मावती स्त्री दोनों पतियों को लेकर वैकुण्ठजाने को प्रारम्भ करती भई ७४ तिसपीछे हे जैमिनि! दोनों पतियोंसमेत मार्ग में जानेलगी तो स्त्रीसंयुक्त, रथमें स्थित एक महात्मा को देखतीभई ७५ जो कि कमलपत्रके समान नेत्रोंको धारे, अलसी के फूल के समान दीप्तिवाले, चारभुजा धारणकिये हुए दूतसमूहों समेत गरुड़के ऊपर बैठेहुए हैं ७६ तब श्रेष्ठ अंगवाली पतिव्रता स्त्री तिन विष्णुजी के दूतों से यह पूछती भई कि यह रथमें स्थित पुरुष कौनहै ७७ और कमलके समान नेत्रवाले, महात्मा, विष्णुजी के समान, शंख, चक्र आदिक हाथोंमें लियेहुए आप सब लोग कौनहैं ७८ तब विष्णुजीकेसमान पराक्रमी, श्रेष्ठ, आनन्दसंयुक्त वे भगवान् के दूत वारंवार हँसकर यह बोले ७९ कि हे साध्वि! हम लोग विष्णुजी के दूतहैं पुण्यात्मा इस मनुष्यको लेकर उदार और उत्तम विष्णुजीके लोकको जातेहैं ८० तब पद्मावतीबोली कि हे महात्मा विष्णुदूतो! किस पुण्य के प्रभावसे यह इस गतिको प्राप्तहुआ है यह मुझसे कहिये ८१ तब विष्णुजीके दूत उससे बोले कि यह बृहद्ध्वज नाम राक्षस, संसार में शोक करने वाला, वनआदिकों का बसनेहारा, महाबलपराक्रमी, ८२ पराई स्त्री और पराई द्रव्य का हरनेवाला, वैरियों के करने में उद्यत, गौवों के मांसकाखाने वाला,

निष्ठुरवचन कहनेवाला और देवोंकी निन्दा करने वाला है ८३ हे पतिव्रते! जो जो पापमें रत कर्महैं सो इसने सदैव कियेहैं स्वप्न में भी शुभकर्म नहीं कियाहै ८४ हे सुन्दर करिहाँववाली! यह काम से पीड़ित निरन्तर रथपर चढ़कर पराई स्त्री हरने के लिये आकाश में घूमकर ८५ जिस जिस सुन्दर यौवनवाली स्त्री को जहां जहां देखताथा तहां तहां पर तिस तिस को काम से आतुरहोकर बल से आलिङ्गन करताथा ८६ एक समय में भीमकेशनाम राजा की प्यारीस्त्री, सुन्दरी, नवयौवनवाली, क्रीड़ाके मध्यमें स्थित,८७ सोने के फूल के समान दीप्तिवाली को देखकर प्रेम से यह बोला कि तुम कौनहो और यहां क्या कररहीहो ८८ तब भीमकेश राजा की स्त्री बोली कि मैं सुरतशास्त्र के जाननेवाली केशिनी नाम से भूषित हूं ८९ सबगुण जाननेवाली, प्रेमसे प्रसन्न, अपने वंश में उत्पन्न, दोषसे हीन मुझको राजा क्षणभर भी नहीं देखतेहैं ९० खण्डित चर्चा वाले पति से नित्यही मैं यहां स्थित कीगईहूं और विरहकी अग्नि से तप्त होकर अपने कर्मको शोच करती हूं ९१ हे सत्तम! तुमकौनहो और कैसे इस बागमें प्राप्त हुयेहो यह सब प्रसन्न होकर कहने के योग्य हो ९२ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली! मैं मायावी राक्षस तेरे आलिंगन करने के लिये यहां आया हूं ९३ हे पतले अंगवाली! अप्रसन्न और सदैव दोष देखने वाले अपने स्वामी को त्यागकर मुझको सेवन कर मैं सब उत्तम सुखको तुझे दूंगा ९४ तदनन्तर यह स्त्री आनन्द से हँस कर इस राक्षसेन्द्र को भुजारूपी लतासे बांधकर मुखमें मुखको लगातीभई ९५ तब हे सुन्दर करिहांव वाली! यहराक्षस ज्ञानके उद्वेगसे विह्वल तिस स्त्रीको आलिंगनकर उसके साथ सुन्दर रथपर चढ़ता भया ९६ फिर वायु के समान वेगवाले रथपर चढ़े हुये, स्त्री और पुरुषके भाव को प्राप्त होकर वे दोनों अत्यन्त कौतुक से आकाशमार्ग में जातेभये ९७ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे श्रेष्ठ मुखवाली! देखो तुम्हारे स्वामी के देशसे गंगासागर के संगम में प्राप्तहुये हैं ९८ तब रथ

में चढ़ी हुई यह स्त्री अत्यन्त अपराधोंसे गंगासागर के संगमको देखकर शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती भई ९९ तबतो प्राणरहित उस साध्वी को देखकर यहराक्षस भी बहुत रोकर शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होजाताभया १०० अब भगवान्की आज्ञासे इनके पाप नाश होगये और पुण्यकर्मवाले होगये इससे इन दोनों को इस समय में वैकुण्ठको लियेजाते हैं १०१ जल, स्थल वा आकाश में गंगासागरके संगममें देह छोड़कर पापीभी परमगतिको प्राप्तहोते हैं १०२ यह तीनों लोकमें दुर्लभ तीर्थहै इस गंगासागरके संगम में माघमें और फाल्गुन के शुक्लपक्षकी एकादशी में व्रतकर १०३ ब्राह्मणका मारनेवाला भी निस्सन्देह शुद्धिको प्राप्त होता है गंगासागरके संगममें स्नानकर माधव हरिजीके दर्शनकर १०४ स्वामिकार्तिकका मुख देखनेसे फिर जन्म नहीं होताहै स्वामिकार्तिकजी साक्षात् हरिही हैं इससे सदैव भेद नहीं कियागयाहै १०५ जे स्वामिकार्तिकजी को देखते हैं ते सब मोक्षको प्राप्तहोते हैं सब तीर्थों से अधिक तीर्थ गंगासागरके संगमको सुनो १०६ इस में जल, स्थल वा आकाश में मरकर मोक्ष को मनुष्य पाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिने! ऐसा कहकर वे विष्णुजीके दूत उन दोनोंको लेकर १०७ सहसासे आकाशमार्ग होकर विष्णुजी के घर को जातेभये और पद्मावती साध्वी दोनों पतियों से युक्त भी १०८ धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले विष्णुजी की सारूप्यताको प्राप्तहोकर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहांके दुर्लभ सब भोगों को भोगकर १०९ श्रेष्ठ ज्ञानको प्राप्तहोकर भगवान्की सारूप्यता को प्राप्त होतीभई सब तीर्थमयी गंगाजी हैं और सब तीर्थमय हरिजी हैं ११० तिससे गंगाजी और हरिजीकी भक्ति कही है गंगासागर के संगममें पहले माधव नाम राजा १११ स्त्रीसमेत बहुत काल तपस्याकर मोक्ष को प्राप्त हुआ है ११२ तब जैमिनिजी बोले कि हेसत्तम व्यासजी! तुम्हारा कहा हुआ माधव कौनथा क्या कर्म उसने कियेथे और कैसे तपस्याकी थी यह सब मुझसे कहिये ११३ तब व्यासजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे विप्रर्षे!

तिस महात्मा माधवजीका चरित्र संक्षेप से कहताहूं सुनिये ११४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेव्यासजैमिनिसंवादेप्रयागवर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

वीरवर का सुषेण राजाकी सभामें जाना॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! देवताओं की नगरीके समान, सब लोकोंमें प्रसिद्ध,गुणियोंके गणोंसे युक्त तालध्वजा नाम नगरी है १ तहां पर शुद्धकुल में उत्पन्न, धर्मात्मा, सत्यवादी, प्रजाओं के पालनमें तत्पर विक्रमनाम राजाहुए २ तिनकी पृथ्वीमें दुर्लभ, अपने मुखकी दीप्ति से चन्द्रमा की दीप्ति जीतनेवाली हारावती नाम स्त्री हुई ३ तिस राजाके स्त्रीगणों में सोई प्यारी स्त्री हुई जैसे सब नदियों में गंगाजी हुईहैं ४ हेब्राह्मण! कुछकालमें तिस स्त्रीमें सब लक्षणसंयुक्त पुत्र उत्पन्न होताभया ५ तब सब शास्त्र का जानने वाला चक्रवर्ती राजा शास्त्र में कहीहुई विधिसे माधव यह नाम करते भये ६ तदनन्तर यह माधव ब्राह्मण बलवान्, सद्गुणयुक्त कुछकाल में सब विद्यारूप नदीकेपार होगया ७ तदनन्तर वह राजा युवराज से राज्यमें सब देवगणों से पूज्य पुत्र को अभिषेक करताभया ८ एक दिनमें हाथी घोड़ा, रथ और पैदलकी सेनासे युक्त माधव राजा कौतुकसे शिकार खेलने के लिये बड़े वन को जाताभया ९ तहां पर बहुत जन्तुओं को मार कर मध्याह्न समयमें वन से नगर जाने के लिये उद्यमकरताभया १० सेनासमेत आनन्दसेमाधवराजा नगर को आता था कि उसने तालाब में स्नानमें तत्पर एकस्त्री देखा ११ जो कि स्नानके योग्य द्रव्य और सुन्दर कपड़ों को देहमें पहने हुई, अपने मुखकी सुन्दरतासे पूर्णचन्द्रमाको जीतने वाली, १२सोनेके कुण्डल दोनों कपोलोंमें धारेहुई, तिनसे कपोलोंको प्रकाशित करती हुई,सुन्दरभारी बालोंसे करिहांव के पीछले भागको आच्छादित कियेहुई, पवित्रहासयुक्त, १३ सोनेकी कमलकी कली केसमान, पवित्र ऊंचे स्तनवाली, सिंहके समान पतलेकरिहांव-

युक्त, वसन्त ऋतु के कोकिलाके समान स्वरवाली थी १४ इस सुन्दरी को कामदेव महात्मा ने राज्यमें युवापुरुषों के मन हरनेवाली पताकाकी नाईं आरोपित कियाथा १५ ऐसी स्त्रीको एकान्त में देखकर पृथ्वी में प्राणको धारण करतेहुए कौन पुरुष कामदेव के वशमें न प्राप्तहोजावे १६ तदनन्तर तिस श्रेष्ठ मुखवाली को देख कर विक्रमराजा के पुत्र माधव जी कामदेवके बाणसे घावयुक्त हृदय होकर यहचिन्तना करते भये १७ कि इस स्त्री के समान पृथ्वीमण्डल में कोई स्त्री मैंने नहीं देखी इसको यहां आलिंगनकर सफलजन्म करूंगा १८ क्योंकि अवस्था, तेज और गुणोंसे मैं सब मनुष्यों में श्रेष्ठहूं यद्यपि यह इन्द्रकी भी स्त्री होगी तथापि इस समय में लेनेयोग्य है १९ पराई स्त्रीके हरने में इससमय में जो दोष होगा तिसके कहने को कौन समर्थ है जिससे कि मेरा पिताही राजाहै २० ऐसा उसकामीने दृढ़मनसे चिन्तना कर सेनाको दूर खड़ीकर जहांवह स्नान करती थी वहां को जाता भया २१ पृथ्वी में ऐश्वर्य, मद और काम ये तीनों ज्ञान के तेजको निस्सन्देह हरलेते हैं २२ इनके पिता तो पापोंके नाश करने वाले, मनुष्यों के धर्म के रक्षा करने वाले हैं और कामदेव को धिक्कार है जो आपही सम्पूर्ण संसारको मोहित करता है २३ तिनमाधव राजाको बड़े वेगसे आते देखकर अकेली वह स्त्री बड़ी चिन्ता से व्याकुल होती भई कि यह मेरे साथ रमण करेगा २४ मेरे मनमें यह वर्तमान है कि मुझ अकेली, युवावस्थायुक्त, कान्तार में स्थितको देखकर यह वेगसे दौड़ा आताहै २५ सबमुनि यह कहते हैं कि रक्षा कियाहुआ धर्म रक्षा करता है परन्तु नहीं जानाजाता कि यहां पर क्याहोगा २६ सहायहीन स्थान में शत्रुलोग आगेही दौड़ते हैं तहां से भागना अच्छा होता है निवास होना प्राणों को नाश करताहै २७ ऐसा विचार कर वह श्रेष्ठ कटिहांववाली स्त्री बाईं काँख में घड़े को लेकर डरसे तालावसे भागने का मन करती भई २८ तदनन्तर माधवजी अत्यन्त वेगसे तिसके आगे जाकर हाथ फैलाकर बोले २९ कि हे श्रेष्ठ स्त्री! हेपवित्र देहवाली!

सुन्दर यौवन के बलसे मेरामन हरकर भगीजाती हौ मैं चेतनरहित हतहुआहूं ३० हे चञ्चल कटाक्ष और सुन्दर देहवाली! तुम्हारा कौन पतिहै क्या स्वर्ग से आईहो तुम्हारे समान पृथ्वी में कोई नहीं है ३१ हे सुन्दरि! हे कमल समान मुखवाली! तुमयहां पर श्रेष्ठ, सबलक्षणसंयुक्त होकर दासी की नाईं कैसे पानी लिये जाती हौ ३२ छाती में सोने केसे स्तन सदा धारणकिये हौ और कोमल अंगवाली होकर कखरी में इस अद्भुतजलके घड़ेको लिये हुए हौ ३३ सूर्य की किरणसे अत्यन्त तप्तमार्ग में लोहित पांयेंकी अंगुलीके अन्तर दुपहरियाके फूलकी कलीके समान शोभित होते हैं ३४ हे सुन्दर करिहाँव और श्रेष्ठ मुखवाली! मेरे दर्शनहीमात्र से तेरे दुःखका अन्त होजायगा ३५ श्रीमान् विक्रमराजा का पुत्र माधव नामी मैं हूं हे सुन्दरि! सब भावों से तुम्हारा श्रेष्ठ अंगहूंगा ३६ हमारे स्त्रीगणों के मध्यमें तुम इस प्रकार सुभगा होगी जैसे भँवरेको सुन्दर फूलोंके वल्लीके मध्यमें चमेली होती है ३७ अथवा अभिमान से तुम हमारे वचन के टालने की इच्छा करतीहो तब भी तुमको मैं नहीं छोड़ूंगा क्योंकि मैं राजाका पुत्रहूं ३८ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! माधवजी के वचन सुनकर वह स्त्री राह छोड़कर नीचेका मुखकर स्थित होकर धीरे धीरे बोली ३९ कि कभी दूसरे पुरुष को मैंने वचन नहीं सुनाये तथापि लज्जा छोड़कर आपके आगे कहतीहूं ४० हे महावीर! सुबाहु क्षत्रियकी प्यारी स्त्री चन्द्रकला नाम होकर मैं देवपूजाके लिये जल लिये जाती हूं ४१ जो वचन आपने कहे हैं वे आपके कुलके उचित नहीं हैं क्योंकि आपके वंशवाले सब पराई स्त्रियोंमें नपुंसक होते हैं ४२ मैं अकेली स्त्रीहूं और वीरोंसे उत्पन्न आप हैं यहांपर बलसे मेरा आलिंगन करने से आपका क्या यश होगा ४३ पराई स्त्री का आलिंगन करने से क्षणमात्र सुख होताहै इसलोक में अयश शेष रहता है और सौकल्प दुःखही अधिक होताहै ४४ हे शूर! यह कर्मभूमि है यहांपर पुण्य कीजिये पराई स्त्रीके हरनेमें कभी चित्त न कीजिये ४५ लोभसे काम होताहै कामसे पाप वर्त्तमान होताहै पापसे

मृत्यु होती है और मरनेमें दुस्तर नरकमें स्थिति होती है ४६ सब तुम्हारे गुण व्यर्थ और तुम्हारा जन्म निष्फल है क्योंकि काम के वशमें प्राप्त होकर तुम पराई स्त्रीसे रमण करनेकी इच्छा करतेहो ४७ मांस, मूत्र, विष्ठा और हाँड़से बना हुआ मेरा देहहै यह देखकर भी कामदेवके वशमें प्राप्त हुएहो ४८ राजाके वंशमें उत्पन्न होनेसे क्या पुरवासियों से भी नहीं डरतेहो और मस्तक के ऊपर गर्जते हुए समवर्त्ती को नहीं देखतेहो ४९ सब ज्ञानसे वर्जित मछली कटिया को ग्रसलेती हैं और ज्ञानी कटियाको पाकर आप क्यों ग्रसेंगे ५० तीनों लोकों में ज्ञान सम्पदाओं का परमपद होताहै और अज्ञान मनुष्योंकी आपदाओं का परमपद होताहै ५१ तिस स्त्रीके कहेहुए वचन सुनकर कामसे मोहित, नम्रतायुक्त माधवजी फिरबोले ५२ कि हे प्रिये ! तुम्हारे देखने रूप बाणकी धारासे जर्जरमनवाले मेरी रक्षा कीजिये मैं तेरी शरणमें प्राप्तहूं ५३ जबतक युवावस्था में स्त्री स्थित रहती है तबतक अत्यन्त प्यारी होती है कमलनाल की कली कमलिनी में सोनेका भँवरा नहीं जाताहै ५४ हे मृगनयनी ! प्रसन्न हूजिये और मुझ अपने सेवककी रक्षाकीजिये तुम्हारी नीरसवाणी सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण होरहा है ५५ तब चन्द्रकला बोली कि हे महावीर ! दुःखको छोड़कर मेरे शुभ वचन सुनिये आपके दुःखके नाश करनेके योग्य को मैं कहतीहूं ५६ प्लक्षद्वीपमें समुद्रके पार इन्द्रकी पुरीके सदृश प्रसिद्ध दीप्यंती नामपुरी है ५७ तहांपर महायशस्वी, सब गुणों से युक्त, प्रतापमें अग्निके समान, बलवान् गुणाकर नाम श्रेष्ठ राजा है ५८ तिसकी सब लक्षणसंयुक्त, सेवासे स्वामी के हृदयको वश करनेवाली, मनुष्यों के ऊपर दया करनेवाली सुशीला नाम स्त्री है ५९ हेवीर ! तिसकी कोखिसे उत्पन्न सुलोचना नाम कन्या है यह कन्या रूपसे सब सुन्दरीसमूहों को जीतेहुए है ६० पृथ्वी में तिसकेरूप और गुणसमूह के वर्णन करने में कोई योग्य नहीं है तिसके रूपके दर्शन देख कर ब्रह्माजी आपही दूसरीको रचतेभये हैं ६१ हे महावीर राजपुत्र ! सुन्दरी मैं तिसकी दासीहूं भाग्यसे आपके देशमें प्राप्तहुई

हूं ६२ तिसके समान सुन्दरी स्त्री नहीं है और आपके समान सुन्दर पुरुषभी नहींहै जो स्वर्गभोगकी इच्छा करते हो तो विवाहसे तिसको ग्रहण कीजिये ६३ बलवान् सिंह कोड़ेमें प्राप्तहुई भी सियारी को छोड़कर यत्नसे सिद्धिके लिये क्या हस्तिनी को नहीं धारण करता है ६४ संसार में उद्योगी पुरुष परमलक्ष्मी को प्राप्त होताहै पृथ्वीमें उद्योगके विना कहिये क्या कार्य होता है ६५ व्यास जी बोले कि हे जैमिनि! तिस स्त्री के वचन सुनकर भगवान् के भजन करनेवाले माधवजी कामके भावको दूरकर तिसश्रेष्ठ मुखवाली से यह बोले ६६ कि हे कमलके समान मुखवाली! हेसुन्दर करिहांव वाली!किस चिह्नसे तिस कन्याको मैं जानूंगा जो तेरी कृपा मुझपर होतो यह मुझसे कहिये ६७ मैं मूर्ख मनुष्य समुद्रके पार कैसे जाऊंगा और तिसके कैसे मुझको दर्शन होंगे ६८ तब चन्द्रकला बोली कि तिस स्त्रीके बायें जंघेमें तिलके सदृश तिलकहै तिस के देखनेही से तुम सुलोचना को जानजावोगे ६९ तुम्हारी घोड़शालमें महात्मा, उच्चैःश्रवा घोड़ा का पुत्र, सब जगह जाने वाला उत्तम घोड़ा है ७० उस वेगसे पवन के सदृश श्रेष्ठ घोड़े परचढ़ कर समुद्रके अन्ततक चलेजावोगे जहां से पृथ्वी सुखसे साध्यहै ७१ तब राजाका पुत्र सेनासमेत घरको आता भया और पतिव्रता चन्द्रकला प्रसन्न होकर अपने घरको जातीभई ७२ फिर माधवजी तिस स्त्रीके वचनकी चिन्तना कर अत्यन्त वेगयुक्त चिन्तासे व्याकुलचित्त होकर सहसासे घोड़शालको जाते भये ७३ तहां पर पराक्रमयुक्त माधवजी गुणयुक्त महाबली घोड़ों से बोले ७४ कि तुम सब महात्मा सब लक्षणसंयुक्त हो समुद्रके पार मुझे लेजाने में कौन घोड़ा समर्थ है ७५ तदनन्तर डरसे सब घोड़ा तिसके वचन सुनकर परस्पर पृथ्वीकी ओर मुखकर खड़े रहजाते भये ले जाने में कोई उद्यत न हुए ७६ तिस पीछे सब लक्षणसंयुक्त एक घोड़ा माधवजी के आगे जाकर ये वचन बोला ७७ कि हे राजपुत्र! मैं आपको निस्सन्देह समुद्रके पार लेजाऊंगा किन्तु मेरे दुःखों को सुनिये ७८ और के भोगों से बचा हुआ तृण तो मेरा भोजन है,

करोड़ गांठोंसे युक्त रस्सियों से मेरा बन्धन है ७९ हे वीर ! मुझ बली ने स्वप्नमें भी धान्य नहीं देखाहै हे राजपुत्र ! और भोगों की क्या कथा है ८० हे वीर ! गौरवके विना सज्जनों के पराक्रम नहीं होताहै जैसे अग्नि विना काष्ठके घी आदिकों से कैसे उत्पन्न होसक्ती है ८१ मैं तो इस प्रकारका हूं और ये सब घोड़े अनेक प्रकारके गहनों से युक्त हैं सब गहनों से भूषित सिंह के समान कुत्ते नहीं होसक्के हैं ८२ हे प्रभो ! हे राजन् ! प्रदक्षिणाकारता से पर्वत, द्वीप और समुद्रपर्यन्त पृथ्वी को क्षणमात्र में जासक्ताहूं ८३ तब माधवजी बोले कि हे घोड़े ! मेरे पिताके किये हुए सब दोषों को क्षमा कीजिये अबसे लेकर मेरी घोड़शालमें तुम मुख्य हुए ८४ दूसरे से दिया हुआ सन्ताप उत्तम में सदैव नहीं स्थित रहता है जैसे अग्निसे तपाहुआ भी जल क्षणमात्रमें शीतलताकोप्राप्त होता है८५ ईख अपने मीठेपनों से क्षणमात्र तृप्तिके लिये होती है ऐसा कहकर राजपुत्र तिस घोड़ेके नमस्कार कर ८६ तिसकी पीठ पर चढ़कर प्रचेष्टा नाम नौकरको लेकर समुद्रको लांघकर ८७ सब गुणों से युक्त, इन्द्रकी पुरीके सदृश, प्रकाशित हुए महलों की पंक्तियों से उज्ज्वल पुरीमें जाता भया ८८ तहां पर माधव ब्राह्मण गंधिनी नाम स्त्रीको समीप देखकर मुसकाकर कोमल वचन बोला ८९ कि हे वृद्धे ! हे मातः ! मैं धनवान् माधव नाम परदेशी ब्राह्मणहूं एक दिन तुम्हारे स्थान में ठहरने की इच्छा करताहूं इसमें तुम्हारी क्या आज्ञाहै ९० तबतो अतिथिकी भक्तिनि गन्धिनी प्रसन्न होकर तिस अतिथिको लेकर अत्यन्त भक्तिसे अपने घरको जाती भई ९१ और यथोचित कहीहुई विधिसे तिसका पूजन करतीभई तब माधव ब्राह्मण चिन्तासे व्याकुलमन होकर तिस रात्रिको वहीं बिताते भये ९२ तदनन्तर प्रातःकाल माधव ब्राह्मण गन्धिनी के आगे सब कार्य कहते भये ९३ और गन्धिनी सुलोचना देवी का तिसी शुभदिनमें गन्धादिवासनकर्म रचती भई ९४ राजपुत्री का अधिवासनकर्म सुनकर माधवजी शोकसमुद्र के कल्लोल के समूह होजाते भये ९५ कि जिसके लिये राज्य

स्थान और बान्धवोंको छोड़कर समुद्र मैंने लांघा ९६ आजही भाग्यसे तिसका अधिवासन होगा जितने परिश्रम मैंने किये वे सब निष्फल होगये ९७ किन्तु मनुष्य नहीं बकेंगे कि माध्वी में मुग्धहोकर सब को प्राप्तहोगया कार्य्य का निश्चय जानकर कौन भग्नउद्यम न होगा ९८ यह मनसे माधव वारंवार चिन्तनाकर माला और फूलादि में अपना वर्णित प्रेम लिखता भया ९९ कि हे कन्ये! तालध्वज के राजा विक्रम महात्मा का पुत्र माधव नाम मैंहूं १०० हे कन्ये! तहांपर कोई चन्द्रकला नाम दासी है उसने निश्चय मेरे आगे तुम्हारे गुणसमूह कहे हैं १०१ इस से तुम्हारे गुणसमूह में संलग्नचित्त होकर मैं गंभीर समुद्र नांघ कर घोड़े पर चढ़कर तुम्हारी पुरीको आयाहूं १०२ हे सुलोचने कन्ये! इस समय में मुझको वरके भावसे वरिये जिससे संसार के मध्यमें मैं तुम्हारी शरण में प्राप्त हूआहूं १०३ जैसे गुणवती तुमको और मनुष्य न जाने १०४ कमलिनी के गुणको भौंराही जानता है मेढ़क नहीं जानता है और जैसे शुभ्र मेघको एक आकाशही का उदय नहीं है १०५ तिसपर भी कुमुद्वती चन्द्रमा के विना और को नहीं सेवती है तदनन्तर वीर माधवजी मालिनिके हाथ कुछ लिखकर १०६ नम्रतापूर्वक सोने की अंगूठीसमेत देते भये तब गन्धिनी मालिनि उसलेख को फूलके मालाओं के बीचमें अंगूठी समेत कर १०७ राजपुत्री के पास शीघ्रही जातीभई और फूलके मालाकी बलिदेकर १०८ डरसे कुछ दूरजाकर हाथ जोड़ कर स्थित होगई तब राजकन्या अंगूठीसमेत लेखको १०९ देख कर अत्यन्त पण्डित इसने मूलसे सब पढ़लिया और तिसीकी पीठपर तिसके योग्य उत्तर ११० लिखा विस्मययुक्त हुई कन्याने जो जो लिखा वह सब कहतेहैं कि हे राजपुत्र! हेमहाबाहो! तुम्हारे वाक्य मैंने सब सुने १११ अब हे अत्यन्त श्रेष्ठ! मेरे ये यथोचित वचन सुनिये इस समय में मेरा अधिवासनकर्म है और कल्ह विवाह निश्चय होगा ११२ पिताजी का जो संमतकार्य होता है पृथ्वीमें उसको कोई नहीं छोड़ता है दुःखसे साध्यकार्य में मनुष्यों

को अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये ११२ क्योंकि कार्य के सिद्ध होने में परिश्रम नहीं होताहै नहीं सिद्धहोने में श्रमही होता है तिसपर भी कहतीहूं सुनिये जिससे आप मुझको प्राप्तहोवैं ११४ जिससे आपने समुद्र लाँघा मुझको यह विद्याधर वर प्रदक्षिणी करना चाहिये ११५ अनेक प्रकार के गहनों से भूषित होकर मैं तिसके आगे बायें भुजाको ऊपर करके जाऊंगी जिससे मेरे लेनेमें जो समर्थ होगा सोई मेरापति होगा सत्यही सत्य मैंने इस पत्रमें लिखाहै ११६। ११७ और प्रकारसे दृढ़कार्य लंघन करने में नहीं समर्थ है यह राजकन्या लिखकर तिसके हाथमें देती भई ११८ तब गन्धिनी तिस पत्रको लेकर माधवजी के समीप जाती भई राजकन्याने जो पत्रमें लिखाथा तिसको पढ़कर माधवजी ११६ फिर अत्यन्त कौतुकोंसे लिखतेभये कि हेकन्ये! हे धन्ये! हे धन्य कुलमें उत्पन्न होनेवाली! तुमने जो कहा १२० सोई सब मेरा भी मतहै कोई इसमें संशय नहीं है तदनन्तर गन्धिनी फिर तिस के निकट जाकर १२१ सुलोचनाको सुन्दर अक्षरवाले लिखनको देती भई तदनन्तर माधवसे अंगीकार कियेहुये लिखनको जानकर १२२ सुलोचना अत्यन्त प्रसन्न और वारंवार विस्मययुक्त हो गई- तिसमें संशय न करना चाहिये जो माधवने स्वीकार करलियाहै १२३ तब क्या आपही इन्द्रहीहो वा जिसकी मायासे माधव पुरुष इस लोक और परलोक में सदैव स्नेहका पृथ्वीपतिहै १२४ विना अच्छे प्रकार दर्शन करनेसे मैंने वरके भावमें नहीं वरण कियाहै यह चिन्तनाकर वह पतिव्रता स्त्री वारंवार श्वास लेकर १२५ स्नान के वहाने से सखियोंसमेत गन्धिनी के घरको जातीभई तब गन्धिनी मालिनि हाथ में तिस कन्या को पकड़कर १२६ मंचानके ऊपर सोते हुए माधवजी को दिखलाती भई तबतो कामके समान तिसको देखकर १२७ रोमांचयुक्त सब अंग और उदात्तको क्रमसे देखतीभई और तिसके दोनोंनेत्रोंको जहां जहां शुद्धकरतीहै १२८ कष्टकी दृष्टिसे तिस नाम से अलग नहीं जातीहै यहसाक्षात् कामदेव वा देवकीजीके पुत्र कृष्णजी १२९ वा विषयों के स्वामी साक्षा-

तूं महादेवजी तो नहीं हैं संसार के मध्यमें इनरूपों से मनुष्य नहीं उत्पन्न होताहै १३० इसस्वामी से मुझ हरिणी के समान दृष्टिवाली का जन्म सफल होगा मेरी भक्ति के वश होकर ब्रह्माने अत्यन्त यत्न से १३१ जब मैं कन्या हुईहूं तब इस को क्या तो नहीं रचा है अबसे लेकर यह स्वामी अपने आप निस्संदेह नहीं है क्या १३२ ऐसा कहकर वह अपने घरजाने के लिये बुद्धि करती भई तब गन्धिनी बोली कि हे भद्रे! कन्ये! यह युक्ति तुम हृदय में सेवन करो १३३ जैसे सुन्दर मूर्ति पुरुष तैसे ही निन्दा से नहीं प्रकाशित होता है उल्लास, देहकाभंग, मन्ददृष्टि और विस्मित १३४ ये सब विष्णु जी के चिह्न हे मृगनयनी! इसके निद्रासें भौंहें ओष्ठों के पुटके काटने के आक्षेपसे निश्चय नहीं उठेगा १३५ तब धीरे धीरे माधवजीके हाथ को अपने हाथोंसे दिखलातीभई कि तुम्हारे देखने के लिये राजकन्या का आगमन हुआहै तिसको सुनिये १३६ यह सुनकर सम्भ्रम से आक्रांत मन नम्रतासे नम्रहोकर माधवजी उठकर तिससे बोले १३७ कि हे कन्ये! मेरा जन्म और परिश्रम सफलहोगया जो तुम्हारे पवित्र कमलरूपी मुखको साक्षात् मैंनेदेखा है १३८ सब यौवनोंसे वरके भावसे मुझको तुमवरो हे सुन्दरि! तुम्हारे योगका वर मेरे विना पृथ्वीमें और नहीं है १३९ तबसुलोचना बोली कि हेसुन्दरगतिवाले बड़ी भाग्यसे तुम हमारे पति होगे मैंने जो वचन कहेहैं सोई निश्चय दृढ़हैं १४० हेमहाभाग! आज्ञादीजिये तो मैं अपने मन्दिरको जाऊं तब माधवजी बोले कि हे कन्ये! जो यह कहूं कि स्थितरहो तो अभिमान होताहै १४१ और हे पवित्र अङ्गवाली! जाइये यह वचन मेरे मुखसे नहीं निकलताहै इससे आपही विचार कर जो युक्तहो सो कीजिये १४२ यहांपर सत्यवचन में तत्परहोगी माधव के इसप्रकार कहने से प्रसन्नहोकर वहकन्या अपने घरको चली गई १४३ और बहुत परिच्छदोंसे युक्त माधवजी तहांही स्थित रहे और दूसरा वर विद्याधर भी इसीप्रकार स्थित रहा १४४ और वहांके स्थित सब मनुष्य माला और चन्दनसे विभूषित होकर सुन्दर वस्त्र धारण कर देवसमूहोंकी ना-

ई प्रकाशित होतेभये १४५ तिस पुरमें कहीं गान, कहीं नाच, कहीं कोलाहल का शब्द और किसीने कहींपर दीपोंकीपंक्ति जलाई १४६ सप्तिसमूहों के शब्द हाथियों के शब्द और पक्षियों के आनन्द के शब्दों से दशोदिशा पूर्ण होगई १४७ अनेकप्रकार के पताकाओं के समूह और उज्ज्वल राजाके स्थानों से चारोंओर सब आकाश व्याप्त होगया १४८ कोई शंख, ढक्का, डिंडिम, झर्झरको और कोई मधुकोहल आदिकको बजाने लगे १४९ तदनन्तर चन्द्रमाके समान मुखवाली कमलनयनी सबस्त्रियां ललित गीतों को गानेलगीं १५० तहां की पृथ्वी परस्पर यौवन से घिसनेसे गिरेहुये माला और पसीने के जलसे गिरती हुई सुगन्धों से कन्या कीनाई प्रकाशित होती भई १५१ तब सुन्दरी सुलोचना गम्भारीके काष्ठ के बने हुये पीढ़े परचढ़कर जातिवालों से आच्छादित होकर श्रेष्ठस्थानको प्राप्त होतीभई १५२ इस अंतर में विक्रमके पुत्र माधवजी शय्याके ऊपर निद्रायुक्त होकर भाग्यसे सुन्दर नेत्र वाली सुलोचनाके बिवाह कार्यको न जानतेभये १५३ ब्रह्माकी सैकड़ों मायासे मोहित मनुष्यों का कभी संसारमें सुखनहीं होता है तिससे अपने संकेतकी विधिको यह मनुष्य बिसराकर सुखसे निद्रा को सेवन करताभया १५४ देखो अग्निके डरसे कमलिनी जलमें पैठी तो वहां हिमकी अग्निसे जलमें जलगई इससे जो जिसका कर्म्म है उससे और तरह नहीं होता है १५५ मनुष्य वेद आदिक सब शास्त्र पढ़ते हैं परन्तु राजाकी सेवाही करते हैं और उग्र तपस्या प्रतिदिन साधन करते हैं तब भी अत्यन्त भाग्यहीन को लक्ष्मी नहीं सेवन करती है १५६ दुःख और सुख मस्तकके ऊपर स्थित रहते हैं अन्यकालमें हठसे अन्य प्राप्तहोजातेहैं १५७ दुःखभागी, निद्रायुक्त माधवको देखकर सुलोचना और माधवके संकेतको जानताहुआ अचेष्ट चिन्तना करता भया १५८ कि इस राजपुत्रको धिक्कार है जो दैवकी मायासे मोहित होकर अपने संकेतको बिसराकर निद्रायुक्त है १५९ यह दुःखसे आई हुई कन्या इस समयमें वरके निकटहै और माधवके नयन में क्याहुआहै संकेत

निष्फल जाता है १६० हे पापकर्मन्! तुम मस्तक में निद्रा सेवन कर ठहरो यह श्रेष्ठ स्त्री घोड़ेपर चढ़कर मेरे लेजानेके योग्यहै १६१ कन्यारत्न और रत्न दुर्लभ आनन्द से प्राप्तहोते हैं तब इस दुर्मति माधवकी सेवासे क्या कार्यहै १६२ सब भावसे धनके लिये राजाओं की सेवा कीजातीहै सोई जो आनन्दसे अपने आप मिलै तो उस समय में सेवाके दुःखसे क्याहै १६३ प्रचेष्ट यह चिन्तनाकर घोड़ेपर चढ़कर जहांपर राजकन्याथी वहांको आकाशमार्ग से जाता भया १६४ तो वरकी प्रदक्षिणा कर अपने समयको स्मरणकरती हुई राजकन्या बायांहाथ उठाकर विद्याधरके आगे स्थित होजाती भई १६५ तब महाबलवान् प्रचेष्ट अत्यन्त वेग से तिस राजकन्याको हाथ पकड़कर घोड़ेकी पीठपर चढ़ा लेताभया १६६ और अत्यन्त वेगयुक्त मनके अपराधोंसे रहितहोकर जाकर सुन्दर कांचीपुरी को देखकर हाथ पकड़कर सुलोचना से बोला कि समुद्रके भीतर किनारेही स्थित कांचीनाम यह पुरी है १६७। १६८ यह सबसे विख्यात मनुष्यों को सब सुखदेनेवाली है इसको देखिये यहांपर माधव वीर और तिस विद्याधरका १६९ किसीकाभी भय नहीं है हे चन्द्रमा के समान मुखवाली! इसको देखकर मेरे चित्तरूपी इन्धनमें लग्न कामके अग्निकी शिखाकी पंक्तिको १७० कुचरूप घड़ाओं के करोंसे सिद्ध मोक्षको हे सुन्दरि! दीजिये तुम्हारे इस पवित्र कमलरूपी मुख में मेरा मुखरूप भँवर इस समयमें मधु पीनेकी इच्छा करता है इसमें हे प्रिये! तुम्हारी क्या आज्ञाहै तुम्हारे पवित्र देहके छूनेसे कामदेव बाणों से मुझको व्यथा देता है १७१। १७२ हे प्रिये! रक्षाकीजिये तुम्हारी मैं शरणमें प्राप्तहुआहूं तिस मूर्खको ऐसा कहते देखकर श्रेष्ठ स्त्री १७३ शोककी अग्निसे तप्त सब अंग होकर चित्तसे चिन्ता करतीभई कि यहमूर्ख दुष्ट चेष्टावाला प्रचेष्टही क्या ब्रह्माने १७४ मेरे माथेमें वर लिखा है मैं इस समयमें मारीगईहूं कहां माता कहां पिता और कहां विद्याधर वर है १७५ इस करके मैं लाई गईहूं ब्रह्मा की घटना को धिक्कार है मनुष्य संसार में सदैव बहुत अभिमान करते हैं १७६

ब्रह्मा की घटनारूप तलवार से अभिमानके वृक्षके काटने को भी मनुष्य जानता है तिसपर भी विपत्तिमें धैर्य, निर्भयता, तत्पर होना १७७ चार उपाय दीर्घदर्शियों ने श्रेष्ठ कहे हैं यह सबकार्य में निपुण कन्या हृदय से देखकर कोमल अक्षरवाले वचनों से प्रचेष्ट से बोली कि हे वीर! मनको दृढ़कीजिये मैं विना विवाही कन्या हूं १७८। १७९ हे दुर्बुद्धि! हे वीर! मोहसे मुझको कैसे आलिंगन कर जावेगा शास्त्रकी कहीहुई विधिसे विवाहसे मुझको ग्रहण कीजिये १८० दासीकी नाईं तुम्हारी सेवाकरूंगी इसमें कुछ संशय नहीं है तुम्हीं मेरे प्राण, मित्र, भूषण, और बान्धवहो १८१ क्या तुम नीतिको जानते हो स्त्रियोंकी और में गतिनहीं होती है विवाहके योग्य वस्तुओं को विवाहके लिये लाइये १८२ जड़ता के ग्रहणकरनेवाले तुम जल्द मेरा विवाहकरो ये भीतर दृढ़ और बाहर कोमल बेरके फलकीनाईं वचन १८३ सुलोचना के सुनकर मूर्ख प्रचेष्ट परमप्रीति को प्राप्त होजाताभया और फिर दुर्बुद्धि घोड़ा और तिस कन्याको एकत्र स्थितकर १८४ हाथ में कंकण लेकर सुलोचनाके तिसी पुरको जाताभया तदनन्तर सुलोचना निश्चय तिस विधिकी प्रशंसाकर चिन्तना करतीभई १८५ कि जिससे घोड़ा और मुझको छोड़कर यह मूर्ख प्रसन्न होकर जाता भया है इससे इससमयमें मुझको क्या करना कहां जाना और कहां स्थितहोना चाहिये १८६ इस अत्यन्त संकटकार्य में मेरा निस्तार कैसे होगा जो मैं यहां स्थित रहूंगी तो वे लोग क्या कहेंगे १८७ पुण्यतीर्थ में प्राप्तहोकर परलोक के जन्मकी कामनासे मृत्युको प्राप्तहोजाऊं तो यह कल्याणके करनेवाली है १८८ परन्तु मेरे वियोगसे यह मूर्ख, विद्याधर और माधव ये तीनों स्मरणकर क्षणमात्र भी न जी सकेंगे १८९ मेरे स्थित रहने में इनके जीवनकी रक्षा होती है और मरने में ये तीनों नाशको प्राप्तहोजावेंगे १९० यहांपर मेरे जन मेरा उद्देशकर जो प्राणदेदेंगे तो निश्चय में तिनके मारनेकी भागिनी हूंगी १९१ इससमयमें पुण्यतीर्थों में भगवान् हरि पूजने योग्य हैं तिनके प्रसन्न होने में मेरा सब कल्याण होगा १९२

प्राणों के नाशहोजाने में सब नाश होजावेगा और तिनके स्थित होने में सब स्तोक स्तोकसे सिद्धहोजावेगा १९३ रात्रिकी अवशिष्ट अतिसुन्दरी कमलिनी चन्द्रमाके दूरहोजाने में प्रकाशित सूर्यकी किरणोंसे अत्यन्त सुगन्धित होनेके कारण क्या श्रेष्ठ भौंरेके संगमको नहीं प्राप्तहोती है १९४ हे जाननेवालों में उत्तम! यह मनमें चिन्तनाकर वह श्रेष्ठ स्त्री तिस बड़े वेगवाले घोड़ेपर चढ़कर तपस्या करनेके लिये गंगासागरके संगमको जातीभई १९५ तिस पुण्यकारी श्रेष्ठ गंगासागरके संगम में सोमवंश में उत्पन्न सुषेण नाम राजा बसता है १९६ तिस राजाकी सभा में जानेके लिये चित्तसे सुलोचना चिन्तना करती भई कि मुझस्त्रीको कैसे राजा का दर्शन करना चाहिये १९७ दूबसमेत अधिवासनका सूत्र मेरी भुजा में बँधा है और स्त्रियोंके संगसे हीन घोड़ेपर चढ़ीहुई मैं कन्या हूं १९८ निश्चय मेरे चरित्र मनके विस्मय करने वाले हैं मैं अपनी आत्माको छिपाकर राजाकी सभाको जाऊंगी १९९ तब हे जैमिनि! वह स्त्री इन्द्रजालके प्रभावसे पुरुषका आकारकर सुधर्मा सभाकी नाईं राजाकी सभा में प्रवेशकर जातीभई २०० तिसको संपन्नकी तरह शक्ति हाथमें लिये और घोड़ेपर चढ़ेहुए आते देखकर राजा आपही पूंछता भया कि तुम कौनहो और कहां से यहां आयेहो २०१ राजाके ये वचन सुनकर पुरुषके आकारवाली कन्या सुन्दर हृदयवाले सज्जनोंके आश्रय राजाके प्रणामकर बोली २०२ कि हे देव! राजाका पुत्र वीरवर नाम मैं हूं इस समय आप की राज्य में रहने के लिये आयाहूं २०३ जो जो कार्य्य असाध्य हैं तिनको यहां पर साधन करूंगा मेरे स्थित होने में मेरे स्वामी की कहीं हार न होगी २०४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेवीरवरप्रदर्शोनाम पंचमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय

गंगासागरसंगमकामाहात्म्यवर्णन॥

तब राजाबोले कि हेमहाबाहो! यहां पर मेरी सुन्दरराज्यमें ठ-

हरो मैं तुम्हारी जीविका करदूंगा इस में संदेह नहीं है १ तब तो वीरवर तिस राजा के समीप में तिसीकी सेवामें मन लगाकर निरन्तर बसते भये २ हे जैमिनि! तदनंतर एक समय में तिसपुर में सब प्रजाओं को भीमनाद नाम खड्ग निरन्तर पीड़ा देताभया ३ तब राजा क्रोधसे तिसके मारने के लिये वीरवर को भेजताभया तो वीरवर मनुष्योंसमेत गण्डक के मारने के लिये जाते भये ४ और शक्ति धारण करनेवाले वीरवर उस खड्गीको पर्वताकार,पृथ्वी में सोते,डाढ़ोंसे कराल मुख देखकर ५ क्रोधसे आकाशमें घोड़े को घुमाकर मेघोंके समान गंभीर वाणी से तिसखड्गी से बोले ६ कि हे दुरात्मन्! तुमने जे जे पाप के वृक्ष इकठे किये हैं तेते ऋतु को पाकर वृक्ष की नाईं फले हैं ७ और तुझ पापीने इस राज्य में जे जे प्राणी भक्षण किये हैं उन सब का यमराजके स्थान में तुझ को दर्शन होगा ८ अरे दुष्ट! निद्राको छोड़ अपने अन्त करनेवाले मुझको देख रे महानिद्रावाले! इस निद्रासे क्या तेरा होगा ९ तब तो भीमनाद निद्राको छोड़कर क्रोध से लालनेत्रकर धूलिसेधूसर सब अंगहोकर उठकर १० बोला कि रेहुबुद्धे! अभिमान मत करो तुम्हारी भी उमर बाक़ी नहीं रही है तिसके दर्शनमात्र से प्राप्त होकर कौन पीछे छूटता है ११ हमारे कोपरूप अग्नि की राशिमें तुम जलतीहुई अग्नि की शिखाकी पंक्तिमें टीड़ीकीनाईं गिरोगे १२ ऐसा कहतेहुए तिसके देखनेके लिये तीक्ष्ण शक्तिसे वीरवर महा कोपकर हुंकार शब्द कर प्रकाशित होता भया १३ तब आयुरहित गण्डक शब्द के समूहसे सब पृथ्वी को चलायमान कर पृथ्वी में गिरताभया १४ हे ब्राह्मण! गंगासागर के किनारे खड्गी को गिरे हुए देखकर वीरवर तिस राजा के समीप जाने का प्रारम्भ करने लगे १५ तो राह में जातेहुए एक महाशय को तेजोंसे प्रकाशित दूसरे सूर्य की नाईं देखते भये १६ जो कि विष्णुजीके दूतसमूहों से युक्त तुलसी की माला से भूषित, सुन्दर वस्त्रधारे, सुन्दर, रथपर चढ़ेहुए और मुसकानियुक्त मुखवाला था १७ तब वीरवर भक्तिसे यह पूछताभया कि तुम कौन हो कहां से

यहां आयेहो और कहां जावोगे यह हमसे कहिये १८ तब वह पुरुष बोला हे पुरुषके वेष धारण करनेवाली कन्ये! मेरा वृत्तान्त सुनिये आनन्दसे जो सुनने की इच्छा है तो मैं संक्षेपसे कहताहूं १९ पूर्व समयमें मैं चोरोंके वंशरूप वनका अग्नि, सब धर्ममें परायण धर्मबुद्धि नाम राजा था २० मैंने सब यज्ञ और सम्पूर्ण दान किये थे चार हज़ार वर्ष तक पृथ्वी की पालनाभी की थी २१ पाखण्डजनके वचनसे मैंने ब्राह्मण की पृथ्वी कोपको प्राप्त होकर लेलीथी कभी दोषित नहीं किया था २२ मेरे तिसी अपराधसे ब्रह्माजी आपही क्रोधसे तिसी क्षणसे सब राजलक्ष्मी को हरलेते भये २३ हे साध्वि! तदनन्तर कुछ दिनमें मैं सम्पत्तिरहित होकर शोककी अग्निसे दग्धमन होकर यमराजके वश में मरकर प्राप्त होता भया २४ मुझको देखकर चित्रगुप्त ने पवित्र हासगतिवाले प्रभु यमराजसे मेरे तिस कर्मको प्रकट कर कहा २५ कि यह धर्मबुद्धि राजा सदैव पुण्य करता रहा है इसका कुछ पाप है तिसको मैं कहताहूं सुनिये २६ पाखण्डोंसे बोधित होकर यह ब्राह्मणकी जीविकाको हरलेताभया तिसी कर्मसे दुस्तर नरकमें इसका स्थान होगा २७ हे सूर्यके पुत्र यमराजजी! शास्त्रोंमें यह निश्चित है कि जिसने जिसकी जीविका नाशी वह उसके मारने को प्राप्त होताहै २८ तिससे यह पापकर्म करनेवाला ब्राह्मण का मारनेहारा राजाहै इसका सौ करोड़ कल्प नरक में स्थान होगा २९ हे विभो! अपनी वा पराई दीहुई पृथ्वी को जो हरलेताहै वह करोड़ कुलसंयुक्त नरक में जाताहै ३० जो देवता वा ब्राह्मणकी पृथ्वी हरता है तो उसकी निष्कृति सौ करोड़ कल्पमें भी नहीं देखी गईहै ३१ और जो पराई दीहुई रक्षा करनेवाले के पृथ्वी की रक्षा करताहै वह देनेवाले से भी करोड़ गुणा अधिक पुण्य को पाता है ३२ तब तो मैं यमराजकी आज्ञासे पूति मिट्टी को भोग कर कल्पयोनिमें प्राणियों की हिंसा सदैव मैंने की ३३ गऊ ब्राह्मण तथा और जीवोंको हज़ार करोड़ मुझ दुष्टने मारा ३४ फिर हे साध्वि सब नाशकरनेवालोंके आश्रय खड्गयोनिमें उत्पन्न हुए मुझको कालसे प्रेरित आपने मारा ३५

गंगासागर का तीर्थ देवताओं को भी दुर्लभ है जहां पर स्थलमें भी मृत्युको प्राप्त होकर यह मेरी अच्छी गतिहुई है ३६ हे सुन्दर करिहांववाली जावो तुम्हारा कल्याण निस्संदेह होगा और थोड़ेही समय में तुमको तुम्हारे पतिका दर्शन होगा ३७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस धर्मबुद्धिके ये परम अद्भुत वचन सुनकर वह कन्या तिसके चरणों की वन्दना करतीभई तब धर्मबुद्धि राजा ३८ रथपर चढ़कर स्वर्गको जाताभया और वीरवर राजा की सभाको जातेभये ३९ राजा तिस भयानक पराक्रमी खड्गी को मराहुआ सुनकर तिस को विवाह से जयन्ती नाम अपनी कन्या देतेभये ४० तब पुरुष के आकारवाली कन्या तिस जयन्ती को लेकर गङ्गासागर के संगम में तपस्या करने के लिये मन करती भई ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! प्रातःकाल गङ्गासागरके संगम में स्नानकर गीतवाद्य और नाच से नारायण प्रभुको पूजन करतीभई ४२ विना मांसके हविष्य फलाहार और कभी वह श्रेष्ठ स्त्री उपवासही करती भई ४३ फिर यह कहतीभई कि इस पृथ्वी तलमें मुझको अकेली देखकर नीच मानकर कौन ग्रहण करै यह कहकर घोड़े पर चढ़कर ४४ वह श्रेष्ठ स्त्री फिर अपने राज्य को जातीभई वहां पर माधव और विद्याधरके वियोगसे ४५ दूसरे पुरुषको न सेवन करतीहुई राजकन्या मरजाती भई तिसके मरजाने के पीछे यह नौकर प्रचेष्टभी इच्छापूर्वक जाकर ४६ बहुत प्रकारसे रोकर अत्यंत शोकयुक्त होकर मरने के लिये गंगासागर के संगम को जाताभया ४७ और वहां स्नान कर तुलसी की मिट्टी से विभूषित होकर गंगाजीके हाथजोड़कर बोला ४८ कि हे मातः! तुम्हारे पवित्र जलमें यहांपर मैं देहछोड़ता हूं जिसतरह से सुलोचना मेरी स्त्री हो वह आपकीजियेगा ४९ वारंवार यह कहते हुए तिसको तिसके दूत फँसरी से बांधकर निरुद्ध तिससभाको लेजाते भये ५० वीरवर की आज्ञासे तप्तघोर दूत विकल प्रचेष्टको कारागृहमें स्थापित करते भये ५१ इसीकालमें तिस अद्भुतकार्य को देखकर तिस राज्यमें बड़ा हाहाकार होता भया ५२ यह अद्भुत कर्म सुनकर गुणाकर राजा अत्यन्त सन्तप्त

होकर यह कहताहुआ आताभया ५३ कि तरकसवाले रथ के स-
वार, ढालवाले, तलवारवाले, धनुष और भालावाले सहस्रों करोड़
५४ स्थान स्थान में तिसपुर में रक्षा करने के लिये युक्त होवें ५५
यह राजा की आज्ञा पाकर तब अमितपराक्रमी सब योधा क्रोध
से शीघ्रतायुक्त तिसपुर में पतिरक्षाओं में स्थित होते भये ५६
सब गानेवालों ने गीत, नाचनेवालों ने नाच और बाजा बजाने-
वालों ने बाजे वहां पर छोड़ दिये ५७ तब शोकसे उपहतमनहो
कर राजा मंत्रियों को बुलाकर यह पूँछताभया कि क्या है ५८ तब
मंत्री बोले कि हे देव! यह अद्भुत कर्म न कभी देखाहै और न सु-
ना है इन मनुष्यों के देखतेही देखते वह कहां चलीगई ५९ कोई
कहताभया कि वह लक्ष्मी थी शापसे पृथ्वी में आपके महल में
आकर आपही अन्तर्द्धान होगई६० और कोई कहतेभये कि माया-
मयी वह स्त्री मायासे आपके घर में स्थित होकर अपनी माया
दिखला कर चलीगई ६१ कोई कहते भये कि वह सब लक्षणसं-
युक्त स्त्री फिर आवेगी जहां कि भगके अंगवाले इन्द्र हैं ६२ और
कोई कहते भये कि तिसके मुख को चन्द्रमा मानकर आत्मा से
आत्मा को चिन्तना कर चन्द्रमा ने सुन्दर सिद्धिके लिये लेलिया
है ६३ कोई कहते भये कि वह कन्या अच्छेगुण दीर्घ वासना-
वाली और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली थी इससे भ्रांति से
चन्द्रमा ने ग्रस्त कर लिया है ६४ और कमलिनी की भ्रांति से
दिग्गजों से फूले कमल के समान मुखवाली विष दण्ड हाथ में
धारे कमलकी कलीके समान कुचवाली नष्ट होगई ६५ कोई कह-
तेभये कि हे राजन्! उसको रचकर और स्त्रीके रचनेके लिये रूप
और गुणों से युक्त को तिसके रूप के देखने के लिये ब्रह्माने ले-
लिया है ६६ और कोई कहतेभये कि हे भूपाल आपने सब दिशा
जीती है और वह रूपों से देवताओंकी स्त्रियां जीतनेकेलिये स्वर्ग
को गई है ६७ तदनन्तर वे मंत्री परस्पर मुखकी शोभा देखकर
सब स्तब्ध की नाईं उत्साहरहित और साध्वससमेत होगये ६८
फिर राजा हे सुलोचने! हे पुत्रि! मुझको छोड़कर कहां चली

गई ऐसा कहकर पृथ्वी में मूर्च्छित होकर गिरता भया ६९ हे श्रेष्ठब्राह्मण! बड़े शोकसे राजाको गिरेहुये देखकर तिस नगर में हाहाकार शब्द होताभया ७० तिस रोनेके शब्द को सुनकर और संसारमें देखकर दशो दिशा शब्द करती भईं ७१ धूलिसे धूसर अंगवाले और छूटेहुए बालोंवाले राजाको पकड़कर सब मन्त्री शीघ्रही राजाके महलको जाते भये ७२ तदनन्तर विद्याधर और माधव तिसके पीढ़ेको आलिंगनकर करुणशब्दोंसे रोनेलगे ७३ कि हा प्रिये! हा चंचलकटाक्षवाली! हा सोनेके फूलकी दीप्तिवाली! हा श्रेष्ठमुखवाली! मुझको शोकरूपी समुद्र में गिराकर कहां चली गई ७४ हा प्रिये! हा भद्रे! हा कमल के समान मुखवाली! निर्दोष तूने मेरा क्या दूषण देखाथा क्यों दर्शन नहीं देती है ७५ हे भद्रे! मैं तेरे विना क्षणमात्रभी नहीं जीऊंगा इससे मुझको दर्शन देकर प्राणों की रक्षा कीजिये ७६ हे भद्रे! प्राणों से भी अधिक प्यारी जो तुमको नहीं प्राप्तहूंगा तो धन, जन, मित्र, धन और घरोंसे क्या है ७७ यह और बहुत करुणकरके शोकसे मृत्यु को निश्चयकर गंगासागरके संगमको जाता भया ७८ तहांपर समुद्र के जल मिलेहुए गंगाके जलमें स्नानकर सूर्य्यजी को अर्घ देकर गङ्गामाताके नमस्कार करताभया ७९ कि हे गंगे देवि! हे संसार की मातः! तुम्हारे निर्मल जल में देह छोड़ता हूं तिस देहको जैसे फिर प्राप्तहूं तैसा कीजियेगा ८० ऐसा कहतेहुए राजाके श्रेष्ठ दूत क्रोधयुक्त होकर वीरवरके समान विधिको प्राप्त करते भये ८१ तब वीरवर उससे बोला कि आप कौन हैं कहांसे आये हैं और कैसे यहांपर देहत्याग करते हैं यह मुझसे कहिये ८२ वीरवरके वचन सुनकर विद्याधर सुननेवालोंको विस्मय देनेवाली तिस सम्पूर्ण कथाको कहता भया ८३ तदनन्तर वीरवर कहता भया कि तुम मूर्खमनुष्योंमें निस्सन्देह श्रेष्ठहौ गन्धर्वी, राक्षसी वा सर्पिणी वा किन्नरी ८४ वह शापसे कन्या आई थी तिससे आपही अन्तर्धान होगई वह देवरूपिणी थी इससे देवताओं के स्थानको गई ८५ तिसके साथ फिर कैसे तुमको दर्शनहोगा आकाशमें चन्द्रमा

के चकोरोंके पान करने योग्य अमृतको ८६ क्या बलवान् पापी कौवे पासक्ते हैं जो नहीं प्राप्त होने योग्य है वह नहीं मिलती है और जो प्राप्त होने योग्यहै वह मिलती है ८७ तिस जनको जानतेहैं परन्तु कोई मोहको नहीं प्राप्त होताहै किसीसे कन्या दीगई है और किसी करके ग्रहण करलीगई ८८ पूर्वजन्म में जो कन्या है तिसी कन्याको पति प्राप्त होताहै स्त्री पुत्रके प्रयोजनके लियेहै और पुत्र पिण्डके प्रयोजनके लियेहैं ८९ इसीसे बुद्धिमान् मनुष्य स्त्री का ग्रहण करते हैं जैसे स्त्रीसे यहां दियाजाताहै तैसी स्त्री भोग करतेहैं ९० रात्रिमें रोदन करतेहुए यह भँवरा कुमुदिनीको सहता भया स्त्रियोंको अच्छे रूपवालाभी पति संतोषके लिये नहीं होताहै ९१ सूर्यके स्थित होनेमें भी कमलिनीका मधु भौंरा पीताहै स्त्रियोंमें निरन्तर चित्त रहता है और विष्णुजीकी भक्तियोंमें अनादर रहता है ९२ और कोई शोकोंसे देहत्याग करदेते हैं ये तीनों पुरुषोंकी विडम्बना हैं स्त्री, पुत्र, भाई, देश तथा बान्धव ९३ ये सब फिर मिलते हैं परन्तु प्राणफिर नहीं मिलते हैं विषयधर्म तुमने नहीं छोड़ा और न कर्मकिये ९४ हे मूर्ख! वर्तमान के बीतने पर फिर होने वाला जन्म दुर्लभ है मेरामाता, पिता, स्त्री, भाई और धन ९५ और तिसममता से जन्म ये सब निष्फल होजाते हैं इसप्रकार तिसबुद्धिमानों में श्रेष्ठ वीरवरने अच्छेप्रकार समझाया ९६ तब वह दौर्मनस्य को छोड़कर तहांहीं स्थित होताभया तदनन्तर प्रीतिसे हँसती हुई गन्धिनी अपने घरको गई ९७ और वहांजाकर मंचमें सोते हुए माधवजीको देखकर बोली कि हे दुर्बुद्धे! उठो उठो तुम्हारा परिश्रम निष्फल होगया ९८ विवाह के समयमें वह कन्या आपही अन्तर्द्धान होगई इसप्रकार तिसके वचन सुनकर माधव उठे ९९ और बड़े शोकोंसे व्याकुलहोकर पृथ्वीमें लोटकर रोने लगे कि कन्या और विद्याधर का कुछदूषण नहीं है १०० मेराही सबदूषण है जिससे नीचका संगसेवन कियाथा नीचकेसंग करने से पुरुषोंको ब्रह्मा सुखनहीं देते हैं १०१ यह मैंने जानाहै जिससे मेरी यहगति हुई है महान्भी नीचके संगसे कुछ सुखको

नहीं प्राप्त होता है १०२ देखो प्रेतों के संगसे महादेवजी नङ्गे और भूषणोंसे भग्नहैं नीचके संगसे स्त्री और धन आदिकको मनुष्य देखता है १०३ कुछ प्रसंग प्राप्तहोकर नीच दुःखहोकरभी सज्ज-नोंके गुण सुनकर क्लेशको प्राप्तहोता है १०४ और दोष सुनने के लिये सौरूपका होजाता है इससे बुद्धिमान् मनुष्य अपनेकल्याण की इच्छा करे तो नीचोंसे निश्चय न करे १०५ एक क्षणभी बु-द्धिमान् नीचोंसे निश्चय न करे और एक पैगभी नीचोंके संग न जावे १०६ नीच मनुष्य से विश्वास करने में मनुष्य शीघ्रही कष्ट पाताहै और नीच मनुष्य दोष सुननेके लिये यत्नसे प्राप्त होताहै १०७ फिर समयपाकर हँसकर प्रकाश करता है अच्छे मनुष्यों के मन, वचन और कर्ममें एकही एक रहता है १०८ और दुरात्मा-ओंके मनमें और वचनमें और कर्ममें भी औरही रहता है—जो वह राजकन्या विवाहकरेगी १०९ तो मेरे हृदयमें थोड़ाभी शोक न होगा और जो सब लक्षणसंयुक्त कन्या स्वर्ग चलीगई ११० नीच से प्राप्तहुई तो यह शोक हृदयमें दुःसहहोगा मैं उस श्रेष्ठ मुखवाली को लिखित की नाईं देखता हूं १११ और इस जीती हुई आत्मासे बिसराने को मैं नहीं समर्थहूं नीचके क्रोडमें प्राप्तहुई वह साध्वीस्त्री क्षणभरभी न जीवेगी ११२ और विद्याधरभी दारुण शोकोंसे नहीं जीवेगा जैसे माता, पिता और देशको मैंने तिसकी प्राप्ति के लिये छोड़ा ११३ तैसेही इससमयमें निस्सन्देह प्राण त्यागनेयोग्यहैं फिर तिसकी प्राप्तिकेलिये गंगासागरके संगममें प्राणोंको ११४ मैं त्याग करूंगा यह दृढ़कर वह जानेके लिये प्रारम्भ करता भया कि इसी समयमें मुनियोंमें श्रेष्ठ नारदजी से ११५ महाबुद्धिमान् ने पाद-लेप प्राप्त किया फिर कुछ दिनोंमें गंगासागर के संगम को जाता भया ११६ वहांपर गंगासागर के जलमें स्नानकर तुलसीपत्र मा-लाओं से भूषित होकर भगवान् को पूजता भया ११७ और हाथ जोड़कर नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी से बोला कि हे देवि! शोकको प्राप्त होकर तुम्हारे जल में देहको मैं त्याग करताहूं ११८ आने वाले जन्ममें तिस सुन्दर कन्याको मुझे दीजियेगा ऐसा कहकर

तीनों लोककी माता तिन गंगाजी के नमस्कार कर ११९ फिर उनके गहरे जलमें प्रवेश करनेका प्रारम्भ करता भया तब वीरवर पीठमें राजपुत्रको पकड़कर १२० तिस सभामें तिन मनुष्योंसमेत आकर राजपुत्रको देखकर प्रीति और आनंदित शोभाको प्राप्त होकर १२१ माधवसे पूंछने लगे कि तुम कौनहो और कैसे देह को छोड़तेहो तब माधव वीरवरसे बोले कि मैं विक्रम राजा का पुत्र माधवहूं १२२ सेनासमेत शिकार खेलने के लिये एक समय में घोरवन को गया तो वहां पर नगरके समीप कमलोंसे शोभायमान तालाव था १२३ तहां पर मुझ कामीने अकेली सुन्दर स्त्री को देखा तब चन्द्रकला नाम स्त्री मुझ कामसे व्याकुल से १२४ पृथ्वी में सुलोचना के प्रस्ताव को कहती भई तब मैं घोड़ेपर चढ़ कर समुद्रको नांघकर १२५ प्रचेष्ट नाम नौकर को संग लेकर तिसके पुरको आया तो उसी दिन तिसका उत्तम अधिवासन था १२६ यह सुनकर मैंने अंगूठीसमेत उसके पास पत्र लिखकर भेजा तव मेरेपत्रको उत्तम अंगूठीसमेत देखकर उसने उसपत्रकी पीठपर जो लिखा सो कहताहूं १२७ कि हे अत्यन्तश्रेष्ठ माधवजी! श्रीत्रिविक्रमदेवजीका पुत्र विद्याधरनामहै पिताजी विवाहकर मुझ को उनको देंगे १२८ आज अधिवासनकर्महै और कल्ह निश्चय विवाहहै तिसपर भी मैं उपायकहतीहूं जिससे आपमुझको प्राप्त होवें १२९ बायें हाथको उठाकर वरके संमुखमें खड़ीहूंगी और जो मेरे लेजाने में समर्थ होगा वही निस्संदेह मेरा स्वामी होगा १३० यह कन्या पत्रमें लिखकर गन्धिनीके हाथमें देतीभई और तिस गन्धिनीने उस उत्तम पत्रको मुझे दिया १३१ तो उस सङ्केतको प्रचेष्टने मेरे सन्मुख सुना तब सङ्केतके समयमें मैं तो सोगया और प्रचेष्ट घोड़े पर चढ़कर राजकन्या को लेगया १३२ इस व्यथासे फिर तिसकी प्राप्तिके लिये देह छोड़ता था यह सब आपसे विधान से सुना दिया १३३ यह सुनकर पुरुष की आकार वाली राजकन्या माधव की रक्षामें बहुत से नौकरोंको युक्तकर हँसकर घरके भीतर जाकर १३४ स्त्रीवेष धारणकर अनेकप्रकारके गहनोंसे भूषित हो-

कर अपनी दासी को राजपुत्र माधवजी के लेने के लिये भेजती भई १३५ तब राजपुत्र राजकन्या की आज्ञासे जाकर मूर्तिमती लक्ष्मीजी की नाईं तिस साध्वी राजकन्याको देखतेभये १३६ तब पुलकावलीसे युक्त देह होकर राजकन्या सोतेके आसनसे उठकर राजपुत्र के चरणोंकी वन्दना करती भई १३७ तो कौतुक प्राप्त होकर बुद्धिमान् राजपुत्र तहांहीं गन्धर्वविधिसे विवाह कर १३८ तिसके प्रेमके जल की धाराओं से सींचे जाकर तिसके साथ केलि करतेहुए तिस रात्रिको वहांहीं व्यतीत करतेभये १३९ तदनन्तर निर्मल प्रातःकाल होनेमें यह मृगी के समान नेत्रवाली पतिव्रता राजपुत्री माधवजीसे आदिसे सब वृत्तांत कहती भई १४० फिर सुलोचना साध्वी तिस जयन्ती राजपुत्री और माधवजीको लेकर सुषेणजीकी सभामें जातीभई १४१ तब सुषेण राजा तिसको कन्या सुनकर प्रसन्न होकर सुलोचना और जयन्तीको विवाहकी रीतिसे माधवजी को देताभया १४२ और धर्ममें तत्पर राजा प्रसन्नतासे दाइजमें अपनी आधीराज्य और सौ सोने देताभया १४३ तब राजपुत्र तिस पुण्यकारी तीर्थमें सुन्दर मन्दिर बनाकर रहनेलगे १४४ तिसबीचमें माधवजी काशागारनिवासी प्रचेष्ट को सभामें बुलाकर चिन्तना करते भये १४५ कि यह पापबुद्धि, क्रूर, स्वामी का विश्वासघात करने वाला, शत्रुओं में श्रेष्ठ, मूर्ख, मुझसे नहीं रक्षा करने के योग्य है १४६ नित्यही वारंवार प्रसाद धन और भोजनों से पालित हुआ भी यह निर्दयी समयपाकर शत्रुका कर्म करता भया १४७ जिसने विपत्तिमें निश्चय चरणों की धूलि हाथसे ली और तिसीने सम्पदा पाकर स्वामीका शिरकाटा १४८ वशमें प्राप्त राजाकी पंक्तियां निश्चयही स्वामी को नाशती हैं गर्म जल भी अग्निको शीघ्रही बुझादेता है १४९ यह मनमें चिन्तना कर तिस राजपुत्रने नष्टचेष्टावाले प्रचेष्टको निकालदिया १५० और तिन दोनों स्त्रियों के साथ राजपुत्र शोक और व्याधिसे वर्जित होकर सुखसे कुछकाल तहांरहतेभये १५१ माधव महात्माके तिससुलोचना में सौ पुत्र और जयन्ती में दोसौ पुत्र होते भये १५२ माधव

के पुत्र शस्त्र शास्त्र के जानने वाले उत्तम सब मनुष्योंकी प्रीतिके लिये धर्ममें तत्पर होतेभये १५३ और जन्मोंसे इकट्ठी की हुई भक्तिसेयुक्त होकर माधवजी एकसमयमें मनसे चिन्तना करतेभये १५४ कि कौन मैं हूं कहां से आया हूं किसका वा किससे रचाहुआहूं फिर कहां जाऊंगा मुझको कहां स्थित होना चाहिये १५५ विषयभोग करते हुए मेराजन्म पुण्यके विनाही व्यतीत होगया तिससे विघ्नके समुद्रमें डूबतेहुए मुझको कौन उद्धार करेगा १५६ इस संसार में जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन नहीं किया वह सब धर्मों से बाहर किया हुआ आत्मघाती जानना चाहिये १५७ यह सब संसार क्लेश का देनेवाला बड़ा भयानक है इस में वारंवार जन्म और मरण होता है १५८ विष्णुजी की भक्तिके विना जन्म मृत्यु का निवारण नहीं होताहै इससे इससमय में सब छोड़कर भगवान्का पूजन करूंगी १५९ यह मन से चिंतना और वारंवार विश्वासकर विश्वकर्मा को बुलाकर ये वचन बोला १६० कि हे विश्वकर्मन्! हे महाबाहो! मुझको विष्णुजी की पत्थर की सब कामनाओं के फल देनेवाली मूर्त्ति बनादीजिये १६१ तब माधवजी की आज्ञा से कारीगर विश्वकर्माने महाविष्णुजी की पत्थर की मूर्त्ति रचदी १६२ जो कि नवीन मेघों के समान श्यामवर्ण, कमल के समान नेत्रवाली, शंख, चक्र, गदा और कमल के धारण करने हारी, चार भुजावाली १६३ लक्ष्मी और सरस्वती से युक्त, वनमाला से विभूषित, सब लक्षणों से युक्त और सब गहनों से भूषित थी १६४ तब माधवजी विचित्र मण्डप में हरिजी की मूर्त्ति को स्थापित कर कामना देनेवाली और चक्र हाथ में लिये हुई की पूजा करने को प्रारम्भ करतेभये १६५ हे ब्राह्मणों में उत्तम! और तिसी स्थान में अविच्छिन्न शिखावाले दीपको प्रतिदिन जलातेभये १६६ आप प्रातःकाल स्नान कर संमार्जन आदिक करतेभये और रास्तेकी शोभा को कर तहां पर लीपतेभये १६७ गङ्गासागर के जल में स्नान कर पांच महायज्ञों को कर सब से उत्तम उपहारों से विष्णुजी की तीनों संध्याओं में

पूजा करतेभये १६८ चन्दन, धूप,नैवेद्य, पान, धूप,दीप,गीत,बाजाओं के प्रबन्ध,सुन्दर स्तोत्रों के पाठ,१६९ प्रदक्षिणा,नमस्कार, यज्ञ,दक्षिणा,विना मांसके हविष्य और फलाहारों से पूजा करतेभये १७० और(ॐनमोनारायणाय)इस सब कामनाके फलकेदेनेवाले महामंत्रको जपतेभये १७१ इस प्रकार महाविष्णु परात्माकी हज़ार वर्ष सब कामना देनेवाली पूजा श्रेष्ठ भक्ति से करताभया १७२ तब तो माधवकी भक्ति से सब देवों के शिरोमणि, तुलसी के फूलकी सी दीप्तिवाले भगवान् प्रसन्न होकर प्रकट होते भये १७३ हरिजी को प्रकटहुये देखकर स्त्रीसमेत माधवजी शिरसे पृथ्वी को आलिंगन कर हरिजी के चरणों की वन्दना करते भये १७४ कि देवों के देव, परमात्मा, परेश, देवताओं के स्वामी, ज्ञान देनेवाले, १७५ परमानन्द, पुरुषोत्तम, केशव, कमलनयन, लक्ष्मीके पति, १७६ बहुत रूपवाले, नीरूप, विचिन्त्य, अविचिन्त्य, दृश्य अदृश्य,१७७ तीनों लोकके स्वामी, संसारके रक्षा करनेवाले, ज्ञानसे प्राप्तहोने योग्य,सर्वशाखी १७८ कंस और कैटभ राक्षसके वैरी,मधु राक्षसके मारनेवाले और विधाता आपके नमस्कारहैं १७९ जिस आपने मत्स्यअवतार धारण कर गहरे समुद्रके जलसे वेदोंको उद्धार कियाहै तिसको मैं भजताहूं १८० जिस आपने कच्छप रूप धारणकर पर्वत, वन और काननोंसमेत पृथ्वीका उद्धार किया है तिस आपके नमस्कार हैं १८१ हे पृथ्वी के स्वामी! जिस शूकर की मूर्तिसे आपने अपने दांतसे पृथ्वी उद्धार की तिस आपके नमस्कार हैं १८२ जिस नृसिंहकी मूर्तिसे आपने क्रोधयुक्त हिरण्यकशिपुको विदारण किया तिस आपके नमस्कारहैं १८३ हे देव! जिस कश्यपजी के पुत्र वामनरूपसे आपने राजा बलिकी यज्ञ ध्वस्त की तिस आपके नमस्कारहैं १८४ जिस आपने क्षत्रियों के रक्तों से पितरों को तर्पित किया और सहस्रबाहु राजा को मारा तिस परशुरामजी के नमस्कारहैं १८५ जिस कौशल्याके पुत्र आपने रावण, मारीच और कुम्भकर्ण को मारा है तिस रामचन्द्रजी के नमस्कार हैं १८६ जिस रेवतीके पति आपने प्रलम्बासुर को

मारा और यमुनाजी को टेढ़ी करदिया तिस बलरामजी के नमस्कार हैं १८७ कृपासमेत जिस आपने पशुओं की हिंसा देखकर वेदोंकी निन्दा की तिस बुद्धजी के नमस्कार हैं १८८ और जिस कल्की की मूर्तिसे आपने सब लोकों के कल्याणके लिये युग के अन्त में म्लेच्छों को नाश कियाहै तिस आपके नमस्कार हैं १८९ हे हरे! हे विष्णो! हे दैत्यजिष्णो! हे नारायण! हे कृपामय! संसाररूपी घोर समुद्र में गिरेहुए मुझको उद्धार कीजिये १९० तदनन्तर माधवजी आनन्दसे हरिजी के चरणोंको धोकर पृथ्वी में सब अपना अंग गिराकर हरिजीसे बोले १९१ कि हे गोविन्द! हे परमानन्द! हे मुकुन्द! हे मधुसूदन! हे कृष्णजी! मुझ पापी की रक्षाकीजिये जिससे आप सब पापोंके नाश करनेवालेहैं १९२ यह माधवजीका स्तोत्र सुनकर भक्तवत्सल भगवान् परमप्रीतिको प्राप्त होकर तिससे ये वचन आपही बोले १९३ कि हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ माधव! भोवत्स! वरदान मांगो ब्रह्मा, शिव और क्या इन्द्रहोना आप चाहतेहैं १९४ तब माधवजी बोले कि हे संसारके स्वामी! मैंने सब कुछ पाया जो देवताओंको भी नहीं देखने योग्य, वरदान देनेवाले प्रभु आपको मैंने देखा १९५ भुक्ति, मुक्ति, धन और ऐश्वर्य सब देने को आप योग्य हैं हे प्रभो! भक्तिके योग्य मैं नहीं हूं परन्तु मुझे भक्तिही दीजिये १९६ तब श्रीभगवान् बोले कि हे वत्स! तुम्हारी इस शक्तिसे मैं निस्संदेह प्रसन्नहूं कौन ऐसी वस्तुहै जिसको देकर आपसे मैं ऋणरहित होऊंगा १९७ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! ऐसा कहकर परमप्रसन्न होकर विष्णुजी चारों भुजाओं को फैलाकर जैसे पिता पुत्रको आलिंगनकरै इसप्रकार आलिंगन करते भये १९८ और उससे बोले कि हे भद्र! आलिंगनके प्रभावसे तुमसे मैं ऋणरहित होगयाहूं तुम्हारा निस्संदेह सब शुभही होगा १९९ हे वत्स! कामी आपने सदैव क्रियायोगसे मेरी मूर्त्ति की पूजाकी है तिससे तुमको देहप्रति लेजाऊंगा २०० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह भगवान् माधवको वरदेकर बड़ी चारों भुजाओंसे फिर प्राणोंसे आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये

२०१ तब माधव स्त्रीसमेत तिस विष्णुजी की मूर्त्तिको भक्तिसे उत्तम क्रियायोगोंसे आराधना करता भया २०२ और स्त्री समेत पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर गंगाजी में मृत्युको प्राप्तहोकर मोक्ष को प्राप्त होजाता भया २०३ सब भक्तिसे इस हरिचरित्रोंसे युक्त और सब पापोंकी राशियोंके नाश करनेवाले अध्यायको जो पढ़ता है वह इस पृथ्वीमें सब भोगोंको भोगकर अन्तसमयमें श्रीवासुदेव भगवान् के धामको प्राप्त होता है २०४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेगंगासागरसंगममाहात्म्यवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

गंगाजीके जलकी बूंदोंका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! गंगाजीके उत्तम माहात्म्य को फिर कहताहूं तिसको सुनकर सबमनुष्य सबकामनाओंको प्राप्तहोते हैं १ जिसने संसारकी माता गंगाजीमें स्नाननहीं कियाहै उसका मुखदेखकर शीघ्रही सूर्यके दर्शन करने चाहिये २ प्रातःकाल जो भक्तिसे गंगा इन दो अक्षरोंको स्मरण करताहै तिसकेपाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जैसे अरुणके उदय में अन्धकार नाश होजाता है ३ जिसने नदियों में श्रेष्ठ गंगाजीके दर्शन नहीं किये हैं तिसके सब अन्नआदिक और जल नहीं ग्रहण करने के योग्य होते हैं ४ गंगाजी के स्नान करनेवालोंके पाप उनकी देह छोड़कर गंगाजी के स्नान न करनेवालों की देहोंमें आजाते हैं ५ वारंवार बड़ा ही आश्चर्य है कि मूर्ख गंगाजीका नाम स्थित होनेमें भी नरकमें गिरते हैं ६ जो ब्राह्मण भक्तिसे गंगाके जलकी कणिकाको शिरसे धारण करताहै वह ब्रह्महत्यादिक महापापोंसे छूटजाता है ७ जिसके माथे में उत्तम गंगाजी की बालू दिखाई देती है वह पुण्यात्मा सब संसारको निस्सन्देह पवित्र करताहै ८ जो मनुष्य गंगाजी के किनारेसे आतेहुएको बड़े आदरसे देखता है वह हजार अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ९ जो यह कहता है कि मैं

गंगाजी के किनारे जाताहूं तुमभी आवो तिसको प्रसन्नात्मा वि-
ष्णुजी सब कामनाओंको देते हैं १० जो मनुष्य कुयें के जल में
भी गंगा यह नाम स्मरण कर स्नान करता है वहगंगाजीके स्ना-
नकेफलकोप्राप्त होताहै ११ जो गंगाजीके जलकी सरसों भर बालू
को मृत्युकालमें प्राप्त होताहै वह परमपदको जाता है १२ हे वि-
प्रर्षे जैमिनि! यहांपर पुराने इतिहासको सुनिये जिसके सुननेहीसे
गंगादेवी प्रसन्न होती है १३ त्रेतायुगमें धर्मस्वनाम ब्राह्मणहुए
थे यह धर्मात्मा, शांत,दान्त, दयावान्, वेद वेदाङ्गके पारगामी, १४
सत्यवचन बोलने वाले, क्रोध और हिंसासे रहित, जितेन्द्रिय, स-
बप्राणियोंके हितकी इच्छा करने वाले और योगाभ्यासमें सदैव
रतथे १५ यह वैष्णवजन ब्राह्मण संसारसमुद्र तरने के लिये क्रि-
यायोगसे देवोंके स्वामी केशवजी को पूजन करते भये १६ कदा-
चित् श्रेष्ठ ब्राह्मण मोक्ष होनेकी इच्छा वाले पुण्यकारी दिन
पाकर स्नानकरने के लिये गंगाजीके किनारे जातेभये १७ तहांपर
गंगाजीके जलमें स्नानकर तर्पणआदिक कर गंगाजीके जलकी
वालुको धारणकर घर जानेका मन करते भये १८ हे विप्र! तिसी
कालमें रत्नकर नाम बनियां सम्पूर्ण नौकरों से युक्त वाणिज्यकरके
आताभया १९ और तिसी रत्नकरका एक नौकर कालकल्प नाम
ब्राह्मण सम्पूर्ण पाप करनेवाला दण्ड हाथमें लियेहुये आता भया
२० तदनन्तर रत्नकर का एक बैल राहके परिश्रमसे थककर राह
हीमें सोजाताभया २१ तबराहमें सोतेहुए बैलको देखकर अ-
त्यन्त निर्दयी कालकल्प दण्डसे बहुत मारता भया २२ तब
दण्डकी चोट से उत्पन्न हुए क्रोध से बैलने तीक्ष्ण सींगों से उ-
ठाकर कालकल्पको विदारणकिया २३ तो दोनों सींगोंसे छाती
फटकर कालकल्पकी आंखें निकलआईं तब धर्मस्व ब्राह्मण दया-
युक्तहोकर तिसके पास शीघ्रही जाताभया २४ और उत्तम तु-
लसीदलको कानसे लेकर उस बुद्धिमान् ने गंगाजल की सुन्दर
बूंदों से सींचा २५ फिर प्राणरहित देखकर परमार्थ का जा-
ननेवाला ब्राह्मण विस्मित होकर अपने घरजानेका मन करता

भया २६ तदनन्तर वह बुद्धिमान् गंगाजीके नामों को कीर्तनकर राहमें जानेलगा तो आगे हज़ारों करोड़ यमराजके दूतोंको देखताभया २७ किसी के पांव कटे हैं किसीके एक हाथ कटे हैं कोई २ के कान कटे हैं कोई के एकही नेत्र हैं २८ कोई की नाक कटी हैं कोई की जीभ कटी हैं कोई के दांत टूटे हैं कोई दांतोंसे वर्जित हैं २९ कोई रक्त की धाराओं से सब देह लिप्त हैं कोई के बाल छूटे हुए हैं कोई मुखसे रहित हैं ३० कोई२ नंगे हैं कोई फटी छातीवाले हैं कोई महातीक्ष्ण बाणोंसे जर्जरहुए अंगवाले हैं ३१ कोई दृढ़फँसरियों से निषिद्धअंगुलिहाथ वाले हैं कोई व्यथा से रोकर भागनेमें परायणहैं ३२ इस प्रकारके यमराजके दूतों को देखकर श्रेष्ठब्राह्मण डरसे कम्पहृदयहोकर स्तब्धकी नाईं होजातेभये ३३ तदनन्तर धैर्य धरकर हरिभक्ति करनेवाले ब्राह्मण मधुर वाणीसे किरात, यमराजके दूतों से यह पूँछते भये ३४ कि आपलोग बुरे आकारवाले, फँसरी और मुद्गर हाथमें लियेहुए, डाढ़ोंसे कराल मुखवाले, अंगारकी सदृश दीप्तिवाले कौनहैं ३५ जोकि बड़े वीर, प्रकाशित अग्निके समान नेत्रोंवाले हैं तिसपरभी आपलोगों की यह दुर्गति किसने की है ३६ तब यमराजके दूत बोले कि हे ब्राह्मण! हम सब यमराजके दूत सदैव यमराजकी आज्ञा करनेवाले हैं यह दण्डसमेत बड़े कष्टके उदयको प्राप्तहोगा ३७ तब धर्मस्वजी बोले कि आपलोग महाबलपराक्रमयुक्त अकस्मात् प्राप्त हुए हैं इतनी यह दुर्गति किसने और कैसे कीहै ३८ तब यमदूत बोले कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! डर छोड़कर सब वृत्तान्त सुनो जैसे हम को यह अत्यन्त दुःसह दुःख हुआ है ३९ जो यह बैलके सींगोंसे कालकल्प विदारित हुआहै तिसके लेनेके लिये धर्मराज ने हम सब दूतों को भेजाहै ४० तिनकी आज्ञासे हम सब सम्पूर्ण हथियारोंको हाथों में लेकर तिस पापियों में श्रेष्ठको बाँध कर लेने के लिये यहां प्राप्तहुए हैं ४१ तदनन्तर यह दुष्ट अन्तःकरणवाला कालकल्प बैलके सींगोंसे विदारितहुआहै ४२ यह पापियोंमें श्रेष्ठ दयासमेत गंगाजी के नाम कहतेहुये गंगाजी के जलकी बूँदों से

सींचागयाहै ४३ गंगाजी के जलकी कणिकाओंके सींचने से पाप-रहित इसको हमलोग फँसरियोंसे दृढ़ बाँध कर लिये जातेथे ४४ कि तिसके लेने के लिये देवोंके स्वामी शरणागलों के पालन करने वाले भगवान् ने अपने महाबलपराक्रमयुक्त दूतों को भेजा ४५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तब तो नारायणजीकी आज्ञा से उनके दूत आकर कोपसमेत राह में हमलोगों से बोले ४६ आपलोग महात्मा कौन हैं किसके दूत हैं और कैसे इस महाशयको फँसरी से बांधकर लिये जातेहौ ४७ इस महात्माको छोड़कर सुखपूर्वक भाग जावो नहीं तो आप लोगोंके शिर चक्रकी धारासे काटे जावेंगे ४८ तिन भगवान्के दूतों के अभिमानयुक्त वचन सुन कर हम सबलोग बोले ४९ कि हम सब दण्डपाणि यमराजजीके दूतहैं इस पापियोंमें श्रेष्ठको लेकर यमराजजी के स्थानको जावेंगे ५० तुम सब महात्मा तुलसी की मालाओं से भूषित फूले हुए कमलपत्र के समान नेत्रवाले, बलवान्, गरुड़ध्वजावाले, ५१ सुन्दर वस्त्र धारण करनेहारे,मयूरके गलेके समान सुन्दर,शङ्ख,चक्र, गदा और पद्म धारण कियेहुए, चार भुजा वाले ५२ इस प्रकार के सब, सम्पूर्ण लक्षणोंसंयुक्त कौनहैं इस पापियों में श्रेष्ठको कैसे लेनेकी इच्छा करतेहैं ५३ तब विष्णुजी के दूत बोले कि हम सब विष्णुजी के दूत हैं इस समयमें इस पुण्यात्मा मनुष्यको वैकुण्ठ ले जानेके लिये आये हैं ५४ हे यमराजके दूतो! इस भगवद्भक्त, अपने जन, पापरहितको जल्द छोड़ो जो जीवनेकी इच्छा चाहो ५५ फिर उनके यह सब में प्राप्त वचन सुनकर कोपसे जो हमलोगों ने कहा तिसको सुनिये ५६ यह दुराचारी, पापी, हज़ार ब्रह्महत्या करने वाला, कृतघ्नी, गऊ और मित्रों का मारने वाला और बुरे आशय वाला है ५७ इस दुरात्माने सुमेरु पर्वतके समान बहुत सोना चुराया है नित्यही दूसरोंकी स्त्रियां हरी हैं ५८ भो विष्णुदूतो! हज़ार करोड़ जन्तुओंकी इसने बहुधा हत्या और स्त्रीहत्याभी की हैं ५९ यह न्यासका अपहरण और अपनी माता से भी भोग करतारहाहै और प्रतिदिन गऊके मांसको खाता रहा है

६० इसने पराई हिंसाकी हैं और दूसरों के घरोंको जलाया है स-भामें पराई निन्दाकी है और विधवाओंके गर्भको गिराया है ६१ और यह यवनके सदृश रात्रिमें घरमें आयेहुए अतिथिको धनके लोभसे तीक्ष्ण तलवारोंसे काट डालता भयाहै ६२ ये पाप तथा और भी अगणित बड़े बड़े पाप इस नीच मूर्खने किये हैं थोड़ा भी शुभ देनेवाला नहीं कियाहै ६३ तिससे यह महापापी यातनाघर को जाता है भो श्रेष्ठतमो! पापी धर्मराजके दण्ड देने योग्य जानने चाहिये ६४ जो आप लोग देवोंके देव भगवान्के दूत हैं तो कैसे इस पापियोंमें श्रेष्ठके लेजानेकी इच्छा करतेहैं ६५ तब विष्णुदूत बोले कि आप लोगों ने सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहीं है यमराजको सदैव सब पापी दण्डदेने योग्य हैं ६६ यह गंगाके जलके बालूके सींचने से पापोंसे छूटगयाहै तिससे इसको हमसब भगवान्के मन्दिरको लेजावेंगे ६७ देहधारियोंके पाप तबतक देहों में स्थित रहते हैं जब तक गंगाजलकी बालू दुर्लभ नहीं स्पर्श होती हैं ६८ जैसे चन्द्रमाकी एक कला से सब अन्धकार नाश होजाता है तैसेही गङ्गाजलकी बालू से पाप नाश होजाता है ६९ गंगाजी के नामोंको स्मरण कर पापी पापसे छूट जाताहै साक्षात् जल देखकर छूटगया तो क्या आश्चर्य है ७० ठण्ढा भी गंगाजी का जल पापरूपी वनमें अग्निकी नाईं होताहै जैसे शीतजल अग्निकी नाईं कमल के वनमें दाह करनेवाला होता है ७१ तिससे यह पुण्यकर्म करने वाला दूसरे केशवजी की नाईं है इससे यमराज के दूतो जो कल्याणकी इच्छा करतेहो तो जावो ७२ तिन भगवान् के दूतोंके ये वचन सुनकर हम लोगों ने जो हँसकर फिर कहा उसको सुनिये ७३ बड़े आश्चर्यकी बात है कि यह पापका घर भी गंगाजीके जलके सींचने से सब पापोंसे छूट गया ७४ अपने हाथ के शुभ वा अशुभ कर्म इकट्ठे किये हुए सौ करोड़ कल्पोंसे भी मनुष्य विना भोग किये नहीं छूटता है ७५ यमराज की आज्ञासे हम सब लोग इसके लेनेके लिये प्राप्त हुए हैं किसके वचन से हम लोग इस पापियों में श्रेष्ठ को छोड़देवें ७६

तब विष्णुदूत बोले कि आप लोग निश्चय पापबुद्धि और ज्ञान से वर्जित हैं जिससे गंगाजीके गुण नहीं जानते हैं ७७ वेदमें निषिद्ध जो कार्य है वह पाप कहाता है और जो वेदसम्मत कार्य है सोई धर्म कहाता है ७८ देव नारायण साक्षात् स्वयंभू हैं यह हम लोगों ने सुनाहै जैसे विष्णुजी हैं तैसेही गंगाजी हैं गंगाजीही सब पाप नाश करनेवाली हैं ७९ अपने हाथके अशुभ वा शुभकर्म हरिही हैं हरिजी के प्रसन्न होनेमें देहधारियों के पाप कहां ठहरते हैं ८० अनेक जन्मों के इकट्ठे किये हुए पापों से आप लोग इस गति को प्राप्त हैं अब भी पापकर्म करनेवाले किसलिये पापकी इच्छा करते हो ८१ गंगाजी तथा विष्णुजी की निन्दा करनेवाले आप लोग हैं इस से आपलोगों को पापी समझकर चक्रकी धारा से नाशकरेंगे ८२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! ऐसा कहकर ते विष्णुजी के दूत क्रोध से लालनेत्रकर हम लोगों से लड़ाई का आरम्भ करते भये ८३ और क्रोधसे यह बोले कि यमराज के दूतोंको मारिये यह वारंवार कहकर हम लोगों को चक्रकी धारसे मारने लगे ८४ फिर लड़ाई में अत्यन्त दारुण, प्रसन्नमन सब विष्णुदूत सहसा से शंखोंको बजातेभये ८५ तदनन्तर हम लोगोंके मेघों के गर्जन की नाईं सिंहनादों और धनुषों के विस्तारों से तीनों लोक व्याप्त होगये ८६ फिर वृक्ष, शिला तथा पर्वतकी वर्षाओं और बाणों से हम लोगोंने विष्णुदूतों को मारा ८७ फिर ऋष्टि, गोफना, बाण, बेड़ना, कुल्हाड़ा, छूरी, दंड, शंकु, ८८ तलवार, शक्ति, तीक्ष्णबाण, गदा, चक्रकी धार और भयानक बाण ८९ इन तथा और विषम वज्रके सदृश अस्त्रों से विष्णुदूतों ने कोपसे बहुत प्रकार लड़ाई में मारा ९० तब अस्त्रोंसे जर्जर होकर हम लोग डरसे भागे और हजारों तो लड़ाईही में प्राणरहित होकर गिरपड़े हैं ९१ तब बलवान् विष्णुजीके दूत भागने में परायण हम लोगों को देखकर आनन्दसे शंखोंको बजाते भये ९२ तदनन्तर कालकल्पके बन्धन को काटकर उसको विमानपर चढ़ाकर भगवान् के पुरको जाते भये ९३ गंगाजीके जलके सींचनेके प्रभावसे अत्यन्त पापी काल-

कल्प भी हरिसालोक्यको प्राप्त होताभया ९४ और वहां सौ कल्प स्थित होकर मनोहर भोगों को भोगकर तहांहीं ज्ञान को प्राप्त होकर परममोक्षको प्राप्तहोगा ९५ हे प्रभो! गंगाजीके प्रभावों से हम लोगोंको ये दुःख प्राप्त हुएहैं हेब्राह्मण! तुम्हारा कल्याणहोवे तुम प्रसन्न हुए अपने स्थानको जावो ९६ ऐसा कहकर ते यमदूत यमपुरको जातेभये और धर्मस्व प्रसन्नहोकर फिर गंगाजी के किनारे जाताभया ९७ और गंगाजी जोकि संसारकी माताहैं तिनमें स्नानकर हाथ जोड़कर यह ब्राह्मण परमेश्वरीजी की स्तुति करते भये ९८ कि हे गङ्गे! आप सब संसारकी माता, चलायमान लहरोंवाली, काम आदिक के अत्यन्त पवित्र मस्तककी फूलमाला, कृष्णजी के पवित्र दोनों चरणोंके धूलिकी नाश करनेवाली और पापोंके नाश करनेवालीहैं आपको मैं भक्तिसे नमस्कार करताहूं ९९ हे मातः! आप सब सुख देनेवाली, नदियों में श्रेष्ठ, व्यासआदिक ब्राह्मणसमूहों के गीतों की समूह, गुणोंसे युक्त, संसार भयानक महासमुद्ररूप तिसके मध्यमें नावरूप हैं आपके पापोंके नाश करनेवाले दोनों चरणोंकी मैं वन्दना करताहूं १०० हे जह्नुकी कन्ये! हे वर देनेवाली! जिस आपके जलकी कणिका पाकर सौदास नाम राजा ब्राह्मणों की करोड़ हत्याको दूरकर मुक्तिको प्राप्त होगया है तिस देवताओंको भी अलभ्य आपको मैं शिरसे नमस्कार करता हूं आप प्रसन्न हूजिये १०१ हे देवि! हे मातः! हे संसार के पापों की नाश करनेवाली! नारायण, अच्युत, जनार्दन, कृष्ण, राम और गङ्गाआदिक नामों को कहतेहुए मेरे देहका पात आपके जल में आपही की कृपासे होवे १०२ हे सब की ईश्वरि! तपस्या, जप, दान और अश्वमेध यज्ञोंसे क्या होता है आपके जलकी शीकर को प्राप्तहोकर अत्यन्त पापीभी मनुष्य देवताओंसे अलभ्य मुक्ति को प्राप्त होजाते हैं १०३ हे परमेश्वरि! हे सृष्टि, पालन और संहार करनेवाली! आप देवताओंके समूह और पितृलोकों की तृप्तिके लिये स्वाहा और स्वधा हैं सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणके स्वरूप आपके मैं नमस्कार करताहूं १०४ आपके जलको

जो मस्तक में धारता है और हे देवि! आपके किनारे की मिट्टीसे सदैव पुण्ड्र धारण करताहै और सब रसोंके धाम आपके नामको भक्तिसे कहता है तिस मेरे आपके चरणों की सब रेणु मस्तक में होवे १०५ हे संसारबन्धन के नाश करनेवाली! हे गंगे! आपके किनारे रहनेका स्थान बनाकर, पापोंके नाश करनेवाले आपके जलको पीकर नामको स्मरणकर और आपकी लहरोंके रसको देखकर कदाचित् मेरा जन्म होवे १०६ हे शुभे! हे मोक्षके देनेवाली! बड़े उल्लासवाले मनुष्य स्वर्गकी अत्यन्त दुर्गम राह मान कर भयकरते हैं सो यह डर करना उनका व्यर्थहै जिससे कि स्वर्गके जानेमें आपका जल सीढ़ीरूप है १०७ हे सबकी ईश्वरि! हे मुक्ति देनेवाली! हे नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी! तबतक पाप मनुष्योंकी देहमें स्थित रहतेहैं जबतक निर्मल आपके जलमें स्नान नहीं करतेहैं १०८ हे परे! जिस आपकी महिमाके पारको अच्युत, ब्रह्मा, शिवआदिक और इन्द्रआदिक देवताओंके समूहभी नहीं पासक्ते हैं तिस परममोक्षपदके देनेवाली कोई मोहसे तटिनी कहते हैं १०९ हेगंगे! हे सब सुख देनेवाली! कुछ आपकी महिमाको भगवान् महादेवजी जानते हैं जिससे ये देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी अत्यन्त भक्तिसे संसारकी ईश्वरी आपको सदैव शिरमें धारणकिये रहते हैं ११० हे गंगे! हे संसारकी मातः! हे परमेश्वरि! हे देवि! आप प्रसन्न हूजिये रक्षाकीजिये आपके नमस्कार हैं मुझ सेवककी रक्षा कीजिये १११ हे मोक्षके देनेवाली! भ्रान्तचित्त मैं परब्रह्मस्वरूपिणी, सब लोकोंकी एक माता आपकी क्या स्तुति करसक्ताहूं ११२ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस बुद्धिमान् ब्राह्मण से स्तुति कीगई गंगाजी मूर्त्तिको धारणकर सहसा से प्रकटहो गईं ११३ जो कि दो भुजाधारे, मकर के आसनवाली, कोकाबेलि, चन्द्रमा और शंख के समान उज्ज्वल, सब अलंकारों से भूषित थीं ११४ तिनको आगे देखकर धर्मस्वजी गंगा गंगा यह कीर्तनकर शिरसे पृथ्वी को आलिंगनकर तिनके चरणों की वन्दना करतेभये ११५ हे जैमिनि! तब मुसक्यानिपूर्वक देखने से मोहित कर-

तीहुई प्रसन्न होकर परमेश्वरीजी ब्राह्मण से बोलीं कि वर मांगिये ११६ तब धर्मस्वजी बोले कि हे मातः! आपके जलके स्पर्श से ब्राह्मण का मारनेवाला भी मोक्षको सेवन करताहै मैंने साक्षात् आपके दर्शन किये हैं इससे और हम को क्या साध्य है ११७ हे परमेश्वरि! हे देवि! तथापि एक वर मैं मांगताहूं कि आपका नाम स्मरण करतेहुए आपही के जल में मेरी मृत्युहोवे ११८ हे ईश्वरि! मेरे कियेहुए स्तोत्र से जो आपकी सदा स्तुतिकरे वह भी सब कामनाओं को भोगकर अन्तमें सद्गतिको प्राप्तहोवे ११९ तब गंगाजी बोलीं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस आपकी भक्तिसे मैं प्रसन्न हूं शीघ्रही निस्सन्देह तुम्हारी सब कुशल होगी १२० तुम्हारे कियेहुए इस स्तोत्र को जो मनुष्य तीनों संध्याओं में पढ़ेगा तिसके ऊपर मैं प्रसन्न होकर उत्तम मुक्ति दूंगी १२१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस प्रकार भक्तोंके ऊपर प्यार करनेवाली देवी धर्मस्वको वर देकर तहांहीं अन्तर्द्धान होजातीभई १२२ तब धर्मस्व ब्राह्मण वर पाकर कृतकृत्यसा होजाताभया और तहांहीं गंगाजी के मनोरम किनारे स्थित होताभया १२३ तदनन्तर बहुत काल बीतनेपर निर्मल गंगाजीके जलमें सुखपूर्वक मृत्यु को प्राप्तहोकर उत्तम पद को जाताभया १२४ पापात्मा कालकल्प गङ्गाजी के जल के शीकरों से सींचाजाकर उत्तम मोक्षको प्राप्तहोगया तो औरों की क्या कथा है १२५ विना इच्छा के फलयुक्त गङ्गाजी के जलके स्पर्श से मोक्ष मिलता है तो भक्तिभावसे स्पर्श करनेवालों को क्या होताहै यह मैं नहीं जानताहूं १२६ फिर फिर मैं कहताहूं कि गंगाजीके समान तीर्थ नहीं है जिनके जल की कणिका छूनेसे परमधाम मिलता है १२७ जे भक्तिभावसे गंगाजी के जल की कणिकाको स्पर्श करतेहैं ते निश्चय सब बड़े घोरपापोंसे छूटकर भगवान् के पदको प्राप्तहोतेहैं १२८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेयोगसारेगंगाशीकरमाहात्म्ये सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

गंगाजीकामाहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! जैमिनि! फिर गंगाजी के उत्तम माहात्म्य को कहताहूं गंगाजीके कथा रूप अमृतके पान की इच्छा जो हो तो करिये १ जिसकी भक्ति गंगाजी में है उसने सब दान दिये सब यज्ञ किये और विष्णुजी को पूजा २ गंगाजी में जितने धर्म किये जाते हैं वे सब उसके नाशरहित होतेहैं ३ जो गंगाजीके बहतेहुए जलको देखकर भक्तिसे उठकर जाता है वह हज़ार अश्वमेध यज्ञका करनेवाला होता है ४ जो गंगाजलोंके आते भये भक्तिसे नहीं उठता है तिसकी जन्म जन्ममें शाश्वती पशुता मिलती है ५ गंगाजीके जलको प्राप्तहोकर जोभक्ति से नहीं ग्रहण करता है वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा की हुई पुण्य को क्षणमात्रमें नाश करदेता है ६ जो गंगाजीके तीर जानेवालेको निषेध करता है वह करोड़कुलसंयुक्त रौरवनरक को जाता है ७ जो गंगाजीके किनारे मूत्र वा विष्ठा करता है उसकी सौ करोड़ कल्पोंमें भी निष्कृति नहीं दिखाई देती है ८ गंगाजीके किनारे जो कफ वा थूंक वा दूषिका वा आंशू वा मल छोड़ता है वह निश्चय नारकी होता है ९ जो गंगाजीके भीतर जूंठन वा कफ छोड़ता है वह घोर नरक और ब्रह्महत्याको प्राप्त होता है १० जो मूर्ख मनुष्य गंगाजीके किनारे पापकरताहै वह निश्चय नाशरहित होता है और तीर्थों में नहीं शान्त होताहै ११ और तीर्थ में कियेहुये पाप गंगाजी में नाश होजाते हैं और गंगाजी में जो कियेजाते हैं वे कहीं पर नाश नहीं होते हैं १२ तिससे शास्त्र जाननेवालों को गंगाजी में पाप न करना चाहिये कर्म, मन और वाणी से धर्मका संग्रहकरना चाहिये १३ देश, पर्वत और वन वे नहीं हैं जहांपर पापोंके नाश करने वाली गंगाजी नहीं स्थितहैं १४ गंगाजीके किनारे को छोड़ कर मुहूर्तमात्रभी और जगह नहीं स्थित होना चाहिये चाहे सैकड़ों कार्य भी हों १५ भिक्षा के अन्नको भी

खाकर गंगाजीके किनारे स्थित होनाचाहिये राज्यभी पाकर और जगह क्षणमात्र न रहनाचाहिये १६ ब्राह्मण का मारनेवालाभी गंगाजीमें देह छोड़कर मुक्त होजाताहै और जगह हज़ार अश्व-मेध का करनेवालाभी मुक्ति नहीं पाताहै १७ गंगाजी के तीर में बसकर जो भगवान् की पूजामें परायण होता है जन्म जन्मान्तर में जिसने कभी हरिजीको नहीं पूजाहै १८ उसकी संसारकी माता गंगाजीमें भक्ति नहीं होती है सब मनुष्यो सुनो वारंवार मैं कह-ताहूं १९ गंगाजी में स्नानकर परमपद जाइये मृत्युकाल में जो मनुष्य गंगा गंगा यह भजताहै २० वह सब पापोंसे छूटकर स्वर्ग में देवताओं के साथ दश हज़ार वर्ष रहताहै हे ब्राह्मण! जिसकी मृत्युके समय में गंगाजीकी कथा का प्रारम्भ होताहै २१ वहसब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के मन्दिरको जाता है जो बुद्धिमान् मृत्यु के समयमें मुक्तिके देनेवाले गंगाजी के नाम को स्मरण करता है तिसके ऊपर हरिजी प्रसन्न होतेहैं और जो मृत्युके समयमें उत्तम गंगाजीकी मिट्टी का पुण्ड्र धारण करताहै २२।२३ और गंगाजी के स्नान करनेवाले को देखकर जो देह छोड़ता है वह श्मशान में भी गंगाजी के मरण को प्राप्त होताहै २४ देहधारी के जितने समयतक गंगाजीमें हाँड़ स्थित रहते हैं तितने हज़ार कल्प वह विष्णुलोक में प्राप्त होता है २५ जिसकी राख, हाँड़, नहँ और बाल गंगाजी में डूबते हैं वह बुद्धिमान् विष्णुजीके लोकमें बसता है२६ गंगाजीमें हाँड़ोंके स्थित होनेमें मनुष्य जो कर्म प्राप्त होताहै तिस सब फलको कहताहूं हे ब्राह्मण! और जगह मन न लगाकर सुनो २७ एक समय में कामी भगवान् इन्द्र अनेक प्रकारके अ-लंकारों से भूषित होकर पद्मगंधा स्त्री के साथ क्रीड़ाके स्थान को जाते भये २८ पद्मगन्धा रसके जानने वाली नवीन यौवनको प्राप्त हुई अनेक रसके दानसे सुन्दररस करती भई २९ सौतिकी सोने की शय्या में तिस बालमृगी के समान नेत्रवाली के पांवोंके तले काम से मोहित होकर इन्द्र बसते भये ३० तदनन्तर इन्द्र आपही परम प्रसन्न होकर तिसके गुणोंसे आकृष्टमन होकर सोनेकी बीड़ी

बनाकर देते भये ३१ इसी समय में श्रेष्ठ सुन्दरी इन्द्राणीजी सब गहनोंसे भूषित होकर आपभी तिसघरको जाती भई ३२ और सुन्दरलक्षणयुक्त इन्द्राणीजी सब देवों के स्वामी प्रभु इन्द्रजी को तिस प्रकार के देखकर अत्यन्त क्रोधकर बोलीं ३३ कि हे देव! हे सब देवताओं के स्वामी! हे कान्त! क्या करते हो मेरी दासी के स्वरूप को सोनेकी बीड़ी देतेहो ३४ हे प्रभो! सब देवता तुम्हारे चरणों को स्पर्श करते हैं और आप कैसे पद्मगन्धा दासी के चरणों के नीचे हैं ३५ सुगन्धिके भावसे मांगेगये भौंरेके स्थान में तुम्हारा यश है और हे प्रभो! सब रसके जानने वाले आप हैं और तुम सुन्दरी करोड़ पतिवाली हो ३६ हे निर्गुणे! हे पद्मगन्धे! हे दासि! कैसे तू इस प्रकारका निन्दित कर्म करती है दूर यहां से जा ३७ ईश्वरी की शय्या में तू और इन्द्र तेरे पांवों के नीचे हैं तब पद्मगन्धाबोली कि मेरे गुण और दोष को आपही स्वामी निश्चय जानतेहैं३८।३९हे निर्गुणे! किस अधिकारसे आकर तुममेरी निन्दा करती हो और तो दो नेत्रों से गुण और दोषों को देखते हैं ४० हे दुष्ट आशय वाली! ये हजार नेत्रों से क्या नहीं देखते हैं जैसे मनुष्योंको दोष तथा गुण न प्राप्तहों ४१ पहले चन्द्रमाका कलङ्क मनुष्यों को गुणकी नाईं दिखाई पड़ता है अनर्थ बोलने वाली, क्रूर, कुत्सितमूर्ति और गुणोंसे वर्जित ४२ जो मैं गुणयुक्त न होती तो पतिकैसे भजते व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! कोकनद के समान नेत्रवाली पद्मगंधा ऐसाकहकर क्रोधसे ४३ बड़ी करुणा करतीहुई सोनेकी शय्यासे उठती भई तब इन्द्र बोले कि हे प्रिये! हे प्राणोंकी ईश्वरि! हे सुन्दरि! हे कान्ते! मुझको छोड़कर कहां जावेगी मैंने क्या तेरा अपराध कियाहै मुझसे वह कहिये मैं निश्चय तेरा दास हूं दासकर्म करता हूं ४४। ४५ दासकी स्त्री दासी होती है क्या तूने वाक्य नहीं सुना है तब तिसके मोहसे आकुलमन होकर इन्द्र उठकर ४६ फिरउस श्रेष्ठ सुन्दरीको कोड़े में बैठा लेते भये तब इन्द्राणी बोलीं कि हे क्रौंचि! तेरा जीवन धन्य है निश्चय मेरा जीवन व्यर्थ है ४७ तू स्वामीको नित्यही सुभगा है

मैं श्रेष्ठस्त्री दुर्भगाहूं जबतक तेरे पुण्यका नाश न होगा ४८ तब तक इन्द्रजीके साथ सुखपूर्वक केलिकरो पुण्य क्षय होनेपर क्रौंच वंशमें उत्पन्न तुम फिर दुःखको भोगकरोगी ४९ हे निर्गुणे! कुछदिन सुखभोगोंसे तेराकुछ न होगा ये इन्द्राणी के अत्यन्त अद्भुत वचनसुनकर पद्मगन्धा ५० इन्दुभावको छोड़कर नमस्कारकर तिन पतिव्रता इन्द्राणीजी से बोली कि हे श्रेष्ठ करिहांववाली इन्द्राणीजी! यह आपने आश्चर्य की बात कही है ५१ मैं क्रौंची कैसीहूं यह मेरे सुननेकी इच्छाहै यत्नसे कहिये कौन मैंहूं कहां स्थितथी और कैसे यहां पतिव्रता मैं प्राप्तहोगई ५२ कितने समयमें मेरा पुण्य क्षीण होजावेगा तब इन्द्राणी बोलीं कि हे पद्मगन्धे! पहले तुम पक्षीसे उत्पन्न क्रौंचीथी ५३ पृथ्वी में स्थितहोकर अपवित्र मांस और कीड़ोंको खातीथी और गंगाजी के मनोरम किनारे एक न्यग्रोधका वृक्षथा ५४ तहां खोलखल बनाकर तुमने रहनेका स्थान बनायाथा एकसमय तिस न्यग्रोधके वृक्षमें कालेसांपने ५५ खोलखलमें प्रवेशकर तुमको काटखाया तो तुम सहसासे मरगई तब तुम्हारे सब बच्चोंको क्रोधसे सर्पने खाडाला ५६ हे श्रेष्ठ मुखवाली! हे भद्रे! तब वहांपर मांसरहित हाँड़ही रहगये किसी समय में बड़ी हवा से ५७ न्यग्रोधका वृक्ष जड़से उखड़कर गंगाजी में गिरपड़ा ५८ तो वे हाँड़ गंगाजी में डूबगये हे उत्तमे! जबतक हाँड़ गंगाजी में रहेंगे ५९ तबतक तुम सदैव स्वामिको सुभगा होगी हे पद्मगन्धे! यह सब मैंने इस समयमें तुमसे कहा ६० जिस पुण्यके प्रभावसे इन्द्र भी तुम्हारे वश में प्राप्त हैं गंगा देवी धन्य हैं जिनके प्रसाद से तू क्रौंची ६१ जो कि चाण्डालों से भी नहीं छूनेवाली थी वह इन्द्र के कोड़ेमें सोतीहै तब इन्द्रने पतिव्रता इन्द्राणी का अपमान किया ६२ तो वे मलिन मुखरूपी कमल को कर जैसे आई थीं वैसेही चलीगईं और श्रेष्ठ स्त्री पद्मगन्धा इन्द्र के कोड़े में ही स्थित रही ६३ परन्तु इन्द्राणी के वचन तिसके हृदय में जागरूक की नाईं स्थित रहे तदनंतर एक समय में पद्मगन्धा के गुणों से इन्द्र प्रसन्नहोकर ६४ आपही उससे बोले कि हेसुन्दर करिहांववाली!

तू वर मांगे तब पद्मगन्धा बोली कि हे स्वामिन् ! हे देवताओं में उत्तम ! आप सब देवताओं के स्वामी और करोड़ स्त्रियों के पति हैं तिसपर भी मेरे आधीन हैं तो और वरोंसे क्या है तिसपर भी जो निश्चय आप वरदेनेकी इच्छा करतेहैं ६५।६६ तो मेरे आगे कर्म, मन और वाणीसे प्रतिज्ञा कीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरि ! मुझे आज्ञा दीजिये कि जीवन, धन, राज्य और परिच्छद क्या तुझको दूं मैं सत्यही सत्य कहताहूं इस में सन्देह नहीं है ६७।६८ हे मृगनयनी ! जो तुम इच्छा करोगी वह निश्चय दूंगा तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के ईश्वर! जो आप निश्चय प्रसन्नहैं ६९ तो मेरा फिर जन्म हाथीकी योनिमें दीजिये यहीमुझ को वर दीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरकटिवाली ! तुम से प्रतिज्ञा करचुकाहूं इससे मैं तुमको वरदेताहूं ७० हे वरारोहे ! तुम को न देखकर क्षणमात्र भी प्रीति न प्राप्त होगी किन्तु मेरे हृदय में बहुत दुःख उत्पन्न होंगे ७१ हे मोटे स्तनवाली ! कैसे दुःसह आपके बहुत विच्छेदको सह सहूंगा जो मेरे ऊपर तुम्हारी दयाहो ७२ तो कुछदिन मेरे साथ स्थितरहो तदनन्तर सती पद्मगन्धा इन्द्रकी बहुत सम्पदा कहतीहुई ७३ दशहज़ार वर्ष इन्द्रही के स्थानमें स्थित रही तिसपीछे उनसे बोली कि हे देवताओंके स्वामी ! मेरे मनोरथ साधन करने के लिये आज्ञा दीजिये ७४ मैं कर्मभूमिको जातीहूं आपके दोनों चरणोंकी वन्दना करतीहूं तब इन्द्र बोले कि हे चन्द्रमुखी ! तुम्हारे प्रेमरूपी समुद्रके मानसे ७५ कुछ दिन स्थित होलूं पीछेसे सुखपूर्वक चली जाइयो तब तो कौतुकके मन्दिरमें इन्द्रके साथ रात्रि दिन ७६ क्रीड़ा करतीहुई पद्मगन्धा तीस हज़ार वर्ष स्थितरही तिस पीछे आनन्दयुक्त होकर इन्द्रसे बोली ७७ कि इस समयमें आज्ञा दीजिये मैं पृथ्वी में जाऊंगी तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दर कटिवाली ! जड़ता छोड़िये मेरे साथ यहीं रहिये ७८ प्राणोंसे भी अधिक प्यारी तुम्हारे छोड़ने को मैं नहीं समर्थहूं तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के स्वामी ! पुण्यके नाश होजानेमें जो मैं पृथ्वीमें जाऊंगी ७९ तो बहुत

काल मेरे साथ आपका विच्छेद होगा जिस विच्छेदमें मैं हेनाथ! फिर पृथ्वी पर जानेकी ८० इच्छा करतीहूं हे इन्द्रजी! जिस उपायसे मैं कर्मभूमिमें जाकर पुण्य इकट्ठाकर फिर स्वर्ग में चली आऊं ८१ यही मैं करना चाहतीहूं जिससे आपके साथ मेरा विच्छेद कभी न हो तब इन्द्र बोले कि हे भद्रे! तुमने जो निश्चय यह कर्म करनेकी इच्छाकी है ८२ तो हे सुन्दरि! जाइये फिर शीघ्रही आइये तदनन्तर नेत्रोंके आंशुओं से देहको सींच कर ८३ तिसको दोनों हाथोंसे आलिंगन कर इन्द्र बोले कि हे प्रिये! जाइये तब इन्द्रकी आज्ञासे वह पतिव्रता कर्मभूमिमें प्राप्त होगई ८४ और हथिनी की योनिमें उत्पन्न होकर जातिकास्मरण बनारहा कुछदिनों में अपना वृत्तान्त स्मरण करती हुई ८५ गंगाजी के किनारे जाकर गंगाजीमें स्नानकर गंगाजीकेकीचड़से भूषित होकर ८६ पर्वत के आकार यह गंगागंगा यह कहती हुई गहरे कुण्डमें प्रवेश कर गई तिस गंगाजीके कुण्ड में जाकर यह हस्तिनी ८७ अपनी जाति को स्मरण करती हुई फिर नाश को प्राप्तहोगई तिसके साहसको देखकर सब देवता हस्तिनीके ऊपर ८८ आनन्दसे कल्पवृक्ष आदिक के उत्तम फूल बरसते भये तदनन्तर सब देवसमूहों से युक्तहोकर इन्द्र तिसके लेनेकेलिये ८९ शीघ्रतासे तिसके बहुत कालके विच्छेदसे जाते भये और सुन्दर देहवाली को विमान पर चढ़ाकर ९० अपनेदुःखोंको कहतेहुए अपने स्थान को प्राप्तहोते भये इन्द्राणी, रंभा, प्रम्लोचा, उर्वशी ९१ तथा और भी इन्द्रकी सुन्दर स्त्रियां आनन्दसे सबकाम छोड़कर तिसके पास आतीभई तबयहश्रेष्ठस्त्री इन्द्रके हृदयके उत्साहको विस्तारित करती हुई ९२ सुभगा और प्रीतिसे प्यारी होतीहुई इन्द्रके पुरमें स्थित होतीभई जिसके जबतक हाँड़ गंगाजीमें स्थित होते हैं ९३ तबतक वह सौ करोड़ कुलताईं देवताओं के स्थान में स्थित होतीहै स्वर्ग में जेजे राजा तपस्या के बलसे राज्योंमें हुए हैं ९४ तिन तिन की स्नेहभूमि देवोंकी सुन्दरी होती है हे जैमिनि! गंगाजी में हाँड़ोंके डूबने से यहफल है ९५ और गंगाजीमें देह छोड़ने वाले के फल

कहनेको मैं नहीं समर्थ हूं गंगाजीमें मृतकशरीर और हाँड़ जब तक स्थित रहते हैं ९६ तबतक सैकड़ों करोड़ कल्पतक देवताओं के स्थानमें वास होताहै और गंगाजीमें मृतक शरीर जो धाराओं से चलित हुआ ९७ देहधारियों का दिखलाई देता है तिसकेफल को सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियां डरकर पवित्र चामरकी पवनोंसे ९८ डुलाती हैं और वह देहधारी आनन्दयुक्त सोने की शय्यापरसोताहै गंगाजीकी बालूमें जिसका शरीर मृतक दिखलाई देता है ९९ और सूर्यकी किरणों से तप्त होताहै तिसके कुलको मैं कहताहूं सुन्दर सुगन्धित चन्दनों से लिप्त सब देहहोकर १०० सुन्दर स्त्रियों समेत स्वर्ग में सदैव क्रीड़ा करताहै कौआ, गृध्र और कंकपक्षियों से गंगाजी में १०१ जिसकी देह विदलित दिखाई देती है तिसकाफल सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियों के मोटे ऊंचे सुन्दर स्तनों से १०२ आलिंगनयुक्त छाती होकर नित्यही सोते हैं चिउंटी, कीड़े और मक्खियों से आच्छादित १०३ गंगाजी में जिसके गिरे हुये हाँड़ दिखलाई पड़ते हैं तिसके नाशरहित फलको मेरेकहतेहुए सुनिये १०४ प्रणाम करते हुए देवताओंके समूहके शिरके मुकुटके भूषणों से पांवोंकी धूलि नष्टहोकर बहुत समय तक स्वर्ग में इन्द्रकी नाईं आनंद करता है १०५ जिसमनुष्यकी देह विना इच्छाही के गंगाजीमें पतन होजाती है वह सब पापों से छूटकर नारायण होजाता है १०६ जलसे चलित होकर जिसके अंगार गंगाजीमें दिखाई देते हैं वह अंगार की संख्यासे स्वर्ग में सौ कल्प अधिक स्थित होता है १०७ सब पुण्यों का कदाचित् नाशभी दिखाई देता है परन्तु गंगाजी में पतितदेह में पुण्य का नाश नहीं होताहै १०८ बहुत यहां कहने से क्या है निश्चित इस समय में मैंने कहा है गंगाजी में छोड़ीहुई देहकी महिमा मैं नहीं जानता हूं १०९ जो चतुर मनुष्य भक्तिभावोंसे विषम पापोंके राशियोंके नाश करनेवाले गंगाजीके जल को पृथ्वी में कभी स्पर्श करता है वह भयानक समुद्रके जलको नांघकर अपार प्रसन्नतासे पार होजाताहै ११० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे गंगामाहात्म्येऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

गंगाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो ! फिर उत्तम गंगाजीके माहात्म्य को कहिये मधुरता से गंगाजीकी कथारूप अमृत के पीनेको फिर इच्छा है १ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! जिससे आप गंगाजीके भक्त हैं इससे मैं तुमसे कहताहूं मनुष्यों के वही चरण सफल हैं जो गंगाजीके किनारे के जानेवाले हैं २ वेही कानहैं जो गंगाजीकी कल्लोलके शब्द सुननेवाले हैं वही जिह्वाहै जो गंगाजीके जलके स्वादुके भेदको जानतीहै ३ वही नेत्रहैं जो गंगाजीकी पवित्र लहरियों के दर्शन करतेहैं वही मस्तक कहाताहै जो गंगाजी की मिट्टीका पुण्ड्र धारणकरताहै ४ वेही हाथहैं जो गंगाजीके किनारे भगवान् की पूजा में परायण हैं वही शरीर सफल है जो निर्मल गंगाजीके जलमें ५ पतितहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! वहदेह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलका देनेवाला है स्वर्ग में स्थित सब पितर गंगाजी के किनारे जातेहुए ६ को देखकर प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा करते और कहते हैं कि पूर्वसमय में सद्गति की प्राप्ति के लिये तीन पुण्य हम लोगोंने की है ७ जो कि नाशरहित होकर यह पुत्र इसप्रकार का हुआ है इससे गंगाजीके जलसे हम लोग इस समयमें तर्पित होकर ८ देवताओं के भी दुर्लभ परमधामको जावेंगे हमारा पुत्र गंगाजीमें जिन द्रव्योंको देगा ९ वे सब हमलोगों के लिये नाशरहित होंगी और सब दुःखसेयुक्त नरक में स्थित पितर १० गंगाजीके किनारे जानेवाले पुत्रको देखकर यह कहते हैं कि हमलोगोंने नरक के क्लेश देनेवाले जितने पाप कियेथे ११ वेपुत्रके प्रसादसे नाशरहित होगये दुस्सह नरकके क्लेशोंसे हम सब छूटगये १२ अब पुत्र के प्रसादसे परमगतिको जावेंगे और जो मनुष्य गंगाजीकी यात्रा करके मोहसे घर लौट आता है १३ उसके सब पितर जैसे आतेहैं वैसेही निराश होकर चले जातेहैं मांस, मैथुन, दोला, घोड़ा, हाथी, १४ जूता और छतुरी गंगाजी की यात्राओं में वर्जितकरे टक्कर

मार्गके श्रमसे उत्पन्न दुःखको नहीं माने १५ घरमें पन्नसुख को गंगास्नानमें न स्मरणकरे झूठ बोलना, पाखण्डियों का संग १६ दूसरीबार भोजन और लड़ाई गंगाजीकी यात्राओं में छोड़देवे दूसरे की निन्दा, लोभ, अभिमान, क्रोध, मत्सर, १७ अत्यंत हास्य और शोकको भी गंगाजीकी यात्राओं में छोड़े पृथ्वी में सोनेवाली देहको मंचपर सोयेहुए की नाईं चिन्तना करे १८ मनुष्य राह में गंगाजी के सुन्दर नामों को कहता हुआ जावे गंगादेवी के सब पाप नाश करनेवाले सुख और मोक्षके देनेवाले माहात्म्यको राह में कहताहुआ जावे हेगंगे! हे देवि! हेसंसारकी मातः! मुझकोदर्शन दीजिये १९।२० इन कोमल वचनोंसे श्रम निवारणकरे और हा कैसे मैंने स्थान छोड़दिया वा कैसे मैं यहां आया २१ परिश्रमों से यह जो कहताहै तो उसका यह फल सम्पूर्ण नहीं होताहै कहां शय्या, कहांमेरीस्त्री, कहांमेरेमित्र और घरहै २२ प्रांतरभूमिमेंकैसे मैं यहां आकर सोऊंगा धन धान्य आदि वस्तुओं की मेरेघरमें क्यागति होगी २३ कितने दिनों में मैं फिर घरको लौट जाऊंगा इस प्रकार की चिन्तासे व्याकुल होकर जे मनुष्य राह में जाते हैं २४ उनको गंगास्नान का फल सम्पूर्ण नहीं होताहै और हेगङ्गे! आपके किनारे जानेके लिये यह यात्रा मैंने की है २५ हेनदियों में श्रेष्ठ! आपके प्रसादसे निर्विघ्न सिद्धिको प्राप्तहोऊं इसमंत्रको यात्राके समयमें विशेषकर उच्चारण कर २६ प्रसन्न होकर वैष्णवों के साथ स्थानसे जावे न तो बहुत जल्द और न बहुत धीरे धीरेसे जावे २७ चतुर पुरुष गंगाजीकी यात्राओंमें और कर्म न करें गंगाजी के तीर और प्रयाग में वाणिज्य इत्यादिक २८ कार्य जो करता है तिसकी आधी पुण्य नाश होजाती है और जन्म २ के इकट्ठे हुए पाप थोड़े वा बहुत २९ सब गंगादेवी के प्रसादसे नाश को प्राप्त होजावें ऐसा कहकर परमप्रसन्न होकर बुद्धिमान् गंगाजीके किनारे जावे ३० और गंगा माताको देखकर इस मंत्रको कहै कि इस समय में मेरा जन्म सफल हुआ और जीवन भी सुन्दर हुआ ३१ साक्षात् ब्रह्मस्वरूप आपको नेत्रसे

देखा हे देवि! आप के दर्शनसे मुझ महापापी के भी ३२ करोड़ जन्मके उत्पन्न पाप नष्ट होगये ऐसा कहकर सब देहको पृथ्वीतल में गिराकर ३३ भक्तिभावसेयुक्त होकर गङ्गादेवी को प्रणाम करै तदनन्तर स्रोतके पास हाथ जोड़कर फिर इस ३४ मंत्रको भक्तिभावसे प्रसन्नहोकर पढ़ै कि हे गंगेदेवि! हे संसारकी मातः! हे शुभे! चरणोंसे आपकेजलको छूताहूं इस मेरे अपराधको प्रसन्न होकर क्षमा करने के योग्यहो आपका जल स्वर्ग के चढ़ने के लिये सीढ़ीरूप है ३५। ३६ इससे हे गंगेदेवि! चरणोंसे छूताहूं आपके नमस्कार है तदनन्तर भक्तिसे गंगाजी के जलको माथे में धारण कर ३७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगा यह नाम कहकर स्नान करने के लिये स्रोतमें प्रवेशकरै हे मातः! आपके अत्यन्त चिकने सब पापके नाशकरनेवाले कीचड़ोंसे ३८ मैंने देह लीपी है हेमातः! मेरे पापोंको नाशकीजिये गंगाके कीचड़से लिप्त अंगहोकर गंगा गंगा यह कीर्तनकर ३९ सब पापनाशिनी गंगाजी में स्नानकरै फिर पहले के कहेहुए मंत्रसे मिट्टीलेकर ४० कहेहुए मंत्रसे भक्तिसे स्नानकरै ४१ हे ब्रह्मस्वरूपे गंगे! आपके निर्मल जलमें मैंने स्नान किया है इससे यथोक्त फल देनेवाली होवो ४२ तदनन्तर हे ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य गंगा और नारायणजी का स्मरण कर अपनी इच्छा से संसार की माता गंगाजी में स्नानकरै ४३ इसप्रकार गंगाजी में स्नानकर देहको कपड़ेसे पोंछकर कपड़ेपहने जलको गंगाजी में न छोड़े ४४ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में दतूनि न करै जो मोहसे करै तो गंगास्नान से उत्पन्न पुण्य को नहीं प्राप्त होवे ४५ प्रातःकाल और जगह दतूनि आदिक क्रियाको कर रात्रिवासको छोड़कर गंगाजी में स्नानकरै ४६ बाहर की भूमिमें विना गये जो गंगाजी में स्नान करताहै वह संपूर्ण गंगाजीके स्नान के फलको नहीं पाता है ४७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में स्नान कर स्थान स्थान में मिट्टीके पुण्ड्र को धारण कर फिर स्थिरमन होकर विधिपूर्वक तर्प्पण आदिक करै ४८ गंगाजीके जलसे जो पितरों को तर्पण करता है तो तिसके पितर सौकरोड़ वर्षतक तृप्त

रहतेहैं ४९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! गंगाजी में जो पितृश्राद्ध करता है तो उस के पितर संतुष्ट होकर स्वर्ग में स्थित होते हैं ५० गंगाजी में स्नानकर्मोंको समाप्तकर व्रत, दान, देवपूजन, जप, तथा और क्रिया जो की जातीहै उनका नाश नहीं होताहै ५१ स्नानकर्मोंको समाप्तकर गंगाजी में व्रत कर पंचमहायज्ञों को करके गंगाजीकी पूजाकरै ५२ बुद्धिमान् मनुष्य गंगा देवी की तथा श्री विष्णुजी की मूर्त्तिको भक्तिसे नारियल के जलसे स्नान करावे ५३ गंगाजीकी मूर्त्तिके अभावसे नारियल का जल निश्चय कर गंगाजी को हृदय में स्मरण कर गंगाजीके जल में छोड़देवे ५४ सुन्दर चन्दन, घीसे पूर्ण उज्ज्वल दीप, सुगन्धित धूप, अनेक प्रकार के मनोहरफूल ५५ अनेक प्रकार के फल, सुन्दर पकीहुई उत्तम नैवेद्य, पाद्य, अर्घ, आचमनीय, खैरसे युक्त पान ५६ तथा और विशिष्ट भेंट, स्तोत्र और अनेक प्रकार की नैवेद्यों से गंगा और विष्णुजी को पूजन करै ५७ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य पूजित हुई देवी और विष्णु परमेश्वरजी की भक्तिसे तीन बार प्रदक्षिणा करै ५८ तिस पीछे दूसरे दिन निराहार स्थित होकर हे नदियोंमें श्रेष्ठ! हे जह्नुकीकन्या! हे पापरहित! मैं भोजन करूंगा मुझको शरण दीजिये ५९ इस प्रकार बुद्धिमान् कर्म्म, मन और वाणीसे संकल्प कर निद्रा जीतकर अत्यन्त हर्षित होकर रात्रिमें जागरण करै ६० और शक्ति न होवे तो फलोंको भोजन करै अन्नमात्र न भोजन करै और दोबार भोजन करै ६१ हे जैमिनि! प्रातःकाल गङ्गाजी और विष्णुजीको फिर पूजनकर द्रव्य के अनुरूप ब्राह्मण को दक्षिणा देवे ६२. हे गंगे! पूजन और जागरण जो आपके आगे किया है वह सब आपके प्रसादसे छिद्ररहित होवे ६३ ऐसा कहकर नित्यकी पूजाकर ब्राह्मण तिनको नमस्कार करै फिर बन्धुओंसमेत आपभी पारणकरै ६४ इस प्रकार गंगाजी के किनारे जो तीर्थव्रत करताहै तिसके पुण्यफलको मैं कहताहूं सुनिये ६५ और जन्मों के इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला विष्णुजी के पुरमें प्राप्त होकर विष्णुजी के साथ

आनन्द करताहै ६६ हज़ार करोड़ कल्प और सौ करोड़ कल्प विष्णुजी के पुरमें स्थित होकर सब दुर्लभ सुख भोगकर ६७ फिर नारायणजीकी आज्ञासे ब्रह्मलोकको जाता है और वहांपर देवताओंके भी दुर्लभ सुखको भोगता है ६८ फिर तितने काल ब्रह्मलोक में स्थित होकर ब्रह्मक्षयके पीछे सुन्दर रथपर चढ़कर महादेवजी के यहां जाताहै ६९ फिर अत्यन्त दुर्लभ अनेक प्रकार के सुखभोगकर गणेशजीके यहां प्राप्त होताहै और बहुत कहनेसे क्याहै ७० तितनेही काल शिवपुरमें स्थित होकर पुण्यवान् मनुष्य दूसरे इन्द्रकी नाईं इन्द्रलोक को जाताहै ७१ और तिन पुण्यात्मा के साथ एकआसन में बसता है और तहांपर सौकरोड़ कल्पतक सम्पूर्ण कामनाओंको भोगकर ७२ दूसरे चन्द्रमाकी नाईं सूर्यलोकको जाताहै और वहांपर बहुत काल चन्द्रमाके समीप अमृत भोगकर ७३ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होता है बहुत काल पृथ्वी को पालनाकर सब वैरियों को जीतकर ७४ उमरके अन्त में गंगाजी में सुखपूर्वक मृत्युको प्राप्त होताहै फिर महायशस्वी वह इसीप्रकार विमानपर चढ़कर ७५ देवताओंके भी दुर्लभ भगवान्के पुरको जाताहै तहांपर चार मन्वंतर सब भोगोंको भोगकर ७६ परमज्ञानको प्राप्तहोकर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै गंगातीरकी यात्रामें भाग्यसे जिसकी राह में ७७ मृत्यु होजातीहै वहभी निस्सन्देह परमधामको जाता है सत्यधर्म नाम राजा धर्मात्मा और प्रिय बोलनेवाला था ७८ यह राजा पृथ्वी में त्रेता और द्वापरकी सन्धि में हुआथा तिस राजाकी विजया नाम स्त्री हुई ७९ यह सुन्दरी शीलयुक्त और पतिकी सेवा में परायणथी सातहज़ार वर्ष इसपृथ्वीको राजा भोगकर ८० कदाचित् काल प्राप्तहोकर स्त्रीसमेत यह राजा नाशको प्राप्तहोगया तब भयंकर राजा और रानी दोनोंको यमराजके दूतोंने बांधकर ८१ दुःख देनेवाली राहसे यमराजके मन्दिरको प्राप्त करदिया तिनको देखकर धर्मराज चित्रगुप्तसे बोले ८२ कि हे चित्रगुप्त! इन दोनोंके कर्मोंको विचारिये तिनकी आज्ञा पाकर चित्रगुप्त राजा और रानीके कर्मों

को ८३ मूलसे विचारकर हाथ जोड़कर यह बोले कि हे यमराज! इन दोनोंके सब कर्मोंको कहताहूं सुनिये ८४ शुभ वा अशुभ कर्म जो इन्होंने पृथ्वी में किये हैं कुछ राजाकी अनीतिका उपाय भी कहताहूं तिसको भी सुनिये ८५ एक समय व्याघ्रोंसे भययुक्त हुआ कोई एक हरिण वनसे रक्षाके लिये इसकी सभामें आया ८६ तब तिसको आतेहुए देखकर कौतुकमें प्राप्त होकर यह शीघ्रही उठकर हरिणके करिहांव में खड्गसे ८७ मारताभया हे प्रभो! जिससे कि इसने शरण में आये हुए को मारा इससे यह स्त्रीसमेत आप से दण्ड पाने योग्य है ८८ जितने हरिण की देहमें रोम स्थितहैं उतनेहीं मन्वंतर हज़ार मन्वंतर और उतनेहीं सौ मन्वंतर ८९ करोड़ करोड़ कुलों से युक्त होकर निस्सन्देह नरक में रहे जो ज्ञानी मनुष्य शरणागतकी रक्षा प्राण और धनों से करताहै तिसकी पुण्य को सुनिये ब्रह्महत्या आदिक सब पापों से छूटकर ९०। ९१ उमरके अन्तमें योगियोंके भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै तदनंतर यमराज की आज्ञा से स्त्रीसमेत यह राजा दूतों से ९२ घोर अत्यन्त दुःख देने वाले असिपत्रवन में स्थापित कियागया जहांपर वृक्षों के पत्ते तलवार के समान होतेहैं ९३ इससे बुद्धिमान् उसको असिपत्रवन कहतेहैं इस वनमें सौ करोड़ युग स्थित होकर ९४ स्त्रीसमेत व्याघ्रभक्ष्य नाम नरक को सेवन करता भया इसमें सब उपद्रव युक्त हैं ९५ व्याघ्रों से भक्ष्य होताहै इससे उस नरक का नाम व्याघ्रभक्ष्य हुआ है तहां पर राजा हज़ार करोड़ युग स्थित होकर स्त्रीसमेत पृथ्वी में मेढ़क की योनि में स्थित रहा वहां पर दोनों मेढ़क और मेढ़की अत्यन्त दुःखित जातिस्मर हुए ९६। ९७ एक किनारे दोनों स्थित रहें और निरन्तर कीड़ों का भोजन करते रहें तदनन्तर एक समय में तिस मार्ग से पुण्यदिन प्राप्त होकर मनुष्य ९८ गङ्गाजी के किनारे जातेथे तिनको वे दोनों देखते भये तब मेढ़क मेढ़की से बोला कि हे मेढ़की! मोहसे जो सब पाप मैंने किये थे ९९ इस समयमें तिस कर्म से हम लोगोंका दुःख नहीं छूटाहै गंगाजी में देह छोड़कर पापी भी मुक्त होजातेहैं १०० तिस

पर भी इस प्रकारका दुःख हम लोग कैसे उठावें इस समय गंगा जीमें देह छोड़ने की इच्छाहै १०१ इससे हे कांते! क्या युक्त है तिस को कहिये दुःखरूपी समुद्र के तरने की इच्छाहै मेढ़की मेढ़क के वचन सुनकर नम्रतायुक्त होकर यह बोली १०२ कि हे स्वामिन्! दुःख सहने में नहीं समर्थ हैं यह शीघ्रही कीजिये तब दोनों शुभ देनेवाली गंगाजी को स्मरण कर १०३ अत्यन्त प्रसन्न होकर मरने के लिये सहसा से यात्रा करते भये तदनन्तर राह में बहुत काल के भूंखे जाते हुए इनको १०४ पापी भयंकर कालसर्प देखकर बोला कि तुम दोनों पापी मेढ़क और मेढ़की यहां आवो तुम्हारा काल प्राप्त हुआ है १०५ अब निश्चय तुम दोनों मुझ भूंखे करके खाने के योग्य हौ तबतो दोनों स्त्री पुरुष दुःख के भागी अत्यन्त डरकर १०६ आगे प्राप्त हुए काल सर्प से भक्तिसे ये वचन बोले कि हे सर्प! हम दोनों के हृदय में थोड़ा भी मृत्यु का भय नहीं है १०७ मैं पूर्व समय में पृथ्वी में सत्यधर्मा नाम हुआ था और यह विजयानाम मेरी स्त्री स्थित है १०८ मुझ दुरात्मा ने मोह से शरणागत को मारा था तिसी कर्म्म से बहुत समयतक यमराज के यहां दुःख भोगकिया है १०९ अपने कर्म के शेषके भोगकरने के लिये मैं स्त्रीसमेत मेढ़क की योनिमें प्राप्तहुआ हूं पापसे कियाहुआ कर्म नहीं छूटता है ११० हे सर्प! सत्यही हम दोनों परमधामके जानेकी इच्छासे देह छोड़ने के हेतु गंगाजी के तीर को जाते हैं १११ हे सर्प! नरक के क्लेश देनेवाली अज्ञानता को छोड़ो हम दोनों को खाकर आपको कितना सुख होगा ११२ हे सर्प! हम दोनों और आपके हृदयमेंभी भगवान् हैं इससे आपके क्या शत्रुता है ११३ प्राणिहिंसा चतुरों को कभी न करनी चाहिये तिस हिंसाको आपही विधि करताहै११४उमर, पुत्र, स्त्रियां, सम्पदा और यशको मनुष्योंकी हिंसादेकर दुष्टविधि आपही हरताहै ११५ जप, तपस्या, दान और यज्ञोंसे क्याहै जिस के हृदयमें सदैव हिंसा ये दो वर्ण रहते हैं ११६ जो प्राणियों का मारनेवाला है सोई भगवान् का मारनेवालाहै क्योंकि सब प्राणि-

योंके शरीर में लक्ष्मीपति भगवान् स्थित रहते हैं ११७ प्राणियों की रक्षा करनेवाले, भगवान् आत्माको अनेकप्रकार की रचकर संसाररूप कौतुक के मन्दिरमें बालककी नाईं आपही क्रीड़ाकरते हैं ११८ देहधारी का शरीर परमात्माजी का स्थान है परमात्मा आपही विष्णुजी हैं इससे हिंसाको छोड़ देवे ११९ पराये प्राणके नाशसे आत्मा की तुष्टि जो होती है १२० तो आत्माकी तुष्टि तो क्षणमात्र के लिये है और दूसरेके प्राण का नाश होगया पृथ्वी में मनुष्योंका यह चरित्र अत्यन्त अद्भुतकी नाईंहै १२१ कि दूसरेको मारकर अत्यन्त यत्नसे आत्माकी तृप्ति करते हैं बुद्धिमान् आत्मका परिज्ञान कभी नहीं करताहै १२२ मैं विष्णुहूं ये विष्णुहैं यह चित्त में भावनाकरै पराये दुःखसे जो दुःखी है और पराई लक्ष्मी से जो सुखीहै १२३ इस संसार में साक्षात् हरि आपही वह जानने के योग्य है और मोहसे ठगेहुए चित्तवाले मनुष्यों का वह सुख धिक्कार है १२४ जो पराई हिंसाके विधान से होताहै सुख वा दुःख जितने प्राणीको दियेजाते हैं १२५ पृथ्वी में थोड़ेही काल में मनुष्य उन को प्राप्त होते हैं तिससे हे सर्प! हिंसाको छोड़कर सुखीहोवो १२६ आपके प्रसन्नहोने में दुःखरूपी महासमुद्र के पारको हम दोनों जावेंगे तब सर्प बोला कि जो पराई हिंसा में निश्चय मुझको अत्यन्तपाप नहीं होता है १२७ तो कैसे ब्रह्मा की सृष्टि में भक्ष्य और भक्षक है तुमने यह सत्य कहा है कि पराई हिंसा न करनी चाहिये १२८ किन्तु सब भक्ष्यों में हिंसा नहीं सम्भावित है और निस्सन्देह नारायण सत्य विश्वरूपहैं १२९ भक्ष्य और भक्षक संज्ञक को आपही रचतेहैं आत्माको आपही रचते, पालते १३० और संहार करते हैं इस प्रकार की हरिजीकी सृष्टि है मैं क्या आपके मारने में समर्थ हूं कालरूपी आपही विधि हैं १३१ इस समय में इस कार्य में आपही भगवान्ने मुझको भेजाहै जो देव तुम दोनोंको रचता है और सदा पालताहै १३२ वही कालरूपी इस समय में मुझ को हेतुबनाकर नाश करताहै व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तदनन्तर तिस सांपने उन दोनों मेढक और मेढ़कियों को खालिया

१३३ ये मेढ़क और मेढ़की गंगाकेतीर की यात्रामें पैग पैगमें रा-
हमें बड़ीभूखसे गंगा गंगा यह कहते आये थे १३४ तिससे ये
दोनों महात्मा बहुत अश्वमेध यज्ञों के महाफल को प्राप्तहुए १३५
इन दोनों के समान इन्द्र भी नहीं हैं इन्द्र अपने अधिकार से
दूसरे को अवलंबनकर १३६ अर्घ्य हाथ में लेकर पैदल चलकर
देवतों से युक्त होकर आतेभये तदनन्तर रम्भा, उर्वशी तथा और
स्त्रियां प्रसन्न होकर १३७ अपने यौवन से अभिमानयुक्त होकर
परस्पर कहतीभईं कि यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ, रसका जाननेवा-
ला और अत्यन्त सुन्दर १३८ आता है इसको अपनी सेवासे
अपने वशकरेंगी कोई कहतीभई कि मैं सब कलाको जानती हूं
१३९ इससे इस राजा की मैं स्त्री हूंगी कोई कहतीभई कि इन्द्र
मेरे वश में हैं तो इस राजा के मेरे वशहोने में क्या आश्चर्य है
१४०।१४१ मेरे भर्ता स्वामी और नाथ यही हैं इसप्रकार परमा-
नन्दों से सब सगुण के जाननेवाली सम्पूर्ण स्त्रियां कहतीभईं १४२
तिनका छोटा बड़ासुनकर कोई गुणयुक्त रसके जाननेवाली स्त्री
बोली कि यह राजा आपही सौदास्य कांता को सेवता है हे स्त्रियो!
लड़ाई करने से क्याहै १४३ तब सब स्त्रियां लड़ाई छोड़कर सब
गहनों से भूषित होकर हृदय के उत्साहों से आतीभईं १४४ तद-
नन्तर पापरहित स्त्रीसमेत श्रेष्ठ राजाको पाद्यादिकों से इन्द्र के कहने
से पूजन भी करतीभईं १४५ फिर इन्द्र स्त्रीसंयुक्त राजा को पुष्पक
रथ में बैठालेताभया और नगारा, मृदंग, मधुरी, डिंडिम, आनक,
१४६ हाथके कंकण, करताल और जयके शब्दों से स्वर्गमें बड़ा
शब्द होताभया १४७ देवताओं की स्त्रियां पवित्र हाथों में सफेद
चामरकी पवनों से हवा करनेलगीं इस प्रकार स्त्रीसमेत राजा
स्वर्गको जाता भया १४८ तदनन्तर शुभ आपही इन्द्र तिस सत्य-
धर्म राजाको नाशकी शंकासे अपने आसनका आधा देते भये
१४९ तब भगवान् की कृपासे यह राजा इन्द्रके साथ सदैव एक
आसन पर बैठकर स्वर्ग में इन्द्रभाव करता भया १५० हज़ार
करोड़युग स्वर्ग में सबसुख भोगकर रथपर चढ़कर भगवान्की

आज्ञासे वैकुण्ठ को जाताभया १५१ तहांपर मनोरम सब भोग मन्वन्तरपर्यन्त भोगकर स्त्रीसमेत मोक्षको प्राप्त होजाता भया १५२ हे ब्राह्मण! गंगातीर की यात्रामें राहमें देह छोड़ने वालेका इसप्रकार का सब फल मैंने कहा १५३ तत्त्वदर्शी नारदादिक महर्षियोंने गंगातीर के जाने में कालका नियम नहीं कहाहै १५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जब जब गंगाजीमें स्नान करै तब तब मनुष्य नाशरहित पुण्य को पाता है १५५ गंगा सब पापों को नाश करती है यहवारंवार निश्चय करै और तिसपापको गंगा न पवित्र करेंगी १५६ इस पापबुद्धिको छोड़कर हे मनुष्यो! संसारकी माता गंगाजीमें जो अच्छीगतिकी इच्छा चाहो तो स्नान करो १५७ हे ब्राह्मण! मनुष्योंको जो पुण्य गंगाजीके स्नानसे मिलती है वह कितनेही दुस्तर कर्मोंसे प्राप्त होतीहै १५८ पृथ्वीकी धूलि के कणों की गिन्ती करना तो हो सक्ताहै परन्तु गंगाजी के गुण कहनेको नहीं समर्थ होसक्तेहैं १५९ तुम्हारे सब शास्त्रों को विचारकर मैंने कहा है मनुष्य गंगाजीके जलमें एकबार भी स्नान कर मोक्ष को प्राप्त होजाता है १६० हे ब्राह्मण! जो कुंये के जलमें भी गंगा और देवताओंके प्रभुको चिन्तनाकर स्नान करता है वह सम्पूर्ण दुःख, शोक, पाप और भयके समूहके नाश करनेवाली श्रीगंगाजी के प्रसाद से सब गऊ और ब्राह्मण की हत्याआदिक पापसमूहों से छूटकर सब सुख देनेवाले विष्णुजीके पुरको जाताहै १६१॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेगंगामाहात्म्येनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

चम्पाके फूलकी महिमा वर्णन॥

जैमिनिबोले कि हे गुरो व्यासजी! आपके प्रसाद से यह गंगाजीका माहात्म्य तो मैंने सुना अब इस समयमें विष्णुजीकी पूजा के फलके सुननेकी इच्छाहै १ तब व्यासजी बोले कि हे वत्स जैमिनि! भगवान्के उत्तम पूजाके फल को सुनो जिसको सुनकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञानको प्राप्त होतेहैं २ हे ब्राह्मण! माघ आ-

दिक बारहों महीने में सनातन भगवान् जिन विधानों से पूजने चाहियें तिनको मैं कहता हूं सुनिये ३ उत्तम वैष्णव शुभसब मासोंमें उत्तम माघमासके प्राप्तहोने में मांस और मैथुन को त्याग देवे ४ नित्यही प्रातःकाल स्नानकरै तेल, दूसरी बारका भोजन और पराया अन्न माघमासमें छोड़देवे ५ प्रातःकाल सफेद कपड़े पहनकर पंचमहायज्ञकर स्थिरचित्त होकर मनुष्य विष्णुजीकीपूजा को प्रारम्भ करै ६ कुछ,गरम शुद्ध जलोंसे नाशरहित विष्णुजीको स्नान करावे फिर अत्यन्त श्लथ चन्दनों से विष्णुजी के अंगों को लेपनकरै ७ और देवोंके देव, चक्रधारी, संसारके स्वामीको पूजन करै धोये हुए बर्तनों को जलसे हीन करावे ८ कुछ गरमजलसे संसारके नाथ को स्नान कराकर तिनके शरीरको यत्नसे सुन्दर कपड़ेसे पोंछे ९ हेश्रेष्ठ ब्राह्मण! माघमासमें कुछ गरमजलसे केशवजी के स्नान करानेके फलको मैं कहताहूं १० जन्म जन्मके इकट्ठे किये हुए सब पापोंसे छूटकर इसलोकमें सब सुख भोगकर अन्तमें भगवान्के स्थानको जाताहै ११ यत्नसे बर्तनोंको धोकर जलोंसे शुद्धकर जो जगन्नाथजीको पूजनकरताहै तिसकी पुण्य को सुनिये १२ सब व्याधियों से छूटकर इस लोकमें सब कामनाओं को भोगकर अन्त में हजार युगतक भगवान् के मन्दिर में स्थित होता है १३ प्रातःकाल संसार की संध्या में भगवान् के आगे वैष्णव मनुष्य धूमरहित प्रकाशित अग्नि को स्थापितकरै १४ शीतके निवारण के लिये वैष्णव मनुष्य सायंकाल और प्रातःकाल माघ में विष्णुजीके आगे प्रकाशित अग्निको करता है उसके फलको सुनिये १५ पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर इस लोकमें सब कामनाओं को भोगकर अन्त में देवताओं से भी दुर्लभ विष्णुजीके पुरको प्राप्त होता है १६ जैसे आत्मा है तैसेही विष्णुजी हैं सन्देह नहीं विद्यमान हैं शय्या के ऊपर सोतेहुए देवदेवोंके स्वामी भगवान् को १७ मनुष्य जैसे अपने शीत के निवारण को करता है तैसेही करै माघमास में जो जनार्दनजी को दूधसे स्नान कराता है तिसको देवोंमें उत्तम विष्णुजी क्या नहीं देतेहैं १८ तैसेही भग-

वान् के शीतको सुन्दर कपड़े से नाशकरे १९. जो मनुष्य एक बार भी माघ में भगवान् को नारियल के जल और दूधसे स्नान कराता है तिसके फलको मैं कहताहूं २० वह मनुष्य अपने कर्म से दुस्तर नरकरूपी समुद्र में डूबतेहुए करोड़ पुरुषों को उद्धार कर भगवान् के पदको प्राप्त होता है २१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! माघ मासके शुक्ल और कृष्ण पक्षकी पंचमी और एकादशीमें विशेषकर भगवान् की पूजा करनीचाहिये २२ और देवोंके देव, लक्ष्मीसमेत मुरारिजी को माघमास में दिनदिन में धूप समेत खीरदेनी चाहिये २३ हे वैष्णव जैमिनि! माघमास में जो भगवान् को धूपसमेत खीर देताहै तिसके पुण्यफलको कहताहूं सुनिये २४ अंतकाल में विष्णुजीके पुरको जाकर चार मन्वन्तरपर्यन्त भगवान् के प्रसादसे मनोरम भोगों को भोगकर २५ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होताहै और बहुत कालतक भोग भोगकर मरकर भगवान् के स्थान को प्राप्त होता है २६ पंचमी वा सप्तमी वा एकादशी में अशक्त वैष्णव श्रेष्ठ अन्न मुरारिजी को देवे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष में विशेषता है शुक्लपक्ष में इन तिथियों में मुरारिजी को अन्न देवे २८ जो मनुष्य एक दिन भी दैत्यों के जीतनेवाले विष्णुजी को पुवोंसमेत खीरदेता है तिसको भगवान् दुर्लभ नहीं हैं २९ जो कुछ ब्राह्मण की प्रसन्नता के लिये माघमास में दियाजाता है वह पुरुष का नाशरहित होता है कोई इस में सन्देह नहीं है ३० हे ब्राह्मण! जो कुछ माघमास में शुभ वा अशुभकर्म किया जाताहै तिसका सौ मन्वंतरों में भी नाश नहीं है ३१ माघ में चम्पाके फूल से जो भगवान् को पूजता है वह सब पापों से छूटकर परमधाम को जाताहै ३२ और जितने चम्पाके फूल भगवान् को दिये जातेहैं तितने हजारयुग देनेवाला विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होताहै ३३ सुमेरु पर्वत के समान सोना देकर जो फल होताहै वह एकही चम्पाके फूल से भगवान् को पूजनकर होताहै ३४ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! चम्पा का फूल सदैव भगवान् को प्रिय है माघमास में विशेष कर

पवित्र और भगवान् को प्रियहै ३५ चम्पा के सुन्दर फूलों से जिसने विष्णुजीको नहीं आराधन कियाहै वह रत्न और सुवर्ण आदिकसे जन्म जन्म में हीन होता है ३६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! चम्पा फूलका फल मैं विशेषकर कहता हूं उत्तम इतिहाससमेत सुनिये ३७ सुवर्ण नाम राजा बलवान्, सब शास्त्रों का जानने वाला सब आर्यावर्तोंमें हुआ यह तेज ३८ राजलक्ष्मी, विद्या और उमरसे अत्यन्त मतवाला और सदैव पापमें रतथा ३९ इस राजाने पाखण्डी मन्त्रियों के वाक्योंसे विना दोषके भी साधु मनुष्यों को धनके लोभसे दण्ड दिया ४० और गीत और वाद्य आदिकसे युक्त और यज्ञ दान से वर्जित होकर अन्यायसे इकट्ठा की हुई सब द्रव्य को नाश करदिया ४१ न जातिकापालन, न देवता, ब्राह्मणको भोजन और न याचकों को प्रसन्न किया सदैव पापसे मोहित ४२ पापका स्थान और सदैव पापमें परायण होकर अतिथिकी पूजा भी न करता भया और नित्यही स्थान से जाता भया ४३ समर्थ यह सैकड़ों वर्ष अज्ञानियों के बहुत से पाप करता भया जो गिनेही नहीं जा सक्ते हैं ४४ एक समयमें काम से मोहित, दुष्ट आशयवाला यह राजा आधीरात को वेश्याके स्थान में जाता भया ४५ तब उज्ज्वल नाम वाली वेश्या राजाको आते देखकर सहसा से शय्यासे उठकर तिनके चरणोंकी वन्दना करती भई ४६ और उत्तम जलसे उनके दोनों चरणों को धोकर दोनों हाथों से आलिंगनकर मंचमें प्रवेश कराती भई ४७ तबकुतूहली राजा तिस वेश्याके प्रेमरूपी अमृत की धाराओंसे सींचे जाकर तिसी शय्या में तिसके साथ बसते भये ४८ तदनन्तर प्रीतिसे हँसतीहुई नवयौवना वेश्या तिस राजा को आपही चम्पाके फूलोंका माला देतीभई ४९ तब उस फूलकी माला से राजा के हाथ से एक फूल जो कि सुगन्धसे दिशाओं के अन्तर को व्याप्त कियेहुए था वह पृथ्वी में गिरपड़ा ५० तो उस गिरेहुए फूलको देखकर राजा अत्यन्त संभ्रम से ॐ नमोनारायणाय कहताभया ५१ नारायणाय इस वाक्य से चम्पाके फूल के देनेसे तिस राजा के

सब पाप नाश होगये ५२ तदनन्तर गांव के सब मनुष्य तिसीरात्रि में अत्यन्त दुर्जय वेश्या के घर में स्थित राजा को मारडालतेभये ५३ तब क्रोधयुक्त होकर यमराजजी सब पापियों में श्रेष्ठ तिस राजा के लानेकेलिये दूतों को भेजतेभये ५४ तब तो यमराजजीकी आज्ञापाकर फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर क्रोधसे लालनेत्र कर दूत अत्यन्त वेगसे जातेभये ५५ और अपने स्थान के लेजाने के लिये उद्यम करतेभये तदनन्तर नारायणजी के दूत शङ्ख चक्र और गदा को धारण कर ५६ गरुड़ पर चढ़कर तिसी राजा के लेनेके लिये जातेभये वहां पर फँसरीसे बँधेहुए राजा को देखकर भगवान् के दूत ५७ महाबलवान् चक्र और गदाओं से यमराज के दूतों को मारतेभये और सुन्दर रथमें चढ़ाकर अत्युत्तम शंखों को बजातेभये ५८ और तैसेही राजा रथपर चढ़कर तुलसी की माला से भूषित होकर पीलेरेशमी कपड़ोंको पहन,सोने के गहनों से भूषित, ५९ वेद और वेदाङ्ग के पारगामी मुनिसमूहों से स्तुतिको प्राप्त और विष्णुजीके दूतों से युक्त होकर हरिजी की सालोक्यको प्राप्त होताभया ६० तदनन्तर विष्णुजी आपही उठ कर दीर्घ चार भुजाओंसे तिस राजाको आलिंगनकर बोले ६१ कि हे पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ राजन्! कुशल कहिये आपका क्या साध्य है तिसको आज्ञा दीजिये ६२ नमोनारायणाय यह एक बारभी जो कहता है तिसके नित्यही हम अनुपाल्य, वही भाई और मेरा पिता है ६३ कदाचित् जो मनुष्य नारायण यह मेरा नाम स्मरण करता है तो उसके मैं सब कामोंको इसप्रकार सिद्ध करताहूं जैसे पुत्र पिताके कामोंको सिद्ध करता है ६४ हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुम मेरे भक्तहो इससे अद्भुत अपने मनोरथ को प्रकाशित कीजिये इस समयमें मैं आपको क्यादूं ६५ तब राजा बोले कि हे दयाके समुद्र! आपने निस्सन्देह सब कुछ दियाहै जो पापीभी मैंने आपके दुर्लभ स्थानको प्राप्त किया है ६६ तिसके इस वाक्यसे भगवान् प्रसन्न होगये और स्नेहसे राजाको निवेशित करतेभये तिसको सुनिये ६७ तब कृपायुक्त भगवान् विश्वकर्माके रचेहुए सोनेके गहनोंसे आपही

तिसका मण्डल करते भये ६८ तदनन्तर अत्यन्त सहनशील विष्णुजीने अनेक प्रकारकी सुन्दर, दुर्लभ भक्ष्योंसे राजाको प्रसन्न किया ६९ इस प्रकार राजा प्रतिदिन विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होता भया और धर्म में तत्पर होकर हज़ार मन्वन्तर और नवसौ वर्ष प्रजाओंका पालन करताभया और निरन्तर श्रेष्ठ भक्तिसे भगवान्का पूजन ७०।७१ पवित्र चम्पाके फूल और अनेक प्रकार की नैवेद्योंसे करताभया और उमरके अन्तमें गंगाजी के किनारे मरणको ७२ प्राप्तहोकर भगवान्के प्रसादसे मोक्षको प्राप्तहोजाता भया व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि ! चम्पाके फूलका यह प्रभाव कहा ७३ पापी मनुष्यभी चम्पाके फूलोंसे भगवान्को पूजनकर मुक्तहोगये हैं फूलेहुए चम्पाके फूलसे पूजितहुए भगवान् हरि ७४ थोड़ेही समय में परमपद देते हैं जे इच्छा वा विनाही इच्छाके परमेश्वरको पूजन करते हैं ७५ वे भी सब पापोंसे छूटकर परंधामको प्राप्तहोते हैं ७६ भगवान्के प्रसन्न होने में पाप कहां रहते हैं जिससे कि पाप करनेवाला राजाभी भगवान्की कृपासे गंभीर इस संसारसमुद्रको तरकर मोक्षको प्राप्त होजाताभयाहै ७७ जो मनुष्य सुन्दर सुगन्धित चम्पाके फूलोंसे कमलदलके समान विस्तृत नेत्रवाले भगवान्को भक्ति और परम आदरसे पूजन करताहै वह पापोंको छोड़कर मोक्षको प्राप्त होजाताहै ७८ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेचम्पकपुष्पमहिमानामदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

भगवान्के पूजनकी विधि वर्णन ॥

व्यासजी बोलेकि हे विप्रर्षे ! जैमिनि ! हे वत्स जिस विधि से सदैव भगवान् पूजने चाहिये तिसको मैं कहताहूं एकाग्र होकर सुनिये १ बुद्धिमान् मनुष्य प्रातःकाल शय्यासे उठकर कपड़ेसे मस्तकको आच्छादितकर लोटेमें जल लेकर बाहरजावे २ तहांपर उत्तर दिशामें मौनहोकर यज्ञोपवीतोंको कानों में चढ़ाकर बैठकर मलमूत्रको त्यागे ३ देवताका स्थान, राह, गोशाला, चौरा-

द्वा, गांव के भीतरकी राह, जोती भूमि, कुशाकी जड़, आंगन, ४ नदीके किनारे, चैत्य के वृक्षकी जड़, वन, ताल और बावली के भीतर मलमूत्रको न त्यागे ५ बुद्धिमान् मनुष्य जब तक मलमूत्र छोड़े तब तक सूर्य, चन्द्रमा, ब्राह्मण, गऊ और दशों दिशाओं को न देखे ६ और मुसरिया आदिकों से खोदीहुई बिलके भीतर की वर्तमान और फालसे जोतीहुई मिट्टीको शौचके लिये न ग्रहण करै ७ जलसे जल लेकर चतुर पुरुष शौचकरे और बुद्धिमान् मनुष्य जलोंमें पांव देकर शौच न करै ८ रात्रिमें दक्षिणमुख होकर वस्त्रसे शिरको आच्छादितकर दिशा फिरे तिस पीछे शौचकरै ९ एक मिट्टी लिङ्गमें, तीन गुदामें, सात बायें हाथमें और दोनों हाथोंमें दश १० और बुद्धिमान् दोनों पांवोंमें छःमिट्टी देवे शौचकी क्रियाकर फिर दतूनिकरै ११ दांतों के आच्छादन आदिकों से जिह्वाको शुद्धकरै दक्षिण तथा पश्चिममुख होकर १२ दतूनि न करै जो करै तो नरकमें जावे मध्यमा अनामिका और वृद्धांगुष्ठसे १३ दतूनिकरै तर्जनी अंगुली से कभी न करै पीपल, बरगद, आंवला और कैथाके वृक्षकी दतूनों से १४ तथा इन्द्रसुरकी दतूनिसे दांतोंको नहीं धोवे नित्यकी क्रिया फल सब उसकी इनवृक्षों की दतूनि करने से नष्ट होजती है १५ हे जैमिनि! जो स्नानके समयमें दतूनि करता है उसके पितृ, देवता और ऋषि निराशहोकर चले जाते हैं १६ जो दोपहर और तीसरे पहर दतूनि करताहै तिसकी देवता पूजा और पितृ जल नहीं ग्रहणकरते हैं १७ स्नानके समय में जो तलैयामें दतूनिकरता है तो वह जब तक गंगाजी को नहीं देखताहै तब तक चाण्डालही जानने योग्यहै १८ भगवान् सूर्यके उदय में जो दतूनिकरताहै तो पितृ दुःखित होकर दतूनिकी लकड़ीको खाकर चलेजाते हैं १९ व्रतके दिन और पिताकी श्राद्धके दिन दतूनि करनेवाला मनुष्य तिस फलको नहीं प्राप्त होताहै २० प्रातःकाल दांतों को शुद्धकर कपड़ेसे जीभको भी शुद्धकरै फिर बुद्धिमान् जलसे बारह कुल्लेकरै २१ व्रत और पिताकी श्राद्धमें इस विधिसे दतूनि करनेवाला मनुष्य संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै २२

इस विधिसे दीर्घदर्शी मनुष्य बाहर दिशा फिरकर अपने घर आकर रात्रिके कपड़ों को त्याग करदेवै २३ तदनन्तर पवित्र बुद्धिमान् मनुष्य देवता के स्थानके द्वारमें बैठकर नारायण, देव, अनंत, परमेश्वरको स्मरण करै २४ हे राम! हे श्यामवर्ण देहवाले! हे विष्णु! हे नारायण! हे दयामय! हे जनार्दन! हे संसारके धाम! हे केशवजी! मेरेपापोंको नाश कीजिये २५ हे पीतांबर धारण करनेवाले! हे अनंत! हे पद्मनाभ! हे जगन्मय! हे वामन! हे प्रणतोंके ईश! हे विभो! आपशरणहूजिये २६ हे दामोदर! हे यदुश्रेष्ठ! हे श्रीकृष्ण! हे दयाके समुद्र! हे कमलनयन! हे देवोंमें श्रेष्ठ! हे वासुदेवजी! कृपा कीजिये २७ हे गरुड़ध्वज! हे गोविन्द! हे विश्वंभर! हे गदाधर! हे शंख, चक्र और पद्म हाथमें धारणकरनेवाले! आपदाओंको नाशकीजिये २८ हे लक्ष्मीविलास! हे वैकुण्ठ! हे हृषीकेश! हे देवताओंमें उत्तम! हे पुरुषोंमें उत्तम! हे कंसकेवैरी! हे कैटभ राक्षसके शत्रु! भयहरिये २९ हे लक्ष्मीके पति! हे लक्ष्मी के धारण करनेवाले! हे विभो! हे लक्ष्मी के देनेवाले! हे लक्ष्मी के करनेवाले! हे लक्ष्मी के पति! हे परंब्रह्म, हे परंधाम! हे नाशरहित! हमको शरण हूजिये ३० इसप्रकार बुद्धिमान् मनुष्य श्री विष्णुजीका स्मरणकर स्थानमें प्राप्त होकर हाथ जोड़कर यह कहे ३१ कि हे ईश्वर! हे लक्ष्मी के पति! हे कृष्ण! हे देवकी के पुत्र! हे प्रभो! हे संसारके नाथ! प्रातःकाल हुआहै निद्राको छोड़िये ३२ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य निद्रा छोड़कर शय्या में उठे हुएकी नाईं लक्ष्मी समेत भगवान् को अपने चित्तसे चिन्तन करै ३३ तदनन्तर वैष्णव मनुष्य कृतच्छद, जलसे पूरित सुन्दर वर्तन को मुख धोनेके लिये कृष्णजी को देवै ३४ जैसे सेवकवर्तन के लिये ईश्वरको सेवन करते हैं तैसेही बुद्धिमान् परमेश्वरको सेवन करते हैं ३५ हे विप्रर्षे! जो सेवकके रूपसे भगवान्को सेवन करताहै तिसको थोड़ेही कालमें वांछित सिद्ध होताहै ३६ जैसे सेवक मालिककी डरसमेत सेवा करते हैं तैसेही बुद्धिमान् सदैव हरि, प्रभुजीकी सेवा करतेहैं ३७ इस अपनी इच्छासे निर्भय मनु-

ष्य विष्णुजीको पूजन करै बुरा सेवक वहीं है जो भगवान्को नहीं पूजताहै इससे बुरा सेवक नहीं होवे ३८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इससे मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुषको सदैव शीघ्रही भगवान् की पूजन करनी चाहिये ३९ वैष्णव मनुष्य निर्माल्य, रात्रिके वस्त्र और बासी चन्दनको प्रातःकाल भगवान्के अंगसे उतार देवे ४० तदनन्तर तिस देवताके स्थानमें बुद्धिमान् मनुष्य आपही बहारी से धीरे धीरे बहारे ४१ तिस स्थानसे जितनी धूलि बाहर चली जाती हैं तितने सौ मन्वन्तर मनुष्य विष्णुजीके मन्दिरमें स्थित होता है ४२ जो ब्राह्मण का मारनेवाला भी भगवान्के घरमें झाड़ू देवे तो वह भी परंधामको प्राप्त होवे और बहुत कहनेसे क्या है ४३ तथा ऊर्णक गोबरोंसे लीपे फिर तिस विष्णुजी के घरमें बुद्धिमान् नारायण प्रभुजी को स्मरण करै ४४ जो भगवान्के मन्दिर को लीपताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे कहताहूं हे जैमिनि! सुनिये ४५ हे ब्राह्मणों में उत्तम! तहां पर जितनी धूलि नाश होती हैं तितने हजार कल्प मनुष्य सुखपूर्वक विष्णुजी के मन्दिरमें स्थित होता है ४६ मनुष्य विष्णुजी के घरको बहारकर लीपै तो परमधामको प्राप्त होताहै और भगवान्की पूजाके फल जाननेसे क्या है ४७ जो आप देवराज विरोधसे न समर्थ होवे तो भगवान् के घरमें अपनी धर्मपत्नीको युक्तकरै ४८ अथवा भक्त, सुन्दर चरित्र वाले पुत्र, भाई, वा बहनको देवस्थानमें युक्तकरै ४९ भगवान्के पूजा की वस्तुओंको शुद्धजलोंसे सात वा तीनप्रकार आपही अत्यन्त यत्न से धोवे ५० तांबेके वर्तन खटाई से, कांसेके वर्तन भस्म से, लोहे के वर्तन अग्निसे निस्सन्देह शुद्ध होतेहैं ५१ धनवान् होकर जो लोहेके वर्तनमें स्थित जलोंसे नारायण जगन्नाथजीको स्नान करवाता है तिसके ऊपर भगवान् प्रसन्न नहीं रहतेहैं ५२ वा अज्ञान से जो स्नान लोहेके पात्रमें स्थित जलोंसे करवाताहै तो गंगाजीके स्नान करनेसे शुद्ध होजाता है ५३ विपत्तिमें वर्त्तनका नियम नहीं है यह शास्त्रोंमें निश्चय है और यत्नसे धोया हुआ शङ्ख जो फिर पृथ्वीको स्पर्श करजावे ५४ तब वह शङ्ख सौबार धोये से शुद्ध

होताहै इस प्रकार भगवान्‌की पूजाद्रव्यों को यत्नसे धोकर ५५ स्नानकी वस्तुओं को लेकर स्नानके लिये तालावको जावे स्नान कर्मोंको विनाकिये जो घरको फिर आताहै ५६ तो तिस दिन पितृगण तिसके तर्पणको नहीं प्राप्त होते हैं स्नान वा भोजन करने के लिये जानेवाले को जो मोहसे विघ्न करता है वह निश्चय नरक में जानेवाला होता है और स्नान करने के लिये जो तालाब में जाकर मल और मूत्र करता है ५७। ५८ तो उसके पितृ निस्सन्देह विष्ठा और मूत्र के भोजन करने वाले होते हैं तदनन्तर विधि पूर्वक स्नान और तर्पण आदिक कर ५९ अपने घरमें आकर बुद्धिमान् मनुष्य नारायणजीको स्मरण करै फिर आंगनमें दोनों चरणों को धोकर ६० पवित्र, ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करै और विना चरण धोये जो मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करता है ६१ तो सालभर की तिसकी की हुई पुण्य तिसी क्षणमें नाश होजाती है चतुर मनुष्य स्नान कर आंगनों में आकर ६२ दोनों चरणों को धोकर देवता के स्थान में प्रवेश करै और वहांपर बैठकर बुद्धिमान् बायें हाथ से दोनों चरणोंको ६३ यत्न से धोकर फिर तैसेही दोनों हाथों को भी धोवे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मूर्ख मनुष्य पांवसे पांवको तथा दहने हाथसे पांवको धोताहै तो उसको लक्ष्मीजी निश्चय छोड़ देती हैं तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य बैठकर भगवान्‌के पूजनको प्रारम्भ करै ६४। ६५ जो कि सब कामना और फलके देनेवाले हैं अनन्य मनहोकर मृगचर्म के शुद्ध आसन वा व्याघ्रके चर्मके आसन ६६ केवल वस्त्रके आसन तथा कुशमय आसन वा फूलके आसन में बैठकर भगवान् को पूजन करै ६७ विद्वान् ब्राह्मण काष्ठके आसन में बैठकर विष्णुजीका पूजन न करै हे पृथिवि! तुम विष्णुजीसे धारण की गई हो सब लोक तुमने धारण किये हैं ६८ इससे हे सब सहने वाली! मेरे बसने के लिये उत्तम स्थान दीजिये ऐसा कहकर नारायणजीका पूजन करनेवाला मनुष्य आसन विछाकर बसै ६९ दक्षिणमुख होकर विष्णुजीका पूजन न करै और मंत्रसे पवित्र सु-

गन्धित जलको शंखमें लेकर ७० लक्ष्मीसमेत प्रभु लक्ष्मीपति जीको स्नानकरावै जो मनुष्य शंखसे भगवान् जनार्दनजीको स्नान कराता है ७१ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! तो तिसके तिस फलको कहता हूं सुनिये ब्राह्मण, गऊ, स्त्री और गर्भकी हत्या और मदिरा आदिक पीने के पापोंसे ७२ छूटकर वैकुण्ठ में प्राप्त होकर सब सुखको भोग करता है जो भगवान्को देखकर मनुष्य पूजन करै तो ७३ भगवान् के प्रसादसे तिसातिसको शीघ्रही प्राप्त होता है बुद्धिमान् मनुष्य शंखके अभावमें सुगन्धित जलको ७४ पात्रमें तुलसी मिलाकर रखकर भगवान्को स्नान करावे तदनन्तर स्नान कराकर श्रेष्ठ आसन में स्थापित कर ७५ सुगन्धयुक्त चन्दनों से तिनके सब अंगको लेपनकरै तुलसी के काष्ठके पंकमें जो भगवान् की देहको पालन करता है तिसके ऊपर भगवान् निरन्तर प्रसन्न रहते हैं अपने गन्धसे सुखके देनेवाली यह तुलसीके पत्रकी माला ७६। ७७ हे जगन्नाथजी! तुमको देताहूं आप सदैव प्रसन्न हूजिये इसमंत्र से तुलसीकी पत्रमालासे ७८ अलंकृतमहा विष्णुजी प्रसन्नहोकर क्या नहीं देते हैं तदनन्तर वेदके मंत्रोंसे स्वस्तिवाचन करनाचाहिये ७९ और पौराणिक मन्त्रोंसे दिग्बन्धन करना चाहिये कृष्णजी पूर्वमें रक्षाकरें देवकीके पुत्र आग्नेय कोणमें ८० दक्षिणमें दैत्योंकेवैरी, नैर्ऋत्यकोणमें मधु दैत्य के मारनेवाले, विदिशाओं में श्रीमान्, ऊपर लक्ष्मीके धारण करनेवाले प्रभु, ८१ और नीचे संसारकी आत्मा, कृपामय, कच्छप मूर्ति भगवान् रक्षा करें और पूजाके समयमें जे सब विघ्न करनेवाले होते हैं ८२ वे सब भगवान् के नामरूप अस्त्रसे ताड़ित होकर दूर जावें इस प्रकार दिग्बन्धन कर तिस पीछे हाथ जोड़कर ८३ कहेहुए मंत्रसे दृढ़ संकल्पकरै कि हे देवों के देव! हे जनार्दनजी! मेरी आरंभ की हुई इस पूजाको ८४ निर्विघ्न सिद्धि को प्राप्तकीजिये और हे परमेश्वरजी! प्रसन्न हूजिये तदनन्तर संकल्प करनेवाला और सब तत्त्वका जाननेवाला वैष्णव ८५ अंगन्यास आदिक कर मनसे नारायण जीको ध्यान करै जो कि

नवीन मेघों के सदृश, कमलके समान नेत्र वाले, ८६ पीताम्बर धारे, देव, मुसकानिसे अत्यन्त पवित्र मुखवाले, कदम्बके फूलकी मालाओंसे भूषित, सुन्दर महाभुजों से युक्त, ८७ मयूरके पंखोंकी पंक्ति से बंधे हुये जूड़े में कुण्डल धारण करनेवाले, वंशीके मधुर शब्दसे दशों दिशाओं को मोहित करते हुये ८८ गोपियों से आच्छादित और पवित्र वृन्दावनमें स्थित हैं इसप्रकार देवोंके स्वामी, सब कामनादेनेवाले गोविन्दजीको चिन्तन कर ८९ फिर भक्तिभावसे वैष्णव मनुष्य आवाहन करे और आवाहन किये हुए, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले कृष्णजीको ९० पाद्य, अर्घ्य, और आचमनीय देवे बुद्धिमान् मनुष्य कोमल तुलसीके पत्र वा सुन्दर फूलोंसे ९१ सबदेवोंके स्वामी, श्रीकृष्ण देवकीजीके पुत्र को पूजन करै मत्स्य, कच्छप, शूकर, ९२ हरि, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, बलराम ९३ कृपासमेत शुद्ध बुद्ध, बहुतमूर्तिवाले कल्की, ९४ नारायण, कृष्ण, गोविन्द, शार्ङ्ग धनुषधारी, दामोदर, देव, देवदेव, ९५ हृषीकेश, शांत, आकाशचरण, लक्ष्मीकेपति, कमलनयन, ९६ अनन्त, गदाहाथमें धारे, गरुड़ध्वज, चक्रहाथमें धारण करनेवाले ९७ कमल हाथमें धारे, अच्युत, दैत्योंके वैरी, सब कामना देनेवाले ९८ लक्ष्मी के पति, देवताओं के स्वामी, विष्णु, परमात्मा, मुकुट और कुण्डलके धारण करनेवाले हरि ९९ भगवान्, गरुड़वाहनजी के सदैव नमस्कार हैं ॐनमः गरुडाय इस मंत्रसे गरुड़के चतुर पुरुष नमस्कार करै १०० शंख, चक्र, गदा, पद्म और नन्दक खड्गके नमस्कार हैं १०१ इस प्रकार स्त्री, वाहन और हथियारोंसमेत भगवान् को पूजनकर बुद्धिमान् अष्टाक्षर मंत्रको जपै १०२ अपनी भक्तिसे अष्टाक्षर मंत्रके जपकरने के पीछे गोविन्दजी को अनेक प्रकार की उत्तम नैवेद्य देवे १०३ फिर वैष्णव मनुष्य धूप, दीप, पान तथा और भी उपहार देवदेव विष्णुजी को देवे १०४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो चन्दन और अगरु से सुगन्धित धूपको भगवान् को देताहै तिसका शीघ्रही वाञ्छित सिद्धहोताहै १०५ जो घीसे वासित धूपको हरिजी को देताहै वह

करोड़ों पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिरको जाता है १०६ गुग्गुलुसे वासित धूपको जो नारायणजी को देता है वह देवताओं से भी दुर्लभ परमधामको जाता है १०७ जो घीसे वा तिलके तेल से दीप देताहै तिसके केशवजी पलभर में सब पाप नाशकर देते हैं १०८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! कपूरसे वासित पानको जो भगवान्को देता है तिसकी मुक्ति होजाती है १०९ जो खैरसेयुक्त पानको देता है वह इसलोक में सब भोगोंको भोगकर अन्तमें भगवान् के पदको प्राप्त होताहै ११० षष्ठी मधुरिका तथा जायफल आदिकों से युक्त पानको भगवान् को देकर मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है १११ हे जैमिने! वैष्णव मनुष्य कहेहुए मंत्रसे शंख में पानी लेकर विष्णुजी की प्रदक्षिणाकरै ११२ कि हे जनार्दन! हे संसारके बन्धु! हे शरणागतके पालन करनेवाले! हे प्रभो! मुझदासको अपने दासोंके दासकी सेवकाई दीजिये ११३ इसमंत्र से जो नारायणजीकी प्रदक्षिणा करता है तिसके पुण्यके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ११४ जौन जौन ब्रह्महत्यादिक बड़े बड़े पाप हैं वे सब प्रदक्षिणा के पदमें नाशहोजाते हैं ११५ मनुष्य भक्तिसे विष्णुजीकी प्रदक्षिणामें जितने पैग जाताहै तितने हजारकल्प विष्णुजीके साथ आनन्द करता है ११६ मनुष्य भगवान्की प्रदक्षिणामें जितने पद धीरे धीरे जाताहै तितनेही पदपदमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है ११७ संसारमें जितना सब फल प्रदक्षिणा करने से होताहै तिससे करोड़गुणा फल भगवान् की प्रदक्षिणा करनेसे होता है ११८ जो नारायणजी के आगे अंगकी प्रदक्षिणा करता है वहभी तिस फलको प्राप्तहोता है और बहुत कहनेसे क्याहै ११९ हे ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य महादेव जीकी प्रदक्षिणा करनेमें सोमसूत्रको न लांघै क्योंकि लांघनेसे वह पूजा निष्फल होती है १२० जो प्रदक्षिणाके आकारके भावसे एक बार हरिजीके पास जाताहै वह जन्म जन्ममें निश्चय सब पृथ्वीका राजा होताहै १२१ जो तीन दिनमें दो बार विष्णुजी की प्रदक्षिणा करता है वह निस्सन्देह इन्द्रके पदको प्राप्त होता है १२२

और जो मनुष्य विष्णुजी की प्रदक्षिणा दोवार करता है वह सब पापों से छूटकर भगवान्‌की देहमें प्रवेश करता है १२३ हे जैमि-नि! जो भगवान्‌के ऊपर जलसमेत शंखको घुमाता है वह अन्त में देवस्थान में जाकर देवताओंसे वन्दित होताहै १२४ जो भग-वान्‌के सात वार पृथ्वी में दण्डवत् प्रणाम करताहै तो उसके श-रीर के पाप तिसी क्षणसे भस्म होजाते हैं १२५ जो शिरमें अञ्ज-लि धरकर भगवान्‌को प्रणाम करताहै तिसको लक्ष्मीपति विष्णु-जी परमपद देते हैं १२६ हे विप्रर्षे! पृथ्वी में सब अङ्गको गिरा कर भगवान्‌के प्रणाम करनेवाले मनुष्योंके पुण्यप्रभावको मैं कह-ता हूं सुनिये १२७ जितनी पृथ्वीकी धूलियोंसे मनुष्योंकी देह भू-षित होतीहै तितनेही हजार कल्प वे भगवान्‌के समीप स्थितहोते हैं १२८ हे जैमिनि! केशवजीकी निर्माल्य को वैष्णवों को देवे तिन वैष्णवोंको कहताहूं सुनिये १२९ शुकदेव, सूत, व्यास, नारद, कपिलमुनि, प्रह्लाद, अम्बरीष, अक्रूर, उद्धव, १३० विभीषण, हनुमान् तथा और भी वैष्णव सब कामना देनेवाले वासुदेव-जी के निर्माल्यको ग्रहण करें १३१ ऐसा कहकर वैष्णव मनुष्य विष्णुजी की निर्माल्यको पृथ्वी में छोड़दे वे तदनन्तर हरिजी के निर्माल्यको भक्तिसे आप भी ग्रहण करें १३२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिसके मस्तक में उत्तम हरिजी का निर्माल्य दिखाई पड़ताहै वह साक्षात् आपही हरिही जानने योग्यहै १३३ विष्णुजीकी नैवेद्य दुर्लभहै और निर्माल्य पाप नाश करनेवाला है सब देवता ग्रहण करते हैं मनुष्योंकी क्या कथाहै १३४ हे जैमिने! जो वैष्णव तुल-सीपत्रको सूंघताहै तो उसके देहके भीतरके स्थित सब पाप नाश होजाते हैं १३५ तुलसीपत्रकी सुगन्ध जिसकी नाकमें प्रवेशकर-तीहै तिसके शरीरकी स्थित आपदा शीघ्रही नाशहोजाती हैं १३६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुलसीकी पत्तीको सूंघकर जो प्रशंसा करता है तिसके स्थानमें नित्यही आनन्द होता है १३७ बुद्धिमान् मनुष्य स्तोत्रोंसे जगन्नाथ, लक्ष्मीजीके पति अच्युतजीकी स्तुतिकर हाथ जोड़कर इसमंत्रको पढ़े १३८ हे नारायण! हे संसाररूप! हे संसार

के पति! हे देव! अपने स्थानको जाइये और सदैव प्रसन्न हूजिये १३९ हे देवेन्द्र! हे जगन्नाथ! हे जगन्मय! जो मैंने अपनी शक्ति से यह आपकी पूजाकीहै वह आपके प्रसादसे छिद्ररहितहोवे १४० तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य महाविष्णु परात्माके सब पाप नाश करनेवाले चरणजल को भक्तिभाव से ग्रहणकरै १४१ हे जैमिनि! जो विष्णुजी के कणमात्र, शुभ, चरणजलको प्राप्त होता है वह सब तीर्थों में स्नानकरचुका यह मैं सत्य कहताहूं १४२ विष्णुजी के चरणजल को छुवे तो गंगास्नान का फल होता है जिससे कि विष्णुजी का चरणजल गंगाजी का जल है १४३ जो केशव महात्माजी के चरणजल को स्पर्श करता है उसको अकालमरण और व्याधियोंसे भयनहीं होताहै १४४ पापरूपी व्याधिनाशनार्थ विष्णुजी का चरणजल औषध है ते पापी भी मनुष्य प्रतिदिन पीवें १४५ हे विप्र! जो वैष्णव मनुष्य विष्णुजी के चरणजलको पीता है तो उस की देहके स्थित पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं १४६ जैसे औषध से देहधारी पुरुष के देह में स्थित रोग नाश होजाता है तैसेही सब पाप विष्णुजीके चरणजलसे नाश होजाते हैं १४७ जो तुलसीपत्र से संयुक्त विष्णुजीके शुद्ध चरणजल को शिरसे धारण करता है तिसकी पुण्यको मैं कहताहूं १४८ ब्रह्महत्यादिक सब पापों से छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला मनुष्य अन्त में विष्णुजीके पुर में जाकर विष्णुजीके साथ आनन्द करता है १४९ सुमेरु पर्वत के बराबर सोना देनेसे जो फल होताहै तिससे अधिक फल विष्णुजीके चरणों के जल के स्पर्श से होताहै १५० करोड़ घोड़ा देनेसे मनुष्योंको सो फल होताहै जो सातोंद्वीप पृथ्वी ब्राह्मणों को देनेसे होताहै १५१ सोई फल मनुष्य विष्णुजीके चरणोंके जलके छूनेसे पाताहै हज़ार अश्वमेध यज्ञ करनेसे जो फल होताहै १५२ तिससे अधिक फल विष्णुजीके चरणोंके जलके छूनेसे होताहै सौ दीर्घिका के दानसे जो पुण्य कहाहै १५३ तिससे भी अधिक पुण्य विष्णुजीके चरणोंके जल के स्पर्श से मिलताहै यहां पर बहुत कहनेसे क्या है संक्षेपसे मैंने कहाहै १५४ हे

ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! मनुष्य विष्णुजीके चरणजलके स्पर्शसे मुक्त हो-
जाताहै फिरफिर दृढ़ मैं कहताहूं १५५ भगवान् के चरणजलको स्प-
र्श करने से फिर जन्म नहीं होताहै और जो सब पाप नाश करने
वाली विष्णुजीकी शेष नैवेद्यको १५६ भक्तिभावसे भोजन करताहै
वह परमपदको जाता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! दुर्लभ विष्णुजीकी नैवेद्य
भोजनकरने से १५७ ब्रह्महत्या आदिक पाप देहको छोड़देते हैं
और हरिजीकी नैवेद्य भोजन करनेवाले के दासीकी नाईं वश में
प्राप्त, देवताओं से भी दुर्लभ मुक्ति भूमि होजातीहै भगवान् को
पूजन कर कुछ नैवेद्य भोजन करनेवाले को १५८।१५९ थोड़ेही
समय में विष्णुजी अपनी देह में प्राप्त करलेते हैं महाविष्णुजी
की नैवेद्य के गुण क्या हम कहें १६० हे द्विज! हे प्रभो! हे वि-
प्र! जिस नैवेद्य के भोजन करनेवाले के भगवान् भी अधीन हो-
जाते हैं इस विधिसे प्रत्येक महीने में भगवान् की पूजा करनी
चाहिये १६१ श्रीलक्ष्मीपतिजी की विधिसे हीन भी जो भक्ति-
भावसे श्रेष्ठ पूजा करता है वह भी केशवजी का प्यारा होजाता है
१६२ विधिका जाननेवाला विधिपूर्वक विष्णुजी को पूजन कर जो
फल प्राप्त होता है सो जो भक्ति नहीं स्थित होतीहै और यथोक्त
विधिसे बहुत नैवेद्यों से भी भगवान् को पूजन करता है तो भी
भगवान् प्रसन्न नहीं होतेहैं जिसकी जितनी देवदेव जनार्दन जी
में भक्ति होतीहै १६३।१६४ तितनीही फलकी प्राप्ति भी तिसको
निस्सन्देह होतीहै विना भक्ति के जो मनुष्यों करके हरिजीकी पूजा
की जातीहै १६५ वह निश्चय पूजा समयही में पूजा होतीहै संसार
के पति हरिजीकी भक्ति ज्ञान और भक्ति का मूलहै १६६ हरिजी
की पूजा और आराधन मोक्षके वृक्ष की उत्पत्ति में मूल है थोड़ा
भी जो श्रद्धा से किया जाताहै १६७ वह सब नाशरहित होता है
क्योंकि सब क्रिया श्रद्धायुक्तही करनी चाहिये भक्ति से जो वि-
ष्णुजी को जलमात्रसे भी पूजन करता है १६८ वह विष्णुजी के
संस्थानको प्राप्तहोताहै जिससे हरिजी भक्तकेवशहैं १६९ हेविप्र!
यह सब संसार असारहै इसमें भगवान्का पूजनही सारहै तिससे

अपने मंगलकी इच्छा करनेवाला मनुष्य भक्तिसे अनंतमूर्ति कृष्णजी को पूजनकरै १७० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेहरिपूजाविधिर्नामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

पीपलके वृक्षका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! वैष्णव मनुष्य फाल्गुन में देवताओं से वन्दित श्रीकृष्णजी को भक्तिभावसे प्रतिदिन पूजनकरै १ फाल्गुन महीने में जो घीसे देवकीजी के पुत्रको स्नानकराताहै तिसके फलको मैं कहताहूं अच्छी तरहसे सुनिये २ सब यज्ञ और सब दानके फलको प्राप्तहोकर अन्तमें सब पापोंसे रहित होकर हरिजी के स्थानको प्राप्तहोताहै ३ हजार करोड़ युग हरिजीके घरमें भोग भोगकर उत्तम ज्ञानको प्राप्तहोकर तहांहीं मोक्षको प्राप्तहोताहै ४ जो शिशिरऋतु में गोपमूर्ति कृष्णजीको तिलों के सुन्दर लड्डू देताहै वह हरिजीके मन्दिरको जाताहै ५ केशव महात्माजी को जो दुग्ध लड्डू देताहै वह सौमन्वन्तरपर्यन्त स्वर्ग में अमृत पीताहै ६ हरिजीको जो सुंदर खांड़ देताहै तिसकेप्रसन्नात्मा विष्णुजी संसारबन्धनको काटदेते हैं ७ जो भगवान् को विचित्र फलदेताहै वह अन्तमें इन्द्रके पुरमें जाकर देवताओं से वन्दितहोताहै ८ जो भक्तियुक्त मनुष्य निर्मल शक्करको कृष्णजीको देताहै वह वासुदेवजीके प्रसादसे क्या नहीं प्राप्त होता है ९ जो सुन्दर पके मीठे बेरोंको कृष्णजीको देताहै तिसके फलको सुनिये १० वह इस लोकमें पुत्र और पौत्रोंसे युक्तहोकर सब सुखभोगकर अन्तमें सुन्दर रथपर चढ़कर हरिजी के स्थानको प्राप्त होता है ११ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! अज्ञानसे गुणसंयुक्त बेरोंको हरिजीको नहींदेवे और जो देवे तो नरकगामी होता है १२ फाल्गुन महीने में जो हरिजी को सुन्दर अनार के फलको देताहै तिसके फलको मैं कहताहूं सुनिये १३ अनारमें जितने बीज स्थित होते हैं तितने मन्वन्तर भाग्यवान् मनुष्य विष्णुजी के मन्दिरमें स्थित होताहै १४ फाल्गुन म-

हीनेमें जो हरिजी को गुड़पिष्टक देताहै वह हज़ार अश्वमेध यज्ञ का करनेवाला जानना चाहिये १५ चैत्रके महीने में भगवान्को जो मनुष्य शहद्से स्नान कराता है वह विष्णुजी के परमपद को प्राप्त होताहै १६ शहद्से जो रोगरहित नारायणजी को स्नान कराताहै तिसकी यमराजजी चर्चा नहीं करतेहैं १७ चैत्रमें टेसूके फूलसे जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है तिसका नाम चित्रगुप्त अपनी बहीमें नहीं लिखते हैं १८ चैत्रमें तिलकके फूलों से भगवान्के पूजन करनेवाले का फिर इस पृथ्वीमें जन्म नहीं होता है १९ कृष्णा अशोकके फूलसे सब देवताओंके शिरोमणि भगवान्को पूजन करनेसे मनुष्य कहीं पर आपदाओं को नहीं प्राप्त होता है २० जो प्रसन्नात्मा पुरुष वसन्तऋतुमें चैत्रमें वसंतीके सुगन्धित फूलोंसे भगवान्को पूजन करताहै वह देवताओंसे भी पूजित होता है २१ तथा अखण्डित सुन्दर कलियोंसे जो हरिजीको पूजन करता है तिसकी पीठ आसनवाला भी उठकर आपही वन्दना करताहै २२ जो नवीन कोमल आंवलेके पत्रोंसे हरिजीको पूजन करताहै वह मनुष्य थोड़ेही कालमें सब वांछितको प्राप्त होता है २३ जो शांडिल्याके अखण्ड पत्रोंसे धतूरा और मदारके फूलोंसे ईश विष्णुजी को पूजन करताहै वह संसाररूपी समुद्रके पार होजाता है २४ हे ब्राह्मण! जो विष्णुजी को उत्तम केलेके फल देताहै उस की इन्द्रादिक सब देवता दिनरात वन्दना करते हैं २५ गोपालरूपी विष्णुजी को जो चैत्रके महीने में गेहूंका पिष्टक देता है वह सब पापोंसे छूट जाताहै २६ विष्णुभक्त मनुष्य माधवजीके प्यारे पवित्र वैशाखके महीनेके आने में मांस, मैथुन और तेलको छोड़ देवे २७ वैष्णव मनुष्य वैशाखमें प्रातःकाल स्नान करे परायेअन्न और दूसरी बार भोजनको त्याग करे २८ पहले कहीहुई विधि से प्रातःकाल विष्णुजीको पूजन करै और इस महीने में फूलों से वासित जलसे विष्णुजी को स्नान करावें २९ ठण्ढे जलों से संध्यापर्य्यन्त अच्युतजी को स्नान करावे और तीनों संध्याओंमें भक्ति से अनेक प्रकारकी नैवेद्योंसे प्रभुजी को पूजन करै ३० वैशाख में

दौनाके मालाओं से अलंकृत कियेगये परमेश्वरजी प्रसन्न होकर क्या नहीं देतेहैं ३१ और यव अन्नको वैशाख के महीने में जो भगवान् को देता है तिसके पुण्योंकी गिनती करनेमें कौन पण्डित समर्थ है ३२ जो कुछ वैशाख के महीने में भगवान् की प्रीति के लिये लक्ष्मीपतिजी को दियाजाता है वह सब नाशरहित होता है ३३ और भी जो कुछ सुकृतकर्म्म वैशाख में भगवान् की प्रीतिके लिये कियाजाताहै तो उसका नाश नहीं होताहै ३४ और जो वैशाखके महीने में भगवान्की प्रसन्नता के लिये पौशाला करताहै वह मनुष्य दिन दिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है ३५ वैशाख दुर्लभ महीना है सब कर्मफलका देनेवाला है तिसमें सैकड़ों काम छोड़कर भगवान् पूजने योग्यहैं ३६ एकदिनभी जो वैशाखमें भगवान्की पूजा करताहै वह छःवर्षकी भगवान्की पूजा करनेके फलको प्राप्त होताहै ३७ जो वैष्णव मनुष्य धर्म,अर्थ, काम और मोक्षफल के हेतु वैशाख महीनेमें नित्यही पीपलके वृक्षरूपी विष्णुजीको ३८ कुछमात्र जलसे सेवन करताहै वह करोड़ों पापों से छूटकर श्रेष्ठ स्थानको जाताहै ३९ पीपलकी जड़को जो पत्थर आदिकोंसे बांधताहै उसको पीपलरूपी भगवान् क्या क्या नहीं देते हैं ४० पीपलके वृक्षको देखकर जो प्रणाम करताहै वह श्रेष्ठ स्थान को जाता है और निस्सन्देह उसके उमरकी वृद्धि होती है ४१ हे विप्र जैमिनि ! पीपलके वृक्षके नीचे जो धर्म कर्म करताहै तो तिस कर्ममें कुछ कमी नहीं होती है ४२ तहांपर गंगाआदिक सब तीर्थ हैं जहांपर वृक्षोंमें श्रेष्ठ एकभी पीपलका वृक्ष स्थितहै ४३ जो पीपलको पूजताहै सोई विष्णुजी को पूजताहै जिससे पीपलकी मूर्त्ति आपही भगवान् हैं ४४ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य अज्ञान से पीपलको काट डालताहै तो संसार में वह कर्म्म नहीं है जिसको करके वह शुद्ध होजावे ४५ यह पीपल वृक्षोंका राजा हरिजी की मूर्ति कहा गयाहै तिससे पीपलके नाश करनेवालोंका कोई रक्षा करनेवाला नहीं है ४६ पीपलके देखने, छूने और प्रणाम करनेसे भगवान् देहके स्थित सब पापोंको नाश करते हैं ४७ पीपलके काटनेवाले

को देखकर जो समर्थ होकर नहीं निषेध करता है तो उसके दोनों नेत्रोंको यमराजजी आपही कटियासे निकाल लेतेहैं ४८ और जो यह नहीं कहता है कि रे मूर्ख! पीपलको मत काटे तिसकी जीभको यमराजजी छूरीसे आपही काटते हैं ४९ जो मनुष्य छोटीभी एक डालको काटता है वह करोड़ ब्रह्महत्याओंके फलको प्राप्त होताहै ५० ब्राह्मणकी हत्या, गुरुजी की स्त्री से भोग, मदिरापान, चोरी, न्यासका चुराना, ५१ गर्भहत्या, गोहत्या, स्त्रीहत्या, पराई स्त्री से भोग, ५२ शरणागत और मित्रकी हत्या, विश्वास वाक्यके न कहने में, पतिके मारनेकी विधिमें, ५३ पराई निन्दा और एकादशी के भोजनमें जो पाप होताहै उसी घोर पापको मनुष्य पीपलके काटनेसे प्राप्तहोते हैं ५४ विष्णुजीकी मूर्ति पीपलको जो मनुष्य मोह से काटताहै तो उसके बराबर कोई पापी पृथ्वीमंडल में नहीं सुना जाताहै ५५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे वत्स! सब पाप नाश करनेवाले पीपलके माहात्म्यको इतिहाससमेत कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो ५६ पूर्वसमयमें त्रेतायुग में धनंजय नाम ब्राह्मणहुए ये हरिभक्तिके करनेवाले, सब प्राणियोंके कल्याणमें रत, ५७ जातिकी पूजा और दीपदानमें सदैव रत, सत्य बोलनेवाले, क्रोध जीतनेहारे, हिंसा और दम्भसे वर्जित ५८ और मोक्षकी इच्छा करने वाले थे ये श्रेष्ठभक्तिसे परमेश्वर, प्रभु नारायणजी को पूजन करतेभये ५९ तब भगवान् तिसकी बड़ी दृढ़ भक्ति जानकर किसी हेतुमात्रसे उसके सब द्रव्यको हर लेते भये ६० तिसपरभी वह बड़ा बुद्धिमान् श्रेष्ठब्राह्मण परमभक्तिसे केशवमहात्माजीकी प्रतिदिन पूजा करता भया ६१ दुःखसे इकट्ठा कियाहुआ सब धन नष्ट हुआ देखकर भी तिस ब्राह्मणने अचिन्त्यचित्तसे ६२ भोजन करना छोड़ दिया और परमार्थ के जाननेवाले इस ब्राह्मणने महाविष्णुजीकी पूजामें अपने मनको दृढ़बांधा ६३ फिर तिस ब्राह्मण की भक्ति जानकर अत्यन्त दृढ़ शांतिके देनेवाले भगवान् उसके भाइयों से विच्छेद करातेभये ६४ तिसब्राह्मणके भाई लोग भगवान् की मायासे मोहित होकर सदैव उसके मारने में उतारू रहते भये ६५ तबभी

ब्राह्मण बड़ी भक्तिसे प्रसन्न होकर हठ न छोड़कर पुरुषोत्तम जी की निरन्तर पूजा करता भया ६६ फिर ब्राह्मण भगवान्की पूजन में धनको कुछ कल्पना कर लक्ष्मीपति जगन्नाथ जी को पूजन करते भये और बन्धुओं के शोकको छोड़ते भये ६७ तब कौतुकी महाविष्णुजी कृपासमेत फिर उसके दिनदिनमें पुत्रों को हरलेते भये ६८ तिसपरभी वह श्रेष्ठब्राह्मण पहलेकी दूनी भक्ति से क्लेशों के नाश करनेवाले विष्णुजीको नित्यही पूजन करता भया ६९ तदनन्तर विष्णुजी की मायासे मोहित और दुःख शोक से अत्यन्त दुःखित उसकी स्त्रीभी पिताके घरको चलीगई ७० तिसपीछे विष्णुजीकी भक्तिमें परायण अकेला ब्राह्मणभी सुन्दर चित्तसे कभी विपत्ति की न चिन्तना करता भया ७१ एक समय में वह श्रेष्ठब्राह्मण विष्णुजीकी भक्तियुक्तोंमें श्रेष्ठ कंधे में कुल्हाड़ा धरकर लकड़ी लेनेके लिये वनको जाताभया ७२ और कपड़ोंसे हीन यह ब्राह्मण वनसे नित्यही लकड़ी लाकर जाड़ेके आगमन में शीतको निवारण करताभया ७३ कभी यह श्रेष्ठ ब्राह्मण वन जाने में न समर्थ हुआ तो अपने आंगनमें स्थित पीपलके वृक्ष की डाल को काटता भया ७४ इस अन्तर में व्यथासे कष्टयुक्त मनहोकर देवताओंमें श्रेष्ठ महाविष्णुजी पीपलके वृक्षसे निकलते भये ७५ तब ब्राह्मण आगे श्रीविष्णुजी को देखता भया जो कि चारभुजा धारे कमलदलके समान बड़े नेत्रोंवाले पीताम्बर, कुण्डल, सुन्दर बाल और कमल आदिक अपने अस्त्रोंको धारे ७६ विस्तारयुक्त बहती हुई रक्तकी धारा से संध्याओंमें लाल रंग हुए नवीन मेघोंकी नाईं, अग्निरूप, सुख, परेश और देवसमूहों से भी अदृश्य हैं तब ब्राह्मण हर्षके आंसुओंकी धारासे सुन्दर दोनोंनेत्रों को कर कोमल वचनोंसे स्तुति करनेलगा ७७ कि हे हरे! मुरारे, संसारके एकनाथ, गोविन्द, दामोदर, माधव, लक्ष्मीकेपति, केशव, केशीराक्षसके शत्रु, नारायण, अनन्त, हेविभुजी प्रसन्न हूजिये ७८ आपके अवतार को मैं क्याकहूं आपके विना पृथ्वीमें कोई नहीं है क्या गुणोंसे व्याप्त सबलोक आप हैं मित्रों में पर एकतुल्य दया

७९ अपनीको देकर हे विष्णो! हेईश! किसीकी देहमें स्थित भक्ति को आप हररहे हैं और लक्ष्मीको लेलियाहै और बड़ी भारी धन्या भक्ति को मुझे दियाहै इससे मैं आनन्दको प्राप्तहूं ८० हे अनन्तमूर्ते! मैं निरन्तर पापियों में श्रेष्ठ होकर अपना को महात्मा मानताहूं कि मेरेहीलिये आप के दोनों चरण दिखाई दिये परन्तु यह आश्चर्य है कि पापी आपको नहीं देखता है ८१ यद्यपि मैं दुःखयुक्तों में श्रेष्ठ हूं तथापि इस समय में हे विष्णुजी मैं अपना को इन्द्र की नाईं मानताहूं जिससे कि लोकोंकी आत्मा आपको नेत्रों से देखरहाहूं ८२ हे केशवजी! आपकी थोड़ी भी पूजा को मैं नहीं जानताहूं द्रव्य कभी आपको मैं नहीं देताहूं तिसपर भी आप पूज्य मेरे आगे मूर्त्तिमान् दिखाई दियेहो ८३ आपने धर्म, अर्थ और काम इन तीनोंसे युक्त यह भक्तिरूपी वृक्ष मुझको दियाहै और आपके दर्शनरूपी वर्षासे सींचागया है हे प्रभो! इस समय में यह वृक्ष मोक्षरूपी फलको धारण करता है ८४ हे केशव! हे देवदेव! मेरा मस्तक सब मनुष्यों के मस्तकों में श्रेष्ठ होवे और इस समय में मन संसाररूपी आपके दोनों चरणकमलों में प्राप्तहोवे ८५ व्यासजी बोले कि इस प्रकार ब्राह्मण जगन्नाथ, रोगरहित नारायणजी की स्तुति कर हाथ जोड़कर भक्ति से फिर बोला ८६ कि हे देवोंके देव! हे जगन्नाथ! हे लोकोंके ऊपर दयाकरनेवाले! कशाके प्रहारसे यह देह आपकी रक्तसे भरी हुई है ८७ संग्राममें सब दैत्यों के वंशको आपने नाश करदियाहै हे प्रभो! यह अद्भुतहै कि आप के मारने में कौन पृथ्वी में समर्थ है ८८ तब भगवान् बोले कि हे वत्स! तुमने यह सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहींहै दानव व राक्षस कोईमेरे मारनेमें समर्थ नहींहै ८९ मैं पीपलमूर्तिहूं मुझको कुल्हाड़े से तूने काटाहै इससे हे द्विज! इस समयमें रक्त मेरे बहरहा है ९० व्यासजी बोले कि भगवान्के ये वचन सुनकर वह ब्राह्मण भयसे विकलहोकर आत्मासे आत्माको बहुत भांति निन्दा करताभया ९१ कि तत्त्वसे सब पापियोंमें श्रेष्ठ मेरीभाग्यको धिक्कारहै जिस मैंने त्रैलोक्यके स्वामीके हृदयमें बड़ी व्यथाको दियाहै ९२ सब पापके हरने

वाले विष्णुजी को मैंने पीड़ित कियाहै अकेले मैं इस पापके पार नहीं जासक्ताहूं ९३ जिन आपके प्रसन्न होनेमें पापीभी देवताओं से वन्दित होजाते हैं सोई आप मेरी दीहुई व्यथासे व्यथित हुए हैं हा! मैं मारागयाहूं ९४ जिनको ब्रह्मादिक देवताभी अत्यन्त भक्तिसे प्रसन्न कराते हैं तिनके हृदयमें मुझ पापीने पीड़ादी है ९५ तपस्या, जप, घर और मेरे जीनेसे क्याहै धर्म, अर्थ, काम और मोक्षोंके एक दाताको मैंने व्यथासे व्याकुल करदिया है ९६ ऐसा कहकर वह ब्राह्मण विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये तिसी फरसे से अपना कण्ठ काटने का मन करताभया ९७ तब तो तिस ब्राह्मण की दृढ़ भक्ति जानकर दयालु भगवान् भक्तों के प्यार करनेवाले शीघ्रता से तिसके हाथसे फरसे को लेलेकर ९८ बोले कि हे वत्स! तू कैसे यह अत्यन्त दारुणकर्म करता है आत्महत्या करनेवाले पुरुषों के ऊपर कभी मैं प्रसन्न नहीं होताहूं ९९ हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्नहूं डरो नहीं जो तुम्हारे मन में वर्तमान हो वह वरमांगो १०० तब ब्राह्मण बोले कि हे परमेश्वर! हे प्रभो! मैं यह वर मांगताहूं कि मैंने बड़ी भारी यह आपको व्यथा दीहै सो आपके शरीरमें न रहे १०१ तब श्रीभगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! हे वत्स! तूने अज्ञानसे यहकर्म कियाहै इससे भारीमें तेरा अपराध हम क्षमा करेंगे १०२ तू भक्तों में श्रेष्ठ है इससे नित्यही तेरी रक्षा करनी योग्यहै हे वत्स! तुम्हारे सदृशों के दोषोंको मैं दिन दिनमें नहीं मानताहूं १०३ तिसपर भी मेरी बड़ीभारी भक्ति तुम्हारे सदैव बढ़े तिससे हे वत्स! इससमय में तुमसे ऋणहीन होजाने की इच्छा करताहूं १०४ इससे सब भय छोड़कर मेरे आगे वरमांगो तब ब्राह्मण बोला कि हे सब देवताओंमें श्रेष्ठ! हे हरिजी! आपमें मेरी जन्म जन्ममें दृढ़ भक्ति होवे और वरोंसे क्याहै व्यासजी बोले कि भगवान्‌की नम्रता कहनेवाले ब्राह्मणके ये वचन सुनकर १०५। १०६ प्रसन्न होकर विष्णुजी अपने कण्ठ में स्थित मालाको देकर तिस ब्राह्मण को इस प्रकार अपनी चार लम्बी भुजाओं से आलिंगन करते भये

जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है फिर उससे कोमल वचन बोले कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तहो इससे मेरे प्रसादसे १०७। १०८ थोड़ेही समयमें तुम्हारा सब कल्याण होगा हे सज्जनों में श्रेष्ठ! क्रियायोगसे पीपलरूप मुझको नित्यही १०९ आराधन करो तुम्हारे सब वांछितको मैं सिद्धकरूंगा ऐसा कहकर केशवजी तिस श्रेष्ठब्राह्मणको फिर आलिंगनकर ११० सहसासे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तब वैष्णवों में उत्तम ब्राह्मण विष्णुजी के कण्ठकी माला पाकर १११ आत्माको कृतकृत्यकी नाईं मानकर अपने घर में स्थित रहतेभये तदनन्तर तिस ब्राह्मणके घरमें कुबेरजी ११२ भगवान्की आज्ञासे आपही बहुत द्रव्य बरसतेभये और विश्वकर्मा कारीगरने महल बनादिया ११३ तहांपर श्रेष्ठ ब्राह्मण नारायणजी की आज्ञासे जयंतकी नाईं दास और दासियोंसे युक्त, अनेक वस्तुओंसे भूषित होकर रहतेभये और हाथी और घोड़ोंसे युक्त तिसका मन्दिर शोभित होताभया और तिसके नष्टहुए बांधव फिर प्राप्त होतेभये ११४।११५ और अनादर करके चलीगई तिसकी स्त्री फिर तिसके स्थानमें प्राप्त होती भई उसके मरेहुए पुत्रभी भगवान्की कृपासे ११६ फिर होतेभये और वह स्त्री भी स्वामीकी भक्तिमें परायणहुई तब ब्राह्मण पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर बहुत काल सब भोगोंको भोगकर ११७ स्त्रीसमेत आयुके अन्तमें मोक्षको प्राप्त होजाताभया व्यासजी बोले कि वृक्षोंमें श्रेष्ठ पीपलका वृक्ष साक्षात् आपही विष्णुरूप है ११८ तिसकी भक्ति करनेवाले पुरुषोंका कहीं अशुभ नहीं होता है हे मनुष्यों में उत्तम! जो विष्णुजीको ध्यानकर पीपलको सेवता है ११९ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देतेहैं १२० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे अश्वत्थमाहात्म्येद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय ॥

ज्येष्ठ महीनेसे लेकर कार्तिक महीनेतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजीबोले किहे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! ज्येष्ठ महीनेमें भग-

वान् जनार्दनजीको भक्तिभावसे ठण्ढे जलोंसे स्नान कराकर पूजन करै १ सुगन्धित उबटन, आंवला और सुगन्ध तेल हरिजी को गरमीके समयमें दिन दिनमें देवे २ सुवासित,ठण्ढे, अत्यन्त मनोरम स्थान में जलों के मण्डपमें प्रतिदिन लक्ष्मीपतिजी को स्थापितकरै ३ हे विप्रेन्द्र ! भयानक देश, धूमसमेत इन्धन का स्थान और सवरिके घरमें भगवान्को न स्थापितकरै ४ सफेद,दीर्घ चामरों से ज्येष्ठमास में भगवान् के डुलावे तो प्रसन्न होकर भगवान् क्या नहीं देतेहैं ५ हे सज्जनों में श्रेष्ठ ! ज्येष्ठमें मयूरकी पूंछके पंखोंसे डुलायेगये भगवान् थोड़ेही काल में सब मनोवांछितको देते हैं ६ ताड़के पंखेकी हवा और पवित्र कपड़ेकी हवा जिन्होंने ग्रीष्मऋतुमें विष्णुजीकेकी हैवे सब स्वर्गको जावेंगे ७ जो गरमी में सुगन्धयुक्त कर्दम और हरिचन्दनसे हरिजीकी देहको लेपनकरता है वह भगवान्की देहमें प्रवेश करताहै ८ गरमीके आगमनमें फूलों, फूलों के वगीचे तथा तुलसी के वनमें धीर पवनवाले देशमें संध्या के समयमें जो विष्णुजी को स्थापित करताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है जिसने ज्येष्ठमहीने में पाटल के फूलों से विष्णुजी को अलंकृत किया वह हज़ार अश्वमेध का करनेवाला होता है ग्रीष्म ऋतुमें जो मनुष्य भगवान्को मोतियोंका माला देताहै ९। १०। ११ तो भगवान् उसको जन्म जन्म में राज्य देते हैं जो ग्रीष्मऋतु में श्रीकृष्णजी को मणियों की माला से शोभित करता है १२ तिसके पुण्य के फलको मैं कहताहूं सुनिये जबतक ब्रह्मा इस सब संसार को रचते हैं १३ तबतक मणियों की मालासे भूषित होकर वह विष्णुजीके पुरमें स्थित होताहै सोने तथा चांदीके गहनों से १४ ग्रीष्म में कृष्णजी को जो भूषित करता है वह भी तिसीफलको प्राप्त होताहै जो देवोंके देव हरिजी को गंडूकसमेत विचित्र शय्या देता है वह कभी दुःखी नहीं होताहै ग्रीष्मसमय में हरिजीको गरुयेकपड़े न देने चाहिये पवित्र महीनकपड़े देवे जो हाथ के तोड़े, सुन्दर, सुगन्धित फलोंसे भगवान् का पूजन करता है १५। १६। १७ वह अन्त समयमें इन्द्र के पुरमें जाकर आनन्द

से अमृत पीताहै प्रियालों के सुन्दर फलोंसे जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है १८ वह भी तिसीफलको प्राप्त होता है और बहुत कहनेसे क्या है ग्रीष्म में जो वैष्णव मनुष्य श्रद्धासे अनेकप्रकारके व्यंजनसंयुक्त अत्यन्त शीतल यवागू हरिजीको देताहै तो वहभी तिसी फलको प्राप्त होताहै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आषाढ़ महीने में देवदेव, संसारके गुरुजीको १९।२० पण्डित भक्तिसे दहीसे स्नान कराकर पूजनकरै तो वह फिर माताके स्तन नहीं पीताहै २१ हे विप्रर्षे! आषाढ़में मेघों के समान श्यामवर्ण हरिजीको आराधन कर मनुष्य श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोताहै २२ जो कदम्बके फूलोंकी मालाओंसे अग्निके सदृश मण्डप करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है २३ हे ब्राह्मणोंमें उत्तम! सुगन्धित केतकीके फूलोंसे पूजितहुए लक्ष्मीपतिजी मनुष्योंके सबदुःखोंको नाशकरते हैं २४ कटहलके सुन्दर पके और घीसे मिले हुए फलोंसे पूजित हुये भगवान् विष्णुजी उत्तम ऐश्वर्यको देते हैं २५ हे उत्तम ब्राह्मण! वैष्णव मनुष्य आषाढ़के महीने में हरिजीको श्रद्धासे दही अन्न प्रतिदिन मुक्ति की इच्छा करदेवे २६ जो वैष्णव मनुष्य कृष्णजीको माखनदेताहै वह सब पापोंसे शुद्धहोकर ब्रह्मलोकको जाताहै २७ जो मनुष्य शेफालिका और यूथिका के फूलोंसे परमात्माजीको पूजन करता है वहपरमपदको जाताहै २८ फूलीहुई सुगन्धित मालतीके फूलों से जो हरिजीको पूजन करता है तो तिसपुण्य से उसका सो पुण्य होताहै जिससे नहीं होवे २९ मनुष्य पृथ्वी में कुन्द और बकुल के फूलों से संसार के बन्धु जनार्दनजी को पूजन कर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै ३० महामहा तथा कुरुबक के फूलेहुये फूलों से जो हरिजीको पूजन करताहै उस मनुष्य पर भगवान् सदैव प्रसन्न रहते हैं ३१ जो मनुष्य सैरीयक, प्रसू और करवीर के फूलों से विष्णुजी को पूजन करता है वह भगवान् के समीप प्राप्त होता है ३२ हे विप्रर्षे! जो श्रावण में घीसंयुक्त लाजाओं को हरिजीको देताहै तिसके घर में सर्वतोमुखी लक्ष्मी जी बसती हैं ३३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य भादोंके महीने में रोगरहित, धर्म, अर्थ,

काम और मोक्षके देनेवाले नारायणजी को श्रद्धा से पूजनकरै ३४
सब उपद्रवोंसे हीन, नवीनबनेहुए स्थान में कमलनयन, जनार्दन,
भगवान्जी को स्थापितकरै ३५ मनुष्य हरिजीको डांस, मसा और
मक्खी आदिकों से युक्त पुराने स्थान में नहीं स्थापितकरै ३६
बुद्धिमान् मनुष्य कीचड़समेत, द्वारगिरेहुए, भीतगलीहुई इस प्र-
कार के घरमें वर्षाऋतु में परमेश्वरजी को नहीं स्थापनकरै ३७ हे
श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो मनुष्य विष्णुजीके स्थान में विचित्र चन्द्रातप
करता है वह विष्णुजीके लोकको जाताहै ३८ पूजा के समय रा-
त्रिमें भगवान् के मन्दिर में अनेकप्रकार की धूपोंसे डांस और
मसों को निवारणकरै ३९ वर्षाऋतु में मसारिकाओं से आच्छादि-
त कर मंचपर सोनेवाले विष्णुजी को रात्रिमें सुन्दर मन्दिर में
स्थापनकरै ४० भादोंके महीने में मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनु-
ष्य नवीन सुगन्धित कह्लारके पत्रोंसे भगवान् को दिनदिन में पू-
जनकरै ४१ भादोंमें जनार्दनजी को केतकी के फूलोंसे नहीं पूजन
करना चाहिये क्योंकि इस महीने में केतकी मदिराके समान हो-
तीहै ४२ जो पकेहुए सुन्दर तालके फलोंसे भगवान् को पूजन
करता है वह गर्भवास के महादुःख को फिर नहीं प्राप्त होताहै ४३
जो मनुष्य घी और दूधसे संयुक्त पकेहुए तालके फलकों श्रद्धासे
भगवान् को देता है वह हरिजीके मन्दिर को जाता है ४४ हे श्रेष्ठ
ब्राह्मण ! वैष्णव मनुष्य भादों के महीने में हरिजी को घीसमेत
तालपिष्टक केवल प्राप्तिके हेतु देवे ४५ हे विप्र ! मोक्ष की इच्छा
करनेवाला वैष्णव मनुष्य भादोंके महीनेमें शाक को न खावे और
रात्रिमें भोजन न करै ४६ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! कुंवारके महीनेमें पूर्वा-
ह्णके समय क्लेश नाशनेवाले भगवान्को जो मनुष्य जलदेतेहैं ४७
उस को लक्ष्मीपतिजी अमृतकी नाईं ग्रहण करते हैं और मध्याह्न
में जो चक्रपाणिजी को जल दियाजाता है ४८ उसको भी अमृत
ही की समान भगवान् ग्रहण करतेहैं अपराह्ण में जो गोविन्दजी
को जल दियाजाता है ४९ वह रक्तके सदृश होताहै इससे हरिजी
उस को नहीं ग्रहण करते हैं इससे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! पूर्वाह्ण में भ-

गवान् को पूजनकरै ५० तो भगवान् की दयासे सब कामनाओं को प्राप्तहोवे हे विप्रेन्द्र! एक कपड़े से हरिजी का पूजन न करै ५१ वा करै तो ऐसी पूजा को केशवजी नहीं ग्रहण करते हैं विना धोये कपड़ेसे जो भगवान् की पूजा करता है ५२ तो वह पूजा विफल होतीहै और विष्णुजी प्रसन्न नहीं होतेहैं जे मनुष्य भगवान् की विना शिखाबांधेहुए पूजा करते हैं ५३ वे पूजा के फलको नहीं प्राप्त होतेहैं यह पूजा बलिग्राह्य होती है और विना संस्कार किये हुए घरमें भगवान् की पूजा कीजावे ५४ तो यह भी पूजा निश्चय बलिग्राह्य होती है स्नान, देवपूजन, दान और पितृपूजन ५५ चतुर मनुष्य तिलक के विना न करै विना तिलक के जो पुण्यकर्म किया जाता है ५६ वह सब भस्म होजाताहै और करनेवाला नरक को जाताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शंख, चक्र, गदा और कमल से जिसका शरीर चिह्नित दिखलाई देताहै वह आपही भगवान् जानने योग्य है और जो वैष्णव दक्षिणभुजा में शंख और कमल लिखता है ५७।५८ और बाईंभुजा में चक्र और गदा लिखता है वह निस्सन्देह विष्णुही है जो दहिनी भुजा में शंखके ऊपर कमल लिखता है ५९ तिसके सब पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं और बाईंभुजा में चक्र के ऊपर जो गदा लिखता है ६० तिसकी इन्द्रादिक देवता वन्दना करते हैं जो पण्डित अपने माथे में भगवान् के दोनों चरणों को लिखता है ६१ तिसको देखकर पापीभी पापसे छूट जाताहै जो श्रेष्ठ वैष्णव अष्टाक्षर महामंत्र,मत्स्य और कच्छपजी को हृदय में लिखता है वह तीनोंलोकोंको पवित्र करता है जिसका शरीर दिनदिन में कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित होता है ६२।६३ तिसको कृष्ण जगन्नाथजी परमपद देतेहैं कृष्णजीके अस्त्र से चिह्नित देहवाला मनुष्य शुभ वा अशुभ जो कर्म करताहै वह सब नाशरहित होताहै दानव,राक्षस,भूत,वेतालक,६४।६५ पिशाच,सर्प, यक्ष,विद्याधर,किन्नर, गुह्यक, ग्रह,बालग्रह, ६६ कूष्माण्ड,डाकिनी तथा और विघ्नकारक सब डरसे कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नितको देखकर भागजाते हैं ६७ सिंह और सिंहिनियां तथा औरभी वनवासी

कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित को देखकर डरसे भागजाते हैं ६८ और कामलाआदिक देहके गिरानेवाले महारोगभी भाग जाते हैं जो मनुष्य कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाले को भक्तिसे देखता है ६९ वह कृष्णजी के दर्शनके तुल्य फलको प्राप्त होताहै जो कुंवारमें त्रिपत्रीकृत दूवों से हरिजीको पूजन करता है ७० तिसकी दूब की नाईं अविच्छिन्न सन्तान वर्तमान होती है कुंवारके महीने में जो भगवान्को कर्कटी के फलको देता है ७१ तिसके हृदयमें कभी शोक नहीं होताहै और सब मासोंमें उत्तम शुभ कार्तिक के महीनेके प्राप्त होनेमें ७२ बुद्धिमान् मनुष्य दामोदर देवदेवजी को भक्तिसे पूजन करै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! कार्तिक मासमें विष्णुजी की प्रसन्नताके हेतु ७३ यथोक्तविधिसे प्रातःकाल स्नानकरै कार्तिक महीने में जो मांस और मैथुनको त्याग करताहै ७४ वह जन्म जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुलाराशिके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान ७५ हविष्य-भोजन, ब्रह्मचर्यरहना ये महापापोंको नाश करतेहैं और जो कार्तिक महीने में मांसखाता और मैथुन करता है ७६ वह जन्मजन्म में गांवका सुअर होता है वैष्णव मनुष्य दूसरीबार भोजन, पराया अन्न और तेलको ७७ कार्तिक महीने के प्राप्तहोनेमें यत्न से छोड़देवे आकाशमें भगवान्को जो दीप देताहै ७८ हे ब्राह्मण! तिसके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ब्रह्महत्यादिकक्लेश देने वाले पापोंसे छूटकर ७९ भगवान्के पुरमेंजाकर करोड़युगपर्यन्त वह मनुष्य स्थित होता है प्रकाशित दीपको इन्द्रादिक देवता आकाशमें ८० देखकर प्रसन्न होकर सब परस्पर यह कहते हैं कि यह पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ, भगवान्के पूजन में तत्परहै ८१ जोकार्तिकके महीनेमें भगवान्को दीपदेताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं ८२ जो कार्तिक के महीने में भगवान् के मन्दिरमें अक्षय दीप देताहै वह मनुष्य दिनदिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८३ जो मनुष्य कार्तिक में लाख तुलसीदलोंसे हरिजीको पूजताहै वह एकलाख अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता

है ८४ और जो लाख बिल्वपत्र से नाशरहित विष्णुजीको पूजन करता है वह भगवान्‌के प्रसादसे परममोक्षको प्राप्त होताहै ८५ जो कुछकार्तिकके महीनेमें विष्णुजीको उद्देश कर दिया जाताहै वह सब नाशरहित होता है यह मैं सत्यही कहताहूं ८६ जो कार्तिक के महीने में घीसे युक्त सुरपत्रको दिनदिनमें वैष्णवको देताहै तिसकी विष्णुजीके पुरमें स्थिति होतीहै ८७ जो सफेद वा कालेफूले कमलके पत्रसे भगवान् को पूजन करता है तिसका पृथ्वीमें क्या दुर्लभ है ८८ जिस श्रेष्ठब्राह्मण ने कार्तिकके महीनेमें दैत्योंके जीतने वाले,हरि, विष्णु जीको कमल न दिया उसने कुछ न किया ८९ एकही कमल लाकर जो भगवान्‌को देताहै तिसको लक्ष्मीके पति भगवान् विष्णुजी क्या नहींदेते हैं ९० कार्तिक के महीनेमें कमलों से जिसने हरिजीको नहीं आराधन किया तो जन्मजन्ममें उसके घरमें लक्ष्मीजी नहीं स्थित होतीहै ९१ जो केशव महात्माजी को कमलके बीज देता है वह प्रत्येक जन्ममें शुद्धब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होताहै ९२ और ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होकर चारों वेदों का मित्र, धनवान्, बहुत पुत्रवाला और कुटुम्बों का पालनकरने हारा होताहै ९३ हे जैमिनि! कमलके समान फूलनहीं है जिससे गोविन्दजीको पूजनकर पापी भी मोक्षको प्राप्त होता है ९४ कमल के फूलका माहात्म्य विशेषकर मैंनेकहा अब हे श्रेष्ठब्राह्मण! इतिहाससमेत सावधानहोकर सुनिये ९५ एकप्रजा नाम ब्राह्मण सब शास्त्रका जाननेवाला हुआ जिसकामन भगवान्‌के चरणकमल में भौंरेकी नाईं सदैव स्थित रहताथा ९६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! सदैव वह देवता, ब्राह्मण और गुरुओं की पूजा सैकड़ों कार्यों को छोड़कर करताथा ९७ पराई द्रव्यको विषके समान और पराई स्त्रियों को माताके सदृश और शत्रुकोभी मित्रके समान समझताथा ९८ यह परमार्थका जाननेवाला ब्राह्मण आयेहुए याचक अतिथि श्रेष्ठब्राह्मणको देखकर बड़ेमानको न प्राप्त होताथा ९९ घोर, अपारसंसारसागरके तरने की इच्छा करने वाले तिसने सब यज्ञ और सब व्रत करलिये १०० एक समयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण भगवान्‌की भ-

क्ति में परायण होकर चित्तसे अपनी मृत्यु और जाति की चि-
न्तना करता भया १०१ कि मैं पूर्वमें कौनथा कौन पूर्वसमय में
कर्म कियाथा कैसे जन्म प्राप्तहुआ और फिर कहां जाऊंगा १०२
यह चिन्तना कर यह ब्राह्मण बारंबार श्वास लेकर पहले के
वृत्तान्त जानने के लिये महादेवजी के क्षेत्र को जाताभया १०३
तहांपर ब्राह्मण हाथ जोड़ परमभक्तिसे युक्तहोकर मधुरवाणीसे
देव, शिव, शंकरजीकी स्तुति करनेलगा १०४ हे महादेव, परमे-
श्वर, शंकर, ईशान, वरदेनेवाले, प्रभु, १०५ ज्ञानरूप, ज्ञान देने-
वाले, सब प्राणियोंके हृदयरूप कमलके निवास करनेवाले १०६
संसार के रचनेवाले, पालन करनेवाले, संहार करनेहारे, पशुओंके
पति,१०७ अग्निनेत्र, अग्निचक्षु, चन्द्रनेत्र, सूर्यनेत्र, १०८ भस्म
से भूषित, कृत्तिवासः, हाड़ोंके मालावाले, नीलकण्ठ, १०९ पांच
मुखवाले, शूल हाथमें धारे, कामदेवके अभिमानके नाश करनेवाले,
भयानकमूर्त्ति, ११० देवोंके देव, त्रिपुरारि, पार्वतीके पति, भीम-
मूर्ति, १११ वाणासुरकी भक्तिसे अत्यन्त संतुष्टमनवाले, बहुरूप,
विश्वरूप,११२ गंगाधर, दक्षकी यज्ञके नाश करनेवाले, प्रेतोंके
पति, पिनाकी,११३ ईशान, मनीष, दृश्य,अदृश्य,चिन्त्य, अचिन्त्य
आपके नमस्कारहै ११४ देवताओंके एकनाथ ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य,
सब आर्ति हरनेवाले चन्द्रमा आपही हैं आपके नमस्कारहै और
परमेश्वर भी आपही हैं आपके नमस्कार है ११५ तिसकी स्तु-
तिको सुनकर संसार के कल्याण करनेवाले शंकर परमेश्वरजी
प्रसन्न होकर सहसासे प्रकट होगये ११६ सब देवोंसे नमस्कार
कियेगये महादेवजी को प्रकटहुए देखकर अत्यन्त भक्तियुक्त वह
ब्राह्मण महादेवजी के चरणों में वन्दना करता भया ११७ फिर
वह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्दसे निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर वर देने
वाले, प्रभु, महादेवजीकी स्तुति करनेलगा ११८ कि जिन देवोंके
स्वामीको इन्द्रसमेत देवताभी नहीं देखते हैं तिनको मैं साक्षात्
देखताहूं यह मेरी महाभाग्य है ११९ जो परमेश्वर ध्यानमें अव-
स्थित चित्तसे दिखलाई देते हैं तिनको मैं साक्षात् देखताहूं और

मेरा क्या साध्यहै १२० आपका नाम स्मरण करनेसे महापापी भी परमस्थानको जाते हैं तिन प्रभुको मैं देखताहूं १२१ मैं कृतार्थ और भाग्यवान्हूं हे परमेश्वरजी! आपके नमस्कार हैं प्रसन्न हूजिये १२२ तब महादेवजी बोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे महाभाग! तुम्हारे इसवाक्यसे मैं प्रसन्नहूं वर मांगो निश्चय मैं वर देनेकी इच्छा करताहूं १२३ तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ! देवताओंसे भी अदृश्य आप परमात्माको मैं साक्षात् देखताहूं और वरोंसे क्या कार्य है १२४ हे महादेव! हे परमेश्वर! तिसपरभी आप वर देना चाहतेहैं तो जो कुछ मैं पूंछताहूं तिसको कहिये १२५ हे देव! हे नाथ! हे प्रभो! पूर्वसमय में मैं कौनथा कहां स्थित और क्या कार्य कियाथा और संसाररूपी समुद्रमें कैसे गिराहूं १२६ कर्मसे देह प्राप्त होताहै देहधारी पापसे लिप्त होता है फिर पापके प्रभाव से विषमगति प्राप्तहोतीहै १२७ हे नाथ! हे शंकरजी! किन कर्मोंके प्रभावसे अनेक प्रकारके दुःख देनेवाले इसजन्मको मैंने पाया है प्रसन्न होकर कहिये १२८ यह जन्म पापका मूलहै जन्म दुःखका कारणहै तिससे मैं अपने पूर्व वृत्तान्तके जाननेकी इच्छा करता हूं १२९ कर्मोंके विपाकसे मूत्र और विष्ठासे युक्त माताकी कोखिमें मैं पेटकी अग्निसे तापित हुआहूं १३० हे प्रभो! हे भक्तोंकी पीड़ा के नाश करनेवाले! गर्भवासके समान दुःख संसार में नहीं मानताहूं तिसको मैंने कैसे अनुभूत कियाहै १३१ इस महाघोर संसार, अनेक दुःखोंसे युक्त, असार, विष्णुजी की मायासे मोहित, पापों के आश्रय, १३२ दुस्तर, बन्धुहीन, काम और क्रोधआदिसे संयुक्त, शोक, रोग, जन्म और मृत्युके देनेवाले १३३ अपार में हे संसार के स्वामी! हे शिव! हे विभुजी! मैं कैसे गिराहूं जो आप की मेरे ऊपर कृपाहै तो यह सब कहिये १३४ तब महादेवजी बोले कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! यद्यपि यह अत्यन्तगुह्य, महान् और प्रकाश करने के योग्य है तथापि मैं तुझ भक्त से कहता हूँ १३५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! पूर्वसमय में तू शबरोंके वंश में उत्पन्न, दण्डपाणि नाम से प्रसिद्ध, अच्छे मनुष्यों के दुःख देनेवाला था १३६

परलोकका भय छोड़कर ज्ञानोंसे हीनहोकर प्रपन्नों को आर्ति और परमक्लेश देनेवाली चोरों की वृत्ति करता था १३७ तुझको चोरों की वृत्तिमें प्राप्त अत्यन्तनिर्दयी देखकर और सब भाईभी चोर होगये १३८ तिन भाइयों के मैं नाम कहताहूँ जिनके साथ पूर्व समयमें तूने चोरी की थी १३९ दण्डी, दण्डायुध, दत्तवान्, दत्तभू, सुदण्ड, दण्डकेतु ये छः भाई तेरे कहेगये १४० तिन महाघोर भाइयोंसमेत तू दयाओं से हीनहोकर नित्यही दण्डसे मनुष्योंको व्याकुल करता भया १४१ तिन दुष्ट भाइयोंसहित तूने धनके लोभसे प्रान्तरवन में हज़ारों मनुष्यों का नाश किया १४२ हे ब्राह्मण! सदैव वन में स्थित होकर तूने तीक्ष्णबाणोंसे गौवोंको मारकर मदिराके साथ मांसको भोजन किया १४३ तदनंतर सब बनियां तेरे डरसे तिस वनमें यानविधिको त्याग करदेतेभये वहांपर अनर्थ सदैव होताभया १४४ तेरे चोरोंके भाव में प्राप्त होने में जिसका द्रव्य था उसका न होताभया जिसका घर था उसका न हुआ जिसकी स्त्री थी उसकी वह न हुई १४५ इसीप्रकार तिन अपने भाइयोंसमेत तिस महावनमें प्राप्त होकर राह के श्रमसे थककर स्नानकरने के लिये तालाबको गया १४६ हे ब्राह्मणों में उत्तम! तहां पर क्षुधायुक्त तूने स्नान किया और तेरे भाइयों ने कमलकी नाल और जलसेवन किये १४७ तदनन्तर हे सज्जनों में अत्यन्तश्रेष्ठ! हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तूनेभी बहुत फूले हुए कमलके फूलोंको भोजनकिया तिसी समयमें एक वनमेंरहनेवाला ब्राह्मण सर्ववेदा नामसे प्रसिद्ध स्नान करने के लिये आता भया १४८। १४९ और तहां स्नानकर वह धर्मात्मा नम्रतायुक्त होकर जनार्दन भगवान्के पूजनेके लिये तुमसे मांगताभया १५० तब हे विप्रेन्द्र! तुमने एक निर्मल कमल परमभक्तिसे भगवान् की पूजाके लिये दिया १५१ तो तुम्हारे दियेहुए कमलसे प्रसन्न होकर वह उत्तम ब्राह्मण तहांहीं सबके करनेवाले विष्णुजीको पूजन करताभया १५२ तिन सब वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको भगवान् की पूजा में परायण देखकर तुमभी हँसकर सुन्दर कामना

देनेवाले विष्णुजीको नमस्कार करतेभये १५३ तदनन्तर वह ब्राह्मण परात्मा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले भगवान् को यथोक्त विधिसे पूजनकर जैसे आयाथा वैसेही चलागया १५४ हे सज्जनों में श्रेष्ठ! तिसीकमलके देने,प्रणाम करने और विष्णुजी की पूजाके दर्शनसे तुम्हारेसब पापनष्ट होगये १५५ हे उत्तम ब्राह्मण! तब कुछदिनों में तिसी महावनमें कालप्राप्त होकर नाशको प्राप्तहोगये १५६ तब तिसी कर्मसे प्रसन्न होकर दयाके स्थान भगवान् तुमको देवताओंके भी दुर्लभ श्रेष्ठस्थान को देतेभये १५७ तहांपर लक्ष्मीपतिजीकी कृपासे हज़ार और सौमन्वंतर अनेक प्रकारके सुख भोगकर १५८ फिर कर्मके अन्त में इस कर्मभूमि में आकर तिन्हीं पुण्यके फलोंसे ब्राह्मणके यहां उत्पन्न हुएहो १५९ हे सत्तम! ब्राह्मणके शुद्धकुलमें जन्म पाकर तुमको सब गुणोंकेआश्रय, अचंचल हरिभक्ति मिली १६० क्रियायोगसे तुमने महाविष्णु प्रभुजी को आराधन किया इससे भगवान् तुमको ज्ञानदेवेंगे और ज्ञानसे मुक्तहोजावोगे १६१ हे ब्राह्मण! तुम प्रसन्न होकर अपने स्थानको जावो तुम्हारा कल्याण होगा मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे संसार के बन्धनसे मुक्तहो १६२ व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि! ऐसा कहकर महादेवजी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये और वह ब्राह्मण कृतार्थ होकर अपने मन्दिरको जाताभया १६३ तदनन्तर विष्णु परमेश्वर जीको तीन दिन मनोरम कमलके फूलोंसे स्तुतिके अर्थ यत्नसे आराधन करताभया १६४ बहुत काल कमलके विचित्र सुन्दर फूलोंसे विष्णुजीको आराधनकर ज्ञानको प्राप्त होकर भगवान्‌के प्रसादसे मोक्षको प्राप्त होजाताभया १६५ विना इच्छा के कमल देनेवाले का इस प्रकार फल है और जो भक्ति से विष्णुजी को देता है तो नहीं जानते कि क्याहोगा १६६ यह सत्य ही सत्य मैं कहता हूं कमलोंसे हरिजीको पूजनकर परमपद प्राप्त होता है १६७ एक ही कमल जो भगवान् को देताहै तो उसका फिर भयदायक संसारमें जन्म नहीं होताहै १६८ जे दयामय, कामना देनेवाले नारायणजी को एक दिन भी फूलेहुए कमलों से पूजते

हैं वे उत्कट पापोंसे युक्त पापी भी मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं १६९ ॥
इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

भगवान्की पूजाका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि ! वैष्णव मनुष्य भक्तिभावसे अगहनके महीने में महालक्ष्मी से युक्त नाशरहित विष्णुजी को पूजनकरै १ म्लेच्छों के देशमें तथा पतितके स्थान में और दुर्गन्धसे युक्त स्थानमें विष्णुजीको न पूजनकरै २ पाखण्डों, महापापियों और झूंठ बोलनेवालों के समीप विष्णुजी का पूजन न करै ३ रोनेवालों, लड़ाई करनेवालों तथा हँसनेवालों के स्थान में भी हरिजी का पूजन न करै ४ प्रतिग्रह में रत, कृपण, परायेद्रव्यकी अभिलाष करनेवाले ५ तथा कपट वृत्तियों के स्थान में विष्णुजी का पूजन न करै नारायणजी के पूजन में श्रेष्ठ भक्ति में परायण होकर ६ और जगहसे चित्तको हटाकर हरिजीके ध्यान में परायण होवै हाहाकार, निश्वास, विस्मय, ७ पाखण्डजनों से भाषण इन सबको छोड़कर भगवान् का पूजनकरै अनन्यमन होकर देवदेव, जगद्गुरुको ८ जो भस्म में भी पुष्प दिया जाता है तो वह भी हरिजी को प्राप्त होताहै और सैकड़ों चिन्ताओं के आगम से थककर शिलाचक्रों में भी ९ जो मनुष्य फूल देता है तिसको प्रभुजी नहीं प्राप्त होते हैं अनन्यमन होकर पण्डित भक्तिसे विष्णुजी को पूजन करै १० भ्रांतचित्त होकर जो कर्म किया जाता है वह निष्फल होता है क्योंकि सब कर्म मन के अधीन है और तीनों लोक भी मनके अधीन हैं ११ तिससे मन को दृढ़कर लक्ष्मीपतिजी को पूजन करै हे उत्तम ब्राह्मण ! जिसकी पूजा और जगह और मन और जगह होताहै १२ तिसका सौकरोड़ कल्पोंमें भी कार्य नहीं फलताहै यत्नसे शोचकर विष्णुजी की पूजामें परायण होकर १३ मनकी शुद्धिसे जो हीनहो तो चाण्डाल की नाईं होताहै हे ब्राह्मण ! बिना भक्तिसे जो बहुतकाल विधिपूर्वक

तपस्या कीजाती है १४ वह सब निरर्थक होजाती है केवल देहही का शोधन होताहै सुमेरु पर्वतके प्रमाण सोना कुटुम्बी ब्राह्मणको १५ विना भक्तिके कल्याणके लिये दियाजावे तो वह द्रव्यनाशही के लिये होताहै तिससे एकमन और भक्ति श्रद्धासे युक्त होकर १६ सभामें वैष्णवको सत्रास्तुक आदि सागदेवे सुन्दर पकाहुआ नारंग का फल जो केशवजी को देताहै वह हमलोगों से भी पूजित होता है यत्नसे भगवान् हरिजी को नवीन वस्तु प्रियहै १७। १८ तिसको अगहन के महीने में भक्तिसे भगवान् को देवे पौषमास के प्राप्त होनेमें श्रीकृष्ण, वर देनेवाले, प्रभु, १९ देवजी को वैष्णव मनुष्य सुन्दर ईखके रसों से स्नान करवावे हे विप्रेन्द्र! जो प्रभु विष्णुजी को ईखके रसोंसे स्नान कराता है २० वह इस लोक में सब सुख भोगकर मरकर ईखके रसके समुद्रमें जाताहै जो देवदेव विष्णुजीको ईखकी नैवेद्य देताहै २१ वहभी तिसी फलको प्राप्त होताहै और बहुत कहनेसे क्याहै पौष महीनेमें सुन्दर दूधकी पृथुक दहीसमेत २२ भगवान्‌को देकर मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त होताहै सब भगवान्‌के पुराने कपड़ों को दूरकर २३ लक्ष्मीजीसमेत विष्णुजीको पौषकी संक्रांतिमें शीतके निवारणके लिये नवीन कपड़े देवे २४ और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य दश वर्ष पीठक देवे जो भगवान्‌को पूजनकर शङ्ख बजाताहै २५ हे वत्स! तिसके फलको कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो अगम्या स्त्रियोंमें गमन आदिक सब पापोंसे छूटकर २६ अन्तसमय में विष्णुजी के पुर जाकर वह विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै जो भगवान्‌की पूजाके समयमें गरुड़से चिह्नित घण्टाको बजाताहै तिसकी पुण्य को मैं कहताहूं नहीं भोजनके योग्य वस्तुओंके भोजन करने आदिक सब पापोंसे छूटकर २७।२८ सुन्दर रथपर चढ़कर विष्णुजीके स्थानको जाताहै तहांपर सौकरोड़ कल्प सब कामनाओं को भोग कर २९ फिर वह चारों वेदका जाननेवाला उत्तम ब्राह्मण पृथ्वीमें आकर तहां पर सौ करोड़ कल्प सब कामनाओं को भोगकर ३० फिर विष्णुजीके पुरको जाकर उत्तम मोक्षको प्राप्त होताहै और जो

भगवान् की पूजा के समय में वीणा बजाता है ३१ वह मनुष्य प्रत्येक जन्म में पण्डितों में श्रेष्ठ होता है जो भगवान्की पूजा में मृदङ्ग बाजा बजाताहै ३२ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् अभीष्ट फल देते हैं और जो डमरु, डिंडिम, झर्झरी, मधुरी, ३३ ढोल, नगारा, काहल, सिंधुवारक, कांस्य, करताल और वंशी को महा-विष्णुजीकी पूजाके समयमें बजाताहै तिसकी पुण्यको सुनिये चोरी के पापों से वह मुक्त होकर भगवान् के स्थानको जाता है ३४।३५ और परम ज्ञान प्राप्त होकर तहांहीं मुक्त होजाताहै जो भगवान् की पूजा के समय में मनोहर शब्द करताहै ३६ और मुखसे बाजा बजाताहै तिसकी पुण्य मैं कहताहूं करोड़ करोड़ कुलों से युक्त हो कर वह भगवान् के मन्दिर को जाताहै ३७ और तहांहीं ज्ञानको प्राप्त होकर नाशरहित मोक्षको प्राप्त होताहै जो भक्तियुक्त होकर विष्णुजी के स्थान में नाचता है ३८ वह विष्णुजी के परमपद को जाता है जो भक्ति से नारायण जी के आगे गीतगाताहै ३९ वह गन्धर्वों के पुरों में राजा होताहै वैष्णव मनुष्य भक्तिसे स्तोत्रों से जगन्नाथजी की स्तुति करताहै ४० तिसको प्रसन्न होकर भगवान् सब कामनाओं को देते हैं इस विधि से महीने महीनेमें जो हरिजी को पूजन करता है ४१ तिसके ऊपर भगवान् थोड़ेही समय में प्रसन्न होजाते हैं ४२ जे मनुष्य इस अत्यन्त गहरे, सबदुःखों के देने वाले संसाररूपी समुद्र के तरनेकी इच्छा करते हैं वे सब मनोज्ञ, देवताओं के समूहों से सेवने योग्य भगवान् के दोनों चरण-कमलों को पूजन करैं ४३ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारेभगवत्पूजामाहात्म्यंनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

रामजी के नामका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण ! फिर नारायणजी के माहात्म्यको कहताहूं सुनिये जिसके सुननेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाताहै १ हे उत्तम ब्राह्मण ! यह सब संसार विष्णुजी के अंशसे

उत्पन्नहै तिससे परमार्थी धीर विष्णुमय को देखते हैं २ ब्रह्मा, महादेव और इन्द्रादिक सब देवता विष्णुजी के अंशहैं तिससे सब देवताओंकी पूजा एक विष्णुजीहीको प्राप्त होती है ३ जिस किसी उपायसे सब पापोंके नाश करनेवाले विष्णुजी के नामों के स्मरण करनेवालों का कहीं अशुभ नहीं होताहै ४ सब पापकर्मसे ही कहाताहै और यह विष्णुजी का स्मरण नाशरहित और पाप नाशकरने हारा है ५ मोक्षकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य सोते, भोजनकरते, कहते, स्थितहोते, उठते तथा चलतेहुए भी अविरत विष्णुजी को स्मरणकरै ६ श्रेष्ठ सब मुनियों ने भगवान् के स्मरण में सब दुःखों का नाश करनेवाला काल का नियम नहीं कहाहै ७ हेविप्रर्षे! भगवान् केशवजी के नाम का प्रभाव इतिहाससमेत संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ८ पूर्वसमय सतयुगमें पवित्र, सब गुणोंका पार जानेवाला बनियोंके कुलमें श्रेष्ठ परशु नाम बनियां हुआहै ९ यह दैवयोगसे पहलीही अवस्था में खांसी दमे के रोगसे पीड़ित होकर मरगया १० तब जीवंती नाम तिसकी स्त्री जो कि सुन्दरकरिहांव और नवीन यौवनवाली थी यह स्त्री पतिके मरने के पीछे पिताके घरको चलीगई ११ और वहांपर नवीन यौवनसे अभिमानयुक्तहोकर बांधवों से निषेधको प्राप्तहोकर भी व्यभिचारी पुरुषोंसे भोग करानेलगी १२ व्रतका नियम वा घरके कामको इस नवयौवनाने छोड़दिया व्यभिचारी पुरुषोंमेंही चित्त लगायेरही १३ यह सुन्दर कटि और मोटै स्तनवाली स्त्री कामसे अन्धी होकर धर्ममार्गको कभी न देखतीभई १४ तिसको दुःशीला देखकर तिसी का धर्ममें तत्पर पिता अयशके डरसे डरकर अत्यन्त कोपयुक्त होकर यह बोला १५ कि रेदुष्टे! रेपापिनि! सब दोषोंसे हीन मेरे वंशमें जन्मपाकर क्यों पाप तू करती है १६ रे अभद्रे! जो तेरा चित्त पापहीमें है तो खानेकेलिये नहीं आना स्थानसे जा मेरा घर छोड़ १७ पितासे इसप्रकार कहीहुई वह स्त्री क्रोधसे लालनेत्र होकर पिताके घरको छोड़कर सुखपूर्वक चलीगई १८ फिर अपनी इच्छासे व्यभिचारियों की कांक्षा से घूमती हुई वेश्याओं की वृत्तिकर लज्जा

से हीन होकर स्थित होतीभई १९ पुलिन्द, शबर और चाण्डाल भी तिसके घर में आता तो उससे भी यह दुष्टा आनन्द से क्रीड़ा करती थी २० यह वेश्याकी नाईं कभी भी चित्तसे परलोक के भयको न चिन्तन करती भई २१ हे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ! कभी तिसकेस्थानमें बहेलिया सुयेके बच्चेकोलेकर बेंचनेके लिये आया २२ तब यह वेश्या परमप्रीति से बहेलिये को धनदेकर उत्तम सुयेके बच्चेको ले लेतीभई २३ और कुतूहल उत्पन्नहोकर सुयेके योग्य भोजनको देकर नित्यही उसका पालन करती भई २४ इस वेश्या के पुत्र नहींथा इससे उससुयेको अपने पुत्रहीकी नाईं मानकर तिसका पालन करतीभई २५ औरवहपक्षी तिसकी आज्ञासे नित्यही जातिकी नाईं चित्तके वात्सल्य के व्यवहार को करता भया २६ तदनन्तर यह लब्धभाव होकर सुआ तिस वेश्यासे सुन्दर अक्षर वाला राम यहनाम निरन्तर पढ़ायागया २७ तब वह सुआ परब्रह्म, सबदेवोंसे अधिक, महत्, सब पापों के नाशकरनेवाले रामनामको सदैव पढ़ताभया २८ रामजीके नामके उच्चारणमात्रही से सुआ और वेश्या दोनोंके सब घोर पाप नाशहोगये २९ कभी वह वेश्या और सुआ दोनों एकही समयमें नाशको प्राप्तहोगये ३० तब सब पापकरनेवाले दोनोंके लेनेके लिये धर्मराजने चण्डादिक दूतोंको भेजा ३१ तब तो अत्यन्त वेगवाले, फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर चण्डादिक सबदूत यमराजजी की आज्ञासे आतेभये ३२ और इन्हीं दोनोंके लेनेके लिये विष्णुजीके समान पराक्रमी सब भगवान्के दूतभी आकर दोनोंको फँसरीसे बँधे हुए देखकर ३३ क्रोधयुक्त होकरघोर यमराजके दूतोंसे ये वचन बोले ३४ कि हे यमदूतो! हमने मुखसे बड़ीविचित्र ये वाक्यसुनीहै ३५ कि ये दोनों भगवान्के भक्तभी यमराजजीसे दण्डके योग्यहैं आश्चर्यकी बात है कि दुष्टोंकाचरित्र कभी उत्तम नहीं होताहै ३६ जिससे कि निरन्तर सज्जनोंकी भी यत्नसे हिंसा करते हैं पाप करनेवाले दुष्टोंका यह अद्भुत चरित्रहै ३७ पुण्यात्मा तो सब संसारको पापरहितही देखते हैं और पापी सबको पाप कियेही देखतेहैं ३८ पुण्यात्माओं

की पुण्य सुनकर धर्मयुक्त तृप्त होजाते हैं और पापियोंके पापसुन कर पापी मनुष्य तृप्तहोते हैं ३९ पापी पापकी चर्चा सुनकर जैसे तृप्त होते हैं वैसा सौभार सोना पाकर नहीं तृप्त होते हैं ४० आश्चर्य है कि महात्मा महाविष्णुजीकी माया बलवती है कि आत्मा के पीड़ा करने वाले भी पापको करते हैं ४१ व्यासजी बोले कि हेजैमिन! ब्राह्मण! ऐसाकहकर विष्णुजीकी भक्तिमें परायणविष्णुदूत वेश्या और सुयेके बन्धनको चक्रकी धारासे काट देते भये ४२ तब अग्निके समान क्रोधयुक्त यमदूत सहसा से तहांपर जलते हुये अंगारके समूहोंको वर्षने लगे ४३ और दण्डदूत भगवान्के दूतों से बोला कि इस सुये और पापिनी वेश्याके लेनेके लिये मैं आयाथा और आपलोग भी लेनेहीके लियेआयेहैं तो यह अद्भुतही साहुआहै ४४ हे अत्यन्त श्रेष्ठो! निश्चय जो इन दोनोंके लेनेही के लिये इच्छा करते हो तो इस समयमें हमलोगोंके साथ लड़ाई कीजिये ४५ ऐसा कहने पर बलवान्,रामदूत, उद्धत, हथियार धारणकर सब सिंहके शब्दोंसे दिशाओंको पूर्ण करते भये ४६ महात्मा सुप्रतीक आदिक विष्णुजीके दूत सुन्दर ललितशंख के शब्दों से संसारको शब्दमय कर देतेभये ४७ तब यमराजके महादूतों के धनुषोंसे छूटे हुए बाणों से अत्यन्त घोर संग्राम में विष्णुदूत आच्छादित होगये ४८ कोई महायुद्ध में क्रोध से शूल, कोईशक्ति, कोई हजारों बाण और कोई चक्रों को छोड़ते भये ४९ यमराज के दूतों के छोड़े हुए बड़े अस्त्रों और बाणों को बड़े देवता विष्णुदूत गदा के प्रहार आदिकों से चूर्ण करतेभये ५० तदनन्तर इन भगवान्के दूतों के चक्रकी धारा से यमराज के दूतों के किसी के चरण किसीके भुजा ५१ किसी के शिर किसी के हृदय कटगये किसी के अत्यन्त घाव हुये कोई के मुख कटकर प्राणरहित होकर गिरे ५२ कोई के एक चरण कोई के एक हाथ कटगये तब यमराजके दूत सहसा से लड़ाई छोड़कर भागते भये ५३ भागने में परायण दूतों को देखकर क्रोधसे चण्ड दूत मुद्गर धारण कर लड़ाई में प्रवेश करताभया ५४ और यमराज के दूतसमूहों में श्रेष्ठ अत्यन्त प्रता-

पी चण्ड सैकड़ों मुद्गरों से विष्णुदूतों को ताड़ित करते भये ५५ तब भगवान् के दूत क्रोधयुक्त होकर तीक्ष्ण आयुधों की वर्षा से अत्यन्त पराक्रमी चण्ड के ऊपर वर्षा करतेभये ५६ फिर रक्त से देहसींची होकर चण्ड मुद्गर से विष्णुदूतों को अलग अलग ताड़ना करता भया ५७ तबतो संग्राममें चण्ड से ताड़ितहुए भगवान् के दूत सत्व त्याग कर सुप्रकाश जी के पीछे प्राप्त होते भये ५८ फिर दुपहरिया के फूलके समान नेत्रवाला सुप्रकाश महाबली गदा हाथ में लेकर रणभूमि में प्रवेश करताभया ५९ और विष्णुजी के समान पराक्रमी इस सुप्रकाश ने अत्यन्त क्रोधकर चण्डके हाथ में मुद्गरमारा तो मनुष्यों के भय देनेवाले चण्ड के हाथ से ६० महाभयङ्कर, पवित्रगंधयुक्त धुआं उठताभया तब वेगयुक्त चण्डने भी सुप्रकाश को मुद्गर से ताड़ित किया ६१ तो सुप्रकाश शीघ्रही अत्यन्त भयदायक चिनगारियों को छोड़ता भया तदनन्तर वह चण्ड क्रोधयुक्त तिस मुद्गरसे ६२ महाबलवान् सुप्रकाश को ताड़ित करता भया तब सुप्रकाश कष्ट को भूलकर कोपयुक्त होकर ६३ गदा से यमराज के दूत चण्ड को ताड़ित करता भया सुप्रकाश से ताड़ित होकर चण्ड रक्त से युक्त होकर ६४ मूर्च्छित हो पृथ्वी में बाल सूर्यकी नाईं गिरताभया तब यमराजके दूत मूर्च्छायुक्त चण्ड को लेकर ६५ युद्ध से डरकर हाहाकार करते हुए भागते भये तब विष्णुजी के सब दूत अत्यन्त प्रसन्न होकर ६६ शंखों को बजाते भये और रक्तके समूह से डूब कर यमराज के दूत ६७ भयसे विह्वल रोते हुए यमराजजीके पास जातेभये ६८ और वहां यमराजजी से बोले कि हे सूर्य के पुत्र! हे महाबाहो! हम लोग आपकी आज्ञा करनेवाले हैं तिसपरभी विष्णुजी के दूतों ने हमलोगों की इस प्रकार की दुर्गति की है ६९ हे प्रभो! यद्यपि वेश्या और सुआ ये दोनों महापापियोंमें श्रेष्ठ थे तिसपरभी वे राम नाम के प्रभाव से नारायणजीके स्थानको प्राप्तहोगये ७० जे दुरात्मा पाप करनेवाले आपसे दण्ड के पाने के योग्यहैं वे भी! विष्णुपुरको जो जातेहैं तो आपकी क्या प्रभुता है ७१ विष्णुजीके दूतों

ने हम लोगोंका यह अपमान नहीं कियाहै हे नाथ! केवल आपही का कियाहै जिससे हमलोग आपके दूतहैं ७२ तब यमराजजी बोले कि हे दूतो! वे दोनों राम राम इन दोअक्षरों को स्मरण करते थे तिससे मेरे दण्ड के योग्य नहीं थे उनके नारायणही प्रभुहैं ७३ भो दूतो! दृढ़सुनो संसारमें वह पाप नहीं है जो रामजीके स्मरण से शीघ्रही नाशको न प्राप्तहो ७४ हे वीरो! जे मनुष्य प्रतिदिन श्रेष्ठ देवताओं से पूजित भगवान्के पापसमूहों के नाश करनेवाले नाम को भक्तिसे स्मरण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७५ जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्तिसे गोविन्द, केशव, हरे, जगदीश, विष्णो, नारायण, प्रणतवत्सल यह कहते हैं वे अत्यन्त पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७६ और जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्तार्तिनाशन, सुरेश्वर, दीनबन्धो, लक्ष्मीपते, सकलपापविनाशकारिन् यह कहते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७७ दामोदर, ईश्वरमुख, अमरवृन्दसेव्य, श्रीवासुदेव, पुरुषोत्तम और माधव ये शब्द जे अपने मुखोंसे कहते हैं तिनको हम प्रतिदिन नमस्कार करते हैं ७८ जिन मनुष्योंका नारायण, संसारके एक स्वामी, मुरारिजी की चर्चाओं में अत्यन्त स्नेहयुक्तचित्त होता है तिनके मैं निरन्तर अधीनहूं क्योंकि वे भगवान् के रूपको सेवनकरते हैं ७९ जे विष्णुजीके पूजन में रत, भगवान् के भक्तोंके भक्त, एकादशीव्रत में रत, कपटसे हीन, विष्णुजीके चरणों के जलको शिरसे धारण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ८० जे मधुसूदन भगवान् की सब पापसमूहों की नाश करनेवाली नैवेद्य शेषको भोजन करते हैं और जे कानों और शिरमें तुलसीकी पत्तीको नित्यही धारण करते हैं तिनको मैं प्रणामकरताहूं ८१ जे कृष्णजीके चरणकमलों के पूजन में तत्पर, ब्राह्मण के पूजन में रत, गुण के सेवनकरनेवाले, दीन मनुष्यों के हृदय में अत्यन्त सुखदेनेवाले हैं तिनके मैं निरन्तर अधीनहूं ८२ जे सत्य वाक्य के कहने में सदैव अनुरक्त, लोकोंको प्रिय, शरण में आयेहुए मनुष्यों के पालनेवाले और जे पराई द्र-

न्यको विषकी नाईं देखते हैं वे मनुष्य मेरे दण्ड देनेके योग्य नहीं हैं ८३ जे अन्नके दानमें निरत, जलके देनेवाले, पृथ्वी के देनेहारे, सब मनुष्यों के हितकी इच्छा करनेवाले, जीविकाहीन मनुष्यों के तृप्ति करनेवाले और अत्यन्त शांतहैं वे निश्चय कभी दण्ड देने योग्य नहीं हैं ८४ और जे जातिवालों के पालने में रत, प्रिय बोलनेवाले, दम्भ, क्रोध, मद और मत्सर से रहित चित्तवाले, पापदृष्टि से रहित, इन्द्रियजीतनेवाले हैं तिनकी मैं कभी चर्चा नहीं करताहूं ८५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! इस प्रकार यमराजजी ने अपने दूतों को समझाया और संसार के स्वामी हरिजी के अतुलप्रभावको जनाया ८६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! विष्णुजी के नाम सब देवताओं से अधिक हैं तिनके मध्यमें तत्त्वके जानने वाले रामनामको श्रेष्ठ कहते हैं ८७ राम ये दो अक्षर सब मंत्रोंसे अधिकहैं जिनके उच्चारणहीमात्र से पापी श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता है ८८ रामजीके नाम का प्रभाव सब देवों का पूजन है इसको महादेवही जानतेहैं और नहीं जानता है ८९ विष्णुजी के सहस्रनामों के पढ़नेसे जो फल मिलताहै तिस फलको मनुष्य रामजीके नामके स्मरणही से पाताहै ९० आश्चर्यकी बातहै कि मनुष्यों का यह चरित्र कहाताहै कि दुष्ट आशयवाले वे मुक्तिके देनेवाले राम नामको नहीं स्मरण करतेहैं ९१ कहने में थोड़ाभी परिश्रम नहीं है सुननेमें अत्यन्त सुन्दरहै तिसपरभी दुष्ट आशयवाले राम राम नहीं कहतेहैं ९२ पृथ्वीमें मनुष्योंको अत्यन्त दुःखसे मिलनेवाली मुक्तिहै रामनामही से मिलती है इससे श्रेष्ठ कर्म नहीं है ९३ तब तक देहधारियों की देहों में पाप स्थित रहते हैं जब तक सुखदेने वाले राम रामको नहीं स्मरण करते हैं ९४ श्राद्ध, तर्पण, बलिदान, उत्सव, यज्ञ, दान, व्रत, देवताके आराधन, ९५ तथा और भी वैदिक कार्योंमें जो चतुर मनुष्य तिस फलकी इच्छा करनेवाला भक्तिसे राम राम यह स्मरण करता है ९६ और जो ओंनमो रामाय यह षडक्षर मन्त्र जपता है वह हरिजीकी सायुज्यको प्राप्त होताहै ९७ षडक्षर मन्त्रसे भगवान्की पूजा करने वाला मनुष्य

भगवान्‌के प्रसाद से सब कामनाओंको प्राप्त होता है ९८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मृत्युसमयमें राम राम यह स्मरण करताहै वह अत्यन्त पापी भी मनुष्य परममोक्षको प्राप्त होताहै ९९ जे बुद्धिमान् मनुष्य राम यह नाम यात्रामें स्मरण करते हैं तिनकी निस्सन्देह यात्रामें सब सिद्धि होती है १०० हे ब्राह्मण! वन, प्रान्तर, श्मशान भयानक में रामनाम यह स्मरण करता है तिसके आपदा नहीं विद्यमान होती हैं १०१ राजाके दरवाजे, किला, विदेश, चोरों के सम्मुख, दुःस्वप्न देखने, ग्रहोंकी पीड़ा १०२ उत्पातके डर, और वातरोग के डरमें राम नाम स्मरण कर मनुष्य कहीं अशुभ को नहींपाताहै १०३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! रामका नाम सब अशुभका नाशकरनेवाला, काम और मोक्षको देनेहारा है निरन्तर पण्डितों को स्मरणकरनाचाहिये १०४ हे विप्रर्षे! रामका नाम जिसक्षण में नहीं स्मरण कियाजाताहै वह क्षण व्यर्थ होता है मैं सत्यही कहता हूं १०५ हरिके नामों के स्मरण करनेवाले मनुष्य क्लेश नहीं पाते हैं १०६ करोड़ जन्मों के पापों के नाश करनेकी इच्छा करनेवाला मनुष्य पृथ्वी में संम्पदाको प्राप्त होताहै जो भक्तिसे पृथ्वी में निरन्तर विष्णुजी के नाम मोक्षदेनेवाले और अत्यन्त मधुरको स्मरण करता है १०७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

भगवान् के माहात्म्य का वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! फिर महाविष्णु परात्माके सब दुःख नाशकरनेवाले माहात्म्यको कहताहूं सुनिये १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालभी जे हरिजी की भक्तिमें युक्त हैं वे निस्सन्देह कृतार्थ हैं २ ब्राह्मण जो हरिजी का भक्त न हो वह चाण्डालसे अधिकहै और चाण्डालभी जो हरिजी का भक्तहो वह ब्राह्मण से अधिक जानने योग्यहै ३ वह कैसे ब्राह्मण है जो हरिजी की भक्तिसे रहित है और वह कैसे चाण्डाल है

जो भगवद्भक्ति में मन लगायेहुए हैं ४ विना बहाने के जो विष्णुजी चाण्डालसे पूजेजाते हैं तब वह चाण्डाल चारोंवेद के जाननेवाले ब्राह्मण से अधिक देखना चाहिये ५ पूर्वसमय में चक्रिक नाम शबर मनुष्यों के कर्ष करनेवाला, सुन्दरजाति और जीविका से हीन द्वापर युगमें हुआ ६ यह विप्रवादी, क्रोध जीतनेवाला, पराई हिंसासे वर्जित, दयालु, दम्भहीन, पिता और माता में परायण था ७ इसने वैष्णवलापनहीं किया और मोक्षशास्त्र भी नहीं सुना था तिसपर भी उसके चित्तमें चंचलताहीन हरिजी की भक्ति उत्पन्नहुई ८ हरे, केशव, गोविन्द, वासुदेव, जनार्दन इत्यादिक भगवान् के नामोंको नित्यही स्मरण करता था ९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह शबरवंश में उत्पन्न वन के जो फलपाता था उनको पहले अपने मुखमें देता १० और तिनकी मिठाई जानकर फिर मुखसे निकालकर भक्तिसे प्रसन्न होकर प्रतिदिन हरिजीको देता था ११ जूंठा वा नहीं जूंठा इन दोनों को वह नहीं जानता था क्योंकि अपनी जातिका स्वभाव निरन्तर मस्तक में वर्तमान रहता है १२ कदाचित् वह वनके भीतर घूमताहुआ प्रियालवृक्ष के एक फलको पाकर १३ बहुत प्रसन्नहुआ और उसको अपने मुखमें देताभया १४ जो उसने तिसफलको मुखमें दिया तो वह गले में प्रवेशकर गया तिसके फलको सुनिये १५ तबतक उसने बायें हाथ से गलेके छिद्रको बांधा और बायेंही हाथसे सब फलको यत्नसे निकालनेलगा १६ फिर हरिजीकी भक्तिमें परायण चक्रिक चिन्तना करनेलगा कि यह फल जो तिन मुरारिजीको मैं नहींदूं १७ तो मेरे समान संसारमें कोई पापी नहीं है इस भांति बहुत हरिजीको चिन्तनकर निकालनेकी बुद्धि करताभया १८ तिसपर भी उसका फल गलेसे नहीं निकला तब यह हरिजीका एकान्तभक्त कुल्हाड़ेसे गलेको काटकर १९ तिसपके फलको लेकर देव विष्णुजीको देताभया और तिन्हींको हृदयमें चिन्तनकर तिनके समीपजाताभया २० और रक्तसे सब अंगडूबकर पृथ्वी में गिरपड़ताभया तब विष्णु भगवान् तिसको प्राणरहित देखकर व्यथायुक्त होतेभये २१ कि इसके समान मेरा

कोईभक्त नहीं है जिससे कि अपना गलाकाटकर इसनेमेरा संतो-
षण कियाहै २२ जैसे इसभक्तिमान् ने निश्चय सात्त्विककर्म किया
है जिसको देकर मैं इससे ऋणहीन होता ऐसी वस्तु मेरे क्या है
२३ यह निस्सन्देह धन्य धन्य और अत्यन्त धन्य है कि इसने
प्राणोंको भी त्यागकर मेरा संतोषण किया है २४ ब्रह्मा, शिव वा
कृष्णजीकी इसको पदवी दीजावे तब भी इसभक्तसे ऋणहीन नहीं
होसक्ता हूं २५ ऐसाकहकर अत्यन्त सन्तुष्ट भगवान् गरुड़ध्वज-
जी अपने कमलरूपी हाथसे उसके मस्तकको छूते भये २६ तब
भगवान्के कमल रूपी हाथके छूनेसे वह शवर, महासत्त्व,नारायण-
जीमें परायण उठता भया २७ व्यासजी बोले कि हेब्राह्मण जैमि-
नि ! तब तो भगवान् इसश्रेष्ठ भक्तकी अपने कपड़ेसे देहकी धूलि
इस प्रकार पोंछते भये जैसे पिता पुत्रकी पोंछताहै २८ फिर मस्त-
क नवाकर हाथ जोड़कर चक्रिक मूर्तिमान् जनार्दनजी को देखकर
मधुर वाणी से स्तुति करने लगा २९ कि हे गोविन्द, केशव, हरे,
जगदीश, हे विष्णुजी ! यद्यपि आपकी स्तुतिके योग वाक्य को
नहींजानताहूं तिसपरभी मेरी जिह्वा आपके स्तुति करनेकी वाञ्छा
करती है हे स्वामिन् ! प्रसन्न हूजिये और इस बढ़ेहुए दोषको हरिये
३० हे सबके ईश्वर ! हे चक्र हाथमें धारण करनेवाले ! जे इस पृथ्वी
में आपको छोड़कर और को पूजन करते हैं वे मूर्खहैं हे दुरितप्र-
करैकधाम ! हे देव ! जिससे आपने मुझपरभी कृपा किया है ३१
हे देव ! हे भवनके एकनाथ ! यद्यपि मनुष्योंके संसारबन्धन के
नाश करनेवाली भक्तिसे देवता आपको जानते हैं मैं एकान्तपा-
प शवरके बंशमें जन्म पाकर कैसे जान सक्ताहूं तिसपरभी आप
मुझपर अत्यन्त प्रसन्न हैं ३२ हे प्रभो ! जिन विदित आप के
सुन्दर हाथरूपी कमलके स्पर्शको ब्रह्माइत्यादिक देवसमूहभी नहीं
प्राप्त होते हैं वह इससमयमें मुझको प्राप्त हुआ है इससे आपसे
कोई दयासमेत अपने सेवकों में नहीं है ३३ जिन देव भगवान्
आपने पूर्व समय में सबपाप करनेवाला निमिकापुत्र कंस राक्षस
इन्द्रादिक देवसमूहों और मनुष्योंके कल्याणके लिये मारा है तिन

परममंगल देनेवाले आपके नमस्कार हैं ३४ जिनअत्यन्त बलवान्,देवों में उत्तम, वसुदेवजीके पुत्र आपने यमलार्जुनको उखाड़ा और संग्राम में दुष्ट कालयवन और धेनुकासुरको नष्टकिया तिन नवीन मेघोंके समान रंगवाले आपके नमस्कार हैं ३५ हे श्रीकृष्ण! हे दामोदर! हे अनन्त! हे देवताओं के स्वामी! जिन भगवान् परमेश्वर आपने पूर्वसमय में अचल विभूति किया है तिन यदुवंश में श्रेष्ठ आपके नमस्कार हैं ३६ जिन आपने कल्पवृक्ष हरा अखण्डल जीता और लीलापूर्वक महादेवजीकोजीता तिन आपके नमस्कार हैं ३७ जिन आपने भीमसेन को हेतुकर जरासन्ध को गिराया बाणासुर के भुजाकाटे ३८ और शिशुपाल को मारा तिन आपके नित्यही नमस्कार हैं जिन महात्मा आपने पृथ्वी का भार दूर करदिया ३९ और मायासे क्षत्रियों को मारा तिनके नित्यही नमस्कार हैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस महात्मा चक्रिकसे स्तुति किये गये भगवान् परमप्रसन्न होकर बोले कि वरमांगो तब चक्रिक बोला कि हे परंब्रह्म! हे परंधाम! हे परमात्मन्! हे कृपामय! ४०। ४१ आपको मैं साक्षात् देखताहूं और वरोंसे क्याहै आपकीमूर्तिको ध्यान और पूजन नहींकिया ४२ नैवेद्य, सुन्दर फूल, सुन्दरधूप और दीपदान नहीं किया और कभी आपके नाम मैंने स्मरण नहीं किये ४३ हे स्वामिन्! आपके चरणों के जलको मस्तक पर नहीं धारणकिया आपकी नैवेद्य को नहीं भोजनकिया आपके व्रतको मैंने नहीं किया ४४ तिसपरभी आपको मैं देखता हूं और वरोंसे क्या करूंगा सबधर्मोंसे बाहर कियाहुआ शबरके वंशमें जन्मलियाहुआहूं ४५ तिसपर भी देवताओंसे दुर्लभ आपके चरणकमलों को इस समयमें मैंने पाया है और वरोंसे मुझको क्याहै ४६ हे लक्ष्मीके पति! तिसपरभी जो आप वरदेना चाहते हैं तो आपकी कृपासे मेराचित्त आपही में स्थित हो डूबे नहीं ४७ तब श्रीभगवान् बोले कि हे महाशय! हे सेवक! तुम्हारे वचनरूप अमृतकी वर्षासे मैंने बड़ी तुष्टि प्राप्त की है ४८ हे वत्स! जो तूने मुझको यह उत्तम कमल दिया है इससे

अत्यन्त तुष्टहूं प्रसन्न होकर भक्ति ग्रहण करता हूं ४९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ऐसाकहकर भक्तिके ग्रहण करने वाले, दयामय, भगवान् विष्णुजी तिसभक्तको लम्बी चारों भुजाओंसे आलिंगन करते भये ५० बोले कि हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! वत्स! चक्रिक! तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्न हुआहूं जो मैं देताहूं वह निश्चय शीघ्रही होताहै ५१ फिर संसारकी आत्मा और संसारके पालनकरने वाले परमेश्वरजी तिस महाभक्तको आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये ५२ तब हरिजीकी भक्तिमें परायण अत्यन्त संतुष्टचक्रिक पुत्र और स्त्री आदिकों को छोड़कर द्वारका पुरीको जाता भया ५३ वहांप्राप्त होकर आयुके अन्तमें भगवान् की कृपासे देवताओंकेभी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होजाता भया ५४ तिससे भक्तके वश भगवान् हैं भक्तिमात्रहीसे प्रसन्न होतेहैं स्तोत्र, द्रव्य, तपस्या और जपसे नहीं प्रसन्न होतेहैं ५५ यद्यपि तिसने जूंठे फल दिये तथापि विष्णुजी अचंचल भक्ति जानकर प्रसन्न होगये ५६ तिससे इस संसारमें मोक्षकी इच्छा करनेवालोंके मोक्ष देनेवाले नारायण ही देव हैं ५७ जे मनुष्य इन्द्रादिक श्रेष्ठ देवताओंसे पूज्य, वासुदेवजीके दोनों चरणकमलोंको दृढ़ भक्तिसे निश्चय पूजन करते हैं वे निश्चयही मोक्षको प्राप्त होजाते हैं ५८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेषोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

पुरुषोत्तम क्षेत्रमें भद्रतनुजी को वरका पाना वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे गुरो! व्यासजी! फिर भगवान् के माहात्म्य कहिये क्योंकि हरिजी की कथारूप अमृत को पीकर किसको तृप्ति हुईहै १ तब श्री व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तुम्हारे वरावर संसार में कोई सुकृती नहीं है जिससे केशवजीके माहात्म्य को भक्तिसे सुननेकी तुम इच्छा करतेहो २ हे उत्तम ब्राह्मण! नारायणजी की सुन्दर कथा इस प्रकार तीनोंलोकों को पवित्र करती है सुननेवाले, पूछनेहारे और कहनेवाले को पवित्र करती है ३ हे

वत्स ! लक्ष्मीपतिजी के पाप नाशनेवाले और धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलके देनेहारे माहात्म्य को संक्षेप से कहताहूं सुनिये ४ जो श्रेष्ठ भक्तिसे एक दिन भी विष्णुजी को पूजन करता है तिसके हरिजी करोड़ जन्म के कियेहुए पापों को शीघ्रही नाश करते हैं ५ वह पुण्यात्मा मनुष्य कैसे है जिसने हरिजीको आराधन नहीं कियाहै और वह पापी कैसे है जिसकी भक्ति नारायण प्रभुजी में है ६ सब पुरोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नाम पुरहै जो कि सब गुणोंसे युक्त और सब देवसमूहों के आश्रय है ७ वह सब तीर्थों में श्रेष्ठ कहाता है जिस सुन्दर पुरमें साक्षात् केशवजी बसते हैं ८ तहां पर पूर्वसमय में एक भद्रतनु नाम ब्राह्मण हुआ था यह ब्राह्मण सुन्दर, प्रियबोलनेवाला, पवित्रकुल में उत्पन्न, ९ युवावस्था में प्राप्त, कामसे मोहित था यह परलोकका भयछोड़कर वेश्याओं में निरत होताभया १० वेद और सब पुराणों को कभी नहीं पढ़ता था पाखण्डजनों के संगम से उत्तम संज्ञाको त्याग करदेताभया ११ बिना यज्ञ करनेवालों के दान का ग्रहण करनेवाला, पराई द्रव्यका चुरानेहारा, धर्म की निन्दा करनेवाला और पाप में तत्पर होताभया १२ यह अधम ब्राह्मण ब्राह्मणों के आचार तथा सत्यभावन और गुरुओं और अतिथियों के पूजन को त्याग करताभया १३ हे जैमिनि ! जो जो अत्यन्त पापकर्म हैं तिनको करताभया कभी भी अत्यन्त पुण्यकर्म को इसने नहीं किया १४ एक समय में पाप करनेवाला, लोक की लज्जा और भयसे युक्त होकर श्राद्ध की भक्तिसे हीन होकर ब्राह्मण श्राद्ध करताभया १५ और रात्रिमें वेश्याके घर जाकर उससे यह बोला कि हे सुन्दर जघनवाली ! मेरे पिता का श्राद्धदिन है १६ तिसपर भी तेरे गुणोंसे बद्धहोकर तुम्हारे स्थान को आयाहूं हे कान्ते ! सब मनुष्यों के भयदेनेवाली इस रात्रिको देखिये १७ आकाश में मेघोंके समूह व्याप्त हैं और नवीन जलसे शाहलुस होगई है ऐसी रात्रिमें भी तुम्हारे गुणोंसे मन खिंचकर मैं तेरे घर में प्राप्त हुआ हूं मेघ और बिजली के प्रतीप के अर्थके उपदेश करनेवाले काम से १८।१९ हे प्रिये !

रात्रि में मैं तुम्हारे गुणोंके ध्यान के विश्वास में प्राप्त होकर आया हूं तुम को क्षणमात्रभी न देखकर मेरे प्रीति नहीं होतीहै २० हे प-तले अंगवाली! हे कांते! निश्चय दुःख से तुम्हारे देखने के लिये मैं आयाहूं मुझको तीर्थके जलके अभिषेक से क्या प्रयोजन है २१ तुम्हारे प्रेमरूपी तीर्थके जलसे सींचाजाकर मैं स्वर्ग को प्राप्तहुआहूं परलोक के सुखदेनेवाली सेवाको आराधनकर मुझको क्या फल है २२ तुम्हारे प्रसाद से मैंने जीवतेही स्वर्गपाया है हे कान्ते! अयश के भयसे मैंने घरमें श्राद्धकर्म किया है २३ इस श्राद्धमें मुझको थोड़ी भी श्रद्धा नहीं है हे सुन्दरि! तुमहीं मेरा जप, तप और नीतिहो २४ संसार में एक तुम्हारीही सब भावसे सदैव मैं शरणमें प्राप्त हूं आज्ञा दीजिये कि क्याकरूं २५ तब सुमध्यमा बोली कि तुझपुत्रसे तेरा पिता पुत्रहीनकी नाईं हुआहै कि पिताकी श्राद्धके दिनमेंभी जो तुममैथुन करनेकी इच्छा करतेहो २६ हेदुर्बुद्धे! पिताकी श्राद्धकेदिन जो मैथुन करताहै तो तिसके पितर वीर्यके भोजन करनेवाले होतेहैं २७ और जो मूर्ख मोहसे पिताकी श्राद्धकेदिन मैथुन करता है तो वह श्राद्ध निस्सन्देह राक्षसोंके ग्रहणके योग्य होती है २८ हमसे जिसतरहसे स्नेह से कहताहै तैसेही जो विष्णुजीमें तेरा मन होता तो उस समयमें क्या नहीं पाता २९ देहधारियों का जीवन यमराजके दण्डके भीतर स्थित है रेमूर्ख! तिसपरभी तू सदैव निर्भय होकर पाप करता है ३० मूर्ख जलके बुल्लेकी नाईं क्षणमें नाश होनेवाले जीवन को किसलिये निरन्तर रहनेकी बुद्धिसे सदैव छुरित करता है ३१ जिसके माथेमें मृत्यु ये दो अक्षर लिखे होतेहैं वहकैसे सब क्लेश के देने वाले पापको करताहै ३२ आश्चर्यकी बातहै कि महाविष्णुजीकी एकमाया पृथ्वीमें बलवती है जिससे पापकरनेवाला भी निरन्तर प्रसन्न रहता है ३३ दुराश्रय अपनी देहमें पापकेलिये मुझे स्थान दीजिये बढ़े हुए अग्नि की नाईं जलताहुआ आश्रम को जलाता है ३४ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस सुन्दर वेश्याने दैवप्रेरित पापसे इसप्रकार कहा तब पाप करनेवाला ब्राह्मण मन

से चिन्तना करने लगा ३५ कि मुझमहापाप, मूढ़, पातकियों में श्रेष्ठको धिकारहै कि वेश्याके यह ज्ञानहै यहमुझ दुरात्माके नहींहै ३६ मैं ब्राह्मणके शुद्धकुलमें जन्म पाकर नित्यही आत्माके घात करनेवाले बड़े पापोंको करताहूं ३७ जब उत्पन्न होताहै तब उस की निश्चय मृत्यु होतीहै और मरनेपर स्वामी यमराजजी होते हैं तिससे अज्ञानतासे मैं कैसे पापकरताहूं ३८ जप, तप, होम, वेद कापढ़ना, ब्राह्मणोंकाआचार, अतिथिकी पूजा, गुरुकी भक्ति, ब्राह्मणोंकापूजन, ३९ पितृयज्ञआदिक कर्म, भगवान्की पूजा मैंने क्योंनहीं की जिससे उत्तम गति होती ४० तबयह ब्राह्मण महात्मा, सब धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ मार्कण्डेयजीके पृथ्वीमें दण्डवत् प्रणामकर वाणीसे स्तुति करने लगा ४१ कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! हे बहुत जीवनेवाले! नारायणकेस्वरूप,महात्मा, ४२ मृकण्डके पुत्र, सब मनुष्योंके हितकी इच्छाकरनेवाले, ज्ञानकेसमुद्र और निर्विकार आपके नमस्कारहै ४३ जब तिस ब्राह्मणसे महातपस्वी मार्कण्डेयजी इसप्रकार स्तुति कियेगये तब परमप्रसन्न सब शास्त्रोंकेअर्थके जाननेवाले मार्कण्डेयजी उससे बोले ४४ कि हे महाभाग! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं वरमांगो तुम्हारी अभिलाषको शीघ्रही सिद्धकरूंगा और कुछ न होगा ४५ तब ब्राह्मण बोला कि मैं पापियों में श्रेष्ठ,ब्राह्मणों के आचार से हीन, पराई हिंसासे युक्त,सदैव स्त्री में निरतहूं ४६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मुझमूर्खने सदैव बड़े पाप किये हैं कभी भी आदरसमेत पुण्य नहीं किया है ४७ घोर, दुःख देनेवाले, अत्यन्त भयङ्कर संसारसमुद्र में मुझ महापापीका कैसे निस्तार होगा ४८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पाप करनेवाला भी तू निश्चय पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ है जिस से संसार में दुर्लभ तुम में यह बुद्धि उत्पन्न हुई है ४९ पुण्यात्माओं की पुण्य में दृष्टि प्रतिदिन बढ़ती है और पापात्माओं की दिन दिन में पाप की दृष्टि बढ़ती है ५० पापात्मा भी तुमने पापदृष्टिनिवारण की है इससे तुम को जगन्नाथ प्रसन्न की नाईं दिखाई देंगे ५१ पाप करके भी जो मनुष्य पापसे फिर निवृत्त होजाता है ति-

सको पूर्व जन्म में भगवान् का पूजनेवाला उत्तर मनुष्य कहते हैं ५२ महाविष्णु प्रभुजी अपने भक्तको पाप में रत देखकर अधिक बुद्धि देतेहैं जैसे सद्गतिको वह प्राप्तहोवे ५३ इससे हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम प्रत्येक जन्मके भगवान्के पूजन करनेवालेहो थोड़ेहीसमयमें तुम्हारा निस्संदेह कल्याण होगा ५४ हे विप्र! जो जो तुम पूछतेहो तिसको हमसे नहीं सुनपावोगे जिससे कि इस समय में मेरी नित्यकी पूजा का समय वर्त्तमान है ५५ कोई दान्त नाम ब्राह्मण सब अर्थों के तत्त्वके जाननेवाले हैं तुम तिनके आश्रम में जावो वे तिस सबको कहेंगे ५६ तिन बुद्धिमान् मार्कण्डेयजी से उपदेश को पाकर वह ब्राह्मण शीघ्रही पवित्र, अत्यन्त सुन्दर दान्त ब्राह्मण के स्थान को जातेभये ५७ जो स्थान पीपल, चम्पा, बकुल, प्रियक तथा और भी सुन्दर फूलोंसे शोभित और अत्यन्त मनोहर, ५८ फूलेहुए फूलोंके आमोद से दिशाओं के अन्तर व्याप्त, भँवरोंके समूहों से गुंजारयुक्त, फलके शब्दों से अत्यन्त शब्दयुक्त, ५९ मन्द मन्द पवन चलनेवाला, ठण्ढेजलयुक्त, सैकड़ों पक्षियों से तथा शिष्य और उपशिष्यों से युक्त है ६० तिस अत्यन्त मनोहर आश्रम में ब्राह्मण प्रवेश कर तत्त्वके जाननेवाले शिष्यगणों से युक्त दान्तजी को देखतेभये ६१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! फिर नारायणजी की आत्मावाले दान्तजी की उत्तम ब्राह्मण स्तुति कर शिरसे तिन के चरणों की वन्दना करतेभये ६२ तब दान्तजी बोले कि हे भद्र! तुम कौनहो और यहां किस प्रयोजनके लिये आयेहो और किस हेतुसे इस समय में मेरी स्तुति करते हो यह मुझसे तत्त्वसे कहो ६३ तब भद्रतनु बोले कि हे महाभाग! मैं ब्राह्मणों के आचार से हीन ब्राह्मण भद्रतनु नाम से प्रसिद्ध सब पाप करनेवाला हूं ६४ हे ब्रह्मन्! मुझ पापी के संसार का विच्छेद कैसे होगा यह मुझसे कहिये जिससे तुमसब तत्त्वके जानने वाले हो ६५ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण! सुनो परमगुह्यको तुम्हारे स्नेहसे कहताहूं जिससे मनुष्योंके संसाररूपी पाशका छेदहोताहै ६६ पाखण्डके संसर्गको छोड़िये और सदैव सज्जनों के

संगको भजिये काम, क्रोध, मोह, लोभ, दर्प, मत्सर, ६७ असत्य, और पराई हिंसाको यत्नसे त्यागकीजिये महाविष्णु महात्माजी के नामोंको निरन्तर स्मरण करिये ६८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भगवान्के स्थानमें, बहारना, लीपना, मार्गकीशोभा और दीपदान कीजिये ६९ ब्राह्मण और जातिकी सेवा कीजिये अन्न और जलकादान और नित्यही पंच महायज्ञ करिये ७० हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! हरिजीकी कथा सुनिये द्वादशाक्षर मंत्रको जपिये इनसब कर्मोंके करतेहुए ७१ उत्तमज्ञान होगा और ज्ञानसे मोक्षको प्राप्त होगे ७२ तब ब्राह्मण बोला कि हेब्रह्मन्! जो शुभ देनेवाली तुमने कही हैं तिनका विवरण कहिये क्या मोह, दम्भ, मत्सर, ७३ असत्य, हिंसा, दया, शांति, दम, है समदृष्टि क्या कहातीहै लक्ष्मीपतिजी की पूजा क्या है ७४ दिनरात कौन कहाहै विष्णुजीका स्मरण क्याहै पंचमहायज्ञ कौनहैं और द्वादशाक्षर मंत्र कौनहै ७५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इन सबका विवरण कहिये तैसेही आपके प्रसादसे परमपदको प्राप्तहूं ७६ तब दांतबोले कि जे वेदके संमत कार्यको छोड़कर और कर्म करते हैं और अपने आचारसे जे हीन हैं ते पाखण्ड कहातेहैं ७७ जे अपने आचार के ग्रहण करनेवाले, वेदके संमत करते हैं और पापकी अभिलाषसे रहितहैं ते सज्जन कहातेहैं ७८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो सदैव स्त्रियों और द्रव्यके इकट्ठाकरने आदिमें अभिलाष वर्तमान होती है वह काम कहाता है ७९ अपनी निन्दा सुनकर जो हृदयमें ताप उत्पन्न होती है वहसब धर्मोंका नाश करनेवाला क्रोध जानना चाहिये ८० पराई द्रव्य आदिक देखकर लेनेके लिये हृदयमें जो अभिलाष उत्पन्न होती है वहलोभ कहाताहै ८१ मेरी माता मेरापिता मेरी स्त्री और घर यह और भी जो ममत्वहै वह मोह कहाताहै ८२ मैं महात्मा धनवान्हूं मेरेसमान कोई पृथ्वी में नहीं है यह जो चित्तमें उत्पन्नहोताहै इसको जाननेवाले लोग मद कहतेहैं ८३ मनुष्य सदैवमेरी निन्दा करतेहैं मेरेजीवनको धिक्कार है यह आत्मा को जो कहता है वह धिक्कार, मत्सरहै ८४ जो सब मनुष्योंके सुखदेनेवाला यथार्थ कहना है वह सत्य जानना चाहिये

इसका उलटाहोना असत्य जानने योग्य है ८५ इसके ऐश्वर्य और स्त्री पुत्रआदिक कबनाशको प्राप्तहोंगे यहजो चित्तमें उत्पन्न होती है वह हिंसाकहातीहै ८६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! यत्नसेभीजो पराये क्लेश के हरनेकी इच्छारूपी पृथ्वी हृदयमें उत्पन्न होती है वह दयाकहातीहै ८७ जो चित्तमें तुष्टि उत्पन्न होतीहै वहशांति पण्डितों करके कही जातीहै जो निन्दित कर्मसे अलग चित्तका निवारण होता है ८८ वह तत्त्वदर्शी बुद्धिमानों के संमत दम कहाताहै हे विप्रेन्द्र! दुःख सुख तथा शत्रु और मित्रमें जो तुष्टि सदैव वर्तमान होतीहै वह समदृष्टि कहाती है जो पुरुष श्रद्धासे नैवेद्य, चन्दन और फूल आदिकों से भगवान् का ८९। ९० पूजन करता है वह पूजा कहाती है दोपहर और रात्रिमें जो लंघन होताहै ९१ वह पहले और पीछे के दिनका भोजन अहोरात्र जानना चाहिये हे अत्यन्त श्रेष्ठ! जो अपना और भगवान् इन दोनों का ९२ एकीकरण होता है वह विष्णुजी का स्मरण कहाता है ब्रह्मयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, देवयज्ञ, ९३ पितृयज्ञ और भूतयज्ञ ये पांच यज्ञ कहाते हैं ओंनमोभगवते वासुदेवाय ९४ इसको तत्त्वके जाननेवाले द्वादशाक्षर महामंत्र कहते हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब तुम्हारा पूंछा हुआ तुमसे कहा ९५ जिसको जानकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञानको प्राप्त होते हैं तिस से हे विप्र! प्रतिदिन हरिजीके एकसौ आठ नामोंको पढ़कर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होगे तब भद्रतनु बोले कि लक्ष्मीके पति विष्णुजीके एकसौ आठ नामोंको कहिये ९६। ९७ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण! विष्णु परात्माजी के सहस्रनामसे एकसौ आठ नाम सारांश रूप खींचकर कहताहूं सुनिये ९८ एकसौ आठ नाम महापापों के नाश करनेवालेहैं जैसा ध्यानहै वैसे ध्यानकर पढ़ने चाहिये अब मैं ध्यान कहताहूं सुनिये ९९ अलसीके फूलके आकार, फूले कमल के समान नेत्रवाले, गौवोंके चरणोंकी धूलियोंसे सब शरीर भूषित, १०० गऊकी पूंछके बालकी फँसरीसे शोभित, उत्तम मस्तकवाले, बांसुरीके शब्दसे परिन्यस्त सुन्दर ओष्ठ पुटवाले, प्रभु, १०१ गौवों की शालमें बसनेवाले, स्नेहयुक्त बालकोंसे युक्त, पीताम्बरधारे, काम-

देव के समान उत्तम कृष्णजी के मुखको ध्यानकर १०२ ओंनमोऽस्य कृष्णाष्टोत्तरशतनाम्नांवेदव्यासऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीकृष्णप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः १०३ इस मन्त्रको पढ़कर विनियोग छोड़े फिर कृष्ण, केशव, केशिशत्रु, सनातन, कंसारि, धेनुकारि, शिशुपालरिपु, प्रभुजीको नमस्कार करै १०४ देवकीनन्दन, शौरि, पुण्डरीकनिभेक्षण, दामोदर, जगन्नाथ, जगत्कर्ता, जगन्मय, १०५ नारायण, बलिध्वंसी, वामन, अदितिनन्दन, विष्णु, यदुकुलश्रेष्ठ, वासुदेव, वसुप्रद, १०६ अनन्त, कैटभारि, मल्लजित्, नरकान्तक, अच्युत, श्रीधर, श्रीमान्, श्रीपति, पुरुषोत्तम, १०७ गोविन्द, वनमाली, हृषीकेश, अखिलार्तिहा, नृसिंह, दैत्यशत्रु, मत्स्यदेव, जगन्मय, १०८ भूमिधारी, महाकूर्म, वराह, पृथिवीपति, वैकुण्ठ, पीतवासाः, चक्रपाणि, गदाधर, १०९ शङ्खभृत, पद्मपाणि, नन्दकी, गरुडध्वज, चतुर्भुज, महासत्व, महाबुद्धि, महाभुज, ११० महोत्सव, महातेजा, महाबाहुप्रिय, प्रभु, विष्वक्सेन, शार्ङ्गि, पद्मनाभ, जनार्दन, १११ तुलसीवल्लभ, अपार, परेश, परमेश्वर, परमक्लेशहारी, परत्रसुखद, पर, ११२ हृदयस्थ, अंबरस्थ, मोहद, मोहनाशन, समस्तपातकध्वंसी, महाबलबलान्तक, ११३ रुक्मिणीरमण, रुक्मिप्रतिज्ञाखण्डन, महान्, दामबद्ध, क्लेशहारी, गोवर्द्धनधर, हरि, ११४ पूतनारि, मुष्टिकारि, यमलार्जुनभंजन, उपेन्द्र, विश्वमूर्ति, व्योमपाद, सनातन, ११५ परमात्मा, परब्रह्म, प्रणतार्तिविनाशन, त्रिविक्रम, महामाय, योगवित्, विष्टरश्रवाः ११६ श्रीनिधि, श्रीनिवास, यज्ञभोक्ता, सुखप्रद, यज्ञेश्वर, रावणारि, प्रलम्बघ्न, अक्षय, अव्यय, ११७ हजार नामोंके ये एकसौ आठ नाम विष्णुजीकी प्रीतिकरनेवाले, सब पापोंके नाश करनेहारे ११८ दुःस्वप्न, ग्रहपीड़ा और सब रोग नाश करनेवाले, परमऐश्वर्य देनेहारे ११९ सब उपद्रव नाश करनेहारे और सब कर्म्मफलके देनेवाले हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वैष्णवोंकी प्रीतिके हेतु मैंने कहा है १२० जो भक्तिसे भगवान्के आगे एकसौआठ नामोंको तीनों संध्याओं में नित्यपढ़ताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं १२१जो

भक्तियुक्त वैष्णव मनुष्य इसको श्राद्धमें पढ़ताहै तो उसके पितरसं-
तुष्टहोकर परमपदको जाते हैं १२२ यज्ञसमय,देवताके आराधन,
दानसमय और यात्रामें जो पढ़ता है तो वहभी तिसी फलको
प्राप्त होता है १२३ इस स्तोत्रके पढ़नेसे पुत्रहीन पुत्रको, धनकी
इच्छा करनेवाला धनको और विद्यार्थी विद्याको प्राप्तहोताहै १२४
जे भगवान्के एकसौआठ नामोंको भक्तिसे पढ़तेहैं तिनका पृथ्वीमें
कभी अशुभ नहीं होताहै १२५ दान्तजी कहते हैं कि हे ब्राह्मण!
जावो तुम्हारा कल्याणहो मेरी कहीहुई विधिसे भक्तिसे हरिजीको
आराधनकर परम कल्याण को प्राप्तहोगे १२६ इसप्रकार तिन
दान्त परमार्थीसे बोधयुक्त होकर ब्राह्मण तिसी पुण्यकारी क्षेत्रोंमें
श्रेष्ठ क्षेत्रमें हरिजीकी पूजामें पर होतेभये १२७ हे जैमिनि! यह
ब्राह्मण नित्यही भक्तिसे दांतजीकी कहीहुई विधिसे पांच दिन भ-
गवान्का पूजन करतेभये १२८ तिस ब्राह्मणकी अत्यन्त दृढ़भक्ति
जानकर करुणामय हरिजी किरणोंयुक्त करोड़ सूर्यकी नाईं सहसा
से प्रकट होजातेभये १२९ तिन संसारके स्वामी, लक्ष्मीके प्रिय
भगवान्को देखकर ब्राह्मण तिनके दोनों चरणकमलों में शिरसे
वन्दना करताभया १३० तदनन्तर यह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्दसे
निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर लक्ष्मीपति जगन्नाथजीकी स्तुति
करताभया १३१ हे हरे! मेरी पापमें प्राप्तदृष्टिथी परन्तु आपने
कृपायुक्त शुभदेनेवाली अपनी भक्ति देकर अधिक पाप करनेवाले
गांवके आदमी मुझको इस समयमें पुरुषकी नाईं करदियाहै १३२
हे परमेश्वर! देवताओंसे वन्दित दोनों चरणवाले आपके अप्रसन्न
होने में निश्चय मनुष्यकी दृष्टि पापको प्राप्त होतीहै और आपके
प्रसन्नहोनेमें सोई दृष्टि सुकृतको प्राप्त होती है इसको केवल मैंनेही
जानाहै १३३ हे नाथ! आपसे आपके स्मरणप्रभाव को कहताहूं
जिससे सब इकट्ठा किये हुए पापवाला भी श्रेष्ठ स्थानको देवता-
ओं के मिलनेवाले शुद्ध सुवर्ण जड़ेहुए विमान पर चढ़कर जाऊं-
गा १३४ आपके चरणकमल को सदैव गुणाढ्य, कनिक सबपाप
करनेवाला वहेलिया जानताहै हे संसार के एक नाथ! आपके

मन्दिर के बहारने के फल को देवताओं में वान्दित यज्ञध्वजराजा जानताहै १३५ हे मुरदैत्य के वैरी! हे गरुड़ध्वज! संसारके रचने, पालने और प्रलय करने के कारण ईश्वर आपके मन्दिर के लीपने के फलको तिसका भाई सुमाली किये हुए पापसे भययुक्त होकर जानताहै १३६ हरि आपकी प्रदक्षिणा कर जो फल होताहै तिसको धर्मही जानताहै और कोई तीनों लोक में नहीं जानता है १३७ हे नाथ! आपके चित्तकी दया कहने को पृथ्वी में कौन समर्थ है क्योंकि वाणों से आपको बेधकर भी व्याध परमपद को प्राप्त हुआहै १३८ हे संसार के नाथ देवताओंके ईश्वर! आपकी निन्दाकर भी शिशुपाल मोक्षको प्राप्तहुआहै तो आपके भक्तकी क्या कथाहै १३९ हे महाविष्णुजी! जिनआपने ब्रह्मरूपसे इससंसारको रचाहै तिस आपमें मेरा मनरमे १४० हे विष्णुजी! इस रुद्ररूप से आपने सब संसार नाश किया है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४१ जिससे अत्यन्त छोटा नहीं है और जिससे अत्यन्तबड़ा भी नहींहै और जिन आपसे सब संसार व्याप्तहै तिन आपको नमस्कारहै १४२ जिन देव केनेत्रों से दिवाकर सूर्य्य और मुख से अग्नि उत्पन्न है तिन आपके नमस्कार है १४३ हे देवताओं में श्रेष्ठ! हे केशवजी! जिन के कानसे वायु प्राण उत्पन्न हुएहैं तिन आपको मेरा सदैव नमस्कारहै १४४ जिन श्याम अंगवाले आपके कोड़े में लक्ष्मीजी इसप्रकार रहतीहैं जैसे मेघों में बिजली रहतीहै तिन आपके नमस्कारहै १४५ ब्रह्मादिक देवताभी जिनकी महिमा के पारको नहीं जा सक्तेहैं तिस आपके नमस्कार है १४६ धर्मों के स्थापन और पापियों के नाश करनेके लिये युग युग में जो होता है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४७ जिन महात्माने मायासे यह संसार मोहित कियाहै और जो शम्भुजी माया से नाशकरते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १४८ जो भक्तिमात्रही से प्रसन्न होते हैं धन, स्तोत्र, दान और तपस्या से नहीं प्रसन्न होते हैं तिन आपको मेरा नमस्कारहै १४९ जो गऊ, ब्राह्मण और साधुओं का कल्याण और दया करते हैं तिनआप को मेरा नमस्कारहै १५० जो

देव अनाथबन्धु, योगी और दुःखियों के दुःख को हरतेहैं तिनआप को मेरा नमस्कार है १५१ जो मनुष्य देवता और सब हाथियों में समभाव से वर्तते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १५२ जिनके प्रसन्न होने में पर्वत भी शीघ्रही तृण के समान होजाता है और अप्रसन्न होने में तृण पर्वत के तुल्य होजाता है तिन आपको मेरा नमस्कार है १५३ पुण्य करनेवालों की पुण्यमें, पिताकी जैसे अपने पुत्रमें और पतिव्रता स्त्रियोंकी जैसे पतिमें प्रीति होतीहै तैसे आपमें मेरी निश्चय होवे १५४ युवा पुरुषोंका चित्त जैसे स्त्रियोंमें, लोभियों का जैसे धनमें और भूखवालों की जैसे अन्न में प्रीति होतीहै तैसे आपमें निश्चय मेरीहोवे १५५ घाम से पीड़ितों की जैसे चन्द्रमामें, शीतसे पीड़ितों की सूर्यमें और प्यास से व्याकुलों की जैसे जलमें प्रीति होतीहै तैसे आप में मेरी निश्चय होवे १५६ जो बुद्धिहीन मैंने गुरुकी स्त्रीमें गमन कियाहै वह पाप आपके देखनेवाले मेरे नाशको प्राप्तहो १५७ माया से मोहयुक्त जो मैंने नहीं मारनेके योग्यों को माराहै वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १५८ हे परमेश्वर ! जो मैंने नहीं पीनेके योग्य का पान कियाहै वह पाप मेरा आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १५९ जलोंमें, योनिमें तथा तोयमें जो वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशको प्राप्तहो १६० जो गर्भहत्या की है और पृथ्वी में वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशहो १६१ विनाजाने मायासे जो मैंने विश्वासघात कियाहै वह पाप मेरा आप के दर्शन करनेवालेका नाशहो १६२ जो मैंने क्षण क्षण में झूठे वचन कहेहैं वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६३ जो सज्जनों की निन्दा और सदैव पराई हिंसा मैंने की है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६४ जो श्लेष्मा और कफ मुखमें मैंने कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १६५ वनस्पति के सोम में प्राप्त होनेमें जो मैंने वृक्ष नाश करदिया है वह पाप मुझ आपके देखने वाले का नाशहो १६६ राह, देवताके स्थान और गोशालामें जो

मैंने मूलमंत्र किया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाशहो १६७ हे केशवजी! जो पिता और माताकी मैंने नहीं भक्ति कीहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १६८ स्नान और भोजनके लिये जातेहुएको जो मैंने निषेधकियाहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १६९ हे देवताओंमें श्रेष्ठ! एकादशी में जो मैंने भोजन कियाहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७० हे प्रभो! घरमें आयेहुए अतिथिको मैंने नहीं पूजाहै वहपाप मुझ आपके देखनेवालेका नष्टहो १७१ द्वादशी और दशमीमें जो दोबार भोजन कियाहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवाले कानाशहो १७२ पानी पीनेकेलिये दौड़तीहुई गौवोंको जो मैंने निवारण किया है वहपाप मुझआपके देखनेवालेका नाशहो १७३ जो मैंने व्रतआरम्भ कर छोड़दियाहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७४ मित्रोंकी वात्सल्यतासे जो मैंने झूंठीगवाही दीहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७५ अपनी स्त्रीमें ऋतुकालमें जो गमन मैंने नहीं कियाहै वह पापमुझ आपके देखनेवालेका नाशहो १७६ विना संस्कार कियेहुये घरमें जो मैंने भोजन किया है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १७७ हे नृसिंहजी! जो मैंने गांवमें मांगनेकी जीविका कीहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७८ हे प्रभुजी! राजाके दण्ड देने में जो मैंने प्रभुताकी है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७९ पुराण वांचनेवालेकी कथामें जो मैंने विघ्न कियाहै वह पाप मुझ आपके देखनेवालेका नाशहो १८० आदरसे जो मैंने पराये पापकी कथा सुनी है वह पाप मुझ आपके देखनेवालेका नाशहो १८१ पीपल और आंवलेके वृक्षको जो मैंने काटाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८२ दही दूध और घी को जो मैंने वेंचाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८३ जो दूसरोंको आशादेकर मैंने निष्फल कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८४ ब्राह्मणों और याचकोंको मैंने क्रोपदृष्टिसे देखाहै वह पाप मुझ आपके

दर्शन करनेवालेका नाशहो १८५ जीवनके उपाय देनेवालोंको जो मैंने क्रोधसे निर्भर्त्सित कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करने वाले का नष्टहो १८६ यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै बहुत जन्मके इकट्ठे कियेहुए पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले के नष्टहों १८७ हे संसारके पति! मैं निस्सन्देह कृतार्थहूं आपके नमस्कारहैं १८८ हे जैमिनि! ऐसा कहकर पुलकावली से युक्त देह होकर ब्राह्मण विष्णुजी के पवित्र दोनों चरणकमलोंमें गिरता भया १८९ तब भगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! उठो उठो तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्नहूं आपको क्या अभिलाष है सो कहिये तिसको मैं निश्चय दूंगा १९० तब भद्रतनु बोले कि हे परमेश्वर! हे गोविन्द! हे दयालो! हे परमाच्युत! जो इससमयमें मुझको प्राप्तहै वहपृथ्वीमें किसको मिलताहै १९१ हेमुरारे! हेप्रभो! तिसपरभी एक वर मैं आपके पास मांगताहूं कि जन्मजन्ममें मेरीभक्ति आपमें अत्यन्त दृढ़होवे १९२ मेरेकियेहुए इस स्तोत्रको जो मनुष्य भक्तिसे पढ़ता है तिसकी सब अभिलाषितको प्रसन्नहोकर आपदेवेंगे १९३ तब श्री भगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! हे बुद्धिमान्! यहवर तुमको मैंने दिया इसमें कोई सन्देह नहींहै किन्तु तेरेसाथ मित्रता करनेकी मेरेइच्छाहै १९४ हे ब्राह्मण! तुममेरी सेवा करनेके योग्य नहींहो इससे इससमयमें मैं तुमसे मित्रता करताहूं १९५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तब दयालु, भक्तवत्सल, नारायणदेव तिस पुण्यात्माके साथ मित्रता करतेभये १९६ और आनन्दसे हरिजी तिसको अपने कण्ठ की मालादेतेभये तब ब्राह्मणभी हरिजीको तुलसीकी माला भक्ति से देताभया १९७ फिर हरिजी चारोंभुजाओंको फैलाकर तिसको आलिंगन करतेभये तब वहब्राह्मण भी आनन्दसे विष्णुजीको आलिंगन करताभया १९८ इसप्रकार भक्तिके ग्रहण करनेवाले, दयालुहरिजी तिसश्रेष्ठ ब्राह्मणसे मित्रताकर तहांहीं अन्तर्द्धान हो गये १९९ तदनन्तर तहां पुरुषोत्तमक्षेत्रमें भगवान् तिनश्रेष्ठ ब्राह्मणसे प्रतिदिन गेंद खेलनेको प्रारंभ करतेभये २०० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! करुणामय हरिजी कदाचित् दुर्बल ब्राह्मणको देखकर

मित्रकी वात्सल्यतासे उससे बोले २०१ कि हे मित्र! कैसे तुमदुर्बल हो किसने तुम्हारा धन हरलियाहै हृदयमें क्या चिन्ता वर्तमान है यह सब कहनेको योग्यहो २०२ तब भद्रतनु बोले कि हे संसारके नाथ! हे प्रभुजी! तुम्हारी प्रीतिके लिये नित्यही मैं तपस्या करताहूं तिसीसे मेरी देह दुर्बलताको प्राप्त है २०३ तब श्रीभगवान् बोले कि हे मित्र! हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! जैसे तुममें मैं प्रसन्नहूं तैसा किसी में नहीं प्रसन्नहूं फिर किसलिये देहको क्लेशदेतेहो २०४ तुमको दुर्बल देखकर मेरे हृदयमें व्यथा उत्पन्न होतीहै इससे सब देहके क्लेशको त्याग कीजिये २०५ फिर भगवान् अपने उत्तरीय कपड़े, गहने, सुन्दर सोनेकी कलियों और अपने हस्तके प्रकाशित कङ्कणों से ब्राह्मणको भूषित करते भये २०६ और अपने मस्तकसे मुकुट, पांवसे पांवके अंगदके जोड़ों और अपने गले से सोनेके हारको भी श्रेष्ठ ब्राह्मणको कृष्णाजी देतेभये २०७ तिन श्रीहरिजीके दिये हुए गहनों से विभूषित, सुकृती, गेंदके खेलका जानने वाला ब्राह्मण सदैव नीलकमलके समान सुन्दर कृष्णाजी से क्रीड़ा करता भया २०८ तिस गहनों से भूषित अंगवाले, पानके रागसे रुचिर दोनों ओष्ठवाले, सुन्दर कपड़े और पवित्र उत्तरीय वस्त्र धारेहुए, सुन्दर मुखवाले ब्राह्मणको एक समयमें दान्तजी देखतेभये २०९ और उससे बोले कि हे भद्र! हे भद्रतनु! इस समयमें भी तू पापदृष्टिको नहीं छोड़ताहै सब जनोंसे निन्दित तुम्हारे कार्य को देख कर २१० जिससे मैंने तुमको शिष्य किया और सब भूषणहीरूप कर दियाहै पांच प्रकारके शिष्य बुरे होते हैं अहंकारयुक्त, दुश्शील, निर्दयी, पापमें तत्पर २११ और गुरुके यशके नाश करनेवाले ये पांचों हुए और अभक्त, बहुत भाषण करने वाला, चंचलमन वाला, २१२ परोक्षमें गुरुकी निन्दा करनेवाला ये शिष्य अधम हैं उत्तम चरित्र जानकर चतुर मनुष्यों करके शिष्य करना चाहिये २१३ जिससे दुर्जनमें प्राप्तविद्या गुरुओंको भी दुःख देने वाली होती है और तिन तत्त्वदर्शियों से कही हुई विद्या यश देने वाली होती हैं २१४ और वेही दुर्जनमें प्राप्त होवें तो शीघ्रही गुरु-

जी के यशरूप वृक्षको नाश करदेती हैं पापोंसे कभी पुण्यकर्म नहीं शोभित होतेहैं २१५ जैसे मक्खियोंसे सुगन्धि चन्दन नहीं शोभित होता जैसे गदहे मिष्टान्नपान से नहीं तृप्त होते हैं २१६ जैसे धर्मकी चिन्तासे दुर्जन नहीं तृप्त होतेहैं और अयशके डरसे लक्ष्मी और सब कामना देनेवाला धर्म २१७ ये कभी दुष्टको नहीं सेवन करते हैं और जो सेवतेहैं तो नाश होजातेहैं प्रत्येक जन्ममें श्रेष्ठविद्या भाग्य से मिलती है २१८ कभी मिली तो उस समयमें विधि ठीक नहीं होतीहै २१९ तब भद्रतनु बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! आप सत्य कहते हैं मैं शास्त्र में निपुण नहीं हूं मुझ शिष्यसे कहीं भी आपका अयश न होगा २२० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! आपके प्रसादसे मेरा सब अभिलाष सिद्ध होगया जिससे आप एक पृथ्वी में दुर्लभ हैं २२१ तब दान्तजी बोले कि हे ब्राह्मण ! क्या तुम्हारा अभिलाष सिद्धि को प्राप्त होगया है सो कहिये थोड़ेही कालमें तपोंका कैसे उद्यापन किया है २२२ तब भद्रतनु बोले कि हे गुरो ! थोड़ेही परिश्रमों से मैंने हरिजी के दर्शन पायेहैं जिनकी आज्ञासे मैंने नित्यक्रिया आदिक छोड़ दीहै २२३ और अपना उत्तरीय कपड़ा, सोनेके दो कलश, अपने हाथका कंकण और अपने मस्तक का मुकुट २२४ अपने पांवकी तुला कोटि और अपनाही मोतियों का माला भगवान् विष्णुजीने प्रसन्न होकर मुझे दियाहै २२५ और सेवकों के दुःख नाशनेवाले विष्णुजी मेरेसंग मित्रता कियेहैं मैं तिनके साथ निरन्तर गेंदखेलताहूं २२६ येवचन मैंने आपकी प्रतीतिसे आपके समीपकहेहैं २२७ तब दान्तजी बोले कि सातहजार वर्ष मैंने श्रेष्ठभक्तिसे विभु विष्णुजीको आराधन कियाहै परन्तु उन्होंने दर्शन नहीं दियाहै २२८ आश्चर्यकी बातहै कि पांचदिन तुमने विष्णुजी को आराधन कर देवताओं के दुर्लभ दर्शनको पाया है २२९ इससे तुम धन्य और कृतार्थहो साक्षात् देव तुम्हीं कहाते हो जिससे स्वामीजी ने प्रेमसे तुमसे मित्रता कीहै २३० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो मुझमें तुम्हारा स्नेहहो तो मुझसे कहिये कि दुर्लभ विष्णुजी के दर्शन मुझे कैसेहों-

गे २३१ व्यासजी बोले कि इस प्रकार गुरुजी ने जब कहा तो बुद्धिमान्, भगवान्की भक्तिमें परायण ब्राह्मण वनमें अपने आश्रमको चलागया २३२ तदनन्तर दूसरे दिनमें इसने जाकर भगवान्के साथ गेंदखेला और नम्रतायुक्त होकर दयालु जगन्नाथजीसे कहा २३३ कि हे देवोंमें श्रेष्ठ! हे दयालो! हे लक्ष्मी के पति! मेरे गुरुजी भी आपके दर्शनों की इच्छा करते हैं इसमें आपकी क्या आज्ञाहै सो कहिये २३४ हे कमलके समान नेत्रवाले! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! वे ब्राह्मण आपके एकान्त भक्त हैं इससे आप तिनके दर्शन देनेके योग्यहैं २३५ तब श्री भगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! अनेक जन्ममें तुमने श्रेष्ठ भक्तिसे मेरा पूजन कियाहै इससे मैंने इस समयमें तुमको दर्शन दियाहै २३६ वह बुद्धिमान् ब्राह्मण! कुछदिनों के पीछे मेरीपूजा कर देवताओं से भी नहीं देखने योग्य मुझको देखेगा २३७ हे ब्राह्मण! मेरा वहभी महाभक्त और मेरी पूजामें परायणहै तिससे कभी मेरे दर्शनको प्राप्तहोगा २३८ व्यासजी बोले कि ये भगवान् के वचन सुनकर ब्राह्मण क्लेश नाशनेवाले, लक्ष्मी के पति केशवजी से भक्तिसे फिर बोला २३९ कि हे देवों के स्वामी! हे भक्तवत्सल! हे संसार के स्वामी! जो मुझ में आपकी दया है तो मेरे सम्मुखही दर्शन दीजिये २४० हे देव! हे प्रभो! मेरे गुरुजी आप के दर्शनरूपी दक्षिणा को मांगते हैं इससे उनको दर्शन देकर मेरी रक्षा कीजिये २४१ तब श्रीभगवान् बोले कि निश्चय जो तुमने मेरे दर्शनरूप दक्षिणा उनको दी है तो अपने गुरुजी को लाकर मेरे दर्शन कराइये २४२ इस प्रकार भगवान्की आज्ञा पाकर भद्रतनु प्रीतिसे अपने गुरुजी के आश्रम जाकर उनको लातेभये २४३ तिन देनेवालोंमें श्रेष्ठ दान्तजी के आनेपर भगवान् सब लक्षणसंयुक्त आत्माको दिखलाते भये २४४ तब हरिजी की भक्ति करनेवाला ब्राह्मण नेत्रोंमें आंशूयुक्त होकर भगवान्को देखकर हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करता भया २४५ कि हे दयालो! हे लक्ष्मीकेपति! हे शरणागतके पालन करनेवाले! आपके नमस्कारहैं २४६ इस समय में जन्म, तपस्या

और सब मेरा सफलहै जोकि आपके दर्शन मैंने पाये हैं २४७ हे लक्ष्मीकेपति ! हे प्रभो ! पूर्व में जो जो वचन आलोचितहैं वे करोड़ समुद्रके समान गम्भीर आपके आगे प्रसृतहैं २४८ संसार में वह स्तोत्र नहीं है जिससे वाणी और संसार के स्वामी आपके चित्त में प्रीति उत्पन्न कराऊं २४९ हे प्रभो ! हे संसार के पति ! मेरी रक्षा कीजिये और प्रसन्न हूजिये अपने दासों के दासोंके दासोंके दासभावमें मुझको स्वीकार कीजिये २५० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब देवों के स्वामी, भक्तिग्रहण करनेवाले, दयालु भगवान् हँसकर तिसके मस्तकमें कमलरूपी हाथ देकर उससे बोले २५१ कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम मेरे भक्तहो मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे मेरे प्रसादसे तुम्हारा सब कल्याण होगा २५२ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण ! तब दान्त और भद्रतनुको प्रेमसे परमेश्वरजी आलिंगन कर सहसा से तहांहीं अन्तर्द्धान होगये २५३ फिर दान्तजी तिस पुण्यकारी, दुर्लभ, पुरुषोत्तम श्रेष्ठ क्षेत्रमें क्रियायोगों से भगवान् को देखकर श्रेष्ठ धामको प्राप्तहोतेभये २५४ और भगवान्की भक्ति में परायण भद्रतनु ब्राह्मण भी उमरके अन्त में देवताओंके भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताभया २५५ जो मनुष्य भक्तिसे एकदिन भी परमेश्वरको पूजताहै उसके बहुत जन्मके पाप नाश होजाते हैं और भगवान्में प्रीति बढ़ती है २५६ हे जैमिनि ! पृथ्वी में अब भी ब्रह्मादिक सब देवता भगवान् के भक्त के प्रभाव को नहीं जानते हैं २५७ हे ब्राह्मण ! यह कर्मभूमि स्वर्गसे भी दुर्लभहै जहांपर मनुष्य विष्णुजी को पूजनकर देवताओं से वन्दना कियेजाते हैं २५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इन्द्रादिक सब देवता अच्छी पुण्यके नाशसे डरकर निरन्तर परस्पर यह कहते हैं २५९ कि हमलोग फिर कर्मभूमि में कब जावेंगे और कब वहां भगवान् की पूजा करेंगे २६० ये मनुष्य अत्यन्त धन्य और हमसे भी श्रेष्ठहैं जे दुर्लभ भारतवर्ष में हरि प्रभुजी को पूजन करते हैं २६१ भारतवर्ष के गुण कहने में कौन समर्थ है जहांपर पूर्व्वसमय में हमलोग भगवान् को आराधन कर देवता हुएहैं २६२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इस प्रकार इन्द्रादिक सब दे-

वता शुभ देनेवाली भारत की पृथ्वी के भाग की नित्यही प्रशंसा करते हैं २६३ तहांपर जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन न किया तो उसके बराबर संसारमें कोई देखा और सुना नहीं गया है २६४ मैं सत्यही सत्य कहताहूं जे मनुष्य अश्रान्त, विश्वात्मा भगवान् को कर्म्मभूमि में दृढ़भक्तिसे एकबार भी पूजन करते हैं वे सुन्दर हाथों से किये हुए पापों से शीघ्र छूट कर मोक्ष को प्राप्त होते हैं २६५। २६६॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपुरुषोत्तमक्षेत्रेभद्रतनुवर-प्रदानंनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

पुरुषोत्तमतीर्थका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो! जो आपने तीर्थों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम तीर्थको कहा तो यदि मेरे ऊपर आपकी दयाहो तो उसके माहात्म्यको भी कहिये १ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! पुरुषोत्तम तीर्थके माहात्म्यको संक्षेपसे सुनिये इस संसारमें अच्छे प्रकार कहने में विष्णुजी के विना और कोई समर्थ नहीं है २ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! लवण समुद्रके किनारे स्वर्गसे भी दुर्लभ पुरुषोत्तम नाम पुरहै ३ जिससे तिसपुरमें श्रीपुरुषोत्तम भगवान् आपही रहते हैं इससे जाननेवालों ने तिसके नामको पुरुषोत्तम कहा है ४ यह दुर्लभक्षेत्र चारोंओर चालीसकोसहै यहांके रहनेवाले देहधारी पुरुष देवताओं से चारभुजाके दिखलाई पड़ते हैं ५ तिस क्षेत्रमें प्रवेशकर सब विष्णुजीकी मूर्ति होजाते हैं तिससे चतुरों करके तहांपर कुछ विचारणा न करनी चाहिये ६ तहांपर चाण्डालका भी छुआ अन्न ब्राह्मणों के ग्रहण करने के योग्य होताहै जिससे वहांपर चाण्डालभी साक्षात् विष्णुही है ७ तहांपर अन्नके पकानेवाली लक्ष्मीजी हैं और आपही भगवान् भोजन करनेवाले हैं तिससे हे ब्राह्मण! तहांका भात देवताओंको भी दुर्लभहै ८ जे भगवान् के भोजन से बचेहुए, पृथ्वीमें दुर्लभ, पवित्र अन्नको भोजन करते हैं उनकी मुक्ति

दुर्लभनहीं है ९ ब्रह्मा आदिक सब देवता तिस अत्यन्त दुर्लभ अन्न को नित्यही आकर भोजन करतेहैं मनुष्योंकी तो कथाही क्याहै १० जिसका अत्यन्त दुर्लभ अन्न में चित्त नहीं रमता है तिसको सब महर्षि विष्णुजी का वैरी कहते हैं ११ हे ब्राह्मण! जैसे पृथ्वी में सबजगह गङ्गाजल पवित्रहै तैसेही सबजगह पाप नाश करनेवाला अन्न पवित्र है १२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वह अन्न कोमल और यद्यपि सुन्दरहै कृकचके उदरप्रायहै तथापि पाप नाश करनेवाला है १३ जिसके पहले के इकट्ठे कियेहुए पाप नाशको प्राप्त होते हैं तिसकी दुर्लभ अन्नमें भक्ति वर्तमान होती है १४ और जिसका बहुत जन्म का इकट्ठा कियाहुआ पुण्य नाशको प्राप्तहोताहै तिसकी तिस अन्न में भक्तिनहीं उत्पन्न होती है १५ इन्द्रद्युम्नतालाब, मार्कण्डेयकुण्ड, रोहिणी, समुद्र और श्वेत गङ्गाजलों में १६ जे मनुष्य भक्तिभाव से युक्त होकर स्नान करते हैं तिनका फिर इस पृथ्वी में जन्मनहीं होता है १७ हे ब्राह्मण! लवण समुद्र के जलोंसे तर्पण कियेहुए पितृ सब दुःखों से छूटकर भगवान् के मन्दिरको जाते हैं १८ तिस से तत्त्वदर्शियों ने इस समुद्र को तीर्थराज कहा है तिससे तहां कियाहुआ सब कर्म्म नाशरहित होता है १९ तिस मनोरमक्षेत्रमें पितरोंका पूजन, दान, भगवान् के चरणोंका पूजन, जप, यज्ञ तथा और भी २० जो कर्म मनुष्य विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये कर-ताहै वह सब निस्सन्देह नाशरहित होता है २१ बलभद्र, सुभद्रा और कमलनयन कृष्णजी के जे मनुष्य दर्शन करते हैं तिनको कुछ दुर्लभ नहीं है २२ श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा और बलदेवजी के विना दर्शन किये मनुष्य सैकड़ों पुण्य करने से भी मोक्षको नहीं प्राप्त होता है २३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहां बेंतकी चोट से जिसका शरीर लाल होताहै तिसकी इन्द्रआदिक सब देवता वन्दना करतेहैं २४ हे ब्राह्मण! आकाश में इन्द्र आदिक सब देवसमूह स्थित हो-कर विमानपर चढ़कर प्रसन्न होकर परस्पर यह कहते हैं २५ कि भगवान् हम लोगों को कब मनुष्यदेह देवेंगे तब हम सब मनुष्य की नाईं हरि प्रभुजी के देखने को जावेंगे २६ कब बेंतकी चोट से

श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्रमें हमलोगों के शरीर लाल होंगे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तिसवरके देनेवाले क्षेत्रमें इन्द्रआदिक सब देवता सदैव बेंत की चोटोंकी वांछा करतेहैं २८ तहांपर जे मनुष्य भक्तिसे अक्षयवट को देखते हैं ते करोड़जन्मों के इकट्ठे कियेहुये पापोंसे छूटकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होतेहैं २९ सुभद्रा, बलभद्र और रोगरहित जगन्नाथ जी, श्वेत देवोंके स्वामी माधवजी, मार्कण्डेयकुण्ड, ३० ज्यामेश्वर, हनुमान् और अक्षयवटको जे मनुष्य भक्तिसे देखतेहैं तिनकी शाश्वती मुक्ति होती है ३१ और जे मनुष्य वहांपर फाल्गुन महीने में गोविन्दजी को भक्तिसे झूलतेहुए देखतेहैं तिनकी पुण्यको सुनिये ३२ वे सब पापोंसे छूटकर अन्तमें भगवान् के मन्दिर को जातेहैं और तहांपर ज्ञानको प्राप्त होकर अत्यन्त दुर्लभ मोक्षको प्राप्तहोतेहैं ३३ हे जैमिनि ! जो चैत्रके महीने में वारुणीपर्व्व में जगन्नाथजीके दर्शन करता है वह मरकर जगन्नाथजी की देह में प्रवेश करताहै ३४ और वैशाख के शुक्लपक्ष की तीजको जो जगन्नाथजीके दर्शन करताहै वह मनुष्य मुक्त होजाताहै ३५ जो मनुष्य जगन्नाथजीके महास्नानमें प्रवेश करताहै तिसके सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं ३६ भक्तिभावसेयुक्त होकर ब्रह्माआदिक सब देवता जगन्नाथजी के महास्नानको देखतेहैं ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! महाज्येष्ठी में रोगरहित जगन्नाथजी को देखकर मनुष्य विष्णुजी के परमपद को प्राप्तहोताहै ३८ आषाढ़ में जगन्नाथजी और बलभद्रजीकोजो गुण्डिकामण्डप में जातेहुए देखताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाताहै ३९ जो कमलनयन जगन्नाथजीको रथमेंस्थित देखताहै तिसका सबदुःखदेनेवाले संसारमें फिर जन्मनहीं होताहै ४० जे मनुष्य भक्तिसे रथपरचढ़ीहुई सुभद्राजीको देखते हैं भगवान् तिसके दुःखदेनेवाले संसारबन्धनको काट देते हैं ४१ जो पुत्रहीन स्त्री सुभद्राजी को देखती है तो उसके बहुतपुत्र होते हैं और पुत्र मरनेवाले के पुत्र जीते हैं ४२ जो दुर्भगा सुभद्राजीको देखतीहै तो वह पतिके सुभगा होतीहै और काकबंध्या के सुभद्राजीके दर्शनकरनेसे निश्चय बहुत पुत्र होतेहैं ४३ जो पुरुष कृष्ण, बलभद्र औरसुभद्राजी को गुण्डिकामण्डप में स्थित देखता

है वह परमपद को प्राप्त होता है ४४ हे जैमिनि! रोगी और दुःखी जो गुण्डिकामण्डप में हरिजी को देखता है तो वह सहसा से रोग और दुःखसे छूट जाताहै ४५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो पुत्रहीन मनुष्य गुण्डिकामण्डपमें स्थित जगन्नाथजीको देखताहै वह वैष्णव पुत्रको प्राप्त होता है ४६ विद्यार्थी विद्याको, धनकी इच्छा करनेवाला धन को, स्त्री की इच्छा करनेवाला स्त्रियोंको और मोक्ष की इच्छा करनेवाला मोक्षको प्राप्त होताहै ४७ जो राज्य छूटनेवाला राजा भक्तिसे गुण्डिकामण्डप में हरिजीको देखता है वह अपनी राज्य को प्राप्त होताहै ४८ जो शत्रुओंसे जीता हुआ गुण्डिकामण्डप में हरिजी को भक्तिसे देखताहै उसके वैरी नाश होजाते हैं ४९ जो राजासे पीड़ित होकर गुण्डिका के मण्डप में भगवान् को देखता है वह शीघ्रही राजाको अपने वशमें प्राप्त करताहै ५० सब यात्राओं में गुण्डिका श्रेष्ठ कहीगई है तिससे सैकड़ों कार्य छोड़कर यह यात्रा मनुष्यों को करनी चाहिये ५१ तिस मनोरम क्षेत्रमें शयन और उठने में जो मनुष्य हरिजी को देखताहै वह देवताओंसे भी पूज्य होता है ५२ पुरुषोत्तमजी के माहात्म्य कहने में पृथ्वी में कौन मनुष्य समर्थहै जिसके प्रवेशही मात्रसे मनुष्य नारायण होजाताहै ५३ यहांपर बहुत कहने से क्याहै संक्षेपसे मैंने कहा है सब तीर्थों में पुरुषोत्तम तीर्थ श्रेष्ठ है ५४ जो अत्यन्त गहरे, इस संसाररूपी समुद्र, क्लेश देनेवाले, विषम पापसमूहों के आश्रयको तरना चाहे तो सबसुख देनेवाले पुरुषोत्तमक्षेत्रमें देवताओंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमजी के दर्शन करै ५५ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपुरुषोत्तममाहात्म्यंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

भगवान् के माहात्म्यका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! जे भक्तिसेयुक्त मनुष्य नारायणजी की शरणमें प्राप्त होते हैं तिनका कभी अशुभ नहीं होताहै १ फिर भगवान् के माहात्म्यको कहताहूं जिसको सुन

कर सब मनुष्य परमपदको प्राप्तहोते हैं २ वासुदेवजीकी माहात्म्य सुनकर वैष्णव मनुष्य तृप्त होजाते हैं नरकमें क्लेश सेवनेवाले पाखण्डी नहीं तृप्त होते हैं ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पाखण्डियों के समीप उत्तम विष्णुजीका माहात्म्य नहीं कहना चाहिये वैष्णवोंके आगे कहना चाहिये ४ पूर्व्वसमय त्रेतायुगमें उर्वीशु नाम नित्यही पापमें रत, धर्मकी निन्दा में परायण, ५ ब्राह्मणकी निन्दा करनेवाला, पराई स्त्रीके गमनमें उद्यत, गऊके मांसका खानेवाला, मदिरा पीनेहारा, वेश्याके विभ्रममें लोलुप, ६ शरणागतके मारनेवाला, सदैव पराई निन्दा करने हारा, विश्वासघात करने वाला, मित्रके मारनेवाला, जाति की पीड़ा करनेहारा, ७ असत्य बोलनेवाला, क्रूर, पाखण्डीजनों के संग सेवन करनेवाला, ब्राह्मणों की वृत्ति नाश करनेवाला तथा न्यासका चुरानेवाला हुआ ८ इसप्रकारके तिस दुष्ट, पापमें परायणको देखकर कोपयुक्त होकर उसके सब जातिवाले उसके घर में जातेभये ९ और उससे बोले कि रे मूढ़! निर्म्मल कुल में हम लोगोंके पुरुषोंने प्रतिष्ठा बढ़ाईथी उसको तूने नाश करदिया १० धर्ममार्ग छोड़कर सदैव पाप करताहै हमारे वंशके यश नाशनेवाला, जातिवालोंको दुःख देनेहारा हुआ है ११ तुममें ब्रह्माकी सृष्टि अत्यन्त विस्मय देनेवाली हमलोग मानते हैं जिस समुद्र में चन्द्रमा हुआहै तिसी में क्ष्वेडोद्भवभी हुआहै १२ आश्चर्य की बात है कि कुपुत्रों की शक्ति गिनती करने में भी हम लोग नहीं समर्थ हैं अनेक पुरुषों की इकट्ठा की हुई कीर्ति को तिसी क्षण में नाश कर देते हैं १३ उत्तम पुत्र के उत्पन्न होने में अधमभी वंश श्रेष्ठ हो जाता है और अधम पुत्र के उत्पन्न होने में श्रेष्ठ भी वंश हीनता को प्राप्त हो जाता है १४ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण! ऐसा कहकर क्रोधयुक्त होकर वे सब जाति वाले तिस पापियों में श्रेष्ठ को अयश के डरसे सहसा से छोड़ देते भये १५ जाति वालों से छोड़ा गया और सब मनुष्यों से धिक्कार को प्राप्त होकर सब सम्पदाओं से भ्रष्ट दुःखित होकर वह चोरी करने लगा १६ तिस चोरी के कर्म करने वाले, निर्दयी, पराई हिंसा करने वाले को पकड़ कर सब म-

नुष्य राजा को देदेते भये १७ हे उत्तम ब्राह्मण! तब तिस राजाने पिता के स्नेह से इस दुराचारी को नहीं मारा अपने देश से बाहर कर दिया १८ तब बहुत उद्धत चोरों के साथ यह निर्दयी वन में राह चलनेवालों की द्रव्य हरने के लिये स्थित होता भया १९ कदाचित् वन के घूमने में थककर चोरों के साथ वह स्नान करने के लिये नदी के किनारे जाता भया २० तब यह दुष्टात्मा तिस नदी के किनारे भगवान् की सेवा में परायण बहुत से ब्राह्मणों को देखता भया २१ तदनन्तर वे सब ब्राह्मण भगवान् को आराधन कर अत्यन्त कौतुक से परस्पर यह कहते भये २२ कि इस समय में मैंने चम्पा के फूल छोड़े हैं कोई कहता भया कि मैंने मुरारिजी को पान दिया है २३ इससे जन्ममें कभी मुझे पान न खाना चाहिये मैंने इस समय में उत्तम केले के फल दिये हैं २४ इससे जन्म जन्म में मुझे केले का फल न खाना चाहिये कोई कहता भया कि मैंने हरिजीको अनार का फल दिया है २५ कोई कहताभया कि मैंने उत्तम आम का फल दिया है इस तरह परस्पर कहते हुए तिन लोगों के वचन सुनकर २६ उर्वीशु चिन्तना करता भया कि मैं क्या विष्णुजी को दूं संसार में जितनी वस्तु भोजन करने के योग्य हैं तिनको मैं २७ नहीं छोड़ सक्ता हूं क्या भगवान् को दूं—नित्यही वन के बीचमें रहकर चोरी करता और राजा के डरसे व्याकुल रहताहूं २८ गाड़ी के चढ़ने में मुझे अधिकार कभी नहीं है व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह वारंवार कहकर उस चोरने २९ धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले हरिजीको गाड़ा देदिया तदनन्तर सब वे ब्राह्मण जैसे आयेथे वैसेही चलेगये ३० और चोरोंके साथ यह चोरभी अपने स्थानको जाताभया एक समयमें तिसी राह से गुडकंडोल ३१ लेकर कोई राह चलने वाला उसी मण्डल में प्राप्त होगया तो इस निर्भय पराई हिंसा करनेवाले चोरने ३२ उस के गुडकंडोल को हरलिया तब सब चोर गुडकंडोल को बांटनेलगे ३३ तो उर्वीशु के भाग में गुडनिर्मित गाड़ा पड़ता भया तब वह गुड के गाड़ाकोप्राप्त होकर ३४ मनसे स्मरणपूर्वक इन वचनों को चि-

न्तना करताभया कि मैंने पूर्वसमय में भगवान् को गाड़ा देदिया है ३५ तिससे इस जन्ममें कभी भी गाड़ा न ग्रहण करना चाहिये यह गुड़के रचे हुए गाड़ेको मनसे देनेकी चिन्तना कर ३६ भगवान्की प्रीतिकेहेतु किसी ब्राह्मणको देदेतेभये तब तिस महापापी की भक्तिको जानकर ३७ प्रसन्न होकर भगवान् शीघ्रही उसके सब पापों को हर लेतेभये और तिसी दिन क्रुद्ध होकर सब पुरवासियों ने महावन में प्रवेशकर उर्वीशुको मारडाला तब भगवान् उसके लेने के लिये सोनेके बनेहुए विमान ३८। ३९ और अनेक प्रकार के गहनोंसे भूषित दूतोंको भेजतेभये तदनन्तर वे भगवान्के दूत पापरहित उर्वीशुको ४० विमान पर चढ़ाकर शीघ्रही भगवान्के पुरको जातेभये तब यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ भगवान् के समीप प्राप्त होकर ४१ सौमन्वंतर उनके पास रहकर परमज्ञान पाकर भगवान्की देहमेंप्रवेश कर जाताभया ४२ व्यासजी बोले कि जिस किसी उपायसे भगवान् की भक्ति करनेवाला मनुष्य राजहंस की नाईं संसाररूपी समुद्रके पार जावे ४३ जिसके चित्त में क्षणमात्र भी भगवान्की भक्ति वर्तमान होती है तो वह परमपदको प्राप्तहोताहै जहां पर यह पापी भी प्राप्त हुआहै ४४ एक भी उत्तम वस्तु भगवान् को देकर पीछेसे पापों की शान्तिके लिये आपभी भोजन करै ४५ जो वस्तु भगवान्को देवे तो वही ब्राह्मणको भी देवे बुद्धिमान् मनुष्य कुछ बचेहुएको आप अवश्य भोजन न करै ४६ हेश्रेष्ठ ब्राह्मण! जितनी मीठी वस्तुहैं तिनको विष्णुजी के दिये विना वैष्णुवोंको भोजन न करना चाहिये ४७ हे ब्राह्मण! सब पाप नाशने वाली विष्णुजीकी नैवेद्यके माहात्म्यको इतिहाससमेत फिर कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ४८ शुद्धवंशमें उत्पन्न सर्वजनि नाम ब्राह्मणहुआ यह शांत, दान्त, दयायुक्त, गुरु और ब्राह्मणकी पूजा करनेवाला, ४९ हरिजीकी पूजा और स्मरणमें तत्पर, शरणमें प्राप्त हुओंके क्लेशका नाश करनेवाला, सत्य बोलनेहारा, जितेन्द्रिय, ५० प्रातःकाल स्नान करनेहारा, अपने आचार का ग्रहण करनेवाला, हिंसासेहीन, एकादशी के व्रतमेंरत, जातिकी पूजामें परायणथा ५१

कदाचित् इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्वप्नमें केशवजीको देखा जोकि श्याम-वर्ण, निर्मल कमलके समान नेत्रवाले, सुन्दर मुखवाले, पीलेकपड़े धारे, ५२ सोनेका कुण्डल, मंजीर और मुकुटसे उज्ज्वल देहवाले, कौस्तुभमणि से प्रकाशित छातीवाले, वनमालासे विभूषित, ५३ चार भुजावाले, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करनेहारे, प्रभु, सब लक्षणों से युक्त, सोनेका जनेऊ पहने हुएथे ५४ इस प्रकार स्वप्न में भगवान् के दर्शन पाकर ब्राह्मण आनन्दसे रोमांचयुक्त देहहोकर हाथ जोड़कर तिनकी स्तुति करने लगा ५५ कि सब संसारके स्वामी, सज्जन मनुष्यों के शोक,डर और रोगोंके नाशकरनेहारे, नारायण, लक्ष्मी के हृदयके प्रिय, धर्म, अर्थ, काम और परम मोक्ष के देनेवाले आपके नमस्कार है ५६ हे मुर दैत्य के वैरी! मुझ मतवाले, मोहके वश में प्राप्तहुए ने सदैव सब पाप किये हैं तिससे संसाररूपी गहरे समुद्रसे डरता हूं इससे अपनी भक्तिरूपी नावदेकर मेरा उद्धार कीजिये ५७ हे हरे ! हे कैटभराक्षसकेवैरी! यद्यपि मैं मनुष्य होकर पाप को जानताहूं और शीघ्रही मोह को प्राप्त हुआहूं तथापि आनन्द से निरन्तर पापही करताहूं तिस से मूर्ख मनुष्य की नाईं हूं ५८ हे नृसिंह! हे नाथ! हे भगवन्! आप पुण्य के वृक्षरूप हैं और सहसाही से सुखफलको धारण करते हैं क्या पाप करनेवाला मैं नहीं जानताहूं परन्तु फूलेहुए वृक्षके अर्पण की विधि में मेरे द्रव्य नहीं है मैं क्याकरूं ५९ हे देव! परम अमृतरूप आपके दोनों चरणकमलों के स्थान को छोड़कर मेरा चित्तरूप यह भौंरा मृत्यु के देनेवाले, निरन्तर कफसे युक्त स्त्री के मुख में कमल के भ्रमसे प्राप्त होताहै ६० हे हरे! मेराहाथ दान से रहित, मुख झूठबोलनेहारा और कान पाप सुनने के लिये सदैव निपुण हैं इससे मुझ सेवकके इन दोषों को नाश कीजिये जिससे हे नाथ! आप शरणागत के दोष नाश करनेवाले हैं ६१ हे नृसिंहजी! संसाररूपी घोर समुद्र में कदाचित् आप की भक्तिरूप नाव अत्यन्त दृढ़ मैंने यहां पर पाई तब भी दैवके वश में प्राप्त मुझ दुरात्मा का निरन्तर दुःख का समय वर्तमान है ६२ हे विष्णो!

संसारके पारजानेके लिये क्या प्रकाशित मार्गहै जो कि सब दुःखोंसे रहित, दयासमेत और प्रसन्नहै और मुझ मोहरूपी बड़े अन्धकार से अंधे कियेहुए की दृष्टि कभी भी आप में नहीं प्राप्त होतीहै ६३ हे मुरारे! हे सब देवताओं से वंदितचरणकमलवाले! हे केशी राक्षस के मारनेवाले! हे विभो! मुझ पापात्मा का यह चित्त नष्ट होगया है जो कि नष्टजनों के कष्ट नाश करनेवाले आपको मैं इस समय स्वप्न में देखता हूं ६४ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार तिस ब्राह्मण से संसाररूपी समुद्र के तारनेवाले देव, लक्ष्मी-पति, भगवान्, वाक्य के जाननेवाले स्तुति कियेगये तब तो उससे बोले ६५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं नित्यही प्रसन्नहूं तिससे तुम्हारा थोड़ेही समय में सब कल्याण होगा६६ हे ब्राह्मण! पूर्व समय में तुझ पापी का भी मैंने उद्धार कियाहै इस समय में तो मेरा भक्त है इससे तुझ को विपत्ति न होगी ६७ तब ब्राह्मण बोला कि हे विष्णो! पूर्वसमय में मैं कौन था क्या पाप मैंने कि-या था और मुझ पापी का पहले आपने कैसे उद्धार किया था ६८ हे विभो! इस संसार में आपने कैसे उत्पन्न कियाहै यह सब कहि-ये जिससे आप सदैव दयासमेत हैं ६९ तब श्री भगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह छिपाहुआ और प्रकाश करनेके योग्य नहीं है तथापि तुम्हारी वात्सल्यता से कहताहूं सुनिये ७० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पूर्वसमय में तुम अपने कर्म के विपाकसे पृथ्वी के भागों में पक्षियों के वंश में उत्पन्न हुये थे ७१ वहां पर भूंख और प्या-ससे निरन्तर व्याकुल होकर कीड़ों को खाते और झरनों के गर्म जल पीतेहुए भ्रमतेभये ७२ पक्षीकी योनिमें उत्पन्नहुए सदैव अ-नेक प्रकार के दुःखों को भोग करतेहुए पृथ्वी में चार हज़ार वर्ष तुम स्थितरहे ७३ एक समय में सब तत्त्व के जाननेवाले कुल-भद्रनाम ब्राह्मण नदीके किनारे भक्तिसे नैवेद्य आदिकोंसे मुझको पूजतेभये ७४ और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण मेरी पूजाकर नैवेद्यके चावलों को वहीं छोड़कर फिर अपने घरको चलेगये ७५ तब वृक्षसे निक-लकर भूंखे तुझ पक्षीने मेरी नैवेद्यके सब चावल खालिये ७६ और

भोजन करनेहीसे शीघ्रही अत्यन्त घोर पापोंसे छूटगये और कदा-
चित् समय प्राप्त होनेमें मरगये ७७ तो तुम्हारे लेनेकेलिये मैंने अ-
पने दूतोंको भेजा तो पापरहित तुमको रथमें चढ़ाकर ७८ शीघ्रही
सब दूतसमूह परंपदको लेआये तो हज़ार करोड़ युग हमारे समीप
तुम स्थितरहे ७९ और देवताओंके भी दुर्लभ सब सुखोंको भोगते
रहे तदनन्तर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शुद्ध ब्राह्मणके कुलमें तुम उत्पन्न हुए
८० तो फिर तहां भी मुझमें अत्यन्त दृढ़भक्ति तुम्हारी उत्पन्नहुई
क्रियायोग से नित्यही मुझको आराधनकर ८१ अन्त समय मेरे
प्रसादसे मेरे पदको प्राप्त होगे हे ब्राह्मण! जब मैं प्रसन्नहोताहूं तब
पापीभी मुक्तिका सेवनकरनेवाला होजाताहै ८२ और कदाचित् जिस
के ऊपर अप्रसन्न होताहूं तो पुण्यात्मा भी पापका सेवन करनेवाला
होजाता है तिससे हे सुन्दर व्रत करनेवाले ब्राह्मण! तुम मेरे भक्त
हो तुम्हारा कल्याणहो ८३ तुमको देवताओंके भी नहीं मिलनेवाले
श्रेष्ठ स्थानको मैं दूंगा तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ! आपके प्रसाद
से मैंने अपने पूर्वजन्मके वृत्तान्तको सुना ८४ हे प्रभो! हे देवता-
ओंमें श्रेष्ठ! इस समयमें जो कुछ सुनना चाहताहूं तिसको कहिये
किसके ऊपर आप प्रसन्न होते और किसपर अप्रसन्न होतेहैं ८५
यह सब बड़ी कृपाकर आप मुझसे कहनेके योग्य हैं तब श्रीभग-
वान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिस कर्मसे मेरे हृदयमें प्रसन्नता
होतीहै ८६ और जिससे क्रोध होता है तिस सबको संक्षेपसे कह-
ताहूं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो सदैव सब प्राणियोंमें दयावान् ८७ और
अहंकाररहित होताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो
धर्म और भक्तिसे युक्त होकर मेरेलिये कर्म करता है ८८ और मेरे
ही लिये जो शान्त बोलता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता
हूं और जो मनुष्य मीठी वस्तु को प्राप्त होकर मुझ को देताहै ८९
और मान अपमान में सदृश है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रह-
ताहूं जो मनुष्य सब प्राणियों के शरीरमें स्थित मुझ को जानता
है ९० और जो पराई हिंसा से हीन है तिसके ऊपर मैं सदैव
प्रसन्न रहता हूं जो वारंवार विचार कर कर्म करता है ९१ और

जो गऊ और ब्राह्मण के कल्याण की इच्छा करता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो अपने कहेहुए वचन को यत्न से पालन करताहै ९२ और यत्नसे शरणागतको प्राप्तहोताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं हे श्रेष्ठब्राह्मण! अनुपकारियोंको जो दानदेताहै ९३ और जिसका मुझमें सदैव चित्तरहताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जिसकर्मसे मैं प्रसन्नहूं तिसको संक्षेपसेमैंने कहा ९४ अब हे ब्राह्मण! जिसकर्मसे रुष्टहोताहूं तिसको कहताहूं सुनिये जो पराई हिंसामें रत, सब प्राणियोंमें निर्दयी ९५ अभिमानयुक्त और सदैव क्रुद्ध रहताहै वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करताहै झूंठबोलनेवाला, क्रूर, पराईनिन्दा में परायण ९६ कवि-वर्तन विध्वंस करनेवाला जो है वह मुझको शत्रुताको प्राप्तकरता है निर्दोष माता, पिता, स्त्री, भाई, बहनको ९७ जो मूर्ख मोहसे त्याग करदेताहै वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है और जो मूढ़-बुद्धि मनुष्य पितरोंसे भर्त्सन करता है ९८ और गुरुजीका अप-मान करता है वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है जे बगीचे के काटनेवाले तालाब इत्यादिके नाशकरनेवाले ९९ और जे गांवके नाश करने हारे हैं वे मुझको शत्रुताको प्राप्त करते हैं पराई स्त्रीको देखकर जे मनुष्य क्लेशको प्राप्त होतेहैं १०० और पापकी चर्चाको सुनतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न रहता हूं जे मूर्ख स्वामी से वैर करतेहैं अनाथकी द्रव्य हरतेहैं १०१ और जे विश्वासघात करते हैं तिनकेऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे गऊके वीर्य के नाश करने वाले, शूद्रीकेपति, १०२ और पीपलके काटनेवाले हैं तिन के ऊपरमैं सदैव अप्रसन्नहूं ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजीके बीचमें जे भेद करनेवाले हैं १०३ और पराई स्त्रीमें जे अतिरक्त हैं तिन के ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे पापबुद्धि मनुष्य एकादशीमें लोभ से भोजन करतेहैं १०४ और जे वेदकी निन्दा करनेवाले हैं ति-नके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं पापबुद्धिमें जे रत तथा मित्रके द्रोह में रत १०५ और आंवलेके वृक्षको जे काटतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे कामसे मोहित मनुष्य दिनमें मैथुन करतेहैं

१०६ और रजस्वला स्त्रीसे भोग करतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे स्त्रीको ऋतुयुक्त देखकर मोहसे भोग करतेहैं १०७ और व्रतमें स्थित से सदैव भोग करते हैं ते मुझको शत्रुताको प्राप्त करतेहैं जे अमावास्यातिथिमें रात्रि में भोजन करते हैं १०८ और इतवारको दोबार भोजन करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे ब्राह्मण अमावास्या के दिन मांस,मैथुन और तेलको नहीं छोड़ते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १०९ । ११० जे वैष्णवोंकी निन्दा करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ऐसाकहकर भगवान् विष्णुजी सहसासे अन्तर्द्धान होगये १११ और वह ब्राह्मण निद्रा छोड़कर शय्यासे उठकर भगवान्के कहेहुए वाक्यसे भगवान्की भक्ति करनेलगा ११२ और सब कार्य छोड़कर क्रियायोग में रत होजाता भया नारायणजी की नैवेद्य भोजन करने का यह फल है ११३ हरिजीकी पूजाकरनेवालोंका नहीं जानते क्या होताहै हे जैमिनि! संक्षेपसे कहताहूं तुम सुनो ११४ एक बार भी हरिजी की पूजा करने से परमपद प्राप्तहोताहै संसार में मनुष्यजन्म दुर्लभ है तहांपर भगवान्की पूजा ११५ और भक्ति दुर्लभ कहीगईहै ११६ संसाररूपी समुद्र सब दुःखोंसे पूर्णहै जिस पुरुषके चित्तमें उसके तरनेकी इच्छा हो तो वह श्रेष्ठ मनुष्य सब कर्मों में भक्तिसे नित्यही भगवान्की पूजाकरै ११७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

सब दानोंका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण! विष्णुजी की पूजा का फल तो संक्षेप से मैंने कहा अब इस समय में दानों को कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये १ दान और तपस्या इन दोनों में एक दानही श्रेष्ठ कहाहै तपस्यासे पाप कहाहै दानके कर्म में पाप नहीं है २ सतयुगमें तपस्या श्रेष्ठहै,त्रेतायुग में ध्यान,द्वापरयुग में पूजा

और कलियुग में दान श्रेष्ठ है ३ तिससे परमपद की इच्छा करने वाले बुद्धिमानों करके भगवान्‌की प्रीति के लिये कलियुगमें दान करना चाहिये ४ कला कलासे चन्द्रमाकी कला जैसे बढ़ती है तैसेही बुद्धिमानों ने दान और तपस्या की गति कही है ५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! बुद्धिमान् मनुष्य पलसे द्रव्यका संग्रहकरै और इकट्ठेकिये हुए धनको दानके कर्म में लगावे ६ धनके स्थित होनें में जो मनुष्य न भोजन करता और न देताहै वह दान और भोगसे वर्जित दरिद्र जानना चाहिये ७ द्रव्य किसके साथ आता और किसके साथ जाता है इस लोक में नाश होजाने में पूर्वसमय का दियाहुआही प्राप्तहोताहै ८ जे मनुष्य दान देदेकर सदैव दरिद्री होजाते हैं वे दरिद्री नहीं जानने चाहिये परलोकमें महेश्वर होते हैं ९ हे जैमिनि ! जे कृपणता से धनकी रक्षा करते हैं वे अत्यन्तदुःखित जाननेचाहिये अन्तमें तिस सबको छोड़कर निराश होकर जाते हैं १० परलोकमें श्रेष्ठ ब्राह्मण साधु और अच्छेबलसे रहितहोकर निर्द्धन और बन्धुहीन होनेमें दियेहुएको पाताहै ११ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! वैष्णवों करके अपनी भक्तिसे नित्यही भक्ति श्रद्धायुक्त होकर थोड़ाथोड़ा दान देना योग्यहै १२ तत्त्वके जाननेवालोंने सब दानोंमें अन्न और जलका दान अत्यन्त श्रेष्ठ कहाहै १३ देहधारी पुरुषोंके विनाअन्नके देहोंमें प्राण नहीं स्थित होते हैं इससे अन्नका देनेवाला प्राणों का देनेवाला जानना चाहिये और प्राणोंका देनेवाला सब देनेहारा होताहै १४ हे जैमिनि ! तिससे अन्नका देनेवाला सब दानोंके फलको प्राप्तहोताहै और अन्नदानही के बराबर जलदान भी है १५ विना जल के अन्न नहीं होताहै इससे जल भी देना चाहिये हे श्रेष्ठब्राह्मण ! भूंख और प्यास दोनों बराबर कही गईहैं १६ तिससे बुद्धिमानों ने जल का देना श्रेष्ठ कहा है मनुष्यों का जलही जीवन है जीना जीवन नहीं है १७ इससे बुद्धिमान् मनुष्य जीवन की रक्षाके लिये जलको देवे हे विप्रेन्द्र ! जिसने पृथ्वी में अन्न और जल दिये हैं १८ तिसने निस्सन्देह सब दान कियेहैं अन्न और जलके दानके माहात्म्यको सुनिये १९ हास्तिनपुर में कुबेरकी नाईं द्रव्यवान् एक

मनुष्य हुआ है और तिसी पुरमें अप्सराओंके समान वेश्या हुई है २० जिसका रतिविदग्धा नाम था यह सब लक्षणों से संयुक्तथी तहांहीं श्रेष्ठवंशमें उत्पन्न क्षेमकरी नाम ब्राह्मणी हुई २१ यह ब्राह्मणकी कन्या सब गुणोंसे युक्त होकर विधवा होगई तब व्यभिचारी पुरुषोंमें मन लगाती भई २२ और अज्ञानताको प्राप्तहोकर निषिद्धकर्म करती भई और यह ब्राह्मणीभी वेश्या के स्थानमें चली गई २३ दोनों वेश्याकी जीविकाको प्राप्तहोकर स्नेहसे मित्रता करती भई वेश्या और ब्राह्मणी दोनों एक जगह रहकर दिन दिन में २४ अगणित पापोंको करती भई तदनन्तर रतिविदग्धा वेश्या और अत्यन्तपापिनी दुःशीला ब्राह्मणीभी वृद्धावस्था को प्राप्तहोगई तब किसी समयमें रतिविदग्धा वेश्या अपनी ब्राह्मणी सखीसे २५।२६ विस्मय और नम्रतायुक्त होकर बोली कि हे सखि! तुम्हारे साथ मैंने अत्यन्त घोर पाप किये हैं २७ और अबभी मेरी पापमें अत्यन्त दृष्टि वर्तमानहै सुन्दरता और बल सब बुढ़ापेने हरलियाहै २८ इस प्रकार पाप करनेवाली मैंने वृद्धावस्था प्राप्तकीहै और असमर्थ होगईहूं तबभी आशा छोड़ने में नहीं समर्थ हूं २९ इससे मरण समीपही देखतीहूं पापसे जो मैंने द्रव्य इकट्ठा किया है ३० तिसको मुझ पुत्ररहितके मरने के पीछे कौन रक्षाकरेंगे तिससे सब अन्यायसे इकट्ठे कियेहुए द्रव्यको ३१ हे सखि! जो आपकी भी सलाहहो तो ब्राह्मणोंके देनेकी इच्छा करतीहूं तब ब्राह्मणी बोली कि मैंने जितना द्रव्य इकट्ठा किया ३२ तिस सबको नित्यही असत्पात्रों में दे दिया तिससे मैं धनहीनहूं मैं क्या ब्राह्मणको दूंगी ३३ जो आपके पास द्रव्यहै तिसको शीघ्रही दान कीजिये ब्राह्मणीके ये वचन सुनकर वहवेश्या अत्यन्त प्रसन्न होकर ३४ सबद्रव्यसे अन्नदान करती भई और श्रेष्ठ ब्राह्मण, धनवान् हरिशर्माजी अत्यन्त भक्तिसे ३५ निरंतर जनार्दन भगवान्जीको पूजन करता भया और जितेन्द्रिय और क्रोधजीत कर हिंसा और दम्भसे वर्जित होकर ३६ भगवान्की प्रीतिके लिये बड़ी तपस्या करता भया चन्दन, फूल, बलि, घी, धूप और

दीपोंसे ३७ नित्यही जनार्दन भगवान्‌को पूजन करता भया यह ब्राह्मण धनवान्‌भी द्रव्यके नाशकी शङ्कायुक्त रहता भया ३८ चिउंटी और मुसरिया तथा औरभी जन्तु इस कृपणके घरमें नित्यही भूंखे रहतेथे ३९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यहदानके कर्म से हीन ब्राह्मण इकट्ठे कियेहुए सब धनको आपही भोग करता भया ४० मित्र, ब्राह्मण और बान्धवों से यह द्रव्य मांगनेकी शङ्का से कभी बात भी नहीं करता था ४१ हे उत्तम ब्राह्मण! यह अपने स्थान में बहुत द्रव्यों को गिनकर आत्मा को श्रेष्ठ की नाई मानकर प्रसन्न होता भया ४२ यह अत्यन्त द्रव्यवान् ब्राह्मण, वेश्या और वह ब्राह्मणी भी कदाचित् काल प्राप्त होकर एकही समय में तीनों मरते भये ४३ तदनन्तर देव धर्मराजजी के अत्यन्त भयंकर दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर प्राप्त होते भये ४४ और वे चण्डादिक दूत तिन तीनों को लेकर शीघ्रही दुर्गम राहसे धर्मराज के पुरको जाते भये ४५ तब चण्ड यमराजजी से बोला कि हे जीवितेश! आपकी आज्ञासे हरिशर्मा, वेश्या और ब्राह्मणी को लेआयाहूं इन आपके आगे खड़ेहुओं को देखिये ४६ तिन को देखकर यमराजजी हँसकर सब कार्यों में निपुण चित्रगुप्तसे बोले ४७ कि हे बुद्धिमान् चित्रगुप्त! इनके सब शुभ और अशुभ कर्मोंको मूलसे विचारिये ४८ तब यमराजजी की आज्ञासे निपुण चित्रगुप्त सब शुभ तथा अशुभ कर्मको विचार कर बोले ४९ कि हे देव! यह वेश्या, ब्राह्मणी और हरिशर्माने जो पुण्य तथा पाप किये हैं तिनको कहताहूं सुनिये ५० यह दुराशया रतिविदग्धा नाम वेश्या जितने पाप करतीथी तिनके कहने को मैं नहीं समर्थ हूं ५१ जब इसकी वृद्धावस्था हुई है तब इसने अन्याय से इकट्ठे किये हुए सब द्रव्योंसे अन्नदान करदियाहै ५२ अन्नदानके प्रभाव से यह नरकके वास देनेवाले, करोड़ जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए सब पापों से छूटगई है ५३ हे महाराज! जे मनुष्य पृथ्वी में अन्नदान करतेहैं वे पापी भी हों तबभी विष्णुजी के परमपदको जातेहैं ५४ मनुष्य पृथ्वी में जितने अन्न देते हैं तितनी तिनकी ब्रह्महत्या नि-

स्सन्देह नाश होजाती हैं ५५ अन्न देनेवालों के शरीरों को पाप छोड़कर लेनेवालों के शरीरों में शीघ्रही चलेजाते हैं ५६ तिससे चतुर मनुष्य पापियोंके अन्नोंको नहीं ग्रहण करते हैं और जे मूर्ख मोहसे ग्रहण करतेहैं ते पापके भागी होतेहैं ५७ हे प्रभो! वेश्या के तो शुभ वा अशुभ कर्म मैंने कहे अब ब्राह्मणी के शुभ वा अशुभकर्म्मों को सुनिये ५८ यह क्षेमकरीनाम ब्राह्मणी, शुद्धवंश में उत्पन्न, भद्रकीर्तिकी स्त्री है इसने सब पाप कियेहैं ५९ अपने आश्रमके आचारको छोड़कर अपनेही यौवनसे अभिमानयुक्त होकर अत्यन्त पापिनी यह व्यभिचारी पुरुषोंसे भोग कराती रही है ६० कभी बाल्यावस्थामें बालकोंके साथ खेलतीहुई इसने राह में चारों कोणसे युक्त एक गढ़ा खोदा था ६१ और उसीदिन मेघ जल बरसगये तब इसका खोदा हुआ गढ़ा भी जल से भरगयाथा ६२ तो दोपहरके समयमें एक गौ प्यासी, सूर्यके घामसे तापयुक्त होकर तहांका पानी पीतीभई ६३ तो तिसके जलदानके प्रभाव से सब बड़ेभी पापनष्ट होगये हैं ६४ सब पापों से छूटकर नारायणजी के स्थान को जाती है हे देवों के स्वामी! यह दुष्ट अन्तःकरणवाली और पाप करनेहारी भी ६५ जलदान के प्रभाव से सब पापों से छूटगई है और यहब्राह्मण देवोंके देव, चक्रधारी भगवान्का भक्त है ६६ इसके भगवान्ही स्वामी रहेहैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! चित्रगुप्तके ये वचन सुनकर यमराजजी ६७ तिस वेश्या, ब्राह्मणी और ब्राह्मण की वन्दना करतेभये और सुन्दर सोनेके गहने और अनेक प्रकारके कपड़ों को ६८ तिन सबको देकर अत्यन्त प्रसन्न होकर हँसकर कोमल अक्षरवाले वचन बोले ६९ कि तुम सब महात्माओं के सबपाप नाश होगये हैं इससे सब सुख देनेवाले लक्ष्मीपति प्रभुजीके स्थानको जावो ७० तिसपीछे यमराजजी सोने के बनेहुये सुन्दर विमानपर तिनको बैठाकर राजहंसयुक्त भगवान् के स्थान को भेजते भये ७१ तब सुन्दर रथपर चढ़कर सब पापरहित होकर सब गहनों से भूषित होकर भगवान् के पुरको जाते भये ७२ वेश्या और ब्राह्मणी सब पापरहित होकर भगवान्के स-

मीप बहुत कालतक सुखसे स्थित होतीभई ७३ और जनार्दनजी हरिशर्मा को आते देखकर स्नेहसे सोनेके बनेहुए श्रेष्ठ आसनको देतेभये ७४ फिर श्रेष्ठ आसनपर बैठेहुए श्रेष्ठ ब्राह्मण को आनन्द से भगवान् पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय से पूजाकर उससे पूंछते भये ७५ कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तों में श्रेष्ठहौ इससे कुशल कहौ और सब उपद्रवों से हीन मेरे मन्दिर में बहुत कालतक रहो ७६ तब ब्राह्मण बोले कि हे प्रभो! आपको स्मरण और दर्शनकर कुशल प्राप्त होती है और मैं तो आपके पासही प्राप्तहूं इससे अधिक क्या कुशल होगी ७७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! भगवान् उसके नम्रवचन सुनकर प्रसन्न होकर तिस ब्राह्मण को अपनाही स्वरूप देतेभये ७८ और लक्ष्मीपति प्रभुजी तिसको सब सुखदेते भये परन्तु तिसकी कृपणता को स्मरण कर भोजनमात्र नहीं देते भये ७९ तब दो दिनके पीछे ब्राह्मण विना भोजन के भूंखसे व्याकुल होकर नम्रतासे भगवान् के नमस्कारकर स्थित होकर देवोंके स्वामी विष्णुजीसे बोले ८० कि हे प्रभो! अनेक तपस्याओंके फलों से आप के स्थान को तो मैंने पाया परन्तु यहां भी भूंखसे विफल कैसेहूं ८१ नवीन युवावस्थावाली, सुन्दर देवताओंकी कन्याओंके समूह मेरे ऊपर मंचोंमें सफेद चामर डुलाती हैं ८२ सुगन्धित फूलोंके बड़े मालाओंसे अलंकृत और चन्दनों से सब अंगलिप्तहोकर श्रेष्ठराजाकी नाईं मैंहूं ८३ हे प्रभो! हे नारायण! आपकी आज्ञासे सुन्दर अंगवाली स्त्रियां मेरे आगे गीतगातीं और नाचतीहैं ८४ और इन्द्रआदिक सबदेवता मेरे चरणोंकी धूलिको मुकुटसेशोभित अपने शिरोंमें नित्यही लगाते हैं ८५ हे देव! हे संसारकेस्वामी! देवर्षि और मुनि नौकरोंकी नाईं नित्यही स्तोत्रों से मेरी स्तुति करते हैं ८६ चारभुजाओंसे युक्त, श्यामवर्ण, शंख, चक्र, गदा और पद्मको धारे, फूलेहुए कमल के समान नेत्रवाला, पीले कपड़े धारे, सुन्दर कुण्डल धारे, ८७ सोने का यज्ञोपवीत, मुकुट और कुण्डलयुक्त मैं देवताओं से दूसरे गरुड़ध्वजकी नाईं दिखाई देताहूं ८८ हे प्रभो! हे परमेश्वर! आपने ये दुर्लभ सुख तो दिये हैं परन्तु भोजन मुझे

क्यों नहीं दिया है ८९ भूखकी अग्निसे मेरा शरीर इस तरह ज-
लताहै जैसे कोटरमें स्थित अग्निसे वृक्ष जलताहै ९० हे हरे! हे
केशवजी! ये सुख तो आपने मुझे दियेहैं परन्तु जलतीहुई पेटकी
अग्निसे विह्वल अंगवाले मुझको नहीं शोभा देते हैं ९१ हे देव!
कर्म, मन और वाणीसे आप जगदीश्वरकोही मैंने पूजाहै और देव
को मैंने नहीं पूजाहै ९२ हे जगन्नाथ! हे प्रभो! स्वप्नमें भी और
देवकी मैंने भक्ति नहीं की है फिर किस दोषसे भोजन नहीं देतेहो
९३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तदनन्तर कौतुकी भगवान् वि-
ष्णुजी तिस ब्राह्मणसे बोले कि हे ब्राह्मण! तुम्हारा कल्याणहो तुम
शीघ्रही ब्रह्माजी के पास जावो ९४ ये भगवान् के वचन सुनकर
ब्राह्मण शीघ्रही ब्रह्माके पास गये तब ब्रह्मा तिससे तिसकी कृप-
णता दिखलाते हुए बोले ९५ कि दुःखसे कर्म्म इकट्ठे तो तुमने
किये हैं परन्तु ब्राह्मण को अन्न नहीं दियाहै इससे निस्सन्देह तुम
को भोजन नहीं मिलता है ९६ हे ब्राह्मण! तुम्हारे दुःख का सब
कारण मैंने कहा अब जहांसे तुम आयेहो वहां को जावो तुम्हारा
निस्सन्देह कल्याण हो ९७ तब ब्राह्मण बोले कि आपके प्रसाद से
मैंने अपने कर्म का विपाक तो सुना अब दानों को कहिये कि कौन
दान मनुष्यों को देने योग्यहैं ९८ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण!
बहुत दानहैं तिनको नहीं कहसक्ताहूं संक्षेपसे कहताहूं एकाग्रचित्त
होकर सुनिये ९९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! सब दानों से उत्तम पृथ्वी का
दानहै जिस पुण्यात्माने यह दान कियाहै उसको सब दानोंका क-
रनेवाला जानिये १०० जो गऊके चमड़ेमात्र पृथ्वीको देताहै वह
सब पापोंसे छूटकर परमस्थानको जाता है १०१ अन्नसंयुक्त पृथ्वी
को जो दरिद्री ब्राह्मण को देता है तिसकी पुण्य को सुनिये १०२
वह सब पापों से छूटकर नारायणजीके पुरको जाताहै और जबतक
चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक वहां सब सुख भोगकर १०३ फिर पृ-
थ्वीमें प्राप्त होकर सब पृथ्वीका राजा होताहै बहुतकाल सब पृथ्वी
भोगकर मनुष्य नारायण होजाता है १०४ जिससे पृथ्वी सैकड़ों
दान छोड़कर ब्राह्मणों को देनी चाहिये क्योंकि पृथ्वीका देने और

लेनेवाला दोनोंही स्वर्गको जातेहैं १०५ जो मन्दबुद्धि मनुष्य पृथ्वी के दान को छोड़ देताहै वह प्रत्येक जन्ममें अत्यन्त दुःखित होता है १०६ औरसे भी ग्रहणकर जो पृथ्वी का दान करता है तिसके ऊपर अत्यन्त प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देते हैं १०७ जो दरिद्री ब्राह्मणको गांव देता वा दिलवाताहै तिसकी पुण्य को सुनिये १०८ जितनी पृथ्वी में रेणु और जितनी वर्षाकी बूंदें होती हैं तितनेही मन्वन्तर वह बुद्धिमान् विष्णुलोक में बसता है १०९ जो बछवा और दूधसमेत गऊको देता है तिस महात्मा की पुण्य को मैं कहताहूं सुनिये ११० अन्नसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी को देकर जो फल मिलता है वह मनुष्य ब्राह्मण को गऊदेकर पाताहै १११ और जो कुटुम्बी ब्राह्मण को बैल देता है वह घोरपापों से छूटकर महादेवजी के लोक को जाता है ११२ जितने तिस बैल के शरीर में रोम होते हैं तितने हज़ार कल्प महादेवजी के साथ वह आनन्द करताहै ११३ जो वेदके जाननेवाले को गऊ देताहै तिसका महादेवजी के लोकसे फिर लौटना नहीं होताहै ११४ जो मनुष्य तिलयुक्त बैलको कृष्णजीको देताहै वह तिलोंकी गिनतीसे महादेवजी के स्थानमें स्थित होताहै ११५ जो तिलभर भी सोना ब्राह्मणको देता है वह करोड़कुलसंयुक्त विष्णुजी के स्थान में जाता है ११६ जो दरिद्री ब्राह्मणको भक्तिसे चांदी देताहै वह चन्द्रमा के लोकमें प्राप्त होकर अमृतपान करता है ११७ जो हीरा,मोती, मूंगा और मणि देता है वह इन्द्रलोक में जाता है ११८ जो महाशय घोड़ा दान करताहै वह निस्सन्देह गधर्वोंका राजा होताहै ११९ जो दोषहीन, जवान हाथीको देताहै वह इन्द्रकी नाईं देवताओंकी राज्य में विभाग पाताहै १२० जो दक्षिणासमेत नरदोलाको ब्राह्मणको देताहै वह इन्द्रपद को पाकर चार कल्प बसता है १२१ जो शालग्रामकी मूर्तिका ब्राह्मण को दान देता है तिसकी पुण्यको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये १२२ पर्वत, वन और काननसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी देकर जो फल मिलताहै वह शालग्रामकी मूर्ति देनेवाले को मिलताहै १२३ तुलापुरुष के दानसे जो फल मनुष्यों को मिलता

है तिससे करोड़गुणा शालग्राम की मूर्ति देनेसे मिलता है १२४ जिसने शालग्रामकी मूर्तिदी उसने निश्चय चौदहों भुवन देदिये १२५ जो तुलापुरुष का दान करताहै वह स्वर्ग में सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला राजा होताहै १२६ और माताके पेटमें फिर जन्म नहीं होता है जो उत्तम मनुष्य गहनोंसमेत कन्याको देताहै १२७ वह विष्णुजीके मन्दिरको जाताहै और फिर नहीं लौटताहै और जो मूर्ख मनुष्य मोहसे कन्याको बेंचताहै १२८ वह पुरीषह्रद नाम घोर नरकमें जाताहै और बेंची हुई कन्याके जो पुत्र होताहै १२९ वह सब धर्मोंसे बाहर किया हुआ चाण्डालकी नाईं जाननेयोग्यहै शास्त्रका जाननेवाला मनुष्य कन्या बेंचनेवाले पुरुष के मुखको न देखै १३० और जो अज्ञानसे देखलेवे तो सूर्यनारायण के दर्शन करै जो कन्या बेंचनेवाले के आगे जो कुछकर्म शुभकरै वे सब निष्फल होजाते हैं कन्या बेंचने वाले की नरकसे फिर निष्कृति नहीं होती है १३१ । १३२ और कन्यादान करनेवाले का स्वर्गसे फिर आगमन नहीं होता है यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १३३ हीरा, पृथ्वी और कन्याका फल सौसे अधिक होता है जो पृथ्वी में जूता और छतुरी देता है १३४ उसकी पुण्य को संक्षेपसे कहताहूं सुनिये इसलोक में सब सम्पदाओं से युक्तहोकर वह सौवर्ष जीताहै १३५ और मरकर चारसौ कल्पतक इन्द्रके पुर में प्राप्त होताहै और जो नया कपड़ा देताहै वह परमगतिको प्राप्त होता है १३६ जो पुराने कपड़े, चांदी की गऊ और रजस्वला कन्याको देताहै वह सदैव नरकको जाताहै १३७ और फलदेनेवाला मनुष्य देवस्थान को जाता है वहांपर हजारकल्प अमृत के सदृश फलको भोजनकरताहै १३८ सागका देनेवाला भगवान् महादेवजी के पदको जाताहै और वहांपर दो कल्पपर्यन्त देवताओं से दुर्लभ खीरको भोजन करता है १३९ दूध, दही, घी और माठा का देनेवाला हरिभगवान् के आगे अमृत पीनेको पाताहै १४० फूल और चन्दन का देनेवाला मनुष्य फूल और चन्दनसे विभूषितहोकर हजारयुगपर्यन्त देवस्थानमें रहताहै १४१ हे श्रेष्ठ और उत्तम

ब्राह्मण! जो मनुष्य शय्यादान करता है वह ब्रह्मलोक में आकर बहुतकाल शय्यामें सोताहै १४२ दीप और पीठ का देनेवाला सब पापोंसेहीन होकर सुन्दर सिंहासनमें स्थितहोकर जल और दीपावलीसेयुक्त होताहै १४३ हे राजन्! पानका देनेवाला पृथ्वी में सब शुभको भोगकर स्वर्ग में देवोंकी स्त्रियों के कोरे में सोकर निश्चय पानोंको खाताहै १४४ और जो विद्यादान करताहै वह विष्णुजी के समीप जाकर दोसौयुगतक स्थित होताहै १४५ फिर वहांहीं ज्ञान पाकर भगवान् के प्रसादसे दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै १४६ जो अत्यन्त दुःखित अनाथ ब्राह्मण को पढ़ाताहै वह विष्णुजी के मंदिर को जाताहै और फिर वहांसे नहीं लौटताहै १४७ कुलीन भी ब्राह्मण विद्या के विना नहीं शोभित होता है तिससे ब्राह्मण के पढ़ानेवाले परमपदको जाते हैं १४८ पृथ्वी में प्रत्यक्ष देवता ब्राह्मण देवताओं के आश्रय और सबवर्णोंका गुरु है इससे विद्याहीन नहीं शोभित होताहै १४९ संसार में जितने सोना आदिक दानहैं तितने तिसने देदिये हैं जिसने ब्राह्मणको पढ़ायाहै १५० जो मनुष्य भक्तिसे युक्त होकर पुस्तकका दान करताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १५१ तिस पुस्तकमें पत्रे पत्रे में जितने अक्षर होते हैं प्रत्यक्षरमें करोड़ कपिला गऊके दानके पुण्यको देनेवाला प्राप्त होता है १५२ और जितने दिन ब्राह्मण पुस्तक पढ़ते हैं तितनेहीं मन्वन्तर पुस्तकका देनेवाला वैकुण्ठमें स्थित होताहै १५३ इनसे आदि लेकर अनेकों दानहैं इस संसारमें अच्छीतरह कहनेको दोसौवर्ष में भी कोई नहीं समर्थ है १५४ मनुष्यों करके ब्रह्महत्या आदिक जितने पाप किये जातेहैं वे पाप नाश होजाते हैं तिससे दान करना चाहिये १५५ तीनमनुष्यों करके अपनी पुण्यसे जो दान दिया जाताहै तो जितना द्रव्य होताहै तिसदानका फलभी उतनाही मिलता है १५६ मनुष्योंकरके भगवान्की प्रीतिकेलिये जो दान दियाजाता है तिसका निस्सन्देह करोड़गुणा फल मिलताहै १५७ तिससे भक्तिकर्मसे युक्त बुद्धिमान् मनुष्य नारायणकी प्रीति के लिये दानदेवे १५८ तत्त्वदर्शियों ने तपस्यासे भी दानको श्रेष्ठ

कहाहै इससे बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे दानकर्म करै १५९ जो उत्तम मनुष्य निश्चय दान और तपस्या दोनों करताहै तिसके समान इस संसार में कोई नहीं है १६० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेसर्वदानमाहात्म्यंनामविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

अन्न और जलके दानका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! ब्रह्माजी के वचन सुनकर हरिशर्म्मा उत्तम ब्राह्मण फिर भक्तिसे ब्रह्माजीके नमस्कार कर बोले १ कि हे प्रभो ! आपने जितने बहुत दान कहे हैं वे दान किसको देने चाहिये यह मुझ से आप कहने के योग्य हैं २ तब ब्रह्माजी बोले कि सब वर्णोंका ब्राह्मण परमगुरुहै तिससे भक्ति और श्रद्धासंयुक्तो करके ब्राह्मणहीको दान देने चाहिये ३ क्योंकि सबदेवताओंके आश्रय और पृथ्वी में प्रत्यक्षदेव ब्राह्मणहै यह दुस्तर संसारसागर में दाताको तार देता है ४ तब ब्राह्मण बोले हे देवताओंमें उत्तम ब्रह्माजी ! आपने सब वर्णोंका गुरु ब्राह्मणको कहाहै तो तिनके बीच में कौन श्रेष्ठहै किसको दान दियाजाताहै ५ तब ब्रह्माजी बोले कि सब ब्राह्मण श्रेष्ठ और सदैव पूजने योग्यहैं हे उत्तम ब्राह्मण ! जे चोरी आदि दोषोंसे तप्त ब्राह्मण हैं ६ वे हमारे वैरी हैं दूसरोंके कभी नहीं हैं आचारहीन भी ब्राह्मण पूजने योग्य हैं परन्तु जितेन्द्रिय शूद्र नहीं पूजने योग्य हैं क्योंकि नहीं खानेके योग्योंके खानेवाली भी गौवें माता कहलाती हैं ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तुम्हारे स्नेहसे विशेष कर ब्राह्मणोंका माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ८ क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के ब्राह्मण गुरु हैं परस्पर पृथ्वी के देवता ब्राह्मण गुरु और पूजनेयोग्य हैं ९ हे उत्तम मनुष्य ! जो विष्णु की बुद्धिसे ब्राह्मणको पूजन करताहै तिसके उमर, पुत्र, यश और सम्पत्ति बढ़ती है १० जो मूर्ख मनुष्य पृथ्वीमें ब्राह्मणको मारता है तो भगवान् सुदर्शनचक्रसे तिसके मस्तकके काटनेकी इच्छा करते हैं ११ बुद्धिमान् मनुष्य फूल, दूध और देवताओंको हाथमें लियेहुए, तेल

देहमें लगायेहुए, १२ जल और देवता के स्थान में स्थित, ध्यान में चित्त लगायेहुए, देवों की पूजा करतेहुए, १३ दिशा फिरतेहुए, भोजन करतेहुए और सामवेदको गातेहुए ब्राह्मणके नमस्कार न करै १४ और जहां पर बहुतसे ब्राह्मण स्थित हों तो बुद्धिमान् मनुष्य प्रत्येक के नमस्कार न करै १५ नमस्कार करतेहुए ब्राह्मणको जो भक्तिसे नमस्कार नहीं करता है वह चाण्डाल के समान जाननेयोग्यहै और कभी नमस्कार के योग्य नहीं है १६ माता पिता प्रणाम करतेहुए पुत्रके नमस्कार नहींकरैं ब्राह्मणों से सब ब्राह्मण प्रणाम करने वाले नमस्कार के योग्यहैं १७ चतुर मनुष्य दोष करने वाले ब्राह्मण और गौवों से वैर नहीं करैं जे मोह से वैर करते हैं तिनके ऊपर भगवान् सदैव अप्रसन्न रहते हैं १८ जो मांगतेहुए ब्राह्मणों को कोपदृष्टि से देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी सुई चुभो देते हैं १९ मूर्ख जिस मुखसे ब्राह्मणों को डाटते हैं तिस मुखमें यमराजजी तपेहुए लोहे के दण्ड को देते हैं २० जिस घर में ब्राह्मण भोजन करता है तिस में आपही भगवान् रहते हैं और सब देवता, पितर और सुरर्षिभी रहते हैं २१ जो बुद्धिमान् मनुष्य कणमात्रभी ब्राह्मण के चरणजलको धारण करताहै तिसकी देहके सब पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २२ करोड़ ब्रह्माण्ड के बीचमें जितने तीर्थ हैं ते सब ब्राह्मणके दहने चरणमें स्थितहैं २३ जिसका मस्तक नित्यही ब्राह्मणके चरणजलसे सींचाजाताहै वह सब तीर्थोंमें स्नान करचुका और सब यज्ञोंमें दीक्षित होगया २४ और ब्राह्मणके चरणजल के धारण करनेहीसे तिसके ब्रह्महत्यादिक सब घोर पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २५ और परमक्लेश देनेवाली क्षयआदिक सब व्याधियां शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती हैं २६ ब्राह्मणके चरणोंके जे जल पितरों के लिये दिये जाते हैं तिनसे पितृ तृप्तहोकर जब तक चन्द्रमा और नक्षत्र स्थित रहते हैं तब तक वे स्वर्ग में स्थित रहते हैं २७ जो बुद्धिमान् ब्राह्मणके चरणोंको धोकर दूबसे पूजन करता है उससे संसार के स्वामी, सब देवों में उत्तम विष्णुजी पूजे जाते हैं २८ जो मनुष्य ब्राह्मणों के

चरण धोयेहुए जलको शिरसे धारण करता है तिसकी शाश्वती मुक्ति होती है यह मैं सत्यही सत्य कहताहूं २९ जो उत्तम मनुष्य ब्राह्मणकी प्रदक्षिणा कर वन्दना करताहै उसने सातोंद्वीपके पृथ्वी की प्रदक्षिणा करली है ३० जो ब्राह्मणके चरण धोकर फल और पानदेताहै तो चरण धोनेसे रोगी रोगसे, पापी पापसे और वन्धन से बाँधाहुआ बंधनसे छूटजाताहै नहीं पुत्र होनेवाली स्त्रियों के बहुत पुत्र होतेहैं और पुत्र मरजानेवाली स्त्रियोंके पुत्र जीतेहैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! ब्राह्मण के चरणोंके धोनेके सब पाप नाशकरनेवाले माहात्म्यको संक्षेप से तुमसे कहताहूं सुनिये पूर्वसमयमें पवित्रकुलमें उत्पन्न भद्रक्रिय नाम ३१।३४ ब्राह्मण हुआ है यह विष्णुजी की सेवामें परायण, वेदका जाननेवाला, दयासमेत, शांत, पिताकी भक्तिमें परायण, ३५ अतिथि और जातिकी पूजा करनेवाला था एकसमयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण देहमें तेललगाकर ३६ कपड़ालेकर तालाबमें स्नानकरनेको गया तो वहांपर सब शास्त्रके जाननेवाले, सब मनुष्यों के कल्याण में रत इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्नानकर तर्पणादिक किया फिर भगवान्‌के नामोंका कीर्तन करताहुआ ३७।३८ अपने घरमें आकर भगवान्‌की पूजामें परायणहुआ और अत्यन्त ठण्ढे जलों से अपने दोनों चरणों को और हाथों को धोकर सब स्नान की सामग्रियों को द्वारेपर स्थापित करदिया ३९।४० तब कोई कुत्ता अग्निके समान गरमी के घामोंसे तापयुक्त होकर वहीं आकर ४१ तिसी अत्यन्त ठण्ढे ब्राह्मण के चरणजल में सोरहा ब्राह्मण के चरणजल के स्पर्श से अत्यन्त पापी कुत्ता ४२ करोड़ जन्म के किये हुए सब पापों से छूटकर मन्दिर के द्वारमें लेटाहुआ प्यास से व्याकुल होकर ४३ जल मांगने लगा तब ब्राह्मणके नौकरोंने उसको मारा तो शीघ्रही कुत्ता वहीं पर मरगया ४४ ब्राह्मण के चरण धोये हुए जल से पापरहित होगया तब उस महात्मा को मूर्तिमान् ईश्वर की नाईं देखकर ४५ नम्रतासे तपस्वी ब्राह्मण नम्र होकर उससे बोले कि हे महाभाग ! तुम कौनहो किस कर्मसे दुःखितहो और अनेक प्रकारके दुःखोंसेयुक्त कुत्तेके कुलमें

उत्पन्न हुएहो ४६ ब्रह्माजी बोले कि तिस श्रेष्ठ ब्राह्मणके वचन सुनकर महायशस्वी कुत्ता अपनेसब वृत्तान्त को मूलसे कहने ल- गा ४७ कि मैं महाबलवान् शंखनाम सब पृथ्वी का राजाथा चार हज़ार वर्ष मैंने सब पृथ्वीकी पालनाकी है ४८ और सब वैरियोंको जीतकर अपने वशमें करलिया सब दानों को मैंनेदिये और अपनी जातिवालोंको पालन किया ४९ हे महाभाग! एक समयमें मैं कामके बाणोंसे युक्तहोकर किसी मनुष्यकी सुन्दरी स्त्री को बलसे हर लेताभया ५० तो इसी पापके प्रभावसे मेरी लक्ष्मी सब नाशहोगई तब मुझ महाबलीको सब मनुष्योंने निकालदिया ५१ तो राज्यभ्रष्ट होकर मैं वनके बीचमें स्थित होकर भूंख और प्याससे व्याकुल होकर नाशको प्राप्त होगया ५२ हे विप्रेन्द्र! फिर मैंने यमराजके पुरमें जाकर सुननेवालों के दुःख देनेवाले ब- हुत कालतक दुःख भोगकिये तिनको सुनिये ५३ अत्यन्त तपीहुई लोहकी शय्यामें तपीहुई, जलतीहुई अग्निशिखाकी पंक्तिके समान भयानक ताम्रमयी पृथ्वीको रमण करते भये ५४ तदनन्तर यम- राजकी आज्ञासे अत्यन्त भयंकर लोहेके खम्भ, जलतीहुई अग्नि से तप्तको आलिंगनकर स्थित होताभया ५५ और शीतकाल में यमराजके दूतोंने छूराके समान जलकी धाराओं से सींचा तथा और भी बड़े भारी दुःख यमराज के स्थानमें भोगे ५६ तदनंतर वारंवार पापयोनियों में जन्मलेकर मैंने बहुत काल बड़े दुःखोंको भोग किये ५७ अब आपके चरणों के जलके संसर्ग से पापरूपी रस्सीसे छूटकर योगियोंके भी दुर्लभ परमधामको जाताहूं ५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपही मेरे गुरु हैं महात्मा आपके नमस्कार है आपके प्रसाद से पापोंसे छूटकर मैं हरिजीके पुरको जाताहूं ५९ तब भद्रक्रिय बोले कि हे पूर्वजन्म के राजन्! राजाको सदैव नी- तिही करना चाहिये पुत्र भी दुष्टहो तो उसको भी त्यागकरे ६० जो नीतिका ग्रहण करनेवाला राजा होताहै उस को निश्चय वि- पत्ति नहीं होतीहै वह बहुतकालतक अकण्टक पृथ्वीको भोगकरता है ६१ जिस दुरात्मा राजा को नीति नहीं अच्छी लगती है वह

थोड़ेही कालमें निस्सन्देह लक्ष्मी से हीन होजाता है ६२ उमर, बल, यश, मित्र, विजय और सुखकी इच्छा करनेवाला पण्डित राजा सदैव अच्छे मंत्रियों को रक्खे ६३ बुद्धिमान् मनुष्य दुष्ट राजा का अनादरकर उस को छोड़देते हैं इस पण्डितों से हीन सभा में नीति बलवान् नहीं होतीहै ६४ नीति के नाश होनेमें राजा के शीघ्रही खज़ाना, सेना और वाहनोंसमेत राजलक्ष्मी नाश होजाती हैं ६५ राजा ब्राह्मण, ज्योतिषी, वैद्य तथा बान्धवों से कभी वैर नहीं करैं तबही उनके कल्याण होते हैं ६६ ज्योतिषी से वैर करनेवाले राजा की लक्ष्मी नाश होजाती है वैद्यका वैरी आयु से हीन हो जाता है जातिवालों से वैर करनेहारा कुलहीन होजाता है और ब्राह्मण का वैरी सब दुःख सेवन करता है ६७ राजालोग पिता कहाते हैं और देशवासी सब पुत्र कहाते हैं तिससे राजा औरसपुत्रों की नाईं प्रजाओंकी पालना करते हैं ६८ राजा अपने पुत्र की नाईं पुरके मनुष्यों में स्नेह करैं जे अत्यन्त पापी राजा प्रजाओं को पीड़ा देतेहैं ६९ उनके शिरमें विपत्तिस्थित तत्त्वदर्शियों करके जाननी चाहिये ज्ञानी राजा जैसे प्रजाओं को पालन करते हैं ७० तैसेही तिनको देवोंके स्वामी हरिजी निरन्तर पालन करते हैं प्रजाओं का पालन और दण्ड ये दो काम राजाके शुभके देनेवाले हैं ७१ इन दोनों कामों से जे रहित राजाहैं ते अधम राजा जानने चाहिये दुष्टोंको दण्ड और सज्जनों की रक्षा करनेवाले राजा बहुत कालतक पृथ्वी में आनन्द करते हैं राजा न्यायसे इकठे कियेहुए द्रव्यकी यत्नसे रक्षा करै ७२। ७३ दुर्वृत्तराजा विपत्ति में विस्तार नहीं करै कल्याण की इच्छा करनेवाले राजा शुभ अशुभ अपनी राज्य को ७४ नित्यही वेगयुक्त होकर दूतोंके नेत्रसे देखते हैं जबतक परचक्र का डर नहीं आवे तब तक डरकी चिन्तना करै ७५ डरके प्राप्त होनेमें राजा निर्भय रहे जाति, मित्र, पुत्र वा मंत्री में ७६ मुखसे गंभीरता करै मनसे केवल प्रेम रक्खे क्योंकि मंत्री, जातिवाले, पुत्र, प्रजा तथा भाई ७७ गंभीरताहीन राजाको राजा की नाईं नहीं मानते हैं पहले दूर नहीं स्थित होते हैं तथा आगे

भी नहीं होते हैं ७८ गंभीरताहीन राजाके मनुष्य आश्रयकी इच्छा नहीं करते हैं बहुत काल राज्यकी इच्छा करनेवाला राजा सब राज्यमें वृद्धिके लिये एक मंत्रीकरै अधिक नहीं करै अत्यंत बुद्धिवृत्तिवाले दासोंकी सम्पदा को हरै ७९। ८० तिससे राजासभामें दूसरे दासको युक्त करै मूर्ख, स्त्रीसे जीतागया, गीत और बाजाओंमें सदैव रत ८१ और घोड़ों से हीन राजा सहसासे विपत्ति को प्राप्त होताहै आचार का ग्रहण, सत्य, अपने वाक्य की पालना ८२ और गम्भीरता ये राजाओं के लक्षण हैं वह कैसे राजा है जो प्रतापसे हीनहै ८३ और जिसने दूसरेकी पृथ्वी नहीं जीतली है जीतीहुई दूसरे की पृथ्वीमें जितनेपैग राजा चलता है ८४ तो प्रत्येक पैगमें नाशरहित अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै पराई पृथ्वी के जीतने की आकांक्षा करनेवाला राजा जो लड़ाई में राजाओं से मारागया ८५ तब भी सब पापों से छूटकर परस्थान को जाता है और संग्राम में जीतपानेवाला राजा परमपदको पाताहै ८६ और संग्राम में मृत्यु प्राप्त होनेवाला स्वर्ग में इन्द्र की सम्पदा को प्राप्त होताहै शस्त्र छोड़ेहुए, सत्वरहित, भागने में परायण ८७ योधाको जो राजा मारताहै तो वह नरकमें जाता है हे उत्तम ब्राह्मण! भागनेवाला और भागनेवालेका मारनेवाला ८८ ये दोनों अत्यन्त दुःसह नरक में स्थित होतेहैं और साहसयुक्त योद्धा जो युद्ध करताहै और तिसके मारनेवाला ८९ ये दोनों जबतक चंद्रमा और सूर्य स्थितरहतेहैं तबतक स्वर्गमें स्थित रहतेहैं यहांपर बहुत कहने से क्याहै संक्षेपसे मैंने कहा है ९० प्रजाका पालन करनेवाला राजा कभी कष्ट नहीं पाताहै ब्रह्माजीबोले कि हे ब्राह्मण! पापरहित तिसराजाके इसप्रकार कहनेमें ९१ तिसके ऊपर आकाशसे बड़ीभारी फूलोंकी वर्षाहुई तदनन्तर महात्मा केशवजी के दूत राजहंसयुक्त सुन्दर रथलेकर आये और सोनेके बनेहुए दिव्य रथपर तिसको चढ़ाकर ९२। ९३ विष्णुजीके मन्दिरको जातेभये ब्राह्मणके चरणोंके जलका इसप्रकारका माहात्म्य तुमसे कहा कि जिससे राजा पापरहित होगयाहै ९४ तिसको भक्तिभाव

से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै यह तुम्हारे जो सुननेको वाञ्छित था वह सबमैंने कहा ९५ हे ब्राह्मण! भगवान्के स्थान को जावो तुम्हारा कल्याणहो तब हरिशर्मा बोलेकि वड़ीभूंखकी अग्निसे मेराशरीर जलाजाताहै ९६ हे भगवन्! हे देवोंके स्वामी! किस उपायसे मेरी भूंखकी शांतिहोगी यहमुझसे कहिये क्योंकि मैं आपका भक्तहूं और आप भक्तवत्सल हैं ९७ मैं नित्यही दग्ध भूंखकी अग्नियोंसे अत्यन्त दुःखको प्राप्तहूं तब ब्रह्माजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिस शरीरको तूने निरन्तर भोजनोंसे पुष्ट किया है तिसी शरीरके मांसोंको भोजन कीजिये जे मनुष्य पराये भोजनसे अपनी तृप्ति करतेहैं ते परलोकमें अपने शरीरोंके मांसों को भोजन करते हैं ९८। ९९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! श्रेष्ठब्राह्मण ब्रह्माजीके निष्ठुर वचन सुनकर फिर कोमल अक्षर वाले वचनोंसे तिन देवकी स्तुति करताभया १०० कि हे देव! हे देवों केस्वामी! हे शरणागतोंके पालन करनेवाले! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! प्रसन्न हूजिये और सब दोषोंको क्षमाकीजिये आपके नमस्कारहै १०१ हे प्रभो! मलमूत्रसे युक्त देहोंके धारण करनेवाले मनुष्योंके सब दोषही होतेहैं कुछगुण नहीं होतेहैं १०२ मुझ मोहयुक्तने जो दूषण कियाहै तिसके क्षमा करनेके आप योग्यहैं क्योंकि सज्जन लोग शरणमें आयेहुए मनुष्योंके दोषको नहीं देखतेहैं १०३ हे ब्रह्मन्! अपनी देहके मांस भोजन करनेमें मैं नहीं समर्थहूं देहधारियोंके योग्यको कहिये जिससे संतुष्टि होजावे १०४ जब ब्राह्मण ने भक्तिसे इसप्रकारके वचनकहे तब सब जाननेवाले, दयासमेत, ब्राह्मणोंके प्यारे ब्रह्माजी बोले १०५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शोक मतकरो मेरेशुभवचनको सुनो जिसप्रकार से इस समयमें यहांपर अन्नको प्राप्तहोगे १०६ आत्मासे पुत्र होताहै जैसे आत्मा तैसेही पुत्र होता है तिस से पुत्रके कियेहुए कर्म को निश्चय पितर पातेहैं १०७ तुम बहुतकालतक भगवान्के अत्यन्त सुन्दर स्थानमें स्थित होगे जब ब्रह्माजीने इसप्रकार उससे कहा तब भूंखसे व्याकुल ब्राह्मण १०८ स्वप्नमें पुत्रको दर्शनदेकर उससे बोले कि हे श्रेष्ठपुत्र!

तुम दीक्षायुक्त हो तुम्हारा परमकल्याण होवे १०९ हे सौम्य! हे पुत्र! तुम्हारा मैं पिताहूं मेरे दुःख को सुनिये तपस्या के प्रभाव से मैंने परमधाम पाया है ११० परन्तु भूखकी अग्निसे सदैव क्लेश पाताहूं हे पुत्र! जो मुझ में तुम्हारा पिताका स्नेह इस समय में हो १११ तो हे ब्राह्मण! अन्न और जल मेरे लिये दीजिये जो कुछ पुत्र पृथ्वी में पिताकेलिये देतेहैं ११२ तिसको पितृलोग पातेहैं जिससे कि पुत्र पिताकी देहसे उत्पन्न हैं पूर्वसमय में श्रेष्ठ भक्ति से मैंने भगवान् को पूजा है ११३ गीत, बाजा, नाच, सुन्दर स्तोत्रों केपाठ, चन्दन, धूप, नैवेद्य, घीसे पूर्णदीप,११४ पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ध्यान और आवाहन आदिकों से हरिजीकी पूजा तो कियाहै परन्तु मुझ कृपणने संसार के स्वामी, पाप हरनेवाले को नैवेद्य में भी कभी अन्न नहीं दिया है और अतिथि की भी जल और अन्न से कभी पूजा नहीं की है ११५।११६ जातिवाले और मांगनेवालों की संतुष्टि मैंने नहीं की हे पुत्र! तिसी कर्मसे नारायण के घरमें भी ११७ भूखरूपी अग्निसे तप्तहोकर प्रतिदिन क्लेश पाताहूं इससे अन्न और जलको गरीब ब्राह्मण को दान ११८ देकर शीघ्रही प्राणोंकी रक्षा कीजिये अथवा निष्ठुरता जो तुम नहीं करोगे ११९ तो भगवान् के मन्दिर में निश्चय अपने मांसोंको भोजन करूंगा तदनन्तर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुयुक्त वह ब्राह्मण १२० दीक्षित पुत्र से यह कहकर सहसा से अन्तर्द्धान होगया तब निर्मल प्रातःकाल सूर्यके उदयहुए में १२१ स्वप्न में जो पिताने कहा था तिसको दीक्षित चिन्तना करनेलगा कि अपने कर्मके दोषसे परलोक में मेरा पिता १२२ भूखसे सब अंगदग्ध होकर प्रतिदिन क्लेश पाता है मुझ मन्दबुद्धि श्रेष्ठ कृपण मनुष्य को धिक्कार है १२३ हे उत्तम ब्राह्मण! मैंने पिताको पुण्य से कुछ नहीं दियाहै इस प्रकार दीक्षित बहुत प्रकार से चिन्तनाकर १२४ श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर ब्राह्मणों को दान देताभया तिसी पुण्य के प्रभाव से प्यास और भूखसे रहित होकर उसका पिता १२५ भगवान् के स्थान में जितने काल स्थितरहा तिसको सुनिये चारोंयुग जब ह-

ज़ारबार बीतते हैं तब ब्रह्मा का एक दिन होता है १२६ तिसी दिन में चौदह मनु होते हैं और चौदहही इन्द्र होते हैं १२७ ये अपने अपने शुभ विषयों को एकही दिनमें अलग अलग भोग करतेहैं १२८ तिसपीछे चौदहों इन्द्र और मनु नाश होजाते हैं तहां अत्यन्त प्रकाशित, सुन्दर, सब सुखदेनेवाले विष्णुलोक में हरिशर्माजी के स्थित होतेहुए ब्रह्माजी का दिन बीतगया इतने कालतक यह ब्राह्मण मनोरम भोगोंको भोगकर १२९। १३० परमज्ञान पाकर भगवान् की देहमें प्रवेशकर जातेभये व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! अन्न और जलके समान दान संसार में नहीं है १३१ इनके देनेसे सब दानोंका फल मिलताहै इसमें पात्रकी परीक्षा और कालका नियम कुछ नहीं तत्त्वदर्शियोंने कहाहै इससे अन्न और जलके दान सदैव करने चाहिये १३२।१३३ जे मनुष्य परमआदर से अन्न जल तथा ब्राह्मणों के माहात्म्य को पढ़ते हैं ते अन्न और जलके दान के फलको पाकर अन्तसमय में सुखदायी नारायणजी के स्थान को जातेहैं १३४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे अन्नजलदानमाहात्म्यंनाम एकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय॥

एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिबोले कि हे गुरो! गंगाजीका शुभमाहात्म्य, विष्णुजीकी पूजाकाफल, अन्न और जलका उत्तम माहात्म्य १ और ब्राह्मणके चरणजलका पाप नाशनेवाला माहात्म्य इतिहाससमेत आपके प्रसादसे सबमैंने सुना२अब हे मुनिशार्दूल! सब पापोंके नाश करनेवाले एकादशीके सब फलको आदरसमेत सुनना चाहता हूं ३ किससे एकादशी श्रेष्ठहै तिसकी क्या विधिहै कबकरे क्याफल होताहै यह सबमुझसे कहिये ४ हे अच्छेगुणोंके समुद्ररूप! तहांपर कौन देवता अत्यन्त पूज्यहैं और नहीं करनेसे क्या दोष होताहै यहमुझसे आप कहनेके योग्य हैं ५ व्यासजीबोले कि हे श्रेष्ठ ब्रा-

वाले विष्णुजी को मैंने पीड़ित कियाहै अकेले मैं इस पापके पार नहीं जासक्ताहूं ९३ जिन आपके प्रसन्न होनेमें पापीभी देवताओं से वन्दित होजाते हैं सोई आप मेरी दीहुई व्यथासे व्यथित हुए हैं हा! मैं मारागयाहूं ९४ जिनको ब्रह्मादिक देवताभी अत्यन्त भक्तिसे प्रसन्न कराते हैं तिनके हृदयमें मुझ पापीने पीड़ादी है ९५ तपस्या, जप, घर और मेरे जीनेसे क्याहै धर्म, अर्थ, काम और मोक्षोंके एक दाताको मैंने व्यथासे व्याकुल करदिया है ९६ ऐसा कहकर वह ब्राह्मण विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये तिसी फरसे से अपना कण्ठ काटने का मन करताभया ९७ तब तो तिस ब्राह्मण की दृढ़ भक्ति जानकर दयालु भगवान् भक्तों के प्यार करनेवाले शीघ्रता से तिसके हाथसे फरसे को लेलेकर ९८ बोले कि हे वत्स! तू कैसे यह अत्यन्त दारुणकर्म करता है आत्महत्या करनेवाले पुरुषों के ऊपर कभी मैं प्रसन्न नहीं होताहूं ९९ हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्नहूं डरो नहीं जो तुम्हारे मन में वर्तमान हो वह वरमांगो १०० तब ब्राह्मण बोले कि हे परमेश्वर! हे प्रभो! मैं यह वर मांगताहूं कि मैंने बड़ी भारी यह आपको व्यथा दीहै सो आपके शरीरमें न रहे १०१ तब श्रीभगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! हे वत्स! तूने अज्ञानसे यहकर्म कियाहै इससे भारीमें तेरा अपराध हम क्षमा करेंगे १०२ तू भक्तों में श्रेष्ठ है इससे नित्यही तेरी रक्षा करनी योग्यहै हे वत्स! तुम्हारे सहस्रों के दोषोंको मैं दिन दिनमें नहीं मानताहूं १०३ तिसपर भी मेरी बड़ीभारी भक्ति तुम्हारे सदैव बढ़े तिससे हे वत्स! इससमय मैं तुमसे ऋणहीन होजाने की इच्छा करताहूं १०४ इससे सब भय छोड़कर मेरे आगे वरमांगो तब ब्राह्मण बोला कि हे सब देवताओंमें श्रेष्ठ! हे हरिजी! आपमें मेरी जन्म जन्ममें दृढ़ भक्ति होवे और वरोंसे क्याहै व्यासजी बोले कि भगवान्की नम्रता कहनेवाले ब्राह्मणके ये वचन सुनकर १०५। १०६ प्रसन्न होकर विष्णुजी अपने कण्ठ में स्थित मालाको देकर तिस ब्राह्मण को इस प्रकार अपनी चार लम्बी भुजाओं से आलिंगन करते भये

जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है फिर उससे कोमल वचन बोले कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तहौ इससे मेरे प्रसादसे १०७। १०८ थोड़ेही समयमें तुम्हारा सब कल्याण होगा हे सज्जनों में श्रेष्ठ! क्रियायोगसे पीपलरूप मुझको नित्यही १०९ आराधन करो तुम्हारे सब वांछितको मैं सिद्धकरूंगा ऐसा कहकर केशवजी तिस श्रेष्ठब्राह्मणको फिर आलिंगनकर ११० सहसासे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तब वैष्णवों में उत्तम ब्राह्मण विष्णुजी के कण्ठकी माला पाकर १११ आत्माको कृतकृत्यकी नाईं मानकर अपने घर में स्थित रहतेभये तदनन्तर तिस ब्राह्मणके घरमें कुबेरजी ११२ भगवान्की आज्ञासे आपही बहुत द्रव्य बरसतेभये और विश्वकर्मा कारीगरने महल बनादिया ११३ तहांपर श्रेष्ठ ब्राह्मण नारायणजी की आज्ञासे जयंतकी नाईं दास और दासियोंसे युक्त, अनेक वस्तुओंसे भूषित होकर रहतेभये और हाथी और घोड़ोंसे युक्त तिसका मन्दिर शोभित होताभया और तिसके नष्टहुए बांधव फिर प्राप्त होतेभये ११४।११५ और अनादर करके चलीगई तिसकी स्त्री फिर तिसके स्थानमें प्राप्त होती भई उसके मरेहुए पुत्रभी भगवान्की कृपासे ११६ फिर होतेभये और वह स्त्री भी स्वामीकी भक्तिमें परायणहुई तब ब्राह्मण पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर बहुत काल सब भोगोंको भोगकर ११७ स्त्रीसमेत आयुके अन्तमें मोक्षको प्राप्त होजाताभया व्यासजी बोले कि वृक्षोंमें श्रेष्ठ पीपलका वृक्ष साक्षात् आपही विष्णुरूप है ११८ तिसकी भक्ति करनेवाले पुरुषोंका कहीं अशुभ नहीं होता है हे मनुष्यों में उत्तम! जो विष्णुजीको ध्यानकर पीपलको सेवता है ११९ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देतेहैं १२०॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे अश्वत्थमाहात्म्येद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवाँ अध्याय॥

ज्येष्ठ महीनेसे लेकर कार्तिक महीनेतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजीबोले किहे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! ज्येष्ठ महीनेमें भग-

वान् जनार्द्दनजीको भक्तिभावसे ठण्ढे जलोंसे स्नान कराकर पूजन करै १ सुगन्धित उबटन, आंवला और सुगन्ध तेल हरिजी को गरमीके समयमें दिन दिनमें देवे २ सुवासित,ठण्ढे, अत्यन्त मनोरम स्थान में जनों के मण्डपमें प्रतिदिन लक्ष्मीपतिजी को स्थापितकरै ३ हे विप्रेन्द्र ! भयानक देश, धूमसमेत इन्धन का स्थान और सवारिके घरमें भगवान्‌को न स्थापितकरै ४ सफेद,दीर्घ चामरों से ज्येष्ठमास में भगवान् के डुलावे तो प्रसन्न होकर भगवान् क्या नहीं देतेहैं ५ हे सज्जनों में श्रेष्ठ ! ज्येष्ठमें मयूरकी पूंछके पंखोंसे डुलायेगये भगवान् थोड़ेही काल में सब मनोवांछितको देते हैं ६ ताड़के पंखेकी हवा और पवित्र कपड़ेकी हवा जिन्होंने ग्रीष्मऋतुमें विष्णुजीकेकी हैवे सब स्वर्गको जावेंगे ७ जो गरमी में सुगन्धयुक्त कर्द्दम और हरिचन्दनसे हरिजीकी देहको लेपनकरता है वह भगवान्‌की देहमें प्रवेश करताहै ८ गरमीके आगमनमें फूलों, फूलों के बगीचे तथा तुलसी के वनमें धीर पवनवाले देशमें संध्या के समयमें जो विष्णुजी को स्थापित करताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है जिसने ज्येष्ठमहीने में पाटल के फूलों से विष्णुजी को अलंकृत किया वह हज़ार अश्वमेध का करनेवाला होता है ग्रीष्म ऋतुमें जो मनुष्य भगवान्‌को मोतियोंका माला देताहै ९। १०। ११ तो भगवान् उसको जन्म जन्म में राज्य देते हैं जो ग्रीष्मऋतु में श्रीकृष्णजी को मणियों की माला से शोभित करता है १२ तिसके पुण्य के फलको मैं कहताहूं सुनिये जबतक ब्रह्मा इस सब संसार को रचते हैं १३ तबतक मणियों की मालासे भूषित होकर वह विष्णुजीके पुरमें स्थित होताहै सोने तथा चांदीके गहनों से १४ ग्रीष्म में कृष्णजी को जो भूषित करता है वह भी तिसीफलको प्राप्त होताहै जो देवोंके देव हरिजी को गंडूकसमेत विचित्र शय्या देता है वह कभी दुःखी नहीं होताहै ग्रीष्मसमय में हरिजीको गरुयेकपड़े न देने चाहिये पवित्र महीनकपड़े देवे जो हाथ के तोड़े, सुन्दर, सुगन्धित फलोंसे भगवान् का पूजन करता है १५। १६। १७ वह अन्त समयमें इन्द्र के पुरमें जाकर आनन्द

से अमृत पीताहै प्रियालों के सुन्दर फलोंसे जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है १८ वह भी तिसीफलको प्राप्त होता है और बहुत कहनेसे क्या है ग्रीष्म में जो वैष्णव मनुष्य श्रद्धासे अनेकप्रकारके व्यंजनसंयुक्त अत्यन्त शीतल यवागू हरिजीको देताहै तो वहभी तिसी फलको प्राप्त होताहै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आषाढ़ महीने में देवदेव, संसारके गुरुजीको १९।२० पण्डित भक्तिसे दहीसे स्नान कराकर पूजनकरै तो वह फिर माताके स्तन नहीं पीताहै २१ हे विप्रर्षे! आषाढ़में मेघों के समान श्यामवर्ण हरिजीको आराधन कर मनुष्य श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोताहै २२ जो कदम्बके फूलोंकी मालाओंसे अग्निके सदृश मण्डप करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है २३ हे ब्राह्मणोंमें उत्तम! सुगन्धित केतकीके फूलोंसे पूजितहुए लक्ष्मीपतिजी मनुष्योंके सबदुःखोंको नाशकरते हैं २४ कटहलके सुन्दर पके और घीसे मिले हुए फलोंसे पूजित हुये भगवान् विष्णुजी उत्तम ऐश्वर्यको देते हैं २५ हे उत्तम ब्राह्मण! वैष्णव मनुष्य आषाढ़के महीने में हरिजीको श्रद्धासे दही अन्न प्रतिदिन मुक्ति की इच्छा करदेवे २६ जो वैष्णव मनुष्य कृष्णजीको माखनदेताहै वह सब पापोंसे शुद्धहोकर ब्रह्मलोकको जाताहै २७ जो मनुष्य शेफालिका और यूथिका के फूलोंसे परमात्माजीको पूजन करता है वहपरमपदको जाताहै २८ फूलीहुई सुगन्धित मालतीके फूलों से जो हरिजीको पूजन करता है तो तिसपुण्य से उसका सो पुण्य होताहै जिससे नहीं होवे २९ मनुष्य पृथ्वी में कुन्द और बकुल के फूलों से संसार के बन्धु जनार्दनजी को पूजन कर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै ३० महामहा तथा कुरुबक के फूलहुये फूलों से जो हरिजीको पूजन करताहै उस मनुष्य पर भगवान् सदैव प्रसन्न रहते हैं ३१ जो मनुष्य सैरीयक, प्रसू और करवीर के फूलों से विष्णुजी को पूजन करता है वह भगवान् के समीप प्राप्त होता है ३२ हे विप्रर्षे! जो श्रावण में घीसंयुक्त लाजाओं को हरिजीको देताहै तिसके घर में सर्वतोमुखी लक्ष्मी जी बसती हैं ३३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य भादोंके महीने में रोगरहित, धर्म, अर्थ,

काम और मोक्षके देनेवाले नारायणजी को श्रद्धा से पूजनकरै ३४ सब उपद्रवोंसे हीन, नवीनबनेहुए स्थान में कमलनयन, जनार्दन, भगवान्‌जी को स्थापितकरै ३५ मनुष्य हरिजीको डांस, मसा और मक्खी आदिकों से युक्त पुराने स्थान में नहीं स्थापितकरै ३६ बुद्धिमान् मनुष्य कीचड़समेत, द्वारगिरेहुए, भीतगलीहुई इस प्रकार के घरमें वर्षाऋतु में परमेश्वरजी को नहीं स्थापनकरै ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मनुष्य विष्णुजीके स्थान में विचित्र चन्द्रातप करता है वह विष्णुजीके लोकको जाताहै ३८ पूजा के समय रात्रिमें भगवान् के मन्दिर में अनेकप्रकार की धूपोंसे डांस और मसों को निवारणकरै ३९ वर्षाऋतु में मसारिकाओं से आच्छादित कर मंचपर सोनेवाले विष्णुजी को रात्रिमें सुन्दर मन्दिर में स्थापनकरै ४० भादोंके महीने में मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य नवीन सुगन्धित कह्लारके पत्रोंसे भगवान् को दिनदिन में पूजनकरै ४१ भादोंमें जनार्दनजी को केतकी के फूलोंसे नहीं पूजन करना चाहिये क्योंकि इस महीने में केतकी मदिराके समान होतीहै ४२ जो पकेहुए सुन्दर तालके फलोंसे भगवान् को पूजन करता है वह गर्भवास के महादुःख को फिर नहीं प्राप्त होताहै ४३ जो मनुष्य घी और दूधसे संयुक्त पकेहुए तालके फलको श्रद्धासे भगवान् को देता है वह हरिजीके मन्दिर को जाता है ४४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वैष्णव मनुष्य भादों के महीने में हरिजी को घीसमेत तालपिष्टक केवल प्रीतिके हेतु देवे ४५ हे विप्र! मोक्ष की इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य भादोंके महीनेमें शाक को न खावे और रात्रिमें भोजन न करै ४६ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! कुंवारके महीनेमें पूर्वाह्णके समय क्लेश नाशनेवाले भगवान्‌को जो मनुष्य जलदेतेहैं ४७ उस को लक्ष्मीपतिजी अमृतकी नाईं ग्रहण करते हैं और मध्याह्न में जो चक्रपाणिजी को जल दियाजाता है ४८ उसको भी अमृत ही की समान भगवान् ग्रहण करतेहैं अपराह्ण में जो गोविन्दजी को जल दियाजाता है ४९ वह रक्तके सदृश होताहै इससे हरिजी उस को नहीं ग्रहण करते हैं इससे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पूर्वाह्ण में भ-

गवान् को पूजनकरै ५० तो भगवान् की दयासे सब कामनाओं को प्राप्तहोवे हे विप्रेन्द्र! एक कपड़े से हरिजी का पूजन न करै ५१ वा करै तो ऐसी पूजा को केशवजी नहीं ग्रहण करते हैं विना धोये कपड़ेसे जो भगवान् की पूजा करता है ५२ तो वह पूजा विफल होतीहै और विष्णुजी प्रसन्न नहीं होतेहैं जे मनुष्य भगवान् की विना शिखाबांधेहुए पूजा करते हैं ५३ वे पूजा के फलको नहीं प्राप्त होतेहैं यह पूजा बलिग्राह्य होती है और विना संस्कार किये हुए घरमें भगवान् की पूजा कीजावे ५४ तो यह भी पूजा निश्चय बलिग्राह्य होती है स्नान, देवपूजन, दान और पितृपूजन ५५ चतुर मनुष्य तिलक के विना न करै विना तिलक के जो पुण्यकर्म किया जाता है ५६ वह सब भस्म होजाताहै और करनेवाला नरक को जाताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शंख, चक्र, गदा और कमल से जिसका शरीर चिह्नित दिखलाई देताहै वह आपही भगवान् जानने योग्य है और जो वैष्णव दक्षिणभुजा में शंख और कमल लिखता है ५७।५८ और बाईंभुजा में चक्र और गदा लिखता है वह निस्सन्देह विष्णुही है जो दहिनी भुजा में शंखके ऊपर कमल लिखता है ५९ तिसके सब पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं और बाईंभुजा में चक्र के ऊपर जो गदा लिखता है ६० तिसकी इन्द्रादिक देवता वन्दना करते हैं जो पण्डित अपने माथे में भगवान् के दोनों चरणों को लिखता है ६१ तिसको देखकर पापीभी पापसे छूट जाताहै जो श्रेष्ठ वैष्णव अष्टाक्षर महामंत्र,मत्स्य और कच्छपजी को हृदय में लिखता है वह तीनोंलोकोंको पवित्र करता है जिसका शरीर दिनदिन में कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित होता है ६२।६३ तिसको कृष्ण जगन्नाथजी परमपद देतेहैं कृष्णजीके अस्त्र से चिह्नित देहवाला मनुष्य शुभ वा अशुभ जो कर्म करताहै वह सब नाशरहित होताहै दानव,राक्षस,भूत,वेतालक,६४।६५ पिशाच,सर्प, यक्ष,विद्याधर,किन्नर, गुह्यक, ग्रह,बालग्रह, ६६ कूष्माण्ड,डाकिनी तथा और विघ्नकारक सब डरसे कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नितको देखकर भागजाते हैं ६७ सिंह और सिंहिनियां तथा औरभी वनवासी

कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित को देखकर डरसे भागजाते हैं ६८ और कामलाआदिक देहके गिरानेवाले महारोगभी भाग जाते हैं जो मनुष्य कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाले को भक्तिसे देखता है ६९ वह कृष्णजी के दर्शनके तुल्य फलको प्राप्त होताहै जो कुंवारमें त्रिपत्रीकृत दूबों से हरिजीको पूजन करता है ७० तिसकी दूब की नाईं अविच्छिन्न सन्तान वर्तमान होती है कुंवारके महीने में जो भगवान्‌को कर्कटी के फलको देता है ७१ तिसके हृदयमें कभी शोक नहीं होताहै और सब मासोंमें उत्तम शुभ कार्तिक के महीनेके प्राप्त होनेमें ७२ बुद्धिमान् मनुष्य दामोदर देवदेवजी को भक्तिसे पूजन करै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! कार्तिक मासमें विष्णुजी की प्रसन्नताके हेतु ७३ यथोक्तविधिसे प्रातःकाल स्नानकरै कार्तिक महीने में जो मांस और मैथुनको त्याग करताहै ७४ वह जन्म जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुलाराशिके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान ७५ हविष्य-भोजन, ब्रह्मचर्यरहना ये महापापोंको नाश करतेहैं और जो कार्तिक महीने में मांसखाता और मैथुन करता है ७६ वह जन्मजन्म में गांवका सुअर होता है वैष्णव मनुष्य दूसरीवार भोजन, पराया अन्न और तेलको ७७ कार्तिक महीने के प्राप्तहोनेमें यत्न से छोड़देवे आकाशमें भगवान्‌को जो दीप देताहै ७८ हे ब्राह्मण! तिसके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ब्रह्महत्यादिकक्लेश देने वाले पापोंसे छूटकर ७९ भगवान्‌के पुरमेंजाकर करोड़युगपर्यन्त वह मनुष्य स्थित होता है प्रकाशित दीपको इन्द्रादिक देवता आकाशमें ८० देखकर प्रसन्न होकर सब परस्पर यह कहते हैं कि यह पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ, भगवान्‌के पूजन में तत्परहै ८१ जोकार्तिकके महीनेमें भगवान्‌को दीपदेताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं ८२ जो कार्तिक के महीने में भगवान् के मन्दिरमें अक्षय दीप देताहै वह मनुष्य दिनदिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८३ जो मनुष्य कार्तिक में लाख तुलसीदलोंसे हरिजीको पूजताहै वह एकलाख अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता

है ८४ और जो लाख बिल्वपत्र से नाशरहित विष्णुजीको पूजन करता है वह भगवान्‌के प्रसादसे परममोक्षको प्राप्त होताहै ८५ जो कुछकार्त्तिकके महीनेमें विष्णुजीको उद्देश कर दिया जाताहै वह सब नाशरहित होता है यह मैं सत्यही कहताहूं ८६ जो कार्त्तिक के महीने में घीसे युक्त सुरपत्रको दिनादिनमें वैष्णवको देताहै तिसकी विष्णुजीके पुरमें स्थिति होतीहै ८७ जो सफेद वा कालेफूले कमलके पत्रसे भगवान् को पूजन करता है तिसका पृथ्वीमें क्या दुर्लभ है ८८ जिस श्रेष्ठब्राह्मण ने कार्त्तिकके महीनेमें दैत्योंके जीतने वाले,हरि, विष्णु जीको कमल न दिया उसने कुछ न किया ८९ एकही कमल लाकर जो भगवान्‌को देताहै तिसको लक्ष्मीके पति भगवान् विष्णुजी क्या नहींदेते हैं ९० कार्त्तिक के महीनेमें कमलों से जिसने हरिजीको नहीं आराधन किया तो जन्मजन्ममें उसके घरमें लक्ष्मीजी नहीं स्थित होतीहै ९१ जो केशव महात्माजी को कमलके बीज देता है वह प्रत्येक जन्ममें शुद्धब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होताहै ९२ और ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होकर चारों वेदों का मित्र, धनवान्, बहुत पुत्रवाला और कुटुम्बों का पालनकरनेहारा होताहै ९३ हे जैमिनि ! कमलके समान फूलनहीं है जिससे गोविन्दजीको पूजनकर पापी भी मोक्षको प्राप्त होता है ९४ कमल के फूलका माहात्म्य विशेषकर मैंनेकहा अब हे श्रेष्ठब्राह्मण ! इतिहाससमेत सावधानहोकर सुनिये ९५ एकप्रजा नाम ब्राह्मण सब शास्त्रका जाननेवाला हुआ जिसकामन भगवान्‌के चरणकमल में भौंरेकी नाईं सदैव स्थित रहताथा ९६ हे श्रेष्ठब्राह्मण ! सदैव वह देवता, ब्राह्मण और गुरुओं की पूजा सैकड़ों कार्यों को छोड़कर करताथा ९७ पराई द्रव्यको विषके समान और पराई स्त्रियों को माताके सदृश और शत्रुकोभी मित्रके समान समझताथा ९८ यह परमार्थका जाननेवाला ब्राह्मण आयेहुए याचक अतिथि श्रेष्ठब्राह्मणको देखकर बड़ेमानको न प्राप्त होताथा ९९ घोर, अपारसंसारसागरके तरने की इच्छा करने वाले तिसने सब यज्ञ और सब व्रत करलिये १०० एक समयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण भगवान्‌की भ-

त्रिमें जागरणकरै और मन से भगवान् को ध्यानकरै १३९ और एकादशी में वारंवार प्रदक्षिणा कर पृथ्वी में दण्ड की नाईं गिर कर भगवान् के नमस्कारकरै १४० तदनन्तर भक्तियुक्त व्रत करनेवाला निर्मल प्रातःकाल हुए पंचमहायज्ञ कर दूधसे भगवान्को स्नानकराकर पूजनकरै १४१ फिर अपनीशक्तिसे व्रतकरनेवाला मनुष्य ब्राह्मणको दक्षिणादेवे फिर द्वादशीमें पारणकरै १४२ जो द्वादशी तिथिको लांघकर पारण करताहै तिसकी करोड़जन्मकी पुण्य इकट्ठीकीहुई नाशहोजातीहै १४३ व्रतकेफलकी इच्छा करने वाले बुद्धिमानोंको द्वादशीतिथिमें पारण करना चाहिये त्रयोदशीमें कभी न करना चाहिये १४४ हे ब्राह्मण ! व्रतके दिनमें व्रत केफलकी इच्छा करनेवाला वैष्णवमनुष्य यत्नसेरात्रिमें नहींसोवे १४५ निश्चय विना जागरणके व्रत निरर्थक होताहै इससे दोनों पक्षोंमें जागरण करना चाहिये १४६ जे एकादशीके व्रतको इस विधिसे करतेहैं वे सब सत्यही सत्य मोक्षको प्राप्तहोतेहैं १४७ हे जैमिनि ! जन्म और मृत्युके नाशकरनेका एक आदिकारण, भगवान्के दिनकेव्रतका साररूप एकादशीकाव्रत इन्द्रादिक देवसमूहों कोभी करना चाहिये इससे निरन्तर यत्नसे तुमभी करो १४८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकादशीमाहात्म्येद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय ॥

एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! पूर्वसमय में कोचरश नाम राजा पृथ्वी में हुआ है यह शांत, परमधर्म का जानने वाला, राजनीति के जाननेवालों में श्रेष्ठ १ सत्य बोलनेवाला, क्रोधजीतनेहारा, वैरियोंके जीतनेवाला, नारायणजी के पूजन में परायण, हरिजीकी सेवा में रत और पर था २ तिसकी सुप्राज्ञा नाम स्त्री हुई यह प्रिय बोलनेवाली, सब लक्षणों से युक्त, पतिकी सेवामें परायण, ३ एकादशी के व्रत में रत, सब प्राणियों के हितकी इच्छा करनेवाली, जातिस्मरा, महाभाग्ययुक्त, सुशीला और श्रेष्ठ वर्णवाली थी ४

परमार्थ का जाननेवाला यह राजा स्त्रीसमेत दशमीको कर नि-
शीथिनी एकादशी में जागरण करनेको उद्यत था ५ कि उसी अ-
वसर में एक शौरिनाम ब्राह्मण महातेजस्वी तिस राजाके जागरण
के मण्डप में आताभया ६ तिन आयेहुए ब्राह्मण की नारायण
में परायण, स्त्रीसमेत अत्यन्त प्रसन्नहोकर राजा पाद्य आदिकों से
पूजा करताभया ७ यह सब तत्त्वों का जाननेवाला ब्राह्मण तिनके
मध्य में बैठकर विष्णुजी की पूजा में परायण बहुत से व्रत करने
वालोंको देखता भया ८ कोई अनेकप्रकारके मनोरम फूल, चन्दन,
धूप, दीप और अत्युत्तम भेंटोंसे हरिजीको पूजन करते थे ९ कोई
आनन्द से गङ्गाजीकी मिट्टी से भूषित और तुलसीजी के पत्रों के
माला से अलंकृत होकर हरिजी के आगे नाचतेथे १० कोई भग-
वान् के प्यारे व्रत करनेवाले करताल को लेकर भगवान्के ललित
गीतोंको गाते थे ११ कोई अत्युत्तम, सुन्दर अर्थ और कोमल अ-
क्षरवाले स्तोत्रों से रोगरहित, संसार के स्वामी नारायणजी की
स्तुति करते थे १२ कोई ठण्ढी श्वेत चामरकी पवन से संसार के
स्वामी हरिजी के ऊपर डुलातेथे और बड़ी प्रीतिको करते थे १३
कोई महात्मा सुन्दर, पवित्र, मंगलकारी वीणा आदिक बाजाओंको
बजातेथे और कोई भगवान्को गाते थे १४ और राजा और रानी
भी दोनों अत्यन्त प्रसन्न होकर सुन्दर गीत गाते और उत्तमनाच
नाचते थे १५ तब ब्राह्मणों में उत्तम शौरिजी महात्मा, नाच और
गीत आदि के करनेवाले राजा और रानीसे मधुरवाणीसे बोले १६
कि हे राजन्! तुमधन्यहौ और तुम्हारी रानीभी धन्यहैं तुमदोनोंके
ये मङ्गलकारी चरित्र पृथ्वीमें दुर्लभ हैं १७ जिससे मैंने कोई उत्तम
वैष्णव नहीं देखाहै इससे तुमसे कहताहूं तुझ राजासे यहपृथ्वी नि-
स्संदेह धन्य हुईहै १८ हेराजन्! इस पवित्र, भगवान्के प्यारे, एकाद-
शीके व्रतको स्त्रीसमेत तुम करते हौ तिससे वैष्णवों में श्रेष्ठ हौ १९
हे राजाओं में उत्तम! स्त्रीसमेत तुम सातोंद्वीपों के एकही स्वामी
हौ जिससे प्रीतिसे नारायणजी के आगे नाचते और गातेहौ २०
ये तुम दोनों के चरित्र अद्भुत मैंने देखे तुम लोगोंकी यह अत्यन्त

निर्मल बुद्धि कैसे उत्पन्न हुईहै २१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस शौरिनाम ब्राह्मण के ये वचन सुनकर कुछ मुसकाकर सुप्राज्ञारानी ब्राह्मण से बोली २२ कि हे उत्तम ब्राह्मण! पूर्वकाल में हम दोनों अत्यन्त पापी एकादशीही के प्रभाव से महात्मा यमराजजी से छूटे हैं २३ हे विप्रेन्द्र! जातिस्मृतिके प्रभावसे इससमय में भी परमधामकी कांक्षासे सुन्दर एकादशीके व्रतको करते हैं २४ तब शौरिजी बोले कि हे श्रेष्ठ करिहांव वाली रानी! यदि निश्चय अपनी पहलेकी जातिको जानती हो तो मुझसे कहो मेरे हृदय में सुनने का कौतुकहै २५ पहले तुम कौनथी और तुम्हारे पति कौन थे और तुम दोनों पापियोंको कैसे यमराजजीने छोड़दिया था २६ तब सुप्राज्ञा रानीबोली कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह वचन प्रकाश करनेके योग्य नहीं है तिसपरभी प्रकाशित करतीहूं मैं रतिके शास्त्रमें चतुर वेश्याथी २७ और तिस जन्ममें मैंने नरक के क्लेश देनेवाले बहुत घोर पाप किये थे २८ और यह नित्योदय नाम शूद्र अपने आचार से वर्जित, पराई स्त्रीका हरनेवाला, क्रूर, पराई द्रव्यका हरनेवाला, २९ मदिरा पीनेवाला, मित्रका नाश करनेहारा, गर्भहत्या करनेवाला, पराई हिंसाकरनेहारा, अत्यन्त अहंकारयुक्त, सदैव धर्मकी निन्दा करनेहारा ३० एक समयमें अच्छे व्रत करनेवाले जातिवालों से त्याग कियाहुआ वेश्याके विभ्रम में लोलुप होकर नित्योदय मेरे स्थानको आताभया ३१ हे श्रेष्ठब्राह्मण! तब मैंने इस जवान को सुन्दर देखकर प्रीतिको प्राप्तहोकर भोगों से सन्तुष्ट किया ३२ हे तपोधन! फिर मेरे साथ भोगकर यह प्रेमसे नम्रता से युक्त होकर यह बोला ३३ कि मैं सुरतशास्त्र का जाननेवाला और बान्धवों से त्याग कियागयाहूं यदि आप यह योग्य समझें तो आपके साथ मैंभी यहींरहूं ३४ हे ब्राह्मण! उसके ये नम्र वचन सुनकर स्त्रीभावको प्राप्तहोकर उसी के साथ मैंभी स्थित रही ३५ हे ब्राह्मणों में शार्दूल! कदाचित् हरिजीकी एकादशी तिथि में देह देहके टूटनेवाली बड़ी पीड़ासे मैं युक्तहुई ३६ और ज्वरसे जर्जरदेह होकर मैंने डरसे अन्न और जल नहीं पि-

या ३७ और मेरे स्नेहसे युक्तहोकर उसने भी अन्न और जलको न पीकर जन्मसे विषण्णकी नाईं होगया ३८ तदनंतर रात्रिमें घीसे दीप जलाकर ज्वरसे अपहतचित्त होकर मैंने जागरण किया ३९ और हे नारायण ! हे हरे ! हे कृष्ण ! मेरी रक्षा कीजिये यह कह कर वारंवार मैंने और उसने भी रात्रिमें जागरण किया ४० हे ब्राह्मण ! व्रतके प्रभाव और भगवान्‌के नामकेउच्चारणसे हम दोनोंके पाप नाश होगये ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तब निर्मल प्रातःकाल भगवान् सूर्यनारायण के उदयहुएमें मैं ज्वरसे पीड़ित होनेके कारण नाशको प्राप्त होगई ४२ मुझको मरीहुई देखकर सबजनों से निन्दित और पवित्र इसने भी आत्महत्या कर प्राण खोदिये ४३ तब प्रकाशित अग्निके समान नेत्रोंवाले यमराजके दूतोंने दृढ़फँसरीसे बांधकर हम दोनोंको दुर्गमराहसे यमराजके यहां प्राप्त कर दिया ४४ तो यमराजकी आज्ञासे चतुर चित्रगुप्तने हमलोगों के सब शुभ वा अशुभकर्मको मूलसे विचार किया ४५ और यमराजजीसे बोले कि हे महाबाहो ! यद्यपि ये दोनों महापापियों में श्रेष्ठ हैं तथापि एकादशी के व्रतसे पापोंसे छूट गये हैं ४६ जो विना इच्छाके पुण्यकारी एकादशी के व्रतको करताहै वह भी सब पापोंसे छूटकर परमधाम को जाताहै ४७ जब चित्रगुप्तने इस प्रकार कहा तो महायशस्वी धर्मराजजी आसनसे उठकर शीघ्रही हम दोनों की वन्दना करते भये ४८ और पापसे हीन हम दोनों को सुगन्धित चन्दन, सुन्दर धूप, फूल, दीप और सोनेके गहनों से भूषित करते भये ४९ और अमृतके समान मीठे अनेक प्रकार के फलोंसे प्रीतिसे हमलोगों को भोजन कराते भये ५० तदनंतर प्रभु यमराजजी सुन्दर स्तोत्रोंसे स्तुतिकर सुन्दर रथपर हम दोनों को चढ़ाकर हाथ जोड़कर यह बोले ५१ कि तुम दोनों पुण्यवानों में श्रेष्ठ और सब पापों से हीनहो इस समय में जहांपर भगवान् विष्णुजी हैं तहां को जाइये ५२ जब नम्रतायुक्त धर्मराजजी ने यह कहा तो वे दोनों यमराजजी के चरणकमलों में नमस्कार कर यह कहते भये ५३ कि हे देव ! इसतरह से विष्णुजी के परमपद

को नहीं जाने योग्यहूं किन्तु हम दोनों के नरक देखनेकी आपके स्थान में वाञ्छाहै ५४ हे ब्राह्मण! तब यमराजजीने हम दोनों को आज्ञा देदी तो सुन्दर रथपर चढ़कर विस्तारयुक्त, दुःखसे देखने योग्य नरकों को हम लोगोंने देखा ५५ तब ब्राह्मण बोले कि हे पतिव्रते! तहांपर पापियोंकी जो जो व्यवस्था तूने देखी वे सब विस्तारसे हमसे कहनेके योग्य हो ५६ हे सुन्दर करिहांव वाली! पुण्यात्मा और पापात्मा जिस जिस राहसे यमराजजी के स्थानको जाते हैं वह मुझसे विस्तारसे कहिये ५७ पुण्यात्मा प्रभु यमराजजी को किस प्रकार के देखते हैं और पुण्यात्माओं की सुख देनेवाली और पापियों की दुःख देनेवाली कैसी राह है ५८ तब सुप्रज्ञा बोली कि ब्राह्मणों में शार्दूलरूप! पहले मैं सुनने वालों के प्रीति बढ़ाने वाली पुण्यात्माओं की राहको कहताहूं सुनिये ५९ भारी पत्थरोंसे बँधीहुई सुन्दर कपड़ों से आच्छादित, सब उपद्रवोंसे हीन पुण्यवानोंकी राहशोभितहै ६० कहीं गन्धर्वोंकी कन्या अद्भुत गान गातीहैं कहीं कोमल शरीरवाली अप्सरा नाचतीहैं ६१ कहींपर मनोरम वीणाकेशब्दको करतीहैं कहींपर फूलोंकीवर्षा होतीहै कहींठंढी पवन चलतीहै ६२ कहीं ठंढेजलवाला पौसरा चलरहाहै कहींपर भोजनकी शालिका बनीहुईहैं कहीं देवता और गन्धर्व उत्तम स्तोत्रको पढ़ते हैं ६३ कहीं कहीं सुन्दर फूले कमलवाली बावली हैं कहींपर सुन्दर छायावाले फूले अशोक आदिक वृक्षहैं ६४ तहां उसी राहसे पुण्यात्मामनुष्य सुखसे मृत्युपाकर सुखपूर्वक चलेजाते हैं ६५ कोई अनेक प्रकारके गहनोंसे भूषित होकर घोड़परचढ़कर उद्दण्ड सफेद छत्रोंसे मस्तकको आच्छादित करजातेहैं ६६ कोई मनुष्य हाथीपरचढ़े कोई रथपरचढ़े और कोई विमानपरचढ़कर सुखसे यमराजजी के स्थानको जातेहैं ६७ किसी मनुष्योंके ऊपर अप्सरा चामरोंकी हवाकरतीहैं और सुरर्षिलोग स्तुति करतेहैं इसप्रकारसे वे जातेहैं ६८ कोई पुण्यात्मा मनुष्य सुन्दर हथियार धारणकर माला और चन्दनसे विभूषित होकर पानखातेहुए यमराजके स्थानको जातेहैं ६९ कोई जलग्रहनिवासी अपनेशरीरकी

दीप्ति से दशों दिशाओं को प्रकाशित करतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७० कोई सुन्दर खीर को भोजन करते हुए तथा और भी सुन्दर भोजन करतेहुए राह में सुखसे जाते हैं ७१ कोई दूध, कोई ईख के रस और कोई माठा पीतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७२ कोई दही, कोई अनेक प्रकार के फल और कोई पुण्यवान् शहद पीतेहुए जाते हैं ७३ तदनन्तर तिन बहुतों को आये हुए देखकर प्रीतिको प्राप्त होकर यमराजजी आपही नारायण होजाते हैं ७४ चारभुजायुक्त, श्यामवर्ण, फूलेकमल के समान नेत्रवाले, शंख, चक्र, गदा और पद्मके धारण करनेवाले, गरुड़वाहनयुक्त ७५ सोने का जनेऊ धारे, कामदेव के समान पवित्र महान् मुखवाले, मुकुट, कुण्डल और वनमाला से विभूषित ७६ महाबुद्धिमान् चित्रगुप्तजी होजाते हैं और चण्ड आदिक सब यमराज के दूत भी नारायणजी के आकार मीठे वचन बोलनेवाले होजाते हैं ७७ तब आपही धर्मराजजी परमप्रीतिको प्राप्तहोकर तिनसब उत्तम मनुष्यों की मित्र की नाईं पूजा करते हैं ७८ और तिन पुण्यवान् मनुष्योंको सुन्दर रत्न फलोंसे भोजन कराकर तिन से यमराजजी बोलते हैं ७९ कि तुम सब नरकके क्लेशसे डरे हुए महात्मालोग अपनेही कर्म के प्रभावसे परमपदको जावो ८० जो मनुष्य संसारमें जन्मपाकर पुण्य करताहै वही मेरा पिता, भाई, बंधु, सम और मित्रहै ८१ हे श्रेष्ठब्राह्मण! धर्मराजके इसप्रकारके कहने से वेसबलोग सुन्दर रथपर चढ़कर नारायणजीकेपुरको चलेजातेहैं ८२ हेउत्तम ब्राह्मण! पुण्यात्माओंकी गति तो मैंने संक्षेपसेकही अब पापात्माओं की गतिको विस्तारसे कहतीहूं सुनिये ८३ दुष्टात्माओं की राहका सब दुःखोंसे युक्त छियासी हज़ार योजनों का विस्तार कहा है ८४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कहींपर अग्निकी वर्षा होरहीहै कहीं पत्थरोंकी कहीं पर तपी हुई बालूकी ८५ कहीं कहीं तीक्ष्ण पत्थरों की कहीं तप्त पत्थरोंकी कहीं कहीं शस्त्रों की वर्षा कहीं अंगारों की वर्षा ८६ कहीं अग्निकी नाईं अत्यन्त तपी हुई पवन चलरही है जोकि गम्भीर, अंधकरनेवाली और तृणावर्तमुख हैं ८७ कहीं कां-

टोंकी वर्षा वाणमय कांटों से होरहीहै, कहीं पर दुःखसे चढ़नेवाली, सांपोंसमेत पत्थर की सीढ़ियां हैं ८८ तहां पर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुवाले पापीलोग जाते हैं इस प्रकार बहुत भांति के क्लेश देनेवाले, छाया और जलसे हीन ८९ राहमें दुःखित पापी लोग जाते हैं नामहीसे बालखोले, प्रेतोंके आकार, भयंकर, ९० रक्तके समूह से डूबेहुए कोई और कीचड़से भूषित और कोई कोई श्याम अंगवाले पापी राहमें जाते हैं ९१ कोई कष्टसे रोतेहुए, बहतेहुए आंशुओं से आकुल नेत्रवाले और अपने कर्मोंको कोई शोचते हुए पापी जाते हैं ९२ कोई पापियों के गले में चमड़ेकी फँसरी का बन्धन है कोई कंकालमें बांधे और कोई दोनों पांवों में बांधे हुएहैं ९३ कोई पापियों के सुइयों से चुभे हुए गलेमें क्रोधसे यमराज के दूत दृढ़फँसरी देकर खींचते हैं ९४ कोई कानोंके छेदोंसे भारी पत्थर जोकि राहमें पड़ेहुए हैं तिनको लिये जातेहैं और कोई पापी राहमें लोहे के भारोंको मस्तक में धरेहुए जाते हैं ९५ किसी के भुजाओं में यमदूत फँसरियां बांधकर लिये जाते हैं किसी पापियों के गर्दनों में दृढ़ हाथोंकी चोट देतेहैं ९६ और घसीटते हुए यमराज के दूत लेजाते हैं कोई नीचे को शिर किये और कोई ऊपर को पांव किये जाते हैं ९७ कोई भुजाओं से और कोई एकही पांवसे जाते हैं इस प्रकार बुरे आकारवाले दुःखित शब्द से रोते हुए ९८ और यमराज के दूतों से ताड़ित होकर पापी तिसराह में जाते हैं तिन सब पापियों के आने में क्रोधसे यमराजजी ९९ सुन्दर मूर्तिको छोड़कर अत्यन्त भयानक होजाते हैं और तीस योजनके बड़े अंगवाले, बावली के समान नेत्रवाले, १०० धूम्रवर्ण, महातेजस्वी, अत्यन्त लम्बे, घर्घर शब्दवाले, अत्यन्त बड़े दाँतोंवाले, सूपके समान नहोंकी पंक्तिवाले, १०१ प्रचण्ड भैंसेपर चढ़े, दांतों से ओष्ठों को चबाते हुए, दण्ड हाथमें लिये, चमड़ेकी फाँसवाले, टेढ़ी भौंहयुक्त मुखवाले, १०२ महामायायुक्त, क्रोध से लालनेत्र किये, समवर्त्ती, अट्टाट्टहास करतेहुए चित्रगुप्तजी प्रकाशित होतेहैं १०३ और चण्डआदिक सब दूत फँसरी और मुद्गर

हाथोंमें लियेहुए, क्रोधयुक्त मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए भयंकर होजाते हैं १०४ और यमराजके दूत जल्द छोड़ो छोड़ो पापियोंको काटो छेदो बेधो इस प्रकार चारों ओर दौड़तेहुए वकते हैं १०५ तिन सब पापियों, गिरेपड़ेहुओं को कालदण्ड से तर्जन कर हुंकार के शब्दों को छोड़कर धर्मराज प्रभुजी उनसे बोलते हैं १०६ कि रे रे पापी दुराचारियो! तुमसब अज्ञानियों ने आत्माके पीड़ा करनेवाले पाप कियेहैं १०७ मस्तक के ऊपर स्थित, जीवोंके स्वामी समवर्त्ती मुझको जानकर भी तुमलोगोंने पाप कियेहैं १०८ मैं पुण्यात्माओं का बन्धु और पापात्माओं का वैरी हूं यह कहींपर तुम लोगोंने अपने कानों से नहीं सुना है १०९ नरक अनेक प्रकारके दुःखसंयुक्त दुःसह हैं तिनको पापीलोग भोग करतेहैं यह तुमलोगोंने नहीं सुनाहै ११० तुमलोगोंने मेरी दुराशय चर्चा को झूठही मानकर पापकिये थे इससमयमें सोई अपनी आंखों से देखिये १११ तुमसब सदैव द्रव्यसे अन्ध होकर पापसमूहोंको निरन्तर करतेरहेहो ११२ रे दुष्टो! पापके फलोंको भोग कीजिये रोनेसे क्याहोगा सुप्राज्ञाबोली कि इसप्रकार यमराजदेव चित्रगुप्तसेबोले ११३ कि हे महाभाग! इनके पापकर्मोंको विचारिये तब धर्मराजके वचन सुनकर चित्रगुप्तजी तिससमयमें ११४ तिनके जितनेपापथे तितने कहतेभये तब सब पापी रोनेलगे ११५ और चमड़ेकी फँसरी से बँधेहुए डरकर वे लोग यमराजजीसे यह कहतेभये कि हे सूर्यके पुत्र! हमलोगोंने जितने पापकियेहैं ११६ वा पूर्वसमय में अशुभ वा शुभ कियाहै उसके कौन गवाही स्थितहैं ११७ तथा किसने देखाहै वह हमारे आगेकहे तब हँसकर भगवान् यमराजजी बड़े कोपसे ११८ सब गवाहोंको बुलाकर यह बोलतेभये कि आकाश, पृथिवी, जल, तिथि, दिन, रात्रि, दोनोंसंध्या और धर्म तुम सब इनपापियोंके समीपके गवाहहो ११९। १२० तिनपापियोंके सब शुभ वा अशुभ कर्मोंको जिस जिसकी वेलामें इन्होंने कियेहैं वे सब कहो १२१ तब वह वह गवाही तिस तिसका यमराजके समीप कहनेलगा तिसको सुनकर पापोंसे खींचेहुए मनवाले सबपापी

१२२ मेघोंको देखकर हरिणोंकी नाईं कँपकँपीयुक्त हृदय होकर स्थित होतेहैं और फिर दांतोंकी पंक्तियोंसे कड़कड़ शब्द करतेहैं १२३ तब धर्मराजजी कालदण्डसे तिनको अलग अलग मारतेहैं तो वे सब पापकर्म करनेवाले धर्मराजसे ताड़ित होकर १२४ रोते और अपराध प्राप्त होकर अपने कर्मोंको शोच करतेहैं तदनंतर तिन सब पापियोंको चण्डआदिक दूत क्रोधसे १२५ यमराजजी कीआज्ञासे रौरवआदिक नरकों में छोड़ देते हैं किसी पापी को तपन नरकमें किसीको अवीचिमें १२६ किसीको संघात,कालसूत्र-महारौरव, तपीहुई बालूकेकुण्डमें और किसी किसी को कुम्भीपाकमें १२७ तथा कोई कोई पापियोंको निरुच्छ्वास, महाभयानक, प्रमर्दन में किसीको घोर असिपत्रवनमें तथा अनेकप्रकारके भक्षों में १२८ कोई कोई को वैतरणीमें किसी किसीको तुष,अंगार,हाड़, और कांटोंसे पूर्ण,नित्यही तपेहुए भयानक विष्ठाके कुण्डमें कोई कोई को विष्ठाके लेपन तथा विष्ठाके भोजन १२९। १३० और कुत्ताके मांसके भोजनमें छोड़ते हैं कोई कफ और कोई वीर्यको भोजन करते १३१ कोई पापी मूत्र और कोई लोहूपीते हैं किसी किसीके मुखों में सांपों के समान जोंकें १३२ और सांपही भयंकर यम के दूत पूरितकरते और अत्यन्त सन्तप्तों से जीभोंको निकाललेते हैं १३३ निर्दयी यमराज के दूत किसी किसी पापीके कानोंमें तप्त तेलों को छोड़ते हैं १३४ कोई कोई दुरात्माओं के भुजा, चरण, कान आदिक और नाकोंको तलवार की धाराओं से काटलेते हैं १३५ कोई जलतेहुए अंगारके समूह में और कोई बाणकेसमान कांटोंमें सोतेहैं १३६ यमराजके दूत किसी किसी पापियों के बालोंको खींचकर उनको तपीहुई कीचोंमें छोड़देते हैं १३७ किसी किसी को वमनों में छोड़तेहैं और किसी किसी पापियों की संधियों में तपीहुई हज़ारों सुइयां वारंवार छोड़ते हैं १३८ किसी को तपीहुई लोहके शूलके अग्रमें आरोपित करते हैं तीक्ष्ण कांटोंसे किसी किसी को मारते हैं किसी किसी के मस्तकों को पकड़कर १३९ हाथ और पांवोंमें शाल्मली वृक्षके कांटोंसे क्रोधसे घसीटते हैं तब वे दीन शब्द

कर रोतेहैं १४० यमराजके दूत काहूके गलोंमें पत्थरों को बांधकर रक्त और जलके गड़हों में बारंबार गिराते हैं १४१ और पापी मनुष्यों के शिरोंको तोड़कर बारंबार क्रोधसे पत्थरों से चूर्णकरते हैं १४२ किसी पापियों के रोतेहुए उनकी छातीके बीचों में लोहेकी कीलोंके समूहों को गाड़ते हैं १४३ किसी पापियों के नेत्रोंको कांटिये से निकाललेते हैं और काहू की नाकोंको बीछियों से भरदेते हैं १४४ यमराजके दूत किसी किसी के पांवोंको फँसरियों से वृक्ष की डालोंमें बांधकर नीचे धुयें समेत अग्नि को जलाते हैं १४५ तब पाप करनेवाले नीचेका मुख और ऊपरको पांवोंको कर जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र रहते हैं तबतक धुयेंको पीतेहैं १४६ यमराजके दूत मुशल और मुद्गरों से किसीको बारंबार ताड़ितकरते हैं तब वे व्यथा से व्याकुल होकर रक्तको गिराते हैं १४७ कोई पापी पीबकी दुर्गन्ध युक्त अन्धकार समेत घरमें डाँस और मसोंसे क्लेश पाते हैं १४८ कोई भस्म कोई कीड़े कोई दुर्गन्धित मांसों और कोई पूति मिट्टीको भोजन करते हैं १४९ कोई कुत्ते, व्याघ्र, सियार, वज्रके समान दांत और नहँवालों और रीछोंसे भक्षितहोकर रक्तसे बूड़कर रोतेहैं १५० और कोई निरन्तर घोर विषवाले सांपोंसे भक्ष्यमाण होते हैं कोई की भैंसेके सींगोंसे छाती फटजातीहैं १५१ तब वे पृथ्वी को रक्तोंसे सींचतेहुए मूर्च्छितहोकर गिरपड़तेहैं फिर यमराजके दूतोंके धनुषों से छोड़ेहुए सर्पोंकेसमान घोरबाणोंसे १५२ सबदेहजर्जर होकरकोई पृथ्वीमें लोटतेहैं फिर तपीहुई लोहके पिण्डके तथा तपेहुए पत्थर के स्थानमें रहते हैं १५३ और दंशशस्त्रोंसे किसीके वदनोंकोकाट लेतेहैं और यमदूत किसी किसीके मुखों और नाकके छेदोंको १५४ श्वासकीहवा रोकनेकेलिये भरदेतेहैं और किसीके उद्धत, तीक्ष्णधारावाली यमकीशक्तियोंसे १५५ महाबली यमदूत अंगकेचमड़ों को उखाड़लेतेहैं और किसी किसीके बालोंको पकड़कर पृथ्वीमें गिराकर १५६ कीलोंसे सदैव चरणआदिकोंको पीड़ादेतेहैं कोईपापी खारीजलकी धाराओंसे तपतेहैं १५७ और बहुत प्रकाररोकर क्षारजलकोपीते हैं कोईपापी पित्तकोपीते हैं १५८ कोई श्रेष्ठपापी स्नु-

हीकेद्रूवोंको पीतेहैं यमराजकेदूत पृथ्वीमें सोतेहुए किसी किसीकी छातियोंमें १५६ पर्वतके समान, तपेहुए भारीपत्थरोंको धरदेतेहैं और किसी किसीके गर्दन और गलोंमें दोकाष्ठके टुकड़ोंको देकर ऊर्द्धमुखकर दृढ़फँसरियोंसे बांधदेतेहैं और किसीको वृक्षकी डालोंमें चढ़ाकर पृथ्वीमें गिरादेतेहैं १६० । १६१ और उठाकर फिर पृथ्वीमें छोड़ते हैं इसप्रकार वे सबपापी भूंखप्याससे होकर १६२ रक्षाकरो रक्षाकरो यहकहतेहुए यातनाके घरमेंरोतेहैं फिर युगके कल्पके अन्तपर्य्यंत नरकके दुःखोंको भोगकर १६३ पापयोनियोंमें उत्पन्न होतेहैं औरवहांपर व्याधियोंसे पीड़ित होतेहैं १६४हीनअंग, अधिकअंगवाले, दुःखयुक्त, पापकेसेवनकरनेवाले, पुत्रहीन, अत्यन्तमूर्ख, पराई हिंसामेंपरायण १६५ थोड़ीउमर और थोड़ीबुद्धि वाले बुरीस्त्रीकेस्वामी होतेहैं और कर्म, मन और वाणीसे नित्यही पापोंको करतेहैं १६६ तो फिर पापके प्रभावसे पहलेकीनाईं नरक को जातेहैं तिससे सज्जनोंको कभी पाप न करनाचाहिये१६७क्योंकि पापकरनेवाले मनुष्योंकी नरकसेनिष्कृति नहींहोतीहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! संक्षेपसे मैंने पापियोंके दुःखको कहाहै १६८ अच्छेप्रकार कहनेसे सैकड़ों अयुतोंमें कोई समर्थनहींहै तब पापकरनेवाले मनुष्योंकी दुर्गतियोंको देखकर १६९ हमलोग विमानपर चढ़कर नारायणजीके पुरकोजातेभये हजार करोड़ कल्प भगवान्के घरमें भोगोंको भोगकर १७० इसशुद्धराजवंशमें हम दोनों उत्पन्न हुएहैं यहांपर सबसम्पत्तियुक्त सम्पूर्णभोगोंको भोगकर १७१ सुखसे मृत्युपाकर परमपदजानेकी इच्छाकरतेहैं एकादशीके व्रतके बराबर तीनोंलोकमें और व्रतनहींहै १७२ कि विना इच्छाके जिसको करके हमदोनोंकी इसप्रकारकी गतिहुई है और जे भक्तिभावसे एकादशीके व्रतको करतेहैं १७३ उनका भगवान्कीकृपासे मैंनहीं जानतीहूं कि क्याहोताहै हे श्रेष्ठब्राह्मण यह सब तुमसे पूछेहुएको मैंने कहा १७४ और एकादशीके माहात्म्यको क्यासुननेकी इच्छाकरते हो व्यासजीबोले कि परमार्थका जाननेवाला ब्राह्मणरानीके ये वचनसुनकर १७५ एकादशीके व्रतमें अपने दृढ़चित्तको करताभया

और राजा और उनकी रानी बहुतकाल पृथ्वी को भोगकर १७६ अन्तकाल में विष्णुजीके पुरको जाकर परंपदको प्राप्त होतेभये जे इस व्रतोंमें राजा एकादशी के व्रत के माहात्म्य को सुनते वा पढ़ते हैं १७७ वे पापसमूहों से छूटकर भगवान् के समीप में प्राप्त होतेहैं १७८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकादशीमाहात्म्येत्रयोविंशतितमोऽध्यायः२३॥

चौबीसवां अध्याय ॥

तुलसीजी का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजीबोले कि हे शौनक! एकादशीके फलको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर जैमिनि हाथ जोड़कर प्रभु, कृष्ण, व्यासजीसे बोले १ कि आपके प्रसाद से विष्णुदेवजी के माहात्म्य को मैंने सुना अब सुननेवालों के पापों के नाश करनेवाले तुलसीजीके माहात्म्य को कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी देनेवाली, भगवती, तुलसी इन्द्रादिक सब देवताओं से सेवने योग्य है ३ स्वर्ग, मनुष्य लोक और पाताल में तुलसी सज्जनों को दुर्लभ है धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी प्राप्ति करनेवाला तिसमें निश्चय भक्तिको करै ४ जहांपर एकतुलसीका वृक्ष स्थित होताहै तहांपर ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सबदेवता स्थित होतेहैं ५ तुलसीपत्तेके बीचमें केशवभगवान् पत्रकेआगे ब्रह्माजी और पत्रके मूलमें शिवजी सदैव स्थित रहतेहैं ६ लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री, चण्डिका तथा और सब देवोंकी स्त्रियां तुलसीके पत्रोंमें वसतीहैं ७ इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैर्ऋति, वरुण, पवन और कुबेर तिसकी डालमें बसतेहैं ८ सूर्य आदिक सबग्रह, विश्वेदेवा, वसु, मुनि सबदेवर्षि ९ और पृथ्वीमें करोड़ ब्रह्माण्डोंके बीचमें जितने तीर्थहैं वे सब तुलसीके दलमें आश्रित होकर सदैव वसतेहैं १० जो भक्तिभावसे युक्तहोकर तुलसीको सेवताहै उसने तीर्थ और ब्रह्मादिक सबदेवताओंको सेवन कियाहै ११ जे मनुष्य तुलसीकी जड़में उत्पन्न तृणके समूहोंको

काटडालतेहैं तो उनके शरीरमें स्थित ब्रह्महत्याकोभी भगवान् तिसीक्षण में नाशकरदेते हैं १२ हे श्रेष्ठब्राह्मण! गरमीमें सुगन्धित शीतलजलोंसे तुलसीजीको सींचकर मनुष्य मोक्षको प्राप्तहोताहै १३ गरमियोंमें चँदोवा वा छत्र जो तुलसीजीको देताहै वह विशेषकर सबपापोंसे छूटजाताहै १४ जो मनुष्य वैशाखमें अक्षत धारायुक्त जलोंसे तुलसीजीको सींचताहै वह नित्यही अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै १५ जो अंजलिभर जलसे तुलसीजीको सींचताहै वह सबपापोंसे रहितहोकर स्वर्गको प्राप्त होताहै १६ हे विप्रर्षे! जो उत्तम मनुष्य कदाचित् दूधोंसे तुलसीजीको सींचताहै तो उसके घरमें निश्चल लक्ष्मीजी होतीहै १७ जो मनुष्य गऊके गोबरोंसे तुलसीकी जड़को लीपते और बहारतेहैं तो उसके पुण्य फलको सुनिये १८ तहांपर जितनीधूलि दूरहोजातीहै तितनेही हजार कल्प वह विष्णुजीकेसाथ आनन्द करताहै १९ जो तुलसीजीकेनीचे संध्यामेंदीप जलाताहै वह करोड़कुल संयुक्त विष्णुजीके मन्दिरको जाताहै २० जो गऊ, कुत्ते, गदहे, मनुष्य और बालकोंसे तुलसी जीकी रक्षाकरताहै उसकी भगवान् सदैव रक्षाकरतेहैं २१ जो मनुष्यभक्तिसे तुलसीजीको लगाताहै तो वह मरकर निस्सन्देह परम मोक्षको प्राप्त होताहै २२ जो भक्तियुक्त उत्तम मनुष्य प्रातःकाल तुलसीजीको देखताहै वह विष्णुजीके नाशरहित दर्शनके फलको प्राप्तहोताहै २३ जो भक्तियुक्त मनुष्य तुलसीजीके प्रणाम करताहै उसकी उमर, बल, यश, द्रव्य और संतति बढ़तीहै २४ तुलसीजी के स्मरणसे सबपाप नाशहोजातेहैं और छूनेसे मनुष्योंकी व्याधियांनाशहोजातीहैं २५ जो शुभ, सबपापोंके नाशकरनेवाले तुलसी के पत्रको खाताहै तो उसके शरीरके भीतरके स्थितपाप तिसीक्षण से नाशहोजातेहैं २६ जो मनुष्य तुलसीके काष्ठके मालाको धारण करताहै तो उसके देहमें पापनहीं रहतेहैं यहमैं सत्यही कहताहूं २७ जो तुलसीकेपत्रसे गिरेहुएजलको शिरमें धारण करताहै वह गंगाजीके स्नानके पुण्यको निस्सन्देह प्राप्तहोताहै २८ जो मनुष्य दूब, अक्षत, फूल और नैवेद्योंसे शुभातुलसीजीको आराधनकर वि-

ष्णुजीकी पूजाकेफलको प्राप्तहोताहै २९ जिसने कभी भगवती तुलसीको नैवेद्य, फूल, श्रेष्ठधूप और घीके दीपोंसेपूजन कियाहै उसको धर्म, अर्थ काम और परममोक्षके देनेवाले विष्णुजीके चरणोंके पूजनके प्रयोगोंसे क्याहै कुछभी आवश्यकता नहींहै ३० हे ब्राह्मण! दोष रहित स्थानोंमें जे देवसमूहोंसे सेवनेयोग्य, भगवान्की प्रसन्नता करनेवाली तुलसीको लगाते हैं उनको तीनों लोकोंके स्वामी, मुरारि भगवान् प्रसन्नहोकर शीघ्रही परमपददेतेहैं ३१ मनुष्य यज्ञ, व्रत, पितृपूजन, भगवान्कीपूजा, दान तथा औरभी शुभकर्म जो दोषरहित तुलसीके नीचे करतेहैं वे सब निश्चय नाशरहित होतेहैं ३२ हे श्रेष्ठब्राह्मण! मनुष्य पृथ्वीमें नारायणजीकी अत्यन्तप्यारी तुलसीजीके विना जो धर्म कर्म करताहै तो वहसब निष्फलहोता है और कमलनयन देवोंकेदेव भगवान्भी प्रसन्न नहींहोते हैं ३३ जो भक्तिभावसमेत मनुष्य शुभकारिणी, पवित्र तुलसीजीको यात्राओं में देखताहै तिसका भगवान् के प्रसादसे निश्चय शीघ्रही सब यात्राकाफल सिद्धहोता है ये मेरेवचन अत्यन्त दृढ़हैं ३४ संसार के एक स्वामी अनन्त भगवान् कल्पवृक्ष, कुन्द और कमल आदिक सुगन्धित फूलोंको छोड़कर सद्गुण युक्त, पाप समूहों के नाश करनेवाली सूखी भी तुलसीको आनन्द से ग्रहण करते हैं ३५ जे पापी पृथ्वीमें अमृतलताकी दीप्ति युक्त आदिकारण तुलसीजीको अज्ञानसे उखाड़कर फेंकदेते हैं तो तुलसीजीके प्रिय भगवान् निरन्तर तिनकी लक्ष्मीको सत्यही हरलेते हैं ३६ जे मनुष्य तुलसीजीके नीचे मूत्र और विष्ठाकरते हैं और निरन्तर मैलारखते हैं तिन देवके आश्रय इकट्ठे कियेहुए पापवालोंके धनोंको भगवान् शीघ्रही नाशकरते हैं ३७ हे शुभे! हे महाभागे! तुलसीजी! नारायणजी की पूजा के लिये तुमको तोड़ते हैं तुम्हारे नमस्कार है केशव भगवान् सुगन्धित कल्पवृक्ष आदिक फूलोंसे भी तुम्हारे विना प्रसन्न नहीं होतेहैं इससे तुमको तोड़तेहैं क्योंकि तुम्हारे विना सब कर्म निष्फल होताहै ३८।३९ इससे हे तुलसीदेवि! तुमको तोड़ताहूं वरदेनेवालीहोवो हे देवि! तोड़-

नेसे उत्पन्न दुःख जो तुम्हारे हृदयमें हुआहो ४० तो हे संसार की स्वामिनी तुलसीजी उसको क्षमाकीजियेगा तुम्हारे मैं नमस्कार करताहूं हाथ जोड़कर वैष्णव मनुष्य इन मंत्रों को पढ़कर ४१ दो करताल देकर इसतरह से तुलसीदलको तोड़े कि तुलसीजी की डाल न कँपनेपावे ४२ जो तुलसीदल के तोड़ने में डालटूटजाती है तो तुलसीजीके स्वामी विष्णुजीके हृदयमें कष्ट उत्पन्न होताहै ४३ और जो डालके अग्रसे पुराने पत्र पृथ्वी में गिरपड़ते हैं तो उनसे भी मधु और कैटभ दैत्यके नाश करनेवाले गोविन्दजी पूजने चाहिये ४४ कोमल तुलसीदलों से जो अच्युत प्रभुजीको पूजन करताहै तो वह चित्तसे जो जो इच्छा करता है तिस सब को शीघ्रही प्राप्त होताहै ४५ जैमिनिबोले कि हे सत्यवती के पुत्र ! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व्यासजी ! तुलसीके वृक्षके समान कौनवृक्ष है तिस को मैं जानने की इच्छा करताहूं कहिये ४६ तब व्यासजीबोले कि हे ब्राह्मण ! जैमिनि ! जैसे विष्णुजीके निरन्तर तुलसीजी प्यारीहैं तैसेही सब पाप नाश करनेवाला आंवलाभी है ४७ तुलसीके वृक्ष को प्राप्त होकर जौन जौन देवता स्थित होतेहैं वे सब आंवलाके नीचे भी बसते हैं ४८ जहां पर पवित्र, विष्णुजीकी प्यारी धात्री (आंवला) स्थितहोती है तहांहीं गंगा आदिक तीर्थ स्थितहोते हैं ४९ इसके नीचे मनुष्य अशुभ वा शुभ जो कर्म करता है वह सब सत्यही नाशरहित होताहै ५० पवित्र और नवीन आंवला के पत्रोंसे जो भगवान् को पूजता है वह पाप के जालसे छूटकर भगवान् के सायुज्य को प्राप्त होताहै ५१ आंवला और तुलसी जिस स्थान में नहीं स्थित होतेहैं तो वह स्थान अपवित्र होताहै और क्रियाका फल वहां नहीं मिलता है ५२ जिस स्थान में शुभधात्री और आंवला नहीं स्थित होता है तो तिसका कियाहुआ निश्चय सबकर्म्म निष्फल होजाता है ५३ हे ब्राह्मण ! आंवला और तुलसी से हीन जिसका स्थान है वहांपर लक्ष्मी जी नहीं रहती हैं सबपाप उसने किये हैं और तिसने कलियुग को प्रसन्न किया है ५४ हे श्रेष्ठब्राह्मण ! जिसस्थान में आंवला और तुलसी नहीं

हैं वहस्थान तत्त्वदर्शियोंको श्मशानके समान जानना चाहिये ५५ आंवला और तुलसी जहां स्थित होते हैं तहांपर सब्बदेवता स्थितहोते हैं और जहां आंवला और तुलसी का पत्र नहीं होता है तहांहीं सब्बपाप रहतेहैं ५६ जो पण्डित पाप हरनेवाली धात्री (आंवला) फलकेमालाको धारण करताहै तिसकी देहमें लक्ष्मीजीसमेत विष्णुजी आश्रितहोकर स्थितहोतेहैं ५७ जो बुद्धिमान् मनुष्य आंवलेके काष्ठकीमालाको धारण करताहै तो तिसकी देह में आश्रितहोकर सब्ब देवता स्थित होतेहैं ५८ आंवलेके फलके माला को ग्रहणकर जो शुभ वा अशुभ कर्म मनुष्यकरता है वह सब नाशरहित कहाताहै ५९ जो सबतत्त्वोंका जाननेवाला मनुष्य आंवलेके फलको भोजनकरताहै तो उसकी देहकेभीतरके सब्बपाप नाश होजातेहैं ६० हे श्रेष्ठब्राह्मण! जो आंवलेके फलोंकी मालाको धारण करताहै तो उसके सबपाप नाशकरनेवाले श्रेष्ठमाहात्म्यको कहताहूं सुनिये ६१ जो दैवयोगसे श्मशानसेंभी तिसकी मृत्युहो तोभी वहगङ्गाजी के मरणसेउत्पन्न पुण्यको निस्संदेह प्राप्तहोताहै ६२ और तिसको देखकर सबपापी सैकड़ों करोड़जन्मोंके कियेहुए घोरपापसमूहोंसे शीघ्रही छूटजातेहैं ६३ हे विप्रेन्द्र! जो आंवलेके फलके कीचड़को नित्यही ग्रहणकरताहै वह निस्सन्देह दिन दिनमें पुण्यको प्राप्तहोताहै ६४ जो सब्ब देवसमूहों के आश्रय आंवले के वृक्षको काटताहै वहनिस्सन्देह भगवान्के अंगकोकाटताहै६५ धात्री सबदेवमयी और विशेषकर भगवान्को प्यारीहै तिसके अच्छे प्रकार गुणकहनेमें ब्रह्माजीभी नहींसमर्थहैं ६६ जो सब्बतत्त्वोंका जाननेवाला आंवला और तुलसीकी भक्तिकोकरताहै वह सबभोगोंको भोगकर अन्तसमयमें भगवान्के प्रसादसे मुक्तिकोप्राप्त होताहै ६७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेतुलसीमाहात्म्यंनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पचीसवां अध्याय॥

इति हास समेत तुलसी और अतिथिके माहात्म्य का वर्णन॥

जैमिनिजीबोले कि हे महाभाग! व्यासजी! फिर पाप नाश कर-

नेवाले तुलसी और अतिथि के पूजन के माहात्म्य को विस्तारसे कहिये १ सूतजीबोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण शौनक! तब महातेजस्वी व्यासजी सुननेवालों के पाप नाश करनेवाले माहात्म्यके कहने का प्रारम्भ करतेभये २ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह साक्षात् महालक्ष्मी, भगवान्की प्यारी तुलसीहै तिससे इसको वृक्षके ज्ञान से नहीं देखते हैं ३ जैसे मनुष्य पृथ्वीमें सदैव तुलसीजी को सेवन करता है तैसेही इन्द्रादिक देवता उसको देवस्थान में सेवन करते हैं ४ यह परब्रह्म की स्वरूपवाली तुलसी जहां स्थित होती है तहांहीं सब कुशल होतीहै यह मैंने सत्यही कहा है ५ जो पापी भी मृत्युसमय में तुलसीके पत्रयुक्त जलको प्राप्त होता है तो वह भी भगवान् के समीप जाताहै ६ जो मृत्युसमय में तुलसीकी मिट्टी के पुण्ड्र को धारण करताहै तो वह सबपापों से छूटकर भगवान् के पुरको जाताहै ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मृत्युसमयमें जिसके मुख, शिर और कानोंमें तुलसीपत्र होताहै तिसके स्वामी यमराजजी नहीं होते हैं ८ एक परमार्थ का जानने वाला बुद्धिमान् पवित्रनाम ब्राह्मण हुआ है तिसकी ब्राह्मणी बहुला नाम हुई है ९ यह अच्छे वंश में उत्पन्न, पतिव्रता, पतिकी सेवा में परायण थी और तहांहीं अनपत्यपति नाम उत्तम ब्राह्मण था १० तिस ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले ब्राह्मणसे यह पवित्र ब्राह्मण मित्रता करता भया तब अनपत्यपति के साथ कथा के लोभ से ११ यह पवित्र ब्राह्मण स्नेह से एक श्रेष्ठ आसन में बैठता भया तिसी अवसर में महातेजस्वी लोमश नाम ब्राह्मण १२ आकर चित्रविचित्र कथा कहतेहुए तिन दोनों ब्राह्मणों को देखते भये तब दोनों ब्राह्मण आसन से उठकर लोमश ब्राह्मणकी १३ पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय आदिकों से पूजा करतेभये तब नारायण में परायण लोमशजी तिन दोनोंके ऊपर प्रसन्नहोकर १४ भगवान् को कीर्तन करतेहुए आसनमें बैठते भये आसनमें स्थित महात्मा लोमशजीसे पवित्र और अनपत्यपति दोनों मुनि भक्तिसे हाथ जोड़ कर बोले कि हे भगवन्! हे सब धर्मके जाननेवाले! आपके दोनों च-

रण सज्जन मनुष्योंसे ग्रहण करनेयोग्यहैं तिनसे हम लोगोंका यह स्थान निश्चय पवित्र हुआहै हमलोगोंने मोहसे जितने पाप कियेहैं १५। १७ वे सब आपके दोनों चरणोंके दर्शन से नष्टहोगये आप साक्षात् नारायण और देवताओंसे भी पूजने योग्यहैं १८ क्या आप का अच्छे प्रकार पूजन करने में हम दोनों मनुष्य समर्थ हैं अर्थात् नहीं हैं जो अपनी शक्तिसे हम लोगोंने अतिथि आपकी पूजा कीहै १९ उसीसे आप प्रसन्न होकर हम दोनों के दोषों को क्षमाकीजिये ऐसा कहकर दोनों महात्मा समान उमरवाले गृहस्थ अतिथि लोमशजी के दोनों चरणोंमें गिरतेभये २० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब विद्वानों में श्रेष्ठ ! लोमशजी भक्तिसे संतुष्ट होकर बोले कि तुम दोनों श्रेष्ठ ब्राह्मण नम्रतायुक्तों में श्रेष्ठ और धर्म में तत्परहो २१ तुम्हारी नम्रताकी उक्तियोंसे मैं प्रसन्न हुआ हूं क्योंकि पण्डितों ने अतिथि को साक्षात् ब्रह्मा, शिव और विष्णु कहाहै २२ तिस अतिथिमें तुम लोगोंकी इतनी भक्तिहै इससे तुम्हारा मंगल होवे बड़े भोजनों से मुझ अतिथिकी तुम लोगोंने अच्छे प्रकार आराधना की है २३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब उठ कर दोनों ब्राह्मण लोमश मुनिके दोनों चरणों में फिर नमस्कार कर बोले २४ कि हे ब्रह्मन् ! अतिथिकी पूजाके माहात्म्य कहनेके आप योग्यहैं जिसको करके मनुष्यों से दुःखसे प्राप्तहोने योग्यभी मुक्ति प्राप्त होतीहै २५ संसारमें कौन अतिथि कहाता है और तिसकी पूजा कैसीहोतीहै अतिथि और अतिथिकी पूजा करने वाला ये दोनों किसगतिको प्राप्तहोते हैं २६ तब लोमशजी बोले कि वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी और संन्यासीके पूजनसे चारों आश्रमोंमें घर श्रेष्ठ कहाताहै २७ चारों आश्रमों के मध्यमें गृहस्थ लोग प्रधान कहाते हैं तिन भक्तियुक्त गृहस्थों को अतिथियों की पूजा करनी चाहिये २८ अतिथियोंका पूजन यही गृहस्थोंका परमधर्म कहाहै आश्रमके आचारसे भ्रष्ट नहींहुए वेही गृहस्थ कहाते हैं २९ यदि गृहस्थ अतिथियों की पूजामें निपुणता करते हैं तो उनको और पुण्यकर्मों से कुछ प्रयोजन नहीं है ३० जिसका नाम, गोत्र और

रहनेका स्थान नहीं सुनाहै और अकस्मात् घरको आवे तो उ-
सीको पण्डित लोगोंने अतिथि कहाहै ३१ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
वा शूद्रही जो घरमें आवें तो तत्त्वदर्शी लोग उनकी विष्णुजी की
नाईं पूजनकरें ३२ चाण्डाल इत्यादिक औरभी जो हीनवर्ण में
उत्पन्न हुएहों वेभी पाद्य, अर्घ्य और बहुत भोजनोंसे विष्णुजीकी
नाईं पूजन करने योग्यहें ३३ अतिथियोंके आनेमें गृहस्थ ब्राह्मण
शीघ्रही जाकर पाद्य और अर्घ्य आदिक देवे ३४ कोमल अक्षर-
वाले वचनों से कुशल पूंछै आनन्दसे सुन्दर भोजनोंसे भोजन क-
रावे ३५ और पण्डित मनुष्य सुख देनेवाले मन्दिरमें सुलावे और
प्रातःकाल जानेकी इच्छा देखकर जानेदेवे ३६ यदि कर्मके विपा-
कसे गृहस्थ द्रव्यवान् होतो जिस आतिथ्यसे अतिथि पूजना चा-
हिये तिसको में कहताहूं ३७ अतिथियोंके आनेमें गृहस्थ भक्तिसे
तृण आदिकों को देवे और तृणके अभावमें भक्तिसे यह कहे कि
पृथ्वीमें स्थित हूजिये ३८ पांव धोनेके लिये उत्तम जल देवे और
मीठीवाणी से कुशल आदिक पूंछै ३९ तदनन्तर भक्तिसे भोजन
के हेतु फल आदिक देवै और जो अभाव होतो आनन्दसे बुद्धि-
मान् मनुष्य प्रकाशित करदेवे ४० और कहै कि हे अतिथे! मैं
महापापी और दरिद्रियों में श्रेष्ठहूं आपकी भक्ति करनेकी इच्छा
करताहूं परन्तु दैवतंत्रविरोधक है ४१ इस विधि से दीन मनुष्य
अतिथिके पूजनको छोड़कर अपने आचारसे पतित नहीं होताहै
यथोक्त फलको प्राप्त होताहै ४२ जिस गृहस्थके घरसे विना पूजे
अतिथि चलाजाताहै तो उसके करोड़ जन्मकी इकट्ठा कीहुई पुण्य
नाश होजाती है ४३ जिसने भक्तिभावसे एकभी अतिथिको पूजा
है तो हरिजी उसके करोड़ जन्मके पापोंको शीघ्रही नाश करदेते
हैं ४४ यह मैं यत्नसे सत्य, हित और दृढ़ कहताहूं गृहस्थकी विना
अतिथिकी पूजाओं के गति नहीं है ४५ यह सत्यही सत्यहै कि
अतिथिकी पूजाके विना गृहस्थोंकी गति नहीं है ४६ द्वापरयुगमें
ज्ञातिधर्म नामसे प्रसिद्ध गोप सब धर्मोंका जाननेवाला था तिस
की श्रीवल्लभा स्त्रीथी ४७ तिस जातिकी सेवा करनेवालेसे सब

कर्म किये और तिस स्त्रीसमेत सौराष्ट्रदेश में स्थान किया ४८ तहांपर दुष्ट ग्रह के संचार से इन्द्र बारहवर्ष जल न बरसते भये तो इससे बड़ाभारी दुर्भिक्ष होताभया ४९ तिसभारी दुर्भिक्ष होनेमें तिसके देशके वासी मनुष्य सब दुःखित होकर मर्यादा को भी छोड़ देतेभये ५० और महायोगी ज्ञानभद्र द्वापर युग में दुर्भिक्ष से संपत्ति नाश होकर अत्यन्त दुःखित होता भया ५१ और भूंखसे व्याकुल पुत्र और स्त्रियों को देखकर फल और मूलोंको भोजनके लिये लेनेको पहाड़के नीचे जातेभये ५२ वहांपर बहुत उमरवाले इस भूंख से व्याकुल ने एक कुम्हड़े के फल को पाया ५३ और महायशस्वी यह उस फलको लेकर प्रसन्नतायुक्त होकर शीघ्रता से अपने स्थान को आता भया ५४ इसी अवसरमें मेघोंसे आकाश आच्छादित होकर वर्षा होतीभई ५५ तब इस मुनि की वर्षा से सब देह भीगगई फिर वन से एक वनका रहनेवाला शीतसे व्याकुल होकर इनके घरको आताभया ५६ तब इन्होंने शीतसे पीड़ित अतिथि को देखकर शिरसे वन्दना किया और भक्तिसे तृणका आसन और पाद्य आदिक तिसको दिया ५७ फिरमीठी वाणीसे तिसी अतिथि के साथ स्वस्थमनहोकर बुद्धिमानी से बातचीत करतेहुए स्थित होतेभये ५८ फिर स्वामी की सेवामें निपुण स्त्रीसमेत गोपने नवीन कुम्हड़ेको यत्नसे पकाया ५९ तब गोप की स्त्रीने इस कुम्हड़े के पाने से प्रसन्नहोकर भाग बनाकर पतिको कुम्हड़ा देती भई तदनन्तर बीस दिनके व्रतसे दुर्बल अतिथिके सत्कार करनेवाले गोपने आनन्द से अपना भाग अतिथिको देदिया तिस पीछे स्वामी की भक्तिमें परायण उसकी पतिव्रता स्त्रीनेभी ६०। ६१ आनन्दसे तिस अतिथिको अपना भी भाग देदिया तब अतिथि उन महात्मा स्त्री पुरुषोंके ६२ दोनों भागों को भोजनकर अत्यन्त प्रसन्न होताभया क्योंकि उन्होंने दृढ़ भक्तिसे विष्णुजीकी नाईं अतिथिको पूजा ६३ तब अतिथि रात्रिमें वहीं विश्रामकर प्रातःकाल जाता भया इस प्रकार व्रतसे इक्कीस दिन उन दोनों महात्मा स्त्री पुरुषों को बीतगये तबतो दोनों नाश

को प्राप्त होगये और तिसी पुण्यके प्रभावसे महाशय स्त्री पुरुष ६४। ६५ योगियों के भी दुर्लभ विष्णुसायुज्य को प्राप्त होतेभये तिन दोनों की अतिथिपूजा के पुण्यके प्रभावसे ६६ तिस राज्य में दुर्भिक्ष नष्ट होजाता भया तब मनुष्य अत्यंत सुखी, शोक और व्याधिसे वर्जित ६७ धन धान्यादि से युक्त और धर्म में तत्पर होतेभये चोर नाश होगये राजा मनुष्यों का पालक होताभया ६८ मनुष्य अपने आचार में रतहुए मेघ आवश्यकतापर बरसते भये और उस स्त्रीसमेत गोप के पहले और पीछे के करोड़ पुरुष ६९ तिसी कर्म से पापरहित, निर्दोष, धनयुक्त और सब मनुष्यों से पूजितहोकर मुक्तिको प्राप्तहोगये ७० और शोक और व्याधिसेरहित तिनकी संतति बढ़ती भई लोमशजी बोले कि प्रसन्न तुम दोनों ब्राह्मणों से इतिहाससमेत अतिथिकी पूजाका माहात्म्य मैंनेकहा अब क्या सुनने की इच्छा है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस तपस्वी लोमशजीके इसप्रकार कहनेसे ७१।७२ कालसे ग्रसाहुआ काला मूसा अपने बिलसे निकलताभया तिसको निकलते देखकर क्रोधसे विह्वल ७३ पवित्र ब्राह्मण वारंवार यह कहताहुआ उठा कि यह पापी दुष्ट मूसा रात्रिमें स्थानको ७४ और घरकी द्रव्यको तीक्ष्ण दांतोंके समूहों से गिराताहै सब वर्णोंको कृपा श्रेष्ठ कहीगईहै ७५ वह सबमें करनी चाहिये परन्तु दुष्ट प्राणियोंमें न चाहिये ऐसा कहकर पवित्र ब्राह्मण पापी मूसेको ७६ अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से मारतेभये तब वह कालको प्राप्तहुआ मूसा बहतेहुए रक्तकीधाराओं से सब अंगडूबकर ७७ व्यथासे हतचेतन होकर पृथ्वी में गिर पड़ता भया तिस मूसेके गिरनेमें दयालु श्रेष्ठब्राह्मण, ७८ हाहाकार कर शीघ्रही उठकर अपने कानसे उत्तम तुलसीपत्रको लेकर ७९ मूसेके मुख, मस्तक और कानों में देकर बोले कि हे मातः! हे गोविन्दजी को आनन्द करनेवाली! हे तुलसी देवि! ८० आप इस पाप करनेवाले मूसेको उत्तमगति कीजिये ऐसा कहकर सब मनुष्यों के उपकार करनेवाले ब्राह्मण ८१ हरे, नारायण, अनन्त यह ऊंचेस्वरसे शब्द करतेभये तब तो तुलसीपत्रके स्पर्शसे मूसा पाप-

रहित होगया ८२ और भगवान्के नाम सुनने से संसारके बन्धन से छूटगया तब महाविष्णुजी के सब लक्षणसंयुक्त दूत ८३ तिस पापरहित मूसे के लेनेके लिये शीघ्रही सुन्दर रथोंको लेकर आये तो विष्णुजी के दूतगणोंसे युक्त होकर मूसा सुन्दर रथपर चढ़कर ८४ परमधामको जाताभया और वहां नारायणजी के स्थानमें हजार करोड़ युग स्थित होकर ८५ तहांहीं ज्ञानको प्राप्त होकर मोक्षको प्राप्त होगया व्यासजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण जैमिनि! हे महाभाग! तुलसीदेवी का माहात्म्य तो तुमसे कहा अब इससमयमें क्या सुननेकी इच्छाहै ८६।८७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! हे महाभाग! अत्यन्त भयानक कलियुगके प्राप्तहोने में सब मनुष्य किसप्रकारके होते हैं यह मुझसे कहिये १ तब व्यासजी बोले कि पहले सतयुग में ब्राह्मण आदिक मनुष्य भगवान्की पूजनमें परायण, शोक और व्याधिसे वर्जित, २ सत्य बोलनेवाले, सब दयासमेत, बहुत समयतक जीनेवाले, धन और धान्यादि से युक्त, हिंसा और दम्भ से वर्जित, ३ पराये उपकार करनेवाले, सब शास्त्रों के जाननेवाले इसप्रकार के सब मनुष्य सतयुगमें थे ४ और राजधर्मके ग्रहण करनेवाले, मनुष्यों के पालन करने हारे राजाथे सतयुगके गुण और यश कहनेमें कोई समर्थ नहीं है ५ जहांपर कोई मनुष्य अधर्मका उच्चारण नहीं करते थे फिर त्रेतायुगमें प्राप्तहोनेमें धर्म एकपांवहीन होगया ६ मनुष्य थोड़े शोकसे युक्त, कुछ पापके आश्रय, विष्णुजी के ध्यान में रत, यज्ञ और दान में परायण ७ वर्ण और आश्रमके आचार में रत, सुखी, स्वस्थचित्तहुए शूद्रलोग खेती करनेवाले और सब ब्राह्मण की सेवाकरनेवाले हुए ८ ब्राह्मण महात्मा, वेद और वेदाङ्गके पारगामी, दाननहीं लेनेवाले, सत्यप्रतिज्ञावाले, जितेन्द्रि-

य, ६ तपस्या और व्रतमें रत, नित्यही दान देने वाले, विष्णुजी की सेवा करने हारे थे और त्रेतायुगके अंत में द्वापर युग के प्राप्त होने में १० धर्म दोपांवहीन होगया मनुष्य सुख और दुःख से युक्त होगये कोई कोई पाप में रत और कोई कोई धर्मात्मा हुए ११ कोई कोई गुणों से हीन और कोई कोई महागुणी हुए कोई अत्यन्त दुःखयुक्त और कोई सुखी हुए १२ कभी ब्राह्मण दान लेनेमें वाञ्छा करता था और कभी धनके लोभ से प्रजाओं को राजा पीड़ा देते थे १३ ब्राह्मण विष्णुजी की पूजा में परायण और शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हुए हे ब्राह्मण! जब युग युगमें धर्म एक पांवहीनता को प्राप्त होतागया १४ तब विष्णुरूपी व्यासजी वेद के भाग कर देते भये हे श्रेष्ठरूपी ब्राह्मण! सब पापों के एक स्थान कलियुग में १५ धर्म एकपांव होगया सब मनुष्य पाप में रत हो गये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पाप में परायण, १६ अत्यन्त कामी और क्रूर कलियुग में होंगे वेद की निन्दा करनेवाले, जुवां और चोरी करने हारे, १७ विधवा स्त्रियोंके भोग करने में मग्न होंगे कोई ब्राह्मण जीविका के लिये महाकपटधर्म करनेवाले १८ और सब स्त्री के वश, मादक द्रव्यके सेवन करने हारे, सदैव स्त्रियों की योनि में निरत, पराई द्रव्यों को हरेंगे १६ नित्यही पराये अन्नमें लोलुप, तपस्या और व्रतसे पराङ्मुख, पाखण्डियों के सङ्गमें बँधे हुए कलियुग में होंगे २० ब्राह्मण लाल कपड़े पहनेवाले और शूद्रों कासा धर्म करनेहारे, निर्वृत्त और उत्तम नीचता को २१ और नीच धनसम्पन्न और ऊंचे पदको प्राप्त होंगे सब मनुष्य उपकारीको दान देंगे २२ शूद्र यत्नसे ब्राह्मणोंके वर्त्तनको प्राप्त होंगे कलियुगमें मनुष्य मित्रों के स्नेह से झूंठी गवाही देंगे २३ अधर्मबुद्धि के कहनेवाले, धर्मबुद्धि के विलाप करनेहारे, परोक्षमें निन्दा करनेवाले, क्रूर और सम्मुखमें प्रिय बोलनेवाले होंगे २४ व्यभिचारिणी स्त्रियां पतिव्रताओं के वादको पतिसे कहेंगी ब्राह्मण पराई स्त्रियोंके मारनेवाले, गोत्रके बेंचनेहारे २५ और कलियुगमें कन्या बेंचनेवाले होंगे सब मनुष्य स्त्रीजित

होंगे और स्त्रियां अत्यन्त चञ्चल होंगी २६ और कलियुगमें मनुष्य दुष्ट आशयवाले होंगे पृथ्वीमें अन्न थोड़ा पैदा होगा मेघ थोड़ा जल बरसेंगे २७ और अकालमें बरसेंगे हे जैमिनि! इस युगमें गौवें विष्ठा भोजन करनेवाली और थोड़ादूध देनेवाली होंगी २८ और वह दूध घी से हीन निस्सन्देह होगा मनुष्य अपनी प्रशंसा और पराई निन्दा में परायण २९ छोटे अङ्गवाले होंगे बालक बहुत अन्न भोजन करनेहारे होंगे ब्राह्मण कलियुग में दम्भके लिये पितृयज्ञ करेंगे ३० जबतक कार्यसिद्ध न होगा तबतक सब स्नेह के वचन बोलेंगे धर्ममें परायण मनुष्योंको देखकर सब हँसेंगे ३१ अधर्म से मनुष्य बढ़ेंगे तिससे पापमें रत मनुष्य दश बारह वर्ष में जड़समेत नाश होजावेंगे ३२ जैसे वर्षा में जलकी वृद्धि होती है तैसेही कलियुगमें मनुष्य गलितयुवावस्थावाले होंगे ३३ पांच वा छः वर्षमें स्त्री गर्भके धारण करनेवाली होंगी पुरुषों के बहुत लड़के और अत्यन्त दुःखयुक्त होंगे ३४ सब लेनेकी कामना करेंगे देनेकी कामना कोई न करेंगे कलियुगमें पापमें तत्पर म्लेच्छ राजा होंगे ३५ विषयके लिये कलियुगमें मनुष्य एकवर्ण होंगे कलियुग की प्रथम संध्यामें मनुष्य हरिजीकी निन्दा करेंगे ३६ कलियुगमें मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भगवान्‌के नामोंको नहीं देखेंगे ३७ चारों वर्ण एकवर्ण होंगे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जब जब सज्जनोंकी हानि ३८ और पापियोंकी वृद्धिहोगी तब तब कलियुगमें वृद्धि जाननी चाहिये हे उत्तम ब्राह्मण! यद्यपि मैंने इसको घोरकलियुगकहाहै ३९ हे गुणवानों में श्रेष्ठ! तथापि इसका बड़ागुण है कि सतयुगमें बारहवर्षों में पुण्यका साधन होताहै ४० त्रेतायुगमें छःवर्षमें द्वापरमें महीने से और कलियुगमें एकही दिन रातमें होताहै ४१ तिससे कलियुग में मनुष्यों की मृत्युलोक से उत्तमगति होती है और युगमें बारहवर्षों में भगवान् को पूजनकर जो फल होताहै ४२ वह फल कलियुग में मनुष्य हरिका नाम उच्चारणकर पाताहै जो मनुष्य कलियुगमें हरिजीका एकभी नाम कहताहै ४३ उसको सत्य सत्य निस्सन्देह कलियुग नहीं बाधाकरताहै जैमिनि-

जी बोले कि हे व्यासजी! मनकी शुद्धिके विहीन होनेसे सब कर्म निष्फल होताहै ४४ यह आपने मेरे मनका विस्मय देनेवाला पहले कहाहै कि कलियुग में सब मनुष्य मनकी शुद्धिसे रहित होंगे ४५ हे गुरो! तिनका जैसे सब कर्म होताहै तिसको कहिये तब व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! मनुष्य कलियुग में जो धर्म कर्मकरे ४६ तिसको भक्तिभावसंयुक्त होकर महाविष्णुजी में अर्पण करदेवे क्योंकि विष्णुजी में अर्पण कियाहुआ सब कर्म नाशरहित होताहै ४७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सबवृत्तान्त तुमसे कहा जिस को भक्तिभाव से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै ४८ सूतजी बोले कि हे शौनक! इसप्रकार परमात्मा व्यासजी ने जैमिनि को समझाया तब जैमिनि क्रियायोग में रत होकर परमपद को प्राप्त होतेभये ४९ इस क्रियायोगसारखण्डको महात्मा व्यासजीने कहा है जे मोक्षकी इच्छाकरनेवाले मनुष्य भक्तिसे पढ़ते सुनतेहैं ५० वे सब बहुत जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए घोर पापों से छूटकर निस्सन्देह परममुक्तिको प्राप्त होते हैं ५१ मोक्षकी इच्छा करनेवाले जे इसको पढ़ते और सुनते हैं उनके भगवान् के प्रसाद से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ५२ मनुष्य एक श्लोक आधा वा चौथाई श्लोक पढ़ और सुनकर वाञ्छितफल को प्राप्त होताहै ५३ जो मनुष्य लिखकर वा लिखा कर इस शास्त्रको पूजन करता है वह विष्णुजी के पूजन के फलको प्राप्त होता है ५४ यह अत्यन्त गुप्त, व्यासजी के मुख से निकला हुआ, वैष्णवों को प्रीति देने वाला अत्यन्त रुचिर पुराण बहुतकाल इन्द्रादिक देवताओं से वन्दित चरणवाले, सब लोकों के स्वामी, चक्रधारी भगवान्की प्रीतिके लिये होवे ५५ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारखण्डेव्यासजैमिनिसंवादेउन्नावप्रदेशांतर्गत-
तारगांवनिवासिपण्डितरामविहारीसुकुलकृतभाषानुवादेयुगधर्मनिरूपण-
पूर्वकपुराणमाहात्म्यवर्णनंनामषड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥

इतिक्रियायोगसारखण्डःसमाप्तः ॥

बीच में और भाषा टीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपा है कागज़ सफेद निहायतउम्दा व टैपवम्बई में छपाहै ॥

तथा कागज़ हिनाई छापापत्थर की ४) पु०

वामनपुराण भाषा क़ीमत ॥।≶)

पण्डित रविदत्तकृतभाषा है—जिसमें कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायण युद्ध और देवासुर संग्राम इत्यादि श्रीवामन भगवान्की उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णित है ॥

पद्मपुराण भाषा प्रथमसृष्टिखंड व द्वितीयभूमिखंड क़ीमत १॥)पु०

पण्डित महेशदत्त सुकुलकृत भाषा—इसमें पुष्कर का माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञविधान, वेदपाठ आदिका लक्षण, दानों और व्रतोंका कीर्त्तन, पार्वतीजी का विवाह, तारकाख्यान, गवादिकों का माहात्म्य, कालकेयादि दैत्योंका वध, ग्रहोंका अर्चन और दान, पिता और माता आदि के पूजन के पीछे शिवशर्म्म और सुव्रत की कथा, वृत्रासुरकावध, पृथुवैन्य का आख्यान इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

पद्मपुराणका तृतीय स्वर्ग्गखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

इसकाभी उल्था पण्डित महेशदत्तजी ने बहुत उम्दाललित इबारतमें किया है इतिहास इसमें बहुत ज्यादाहैं और प्रत्येक धर्म, अर्थ, काम, मोक्षदेनेवालेहैं ॥

पद्मपुराणका पञ्चम पातालखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा—इसमें प्रथम रामाश्वमेध की कथामें श्रीरामजी के अभिषेक का वर्णन, अगस्त्यादि ऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, रावणके वंशका वर्णन, अश्वमेध करने का उपदेश, अश्वका छोड़ाजाना और उसका इधर उधर घूमना, नानाप्रकारके राजाओंकी कथा, जगन्नाथजीका अनुकीर्त्तन, वृन्दावनका माहात्म्य इत्यादि अनेक कथायें संयुक्त हैं ॥

पद्मपुराणका षष्ठ उत्तरखण्ड भाषा क़ीमत २।) पु०

उन्नावप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पं० रामविहारीसुकुलकृतभाषा—इस में नग्जीकायश, जालंधरकी कथा, सम्पूर्णतीर्थोंकी महिमा, छब्बीसों एकादशियों

की कथा, भागवत, शालग्राम, भगवद्गीता, कार्तिक, माघ और सवव्रतों का माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय वर्णितहैं यह खण्ड सातोंखण्डों में शिरोमणिहै ॥

जैमिनिपुराण भाषा क़ीमत ।॥)

पण्डित शिवदुलारेकृत उल्था—जिसमें राजायुधिष्ठिरने गोत्रहत्यानिवारणार्थ अगस्त्योपदेशसे अश्वमेध घोड़ाछोड़ यौवनाश्व, नीलध्वज, सुरथ, सुधन्वा व अपने पुत्र बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओंको श्रीकृष्णचन्द्रकी सहायता से विजय किया इत्यादि कथायें बहुतसी वर्णितहैं ॥

आदिब्रह्मपुराण भाषा क़ीमत १)

पण्डित रविदत्तकृत-जिसमें ब्रह्माजीसे लेकर सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्तांत,राजा पृथुका चरित्र,मन्वन्तरकीर्त्तन,आदित्यउत्पत्ति, सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश कथन,राजा ययाति चरित्र और कृष्णवंशकीर्त्तन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

नरसिंहपुराण भाषा क़ीमत ।≋)

भाषा पं० महेशदत्तसुकुल कृत—इसमें संस्कृत नरसिंहपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण व प्रतिपद का टीका अति सरल व मधुर भाषा में कियागयाहै—जिस में सृष्टिवर्णन, सर्गरचना, सृष्टिरचनाप्रकार, पुंसवनोपाख्यान, मार्कण्डेय मुनि का तपोबल से मृत्युको जीतना, यमगीता, यमाष्टकवर्णन, मार्कण्डेयचरित्र, यमीयमसंवाद, ब्रह्मचारी व पतिव्रतासंवाद, एक ब्राह्मणका इतिहास जिसने परमेश्वर कृष्णजीका ध्यानकर देहत्यागकिया और व्यासजी का शुकाचार्य से संसाररूपी वृक्षको वर्णन करना, शिव व नारद करके अवतरने की क्रिया का वर्णन और अष्टाक्षरमन्त्रमाहात्म्य इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क़ीमत ।)॥

जिसको पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देशभाषा में रचा जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास और सम्पूर्ण व्रतों के माहात्म्य आदि वर्णितहैं ॥